पैगम्बर मुहम्मद और उनके चमत्कार

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

नबी मुहम्मद और उनके चमत्कार

बेदिउज्जमां

नर्स ने कहा

The Light

न्यू जर्सी 2006

संशोधित संस्करण 2006 प्रथम

प्रकाशन 2002 09 08 07 06 3

4 5 6

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. सुइट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.thelightpublishing.com

तुर्की से अली उनाल द्वारा अनुवादित

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा पिछले संस्करण के लिए

नर्सी, सईद, 1877-1960।

पैगम्बर मुहम्मद के चमत्कार / बेदिउज्जमां सईद नूरसी. पृ. सेमी. - (मानवता का ईश्वर से साक्षात्कार ; 3)

"रिसाले-ए नूर संग्रह से।"

सूचकांक शामिल है.

आईएसबीएन 0-9720654-1-5 (पीबीके)

1. मुहम्मद, पैगम्बर, मृत्यु 632 - चमत्कार 2. नूरकुलक I. शीर्षक II. शृंखला।

BP75.8.N868 2002 297.6'3--

dc21

2002006832

आईएसबीएन (पेपरबैक): 1-59784-044-0

आईएसबीएन (हार्डकवर): 1-59784-049-1

मुद्रित लेखक:

Cąðlayan A.Þ., इज़मिर - तुर्की, अप्रैल 2006

विषयसूची

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के कई आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र में, बेदीउज्जमां (1877-1960) मुस्लिम दुनिया में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरंतर प्रभाव के माध्यम से, आज भी हैं। उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो चौदहवीं शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, उचित तर्क पर आधारित और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में एक बुद्धिमान और मापा हुआ सक्रियता में बिताए।

बेदीउज्जमां उस दौर में जी रहे थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज्जमां ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई। ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का इस्तेमाल युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, और शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक आकर्षण था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग उनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें सबसे क्रूर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदीउज्जमां ने पूरे लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, उनके दिमाग और आत्माओं में वही सब फूंक दिया जो आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा और आध्यात्मिक प्रशिक्षण दोनों के संस्थानों में सिखाया जाता है।

बेदिउज्जमां ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, अज्ञानता से नहीं।

उन्होंने लिखा कि प्रकृति ईश्वरीय संकेतों का संग्रह है और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित किया जाना चाहिए।

बेदीउज्जमां शब्द के सामान्य अर्थ में लेखक नहीं थे। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी, जो 5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह है, क्योंकि उनका एक मिशन था: उन्होंने विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित विचारों की भौतिकवादी और नास्तिक प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष किया और हर स्तर की समझ वाले आधुनिक दिमाग और दिलों के सामने इस्लाम की सच्चाई को पेश करने की कोशिश की। कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी रिसाले-ए-नूर मुख्य रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगंबरी, मुख्य रूप से कुरान सहित ईश्वरीय शास्त्रों, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्रों, ईश्वरीय नियति और मानवता की स्वतंत्र इच्छा, पूजा, मानव जीवन में न्याय और सृष्टि के बीच मानवता के स्थान और कर्तव्य पर केंद्रित है।

लोगों के मन और हृदय से झूठे विश्वासों और अवधारणाओं के संचित 'अवसाद' को हटाने तथा उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बेदिउज़्ज़मान जोरदार ढंग से लिखते हैं और बातों को दोहराते हैं।

वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं; बल्कि वह भावनाओं से अपील करते हैं और लोगों के दिलों और दिमागों में अपने विचारों को उड़ेलने का लक्ष्य रखते हैं ताकि उनमें विश्वास और दृढ़ विश्वास जागृत हो सके।

इस पुस्तक में रिसाले-ए-नूर संग्रह से चयनित अनुभाग शामिल हैं ।

उन्नीसवाँ शब्द

मुहम्मद का संदेशवाहक होना

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

मैंने अपने शब्दों से मुहम्मद की प्रशंसा नहीं की है; बल्कि,
मेरे शब्द उसके कारण प्रशंसा के योग्य हैं।

हसन थबिट

इस शब्द में 14 बूंदें हैं। केवल उसका
गुणों ने इस वचन को सुन्दर बनाया है।

चौदह बूंदें

पहली बूंद: तीन महान और सार्वभौमिक चीजें
हमारे प्रभु को हमें ज्ञात कराओ: पुस्तक
ब्रह्मांड (अन्यत्र समझाया गया है); पैगम्बर मुहम्मद,
भविष्यद्वक्ताओं की मुहर, सर्वोच्च चिन्ह
हम ब्रह्मांड की किताब और शानदार कुरान की प्रशंसा करते हैं।
भविष्यद्वक्ताओं की मुहर को पहचानना और सुनना चाहिए,
दूसरा और स्पष्ट प्रमाण और उद्घोषक
ईश्वर अपने सभी नामों और गुणों के साथ, अपने अस्तित्व के साथ
और एकता.

उस प्रमाण के सार्वभौमिक व्यक्तित्व को देखिए।
धरती का मुख उसकी मस्जिद है, मक्का उसका मेहराब (आला) है।
जहाँ वह अपने समुदाय की प्रार्थना में अगुवाई करते हैं), और मदीना

उनके उपदेशक। हमारे पैगंबर, यह शानदार सबूत, हमें आगे ले जाता है
सभी विश्वासियों का पालन करता है और सभी लोगों को उपदेश देता है। वह है
पैगम्बरों का सरदार, संतों का स्वामी, और धर्म का नेता
ईश्वर का स्मरण एक चक्र है जिसमें सभी शामिल हैं
पैगम्बर और संत। सभी पैगम्बरों को अपनी जड़ मानते हुए
संतों के लिए वह एक उज्ज्वल वृक्ष है, क्योंकि उसके फल सदैव ताजे रहते हैं।
पैगम्बरों ने अपने चमत्कारों के सहारे, और सभी
संत, अपने चमत्कारों के आधार पर, उसके दावों की पुष्टि और पुष्टि करते
हैं। वह घोषणा करता है: "कोई देवता नहीं है
लेकिन भगवान"; और सभी शानदार अतीत और भविष्य के वाचक
भगवान के नामों में से एक ही शब्द को एक स्वर में दोहराएँ,
मानो कह रहे हों: “तुम सच बोलते हो।” कौन सा भ्रम हो सकता है
क्या आप ऐसे तर्क पर विवाद करेंगे जिसकी पुष्टि अनगिनत समर्थनों से होती है?

दूसरी बूंद: जैसे यह उज्ज्वल सबूत
ईश्वरीय एकता की पुष्टि सभी पैगम्बरों और संतों की सर्वसम्मत सहमति से
होती है, इसकी पुष्टि ईश्वरीय एकता से होती है।
प्रकट शास्त्रों में सैकड़ों संकेत (जैसे,
टोरा और बाइबल), हज़ारों संकेत
उनकी पैगम्बरी की कहानियाँ जो उनके मिशन से पहले प्रकट हुईं, अदृश्य से
आने वाली आवाज़ों की प्रसिद्ध रिपोर्टें,
भविष्यवक्ताओं की सर्वसम्मत गवाही, संकेत
उनके हजारों चमत्कार (जैसे, चंद्रमा को विभाजित करना),
और अपने शरीयत (कानून) के न्याय और सत्य पर विश्वास करें।
इसी प्रकार, उनके प्रशंसनीय गुण जो चरम सीमा तक पहुँच गए

पूर्णता की डिग्री; अपने मिशन में उनका पूरा विश्वास और इसके संबंध में सबसे उत्कृष्ट गुण
पूर्ति; और परमेश्वर के प्रति उसका भय, आराधना,
शांति और दृढ़ता, ये सभी बातें उसके विश्वास को दर्शाती हैं
उसकी ताकत और उसकी पूरी निश्चयता और पूरी दृढ़ता। ये सब उसके दावे की सच्चाई को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

तीसरी बूंद: चलो कल्पना करें कि हम उससे मिलने जाते हैं
अरब प्रायद्वीप में जब वह अपना प्रदर्शन कर रहे थे
परमानंद के युग के दौरान मिशन। हम एक व्यक्ति को देखते हैं
अपने चरित्र की उत्कृष्टता से प्रतिष्ठित और
उसके रूप की सुंदरता। उसके हाथ में एक चमत्कारी
किताब है, और उसकी जुबान पर सच्चा प्रवचन है। वह
मानवता, जिन्न और को एक शाश्वत उपदेश देना
स्वर्गदूतों - वास्तव में, सभी प्राणियों के लिए। वह हल करता है और
विश्व की रचना के रहस्य को उजागर करता है; उस जटिल रहस्य को खोजता है और सुलझाता है जो कि
ब्रह्मांड का रहस्य; और आश्वस्त करने वाला प्रदान करता है
और जीवन के महान और महत्वपूर्ण सवालों के संतोषजनक जवाब
प्रश्न: आप कौन हैं? आपका उद्देश्य क्या है?
तुम कहाँ से आये हो? तुम कहाँ जा रहे हो?
आपका अंतिम गंतव्य क्या है?

चौथी बूंद: वह ऐसा प्रकाश फैलाता है
सत्य यह है कि, यदि आप ब्रह्मांड पर विचार करें
उनके मार्गदर्शन के प्रकाश में, आप इसे शोक-स्थल के रूप में देखते हैं। प्राणी एक दूसरे के लिए अजनबी या यहाँ तक कि शत्रुतापूर्ण हैं।

निर्जीव प्राणी भयानक लाशों की तरह दिखाई देते हैं, और जीवित प्राणी मार से रोते हुए अनाथों की तरह दिखाई देते हैं
मृत्यु और अलगाव की भावनाएँ। इन पर प्रकाश की दृष्टि से देखना
हालाँकि, वह सार्वभौमिक शोक के इस स्थान को आह्वान के स्थान में बदल देता है जहाँ
भगवान के नाम और स्तुति का पाठ खुशी और उल्लास में किया जाता है।
अजनबी और शत्रुतापूर्ण प्राणी भी मित्र बन जाते हैं।
भाई-बहन के रूप में; तथा मूक, निर्जीव प्राणी परिचित, आज्ञाकारी अधिकारी और विनम्र प्रतीत होते हैं
नौकर-चाकर रोते, शिकायत करते अनाथ बच्चे दिखाई देते हैं
भगवान के नाम और स्तुति का पाठ करना या धन्यवाद देना
अपने कर्तव्यों से मुक्त किये जाने के कारण।

पांचवी बूंद: इस प्रकाश के माध्यम से, ब्रह्मांड की
गति और विविधताएं, परिवर्तन और रूपांतरण
अब इन्हें निरर्थक और व्यर्थ नहीं माना जाता
संयोग के खिलौने; बल्कि, वे अपने वास्तविक रूप में दिखाई देते हैं
रूप और कार्य। प्रत्येक ब्रह्माण्ड का संदेश है
गुरु, सृष्टि के चिन्हों से अंकित एक पृष्ठ, ईश्वर के नामों को प्रतिबिंबित करने वाला एक दर्पण। संसार स्वयं एक पुस्तक है
अनन्त-प्रार्थना-की-सबकी-बुद्धि का।

इस प्रकाश के बिना, मानवता की असीम कमजोरी और लाचारी, गरीबी और अभावग्रस्तता
सभी को जानवरों से भी नीचे गिरा दिया जाता है। उनकी बुद्धि, दुख, पीड़ा और चिंता व्यक्त करके, उन्हें जानवरों से भी नीचे गिरा देती है।
उन्हें और अधिक दुखी बना दिया। लेकिन जब वे प्रकाशित होते हैं

इस प्रकाश से वे सभी पशु-पक्षियों से ऊपर उठ जाते हैं। एक बार उनकी बुद्धि प्रकाशित हो जाए तो उनकी गरीबी और लाचारी अनंत धन का साधन बन जाती है

और ईश्वर पर निर्भरता के माध्यम से शक्ति।
विनती करने पर वे प्रिय “राजा और रानी” बन जाते हैं
और, विलाप के माध्यम से, भगवान के पसंदीदा प्रतिनिधि।
यदि यह प्रकाश न होता तो ब्रह्माण्ड, मानवता और
सभी चीजें शून्य हो जाएंगी।
यदि ऐसा व्यक्ति ऐसी अद्भुत दुनिया में मौजूद न होता
ब्रह्माण्ड का अस्तित्व आवश्यक नहीं होगा,
निबंध.

छठी बूंद: पैगम्बर ने घोषणा की और
अनंत खुशी की ख़बर लाता है, भगवान की असीम दया का अनावरण और घोषणा करता है, देखता है और घोषणा करता है
प्रभु की संप्रभुता के राज्य की सुन्दरता,
और दिव्य नामों के खजाने को प्रकट करता है और दिखाता है-
यदि आप उन्हें भगवान के एक समर्पित उपासक के रूप में देखते हैं,
हे परमेश्वर, आप उसे प्रेम का आदर्श देखेंगे,
दया की प्रतिमूर्ति, मानवता का गौरव, और
सृष्टि के वृक्ष का सबसे शानदार फल। अगर
तुम उसे एक रसूल के रूप में देखोगे, तुम उसे देखोगे
ईश्वर का प्रमाण बनो, सत्य का दीपक बनो, मार्गदर्शन का सूर्य बनो,
और खुशी के साधन। उसकी रोशनी से रोशनी आ गई है
पूर्व से पश्चिम तक चमकती बिजली की तरह। दुनिया का आधा हिस्सा
और सभी लोगों में से पाँचवें हिस्से ने उपहार स्वीकार कर लिया है

उनके मार्गदर्शन को स्वीकार किया और उसे अपने जीवन की तरह सहेज कर रखा। तो, क्यों
क्या हमारी दुष्ट आत्माएं और शैतान स्वीकार नहीं करते,
अपनी सभी डिग्री के साथ, उसके मिशन का सार: वहाँ
क्या ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है?

सातवीं बूंद: गौर कीजिए कि उसने कितनी जल्दी
अपने लोगों की कट्टरता को मिटा दिया
बुरे और बर्बर रीति-रिवाज और अनैतिक गुण। देखें
कैसे उन्होंने प्रायद्वीप के बिखरे हुए, जंगली और अडिग लोगों को सभी
प्रशंसनीय गुणों से सुसज्जित और सुशोभित किया और उन्हें शिक्षक और
स्वामी बनाया
विश्व के, विशेषकर सभ्य राष्ट्रों के लिए।
इसके अलावा, यह प्रभुत्व बाहरी नहीं था - उसने मन, आत्मा, हृदय और आत्माओं
पर विजय प्राप्त की और उन्हें अपने अधीन कर लिया।
वह हृदयों का प्रिय, मनों का शिक्षक बन गया,
आत्माओं का प्रशिक्षक, और आत्माओं का शासक।

आठवीं बूंद: आप जानते हैं कि एक छोटी सी आदत
जैसे एक छोटे से समुदाय में धूम्रपान को हटाया जा सकता है
स्थायी रूप से केवल एक शक्तिशाली शासक द्वारा और महान के साथ
प्रयास। लेकिन पैगंबर ने जल्दी ही कई लोगों को हटा दिया
बड़े जुनूनी समुदायों से जुड़ी हुई आदतें
बहुत कम बाहरी शक्ति और प्रयास के साथ। उनकी जगह,
उन्होंने ऐसे उत्कृष्ट गुणों को स्थापित और विकसित किया
उनके अस्तित्व में अंतर्निहित हो गए। ऐसे और भी बहुत से
चमत्कारिक उपलब्धियों का श्रेय उसे दिया जा सकता है।
जो लोग इस बात की गवाही देखने से इनकार करते हैं,

धन्य युग, उन्हें वर्तमान “सभ्य” में जाने दो
अरब प्रायद्वीप में सैकड़ों दार्शनिकों का निवास है।
समाजशास्त्रियों, और मनोवैज्ञानिकों, और 100 के लिए प्रयास करते हैं
मुझे आश्चर्य है कि क्या वे उस अवधि में भी कुछ हासिल कर पाएंगे
पैगम्बर ने जो हासिल किया उसका एक छोटा सा अंश
वर्ष।

नौवीं बूंद: एक तुच्छ व्यक्ति
छोटा समूह छोटा झूठ बोलकर उसे छिपा नहीं सकता
परिणामस्वरूप चिंता और बेचैनी इतनी अच्छी तरह से कि उसकी
या उसके दुश्मन इस बात से अनजान रहते हैं। अब इस आदमी पर विचार करें। हालाँकि एक बहुत
बड़ा काम अपने कंधों पर लिए हुए
(संदेशवाहक) और सभी तरफ से धमकी दी जा सकती है,
उन्होंने जो भी निडरता से कहा उसमें कोई विरोधाभास नहीं पाया जा सकता
वह अपने समाज को क्या संदेश देता है? वह बड़ी सहजता से बोलता है
और स्वतंत्रता, बिना किसी हिचकिचाहट या चिंता के, शुद्ध
ईमानदारी, बहुत गंभीरता, और एक गहन, ऊंचे तरीके से जो उसके दुश्मनों को परेशान करता है।

क्या यहाँ कोई धोखा है? वह जो बोल रहा है वह कुछ और नहीं बल्कि रहस्योद्घाटन
है जो उसे पता चला है। सत्य कभी नहीं हो सकता
धोखा देने वाला हो, और जो उसे देखता है, वह धोखा नहीं खा सकता।
उनका मार्ग, जो शुद्ध सत्य है, छल-कपट से मुक्त है।

दसवीं बूंद: देखो, कैसी जिज्ञासा जगाने वाली बात है,
आकर्षक, आवश्यक और अद्भुत सत्य जो वह दिखाता है
और जो मायने रखता है उसे वह साबित करता है। जिज्ञासा लोगों को कई काम
करने के लिए प्रेरित करती है। मान लीजिए कोई आपसे कहता है:

"अगर आप अपनी आधी संपत्ति दे दें, तो मंगल या बृहस्पति से कोई आकर आपको उनके बारे में, आपके भविष्य के बारे में और आपके साथ क्या होगा, इसके बारे में बताएगा।" अगर आपको ज़रा भी जिज्ञासा है, तो आप उसे पैसे दे देंगे। लेकिन यह आदमी एक ऐसे राजा की बात करता है जिसके राज्य में चाँद एक पतंगे के चारों ओर मक्खी की तरह उड़ता है, पतंगा (पृथ्वी) एक दीपक के चारों ओर फड़फड़ाता है, और दीपक (सूर्य) उस राजा के हज़ारों अतिथिगृहों में से एक में हज़ारों दीपकों में से एक मात्र है। वह सच में इतनी अद्भुत दुनिया की बात करता है और ऐसी क्रांति की भविष्यवाणी करता है कि अगर पृथ्वी एक बम होती और फट जाती, तो यह बिल्कुल भी अजीब नहीं होता।

उनके द्वारा पढ़ी गई सूरा को सुनें , जो इस प्रकार से शुरू होती है: जब सूर्य मुड़ा हुआ होता है (81:1), जब आकाश फट जाता है (82:1), और शोर और कोलाहल का दिन (101:1)। वह सच में ऐसे भविष्य की बात करते हैं कि यह दुनिया, उसके संबंध में, एक तुच्छ मृगतृष्णा की तरह है। वह हमें ऐसी खुशी के बारे में बहुत गंभीरता से बताते हैं कि सभी सांसारिक खुशियाँ एक शाश्वत सूर्य की तुलना में बिजली की चमक की तरह हैं।

ग्यारहवीं बूंद: इस अद्भुत और हैरान करने वाले ब्रह्मांड के स्पष्ट आवरण के नीचे असाधारण चमत्कार हमारा इंतजार कर रहे हैं। हमें इन चमत्कारों को हमें बताने और समझाने के लिए एक अद्भुत और चमत्कार करने वाले प्राणी की आवश्यकता है। यह उसके आचरण से स्पष्ट है

कि उसने उन्हें देखा है और देखता है। वह हमें बताता है कि उसने क्या किया देखता है, और हमें सिखाता है कि उन स्वर्गों और पृथ्वी का एकमात्र ईश्वर, जो हमें अपनी कृपाओं से पोषित करता है,
हमसे क्या अपेक्षा है और उसे क्या पसंद है। हमें ध्यान रखना चाहिए
बाकी सब कुछ एक तरफ रख कर इस आदमी के पास भागो जो
हमें ऐसे मामलों में निर्देश देता है। फिर भी अधिकांश लोग इतने
बहरे, अंधे और पागल कि वे न देख सकते हैं, न सुन सकते हैं, या
इस सत्य को समझें.

बारहवीं बूंद: परमेश्वर की एकता का स्पष्ट प्रमाण और सच्चा सबूत होने के साथ-साथ
सभी प्राणियों का निर्माता, वह एक निर्णायक प्रमाण है और
पुनरुत्थान और अनंत खुशी का स्पष्ट प्रमाण।
जिस प्रकार लोग भक्ति के माध्यम से शाश्वत सुख प्राप्त करते हैं,
उन्होंने जो मार्गदर्शन दिया, अपनी प्रार्थनाओं और विनतियों के माध्यम से वे इसके अस्तित्व और अस्तित्व का कारण भी हैं।
इसके निर्माण का साधन.

वह इस सर्वोच्च न्यायालय के दौरान अपनी याचिका प्रस्तुत कर रहे हैं,
व्यापक प्रार्थना (सलात) कि यह ऐसा है जैसे कि
पूरा अरब प्रायद्वीप, यहाँ तक कि पूरी पृथ्वी भी इसमें शामिल हो जाती है
सेवा में और, अपनी उदात्त प्रार्थना के माध्यम से,
वह इतनी विशाल सभा में प्रार्थना कर रहा है मानो सभी सिद्ध पुरुष,

समय की परवाह किए बिना, उसका पीछा कर रहे हैं और कह रहे हैं
उसकी प्रार्थनाओं पर “आमीन”। वह विनती कर रहा है
इतनी सार्वभौमिक आवश्यकता के नाम पर कि न केवल पृथ्वी का

निवासियों, लेकिन यह भी स्वर्ग और सभी के
सभी प्राणी उसकी प्रार्थना में शामिल होकर घोषणा करते हैं: "हाँ, हे स्वामी,
यह प्रदान करें, क्योंकि हम भी यही चाहते हैं।" वह इस प्रकार प्रार्थना करता है
जरूरतमंद और इतने दुख से, इतनी प्रेमपूर्ण लालसा में,
और इस प्रकार प्रार्थना करता है कि वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आँसू बहाने पर
मजबूर कर दे और उसे अपनी प्रार्थना में सम्मिलित कर ले।

ऐसे लक्ष्य और उद्देश्य के लिए उनकी प्रार्थना उन्नति प्रदान करती है
मानवता और विश्व, यहाँ तक कि समस्त सृष्टि,
सबसे निचली गहराई, अपमान, मूल्यहीनता और बेकारपन से मूल्य, स्थायित्व
और उत्कृष्ट कर्तव्यों के उच्चतम स्तर तक। एक तरह से इतना ऊंचा

और मदद मांगने वाला, इतना मीठा और दया-याचना करने वाला,
वह प्रार्थना और निवेदन करता है कि यह ऐसा है मानो
सभी प्राणी, स्वर्ग और ईश्वरीय सिंहासन
अनुग्रह सुनते हैं, और परमानंद की स्थिति में प्रवेश करते हैं,
चिल्लाना: "आमीन, हे परमेश्वर, आमीन!"

वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति इतने शक्तिशाली प्राणी से मांगता है,
सर्व-श्रवणशील और सर्व-उदार, अतः सर्वज्ञ
वह सर्वदर्शी और दयालु है, वह सब कुछ देखता है
सबसे छुपी हुई जीवित प्राणी की सबसे गुप्त आवश्यकता,
और उसकी विनती सुनता है और स्वीकार करता है, और उस पर दया करता है
वह अपनी जरूरतें पूरी करता है, भले ही यह
प्राणी अपनी विशेष अस्वस्थता की भाषा के माध्यम से इसके लिए पूछता है,
और वह इसे बहुत बुद्धिमानी, दृष्टि और
दयालु एक ऐसा रूप है कि इसमें कोई संदेह नहीं रह जाता

यह प्रावधान और व्यवस्था केवल एक से संबंधित है
सब कुछ सुनने वाला और सब कुछ देखने वाला, सबसे उदार
और अत्यन्त दयावान है।

तेरहवीं बूंद: वह क्या चाहता है, यह?
मानवता का गौरव, यह अद्वितीय अस्तित्व और गौरव
सभी प्राणी, जो सभी प्रतिष्ठित लोगों के साथ पृथ्वी पर खड़े हैं
उसके पीछे खड़े लोग हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना कर रहे हैं
इतनी लगन से? सुनो। वह अनंत सुख की तलाश में है
और अनन्त जीवन, परमेश्वर से मिलना और स्वर्ग में प्रवेश करना।
वह इन सभी को सभी पवित्र दिव्य शक्तियों के माध्यम से चाहता है
नाम, जो उनकी सुंदरता और संचालन को दर्शाते हैं
प्राणियों के दर्पणों में।

यदि ऐसे असंख्य कारण न होते जैसे कि
दया, कृपा, बुद्धि और न्याय की उस प्रार्थना की पूर्ति के लिए, उसकी एक भी प्रार्थना

स्वर्ग का निर्माण करने के लिए पर्याप्त है, जो उतना ही आसान है
ईश्वरीय शक्ति के लिए वसंत का सृजन। ठीक वैसे ही जैसे उसका
इस स्थान को खोलने का कारण दूतत्व था
परीक्षा की स्थिति में, और साथ ही परमेश्वर के प्रति उसकी आराधना और सेवा की स्थिति में भी
अगली दुनिया के खुलने का कारण है।

मुझे आश्चर्य है कि ब्रह्माण्ड की उत्तम व्यवस्था, जो
बुद्धिमान और चिंतनशील को कहने के लिए प्रेरित करता है [व्यक्त करने के लिए
उनकी प्रशंसा और ब्रह्मांड की सुंदरता]:
"इससे अधिक मौलिक और नया ब्रह्मांड नहीं हो सकता
इससे भी अद्भुत," साथ ही दोषरहित सौंदर्य-

उनकी दया और अतुलनीय कला में निहित
उनकी गुरुता की सुंदरता, कुरूपता, निर्दयता और अव्यवस्था के साथ मेल खा सकती है। मुझे आश्चर्य है कि वह कैसे
सबसे महत्वपूर्ण और सबसे आवश्यक इच्छाओं को अस्वीकार कर सकते हैं
जबकि सबसे महत्वहीन इच्छाओं को संतुष्ट कर सकते हैं
शुभकामनाएं.

तो मेरे दोस्त, अभी के लिए इतना ही काफी है।
हम वहाँ 100 साल तक रहे, हम उनकी अद्भुतता का सौवाँ हिस्सा भी पूरी तरह नहीं समझ पाए
और उल्लेखनीय कार्य। इसके अलावा, हम कभी नहीं
उसे देखते-देखते थक गए हैं। आइए अपनी वापसी के दौरान प्रत्येक शताब्दी पर नज़र डालें। देखें कि प्रत्येक शताब्दी किस तरह से पूरी तरह से खिली है
उस सूर्य से प्राप्त प्रकाश का प्रवाह
मार्गदर्शन। प्रत्येक ने हजारों ऐसे मार्गदर्शन दिए हैं
अबू हनीफ़ा, अल-शफ़ीई, बायज़िद जैसे उदाहरणात्मक फल
अल-बिस्तामी, 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी, शाह नक्शबंद,
इमाम ग़ज़ाली, और इमाम रब्बानी। को स्थगित करना
हमारे अवलोकनों के विवरण के आधार पर, हमें उस चमत्कार करने वाले और मार्गदर्शन प्रदान करने वाले पर आशीर्वाद की प्रार्थना करनी चाहिए, जो उसके कुछ विशेष चमत्कारों का संदर्भ देता है:

> उस पर जो सत्य का बुद्धिमान मानदंड भेजा गया था
> (कुरान) सर्वशक्तिमान और दयावान अल्लाह की तरफ से, हमारे प्रभु, महान सिंहासन से
> मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को हजारों बार, हजारों बार,
>
> अपने समुदाय के अच्छे कामों के लिए।

उस पर जिसकी पैग़म्बरी की भविष्यवाणी की गई थी
टोरा, सुसमाचार और भजन; जिनके पैगंबर होने की भविष्यवाणी अद्भुत संकेतों द्वारा की गई थी
उनकी पैगम्बरी से पहले, जिन्न, संतों,
और ज्योतिषी; और जिनके इशारे पर चाँद फूट गया -
हमारे स्वामी मुहम्मद - शांति और आशीर्वाद हजारों और हजारों बार,

अपने समुदाय की सांसें।
जिसके इशारे पर वृक्ष आये थे,
जिसकी प्रार्थना से वर्षा शीघ्र होती थी; जिसे बादल गर्मी से बचाता था;
जिसके भोजन की थाली से सैकड़ों लोग प्रसन्न होते थे।
कितने लोग तृप्त हुए; जिनकी अंगुलियों से तीन-तीन जल निकले
समय कवथर के झरने की तरह बह निकला; और
जिन्हें परमेश्वर ने बोलने के लिए बनाया है, वे हैं छिपकली, हिरन, भेड़िया, ऊँट,
पहाड़, चट्टान, खंभा और मिट्टी का ढेला; वह जो
स्वर्गारोहण (मिराज) किया और "जिसकी आँख नहीं खुली
डगमगाओ"—हमारे स्वामी और सिफ़ारिश करनेवाले मुहम्मद—
उस पर हज़ारों हज़ार बार शांति और आशीर्वाद हो, अक्षरों की संख्या के अनुसार (

कुरान) का निर्माण शब्दों से किया गया है
सर्व-करुणामय की अनुमति दर्पण में
कुरान के सभी शब्दों के पाठ पर वायु तरंगें
प्रकाशितवाक्य के आरंभ से लेकर अंत तक के सभी वाचक
समय का अंत। हमें क्षमा करें और हम पर दया करें, हे
हे परमेश्वर, इन सभी आशीषों के लिए। आमीन।

चौदहवीं बूंद: बुद्धिमान कुरान, चमत्कारों का खजाना और स्वयं एक सर्वोच्च चमत्कार, वह अपनी पैगम्बरी और ईश्वर की एकता को इतनी निर्णायकता से साबित करता है कि अब किसी और सबूत की जरूरत नहीं है।

हम इसकी परिभाषा देंगे और एक या दो का उल्लेख करेंगे
इसकी चमत्कारिकता की आलोचना की गई है।

विवेकपूर्ण कुरान, जो हमारे स्वामी को ज्ञात कराता है
हमारे लिए, वह महान पुस्तक का शाश्वत अनुवादक है
ब्रह्माण्ड। यह दिव्य के खजाने का खुलासा करता है
पृथ्वी और स्वर्ग के पन्नों में छिपे नाम, और घटनाओं के पीछे की सच्चाई की कुंजी है,
सर्व-करुणामय के उपकारों का भण्डार, और
अदृश्य से परे से आने वाले शाश्वत संबोधन
इस दृश्यमान दुनिया का पर्दा। यह इस्लाम का सूरज है
आध्यात्मिक और बौद्धिक दुनिया, इसकी नींव और
योजना, और परलोक की दुनिया का नक्शा।
इसके अलावा, यह दिव्य सार का व्याख्याता है,
सुस्पष्ट व्याख्याकार, स्पष्ट प्रमाण, और स्पष्ट अनुवादक, साथ ही साथ इसकी विशेषताओं और आवश्यक
गुण। यह मानवता का शिक्षक, प्रशिक्षक, मार्गदर्शक और मार्गदर्शक है।
नेता, साथ ही सच्चा ज्ञान, ज्ञान की एक किताब और
कानून, प्रार्थना और पूजा, आदेश और आह्वान,
और ईश्वर का आह्वान और ज्ञान। इसमें शामिल है
मानवता की सभी आध्यात्मिक आवश्यकताओं के लिए पुस्तकें, और यह
एक पवित्र पुस्तकालय जिसमें सभी संत,
सभी परम सत्यनिष्ठ लोगों ने, तथा सभी शुद्ध एवं विवेकशील विद्वानों ने अपने-अपने विशिष्ट मार्ग निकाले हैं।

इसके दोहराव में चमत्कारीपन के प्रकाश पर विचार करें, जिसे एक दोष माना जाता है। चूँकि

कुरान प्रार्थना और आह्वान की पुस्तक है, आह्वान या निमंत्रण की पुस्तक है [इसके शाश्वत सत्य को स्वीकार करने और शाश्वत खुशी प्राप्त करने के लिए], पुनरावृत्ति वाक्पटुता का एक वांछनीय और सबसे आवश्यक और सुंदर उदाहरण है।

ईश्वर के आह्वान को हृदय को प्रभावित करने और प्रबुद्ध करने के लिए बार-बार दोहराए जाने की आवश्यकता होती है। बार-बार दोहराए जाने से, प्रार्थना हृदय को शक्ति प्रदान करती है और उसमें समाहित हो जाती है। आदेशों और आह्वानों को पुष्टि और लागू किए जाने के लिए बार-बार दोहराए जाने की आवश्यकता होती है।

हर कोई जब चाहे तब पूरा कुरान नहीं पढ़ सकता; आमतौर पर वे केवल एक सूरा (अध्याय) ही पढ़ पाते हैं। यही कारण है कि इसके सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों को अधिकांश लंबे अध्यायों में दोहराया गया है, जिनमें से प्रत्येक एक छोटे कुरान के रूप में काम कर सकता है। ईश्वरीय एकता, पुनरुत्थान और मूसा की कहानी जैसे कुछ उद्देश्यों और विषयों को दोहराया गया है ताकि कोई भी उनके लाभों से वंचित न रहे। आध्यात्मिक स्वाद और ज़रूरतें भी अलग-अलग होती हैं। हमें हर सांस में उनमें से कुछ की ज़रूरत होती है।

जिस तरह शरीर को हवा की ज़रूरत होती है, उसी तरह आत्मा को हू-हुवा (वह-ईश्वर) की ज़रूरत होती है। हमें हर घंटे दूसरों की ज़रूरत होती है, जैसे बिस्मिल्लाह (ईश्वर के नाम पर)। और इसी तरह। इसलिए आयतों का दोहराव ज़रूरतों की पुनरावृत्ति से उत्पन्न होता है।

कुरान उन आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिलाने, उन्हें गहराई से महसूस कराने तथा उन्हें संतुष्ट करने के लिए हमें प्रेरित करता है।

एक संस्थापक के रूप में अपनी भूमिका में, कुरान का आधार है एक स्पष्ट धर्म और इस्लामी संस्कृति की नींव
दुनिया। यह मानव सामाजिक जीवन को बदलने और जवाब देने के लिए आया था मानवता के आवर्ती प्रश्न। एक संस्थापक पुष्टि करने के लिए दोहराव का उपयोग करता है, और जोर देने के लिए पुनरावृत्ति करता है। एक नया स्थापना के लिए पुष्टि और सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता होती है, और इसलिए पुनरावृत्ति की भी।

कुरान में ऐसे महत्वपूर्ण मामलों की चर्चा की गई है।
सूक्ष्म सत्य जो विभिन्न संदर्भों में दोहराए जाते हैं
लोगों के मन और दिल पर उनके अलग-अलग पहलुओं को छापने के लिए यह ज़रूरी है। इस तरह की पुनरावृत्तियाँ महज़
स्पष्ट है, क्योंकि वास्तव में प्रत्येक शब्द के अनेक अर्थ, अनेक लाभ और अनेक पहलू और स्तर होते हैं। प्रत्येक स्थान पर, शब्द या छंद भिन्न अर्थ, उद्देश्य और लाभ के लिए भिन्न तरीके और संदर्भ में आते हैं।

कुरान में कुछ ब्रह्माण्ड संबंधी मामलों का संक्षिप्त और संकेतात्मक तरीके से उल्लेख किया गया है। इस पद्धति से ब्रह्मांड संबंधी मामलों का वर्णन नहीं किया जा सकता।
इसकी आलोचना नहीं की जा सकती, क्योंकि यह मानवता के मार्गदर्शक के रूप में अपनी भूमिका में इसकी चमत्कारिकता का एक और उदाहरण है।

प्रश्न: कुरान में ऐसा क्यों नहीं कहा गया है?
विज्ञान और भौतिकवाद की तरह ही
या प्रकृतिवादी दर्शन? इसमें कुछ विषयों का संक्षिप्त उल्लेख है, तथा अन्य का स्पष्टतः सरल और

सतही तरीका जिससे हर कोई उन्हें समझ सके
आसानी से।

उत्तर: वैज्ञानिकता और भौतिकवादी दर्शन
सत्य के मार्ग से भटक गए हैं। जैसा कि कुरान में कहा गया है
यह विज्ञान की पुस्तक नहीं है, तो इसमें ब्रह्माण्ड संबंधी विषयों पर विस्तार से क्यों लिखा गया है? इसमें सृष्टि के कुछ तथ्यों का उल्लेख किया गया है, ताकि ईश्वरीय सार, गुण,

और नाम। यह पुस्तक का अर्थ समझाता है
ब्रह्माण्ड को उसके रचयिता को ज्ञात कराना। इसलिए
यह सृजन को केवल ज्ञान के लिए मानता है
अपने रचयिता के बारे में। विज्ञान, जो केवल सृजन को ही मानता है
अपने स्वयं के हित के लिए, आमतौर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हैं।
हालाँकि, कुरान मानवता को संबोधित करता है।
मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए साक्ष्य और प्रमाण के रूप में सृष्टि,
जिनमें से अधिकांश आम लोग हैं, इसका प्रमाण यह है
आसानी से समझ में आने योग्य होना चाहिए। मार्गदर्शन की आवश्यकता है
कि केवल महत्वहीन बातों पर ही विचार किया जाए, और
सूक्ष्म बिंदुओं को दृष्टांतों के माध्यम से समझने योग्य बनाया जाना चाहिए। लोगों को गुमराह न करने के लिए, इसमें बदलाव नहीं होना चाहिए
जिसे वे स्पष्ट मानते हैं, वह जानकारी बेकार या हानिकारक हो जाती है।

उदाहरण के लिए, यह सूर्य को “चलता हुआ दीपक” कहता है।
सूर्य का उल्लेख अपने लिए नहीं बल्कि इसलिए किया गया है क्योंकि
यह व्यवस्था का “मुख्य आधार” और व्यवस्था का केंद्र है
ब्रह्माण्ड की व्यवस्था, और व्यवस्था और व्यवस्था दो तरीके हैं

सृष्टिकर्ता के बारे में जानने का तरीका। यह कहकर: और
सूर्य अपनी गति से चलता है (36:38), यह ऋतुओं, दिन और रात के परिक्रमण में ईश्वरीय शक्ति की सुव्यवस्थित व्यवस्था का सुझाव देता है, और इस प्रकार इसका तात्पर्य है
निर्माता की महिमा। इस चलने की वास्तविकता जो भी हो , इससे इच्छित अर्थ को कोई नुकसान नहीं होता है, जो
ब्रह्मांड में बुना गया मनाया गया क्रम है
संरचना।

कुरान में यह भी कहा गया है: और उसने सूर्य को बनाया
एक दीपक (71:16)। सूर्य को दीपक के रूप में चित्रित करके,
कुरान लोगों को याद दिलाता है कि दुनिया एक महल की तरह है
सूर्य द्वारा प्रकाशित, और इसकी सामग्री (जैसे,
सजावट, प्रावधान और अन्य आवश्यकताएं)
मानवता और अन्य जीवित प्राणियों के लिए तैयार किया गया।
इसलिए यह सृष्टिकर्ता की दया और उदारता का संकेत देता है।

अब विचार करें कि विज्ञान और भौतिकवाद किस प्रकार एक दूसरे से भिन्न हैं।
दर्शनशास्त्र सूर्य से संबंधित है: "सूर्य जलती हुई गैसों का एक विशाल पिंड है।
यह ग्रहों का कारण बनता है,
जो इससे दूर फेंक दिए गए हैं, चारों ओर घूमने के लिए
यह इस प्रकार का है और इस प्रकार का है। यह इस प्रकार का है और इस प्रकार का है
गुण…" ऐसा वर्णन पूर्णता नहीं देता
आत्मा के लिए ज्ञान का, लेकिन केवल एक भयानक भय
और घबराहट। यह इस मामले को इस तरह से भी देखता है
कुरान से अलग तरीका।

इस तुलना से आप मूल्य का अंदाजा लगा सकते हैं
केवल वैज्ञानिक और दार्शनिक तरीके से
यह सोचकर कि पूर्व बाहर से तो भव्य है, लेकिन
अंदर से खोखला। इसलिए वैज्ञानिक विवरण और अनादर के बाहरी महत्व से प्रभावित न हों
कुरान की सबसे चमत्कारी शैली.

हे ईश्वर! हमारे लिए और उन सभी के लिए जो इसकी नकल करते हैं, कुरान बनाइए।
यह हमारी सभी बीमारियों का इलाज है, हमारा साथी है और
जीवन में और मृत्यु के बाद उनके लिए, दुनिया में एक दोस्त,
कब्र में एक विश्वासपात्र, क़यामत के दिन एक मध्यस्थ
न्याय, सीरत पर एक प्रकाश, एक पर्दा और
नरक की आग से एक स्क्रीन, स्वर्ग में एक दोस्त, और एक मार्गदर्शक
और आपकी कृपा, उदारता, उपकार और दया से सभी अच्छे कार्यों का नेता, हे परम दयालु
अत्यंत दयालु, अत्यंत कृपालु दयालुओं में से एक है।
आमीन.

हे ईश्वर, उस पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करें।
जिस पर तूने ज्ञानपूर्ण क़ुरआन भेजा, जो सत्य का मापदण्ड है
और झूठ, और उसके परिवार और साथियों पर।
आमीन.

उन्नीसवाँ पत्र

पैगम्बर मुहम्मद के चमत्कार

(नोट: इस ग्रंथ में संबंधित सभी परंपराएं 1
याददाश्त, क्योंकि मेरे पास संदर्भ के लिए कोई पुस्तक नहीं है।
शब्दों में गलतियाँ हैं, कृपया सुधारें
उन्हें या तो समझिए या फिर उनका संक्षिप्त अनुवाद मानिए।
परंपरा विद्वानों के बीच प्रचलित राय,
इस तरह के अनुवाद की अनुमति है।)

यह ग्रंथ मुहम्मद के2 चमत्कारिक कार्यों को दर्शाता है

300 से अधिक चमत्कारों के माध्यम से संदेशवाहक का कार्य

उन्होंने काम किया, और यह एक चमत्कार है:

---

1 अरबी शब्द हदीस, जिसका सामान्यतः अंग्रेजी में अनुवाद होता है
परंपरा का शाब्दिक अर्थ है समाचार, कहानी, संचार या वार्तालाप, चाहे वह धार्मिक हो या धर्मनिरपेक्ष, ऐतिहासिक हो या हालिया।
कुरान में यह शब्द धार्मिक (39:23, 68:44), धर्मनिरपेक्ष या सामान्य (6:68), ऐतिहासिक (20:9) और वर्तमान या संवादात्मक (66:3) संदर्भों में आता है। पैगंबर ने इसे इसी तरह के अर्थ में इस्तेमाल किया,
उदाहरण के लिए, जब उन्होंने कहा: “सबसे अच्छी हदीस कुरान है”
(बुखारी) हालाँकि, मुहद्दिथिन (परंपरावादियों) के अनुसार
[परंपराओं के विद्वान]), यह शब्द "पैगंबर के अधिकार, उनके कार्यों, कथनों, मौन सहमति पर प्रसारित की गई बातों" के लिए है
अनुमोदन, या उसकी शारीरिक उपस्थिति का विवरण।" न्यायविद
इस अंतिम आइटम को अपनी परिभाषा में शामिल न करें। (ट्र.)

[2] पैगम्बर मुहम्मद से संबंधित किसी भी प्रकाशन में उनका नाम नहीं लिखा जाएगा।
या शीर्षक के बाद “उस पर शांति और आशीर्वाद हो” लिखा है, यह दिखाने के लिए

प्रथम: यद्यपि यह ग्रंथ 100 से अधिक विषयों पर प्रकाश डालता है। 100 पृष्ठों की यह पुस्तक परम्पराओं और आख्यानों पर आधारित है। मैंने इसे ग्रामीण इलाकों में 2 या 3 दिनों तक काम करते हुए लिखा था। घंटे प्रतिदिन। मैंने इसे 2 या 3 दिनों में पूरा कर लिया, केवल काम करके स्मृति से.

दूसरा: अपनी लंबाई के बावजूद, यह ग्रंथ लेखकों को बोर कर दिया या इसकी किसी भी सुखदता को खो दिया पाठकों की आँखें। वास्तव में, इसने कुछ आलसी लेखकों में भी इतना उत्साह जगाया है कि इन कठोर और
यह दुखद है कि इस इलाके में एक साल के भीतर 70 से अधिक प्रतियां हाथ से लिखी गई हैं।
इस ग्रंथ के भेद से अवगत होकर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि

यह उनके दूतत्व से आने वाला एक आश्चर्य होना चाहिए
चमत्कारिकता.

नौ लेखकों द्वारा हस्तलिखित प्रतियों में शामिल हैं-
तवाफ़ुक़ से अनभिज्ञ और अनुभवहीन व्यक्ति , [4]

उनके प्रति हमारा सम्मान और क्योंकि यह एक धार्मिक कर्तव्य है। साथियों और अन्य प्रतिष्ठित मुसलमान: "अल्लाह प्रसन्न हो उसके साथ” का प्रयोग किया गया है। हालाँकि, चूँकि यह गैर-मुस्लिम पाठकों को विचलित कर सकता है, इसलिए ये वाक्यांश इस लेख में नहीं दिखाई देते हैं। पुस्तक, इस समझ पर कि उन्हें मान लिया गया है और नहीं अनादर का इरादा है। (संपादक)

3 नूर (प्रकाश) ग्रंथों की 1950 तक गुप्त रूप से हाथ से प्रतिलिपि बनाई जाती थी । क्योंकि उस समय की सरकार इस्लाम के प्रति शत्रुतापूर्ण थी और धार्मिक मुसलमानों को सताया गया। (ट्र.)

4 तवाफ़ुक़: ईश्वर द्वारा चीज़ों और घटनाओं को इस तरह व्यवस्थित करना कि उसके बन्दों को अच्छा परिणाम प्राप्त हो, जैसे अनजाने में की गई व्यवस्था

पैगम्बर को संदर्भित करने वाले शब्द पाए गए

पूरे ग्रंथ में अनजाने में एक दूसरे के नीचे व्यवस्थित किया गया है। पांचवें भाग में भी यही बात है

कुरान का संदर्भ देते हुए ये शब्द।

निष्पक्ष विचार वाले लोग इस तवाफ़ुक़ को महज़ एक तरीक़ा नहीं समझेंगे।

संयोग नहीं, बल्कि एक रहस्यमय संकेत और

उनके चमत्कारी संदेशवाहकत्व से उत्पन्न आश्चर्य।

ग्रंथ के आरंभ में बताई गई आवश्यक बातें

बहुत महत्वपूर्ण हैं। पैगंबरी परंपराएं संबंधित हैं

परंपरावादियों के अनुसार, इसमें सभी बातें प्रामाणिक हैं,

और उनके संदेशवाहकत्व से संबंधित सबसे स्थापित घटनाओं की रिपोर्ट करें। इस ग्रंथ

की गणना करने के लिए

उपयोगिता, उसी लंबाई का एक और होगा

इसलिए हम उन लोगों को आमंत्रित करते हैं जो चाहते हैं

इसे पढ़कर इसकी उपयोगिता का पता लगाएं।

- नर्सी ने कहा

[सईद नूरसी कभी-कभी अपने लेखन की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। यह आत्म-प्रशंसा के लिए नहीं किया जाता है। बल्कि, एक लेखक के रूप में

मुस्लिम मार्गदर्शक और प्रेरित विद्वान इस्लामी विश्वास, उपासना और नैतिकता के स्तंभों को समझाने के साथ-साथ उन्हें लोगों के मन में स्थापित करने के लिए समर्पित हैं।

और हृदय, और सत्य के प्रति पूर्णतः आश्वस्त होना

वह जो कुछ भी लिखता है, उसमें मार्गदर्शन के लिए आवश्यक शैली का पालन करता है। हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए, साथ ही साथ

किसी पृष्ठ पर या एक ही पंक्ति में एक के नीचे एक प्रमुख शब्दों का प्रयोग

अलग-अलग पृष्ठों पर रखें। (ट्र.)

वह अवधि जिसके दौरान उन्होंने लिखा - एक बहुत कठिन समय जिसके दौरान इस्लाम पर गंभीर हमला किया गया और इस्लामी गतिविधियों को सख्त नियंत्रण में रखा गया और प्रतिबंधित कर दिया गया। (ट्र.)]

उनके चमत्कार

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो
उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

उसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा है, ताकि उसे हर धर्म से ऊपर उठा दे। गवाही के लिए अल्लाह ही काफी है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। (48:28-29)

चूँकि मुहम्मद की पैगम्बरी उन्नीसवीं और इकतीसवीं आयत में सिद्ध हो चुकी है, इसलिए यहाँ हम उन्नीस संकेतों में उस महान सत्य की कुछ झलकियाँ ही प्रस्तुत कर रहे हैं।

पहला संकेत: ब्रह्माण्ड का स्वामी और मालिक

हर काम ज्ञान से करता है, हर काम को बुद्धि से नियंत्रित करता है, हर काम को पूरी तरह से निर्देशित करता है, हर काम को पूरी तरह से नियंत्रित करता है, और हर काम को इस तरह से व्यवस्थित करता है कि वह अपने उद्देश्यों और उपयोगों को प्रदर्शित करे। जैसा कि बनाने वाला जानता है, वह जो बनाने वाला है

जानता है कि वह बोलेगा। चूँकि वह बोलेगा, इसलिए वह बोलेगा जिनके पास चेतना, विचार और वाणी है।

चूँकि वह ऐसे लोगों से बात करेगा, वह बोलेगा मानवता के लिए, जिसका स्वभाव और जागरूकता है सभी चेतन प्राणियों में सबसे व्यापक। चूँकि वह मानवता से बात करेंगे, वह उनसे बात करेंगे सबसे उत्तम और सम्बोधन के योग्य। चूँकि वह सबसे उत्तम और सम्बोधन के योग्य व्यक्ति से बात करो, वह सर्वोच्च नैतिकता का स्वामी है और मानवता का मार्गदर्शन करेगा, वह मुहम्मद से बात करेगा, जो सर्वोच्च स्वभाव और नैतिकता वाला है और जिसका अनुसरण किया जाता है (सबसे अधिक) मानवता के पांचवें हिस्से द्वारा (ईमानदारी से)

आधी दुनिया ने उनके आध्यात्मिक विश्वास को स्वीकार कर लिया है। शासन करते हैं, और उनके प्रकाश की चमक ने 13 शताब्दियों से अधिक समय तक मानवता को प्रकाशित किया है। विश्वासियों, प्रकाशित मानवता के इस वर्ग के लोग अपनी निष्ठा की शपथ को नवीनीकृत करते हैं दिन में पांच बार उसकी खुशी के लिए प्रार्थना करें, भगवान का आह्वान करें उस पर आशीर्वाद रखें, उसकी प्रशंसा करें और उससे प्यार करें। वह मुहम्मद से बात करेगा और उसे अपना बना लेगा वह अल्लाह का पैगम्बर और मानवता का मार्गदर्शक है। ऐसा किया।

दूसरा संकेत: पैगम्बर ने अपने पैगम्बर होने का ऐलान किया और कुरान और करीब 1,000 चमत्कारों को पेश करके इसे साबित किया। उनका होना भी उतना ही निश्चित है जितना कि उनका होना। पैगम्बर होने का एलान। एक और सबूत यह है कि

कुरान में कहा गया है कि सबसे जिद्दी अविश्वासी
उस पर जादू-टोना करने का आरोप लगाया। चमत्कारों को नकारने में असमर्थ,
उन्होंने खुद को संतुष्ट करने के लिए उन्हें जादू-टोना कहा
या अपने अनुयायियों को गुमराह करने के लिए।

मुहम्मद के चमत्कार इतने निश्चित हैं कि
परंपरावादियों ने सर्वसम्मति से इसकी पुष्टि की और इसकी रिपोर्ट दी। चमत्कार
ब्रह्मांड के निर्माता का है।
उनकी पैगम्बरी की पुष्टि और इसका प्रभाव
का: “तुमने सच कहा है।” उदाहरण के लिए, यदि कोई
शासक की उपस्थिति में दावा करता है कि शासक ने उसे किसी विशेष पद पर
नियुक्त किया है, शासक का "हाँ" मान्य है
व्यक्ति के दावे को साबित करने के लिए पर्याप्त है। इसके अलावा, अगर
शासक अपनी सामान्य कार्यप्रणाली और दृष्टिकोण में परिवर्तन करता है
इससे उस व्यक्ति का दावा और भी पुष्ट हो जाता है।

पैगम्बर ने दावा किया कि वह ईश्वर के निर्माता हैं।
ब्रह्मांड के दूत, और भगवान ने, बदले में, अपना बदल दिया
उनकी प्रार्थना और अनुरोध पर अखंड क्रम ताकि
चमत्कार उसके दावे को साबित कर देंगे। उसके सैकड़ों चमत्कारों में से कुछ हैं
उसकी उंगलियों से पानी बहना, उसकी उंगली के इशारे से चाँद को चीर देना,

एक पेड़ को उसके करीब आकर पुष्टि करने और फल देने के लिए
उसकी गवाही देना, और 200 या 300 लोगों को खाना खिलाना
केवल 2 या 3 लोगों के लिए पर्याप्त भोजन।

हालाँकि, उसकी सच्चाई और उसके सबूत
पैगम्बरत्व के प्रमाण केवल उनके चमत्कारों तक ही सीमित नहीं हैं।

वास्तव में, उसके सभी कर्म और कृत्य, शब्द और
व्यवहार, नैतिक आचरण और शिष्टाचार, साथ ही चरित्र और उपस्थिति, उसकी सच्चाई और गंभीरता को साबित करते हैं। दरअसल, उस समय के प्रसिद्ध यहूदी विद्वान अब्दुल्ला इब्न अल-सलाम जैसे लोग मानते थे कि वह एक सच्चे इंसान थे।

पहली नज़र में ही उस पर विश्वास कर लिया और कहा: "इसमें कोई झूठ नहीं छिप सकता
न तो कोई चेहरा है, न ही उसमें कोई कपट पाया जा सकता है।"

प्रखर विद्वानों का कहना है कि उनके द्वारा दिए गए साक्ष्य
पैगम्बरत्व और उनके चमत्कारों की संख्या लगभग 1,000 है;
हालाँकि, हकीकत में यह केवल शुरुआत है।
अनगिनत लोगों ने अपने-अपने तरीके से इसकी पुष्टि की है, और कुरान स्वयं हजारों उदाहरण प्रस्तुत करता है।
इसके अपने 40 पहलुओं के अतिरिक्त इस तरह के प्रमाण भी हैं
चमत्कारी। चूँकि पैगम्बर होना एक तथ्य है, और इससे भी अधिक
100,000 से अधिक लोगों ने इसका दावा किया है और इस पर काम किया है
चमत्कार, मुहम्मद की पैगम्बरी स्थापित है
किसी भी अन्य पैगम्बर की पैगम्बरी की तुलना में अधिक सुरक्षित है।
इससे संबंधित सभी साक्ष्य, गुण और विशेषताएं
अन्य पैगम्बरों की पैगम्बरी का वर्णन अधिक विस्तृत रूप में मिलता है।
व्यक्ति में परिपूर्ण एवं व्यापक तरीके से
पैगम्बर मुहम्मद। यह देखते हुए, वह कहीं अधिक होना चाहिए
पैगम्बर चुने जाने के योग्य।

तीसरा संकेत: उसके चमत्कार बहुत विविध हैं।
उनका संदेशवाहक होना सार्वभौमिक है, वे प्रतिष्ठित हैं
लगभग सभी प्रकार के जीवों से जुड़े चमत्कारों द्वारा

जब किसी गौरवशाली शासक का सहायक विभिन्न उपहार लेकर किसी नगर में प्रवेश करता है, तो प्रत्येक वर्ग का प्रतिनिधि उसका अपनी भाषा में खुशी-खुशी स्वागत करता है।

इसी तरह, जब सनातन प्रभु के सर्वोच्च दूत ने मानवता के लिए एक दूत के रूप में ब्रह्मांड का सम्मान किया और सृष्टिकर्ता के सत्य के प्रकाश और ब्रह्मांड की सच्चाइयों से संबंधित आध्यात्मिक उपहारों को लेकर आए, तो हर प्रजाति ने उनका पैगंबर के रूप में स्वागत किया - खनिज तत्वों से लेकर पौधों, जानवरों और मनुष्यों तक, और चंद्रमा और सूर्य से लेकर सितारों तक - प्रत्येक ने अपनी भाषा में और उनके चमत्कारों में से एक को लेकर। उनके सभी चमत्कारों का उल्लेख करने के लिए कई खंडों की आवश्यकता होगी। शुद्ध-आत्मा वाले सावधानीपूर्वक विद्वानों ने उनकी पैगंबरी के प्रमाणों के बारे में कई खंड संकलित किए हैं, इसलिए यहां हम केवल उन चमत्कारों की मुख्य श्रेणियों को संक्षेप में इंगित करते हैं जिन्हें सर्वसम्मति से प्रामाणिक माना जाता है।

ये प्रमाण दो मुख्य श्रेणियों में आते हैं। पहली (इरहासात) में उनके जन्म से पहले, उनके जन्म के समय और उनके पैगम्बर बनने से पहले की चमत्कारी घटनाएँ शामिल हैं। दूसरी श्रेणी अन्य सभी प्रमाणों से संबंधित है और इसकी दो उपश्रेणियाँ हैं: उनकी मृत्यु के बाद की अद्भुत घटनाएँ और उनकी पैगम्बर बनने के दौरान प्रदर्शित की गई घटनाएँ।

इस बाद वाले समूह को प्रमाण मैनि- में विभाजित किया गया है

अपने स्वयं के व्यक्तित्व, नैतिक आचरण और परिपूर्णता में निहित
चरित्र, और वे चमत्कार जो बाहरी दुनिया से संबंधित हैं। इस दूसरे उपसमूह में चमत्कार शामिल हैं
आध्यात्मिकता और कुरान से संबंधित, और भौतिक वास्तविकता और सृष्टि से संबंधित।

बाद वाली श्रेणी को आगे विभाजित किया गया है
उनके मिशन के दौरान चमत्कारिक घटनाएँ हुईं जो या तो टूट गईं
अविश्वासियों की अड़ियल प्रवृत्ति या विश्वास को मजबूत करना
इस शाखा में 20 अलग-अलग प्रकार हैं, जिनमें से प्रत्येक
कई उदाहरण हैं और कम से कम
मतलब, सर्वसम्मति से पुष्टि (जैसे, विभाजन)
चाँद, उसकी उंगलियों से बहता पानी, कई लोगों को संतुष्ट करता है
कम भोजन वाले लोग, और जानवरों, पेड़ों और चट्टानों द्वारा संबोधित किए जाने वाले लोग)। दूसरी शाखा में शामिल हैं
कुछ भविष्य की घटनाएँ ठीक वैसी ही घटित हुईं जैसा उसने पहले से बताया था।5

चौथा संकेत: भविष्य में होने वाली घटनाएँ जो उसने पहले से बतायी थीं,
अदृश्य के ज्ञाता के निर्देश के माध्यम से,
गिनती से परे। चूँकि पूर्ववर्ती युगों, पैगम्बरों और उनकी जातियों के बारे में उनकी सच्ची रिपोर्टें अधिकतर
कुरान में जो कुछ पाया जाता है, हम यहाँ उनमें से केवल कुछ का ही उल्लेख कर रहे हैं।
अपने साथियों के विषय में उनकी सही भविष्यवाणियाँ,

---

5 दुर्भाग्यवश, मैं वैसा नहीं लिख सका जैसा मैं चाहता था, और इसलिए
जैसा मेरा दिल कह रहा था वैसा ही लिखा। मैं इस आदेश का पालन नहीं कर सका
वर्गीकरण.

परिवार और समुदाय। विषय की पूरी समझ सुनिश्चित करने के लिए, हम छह आवश्यक बातें बताते हैं:

एक प्रस्तावना.

पहला आवश्यक: पैगम्बर का हर कार्य और अवस्था उनकी पैगम्बरी और ईमानदारी की गवाही देता है। लेकिन उनमें से सभी को चमत्कारी होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह था सर्वशक्तिमान द्वारा मार्गदर्शन के लिए एक मानव के रूप में भेजा गया और मनुष्यों को उनके सामूहिक मामलों में नेतृत्व प्रदान करें और इस संसार और संसार दोनों में सुख के लिए व्यक्तिगत कर्म अगला, और भगवान की कला के चमत्कारों का खुलासा करने के लिए और उसकी शक्ति के कार्य, जिनमें से प्रत्येक एक चमत्कार है, हालांकि यह हमें साधारण और परिचित लगता है। यदि वह अपने सभी कार्यों में असाधारण होता, तो वह

मनुष्यों का मार्गदर्शन न करें और उन्हें निर्देश न दें उसके कार्य, स्थितियाँ और दृष्टिकोण।

अपने अंध-विश्वासियों को अपनी पैगम्बरी साबित करने के लिए उन्हें कुछ असाधारण चमत्कार प्रदान किए गए थे, इसलिए उन्होंने ज़रूरत पड़ने पर चमत्कार किए। लेकिन उनके चमत्कार कभी ऐसे नहीं थे कि लोग उन पर विश्वास करने के लिए मजबूर हो जाएं।

उनकी इच्छा के विरुद्ध विश्वास न करें, क्योंकि यह मानव जाति को नष्ट कर देगा परीक्षण और परीक्षा के इस क्षेत्र में स्वतंत्र इच्छा। यदि ऐसा नहीं होता

तो, कोई विकल्प नहीं होता, जिसका अर्थ है कि अबू जहल भी अबू बकर की तरह ही मानते होंगे।

कि किसी को भी जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता था, इस जीवन और अगले जीवन में, उनके कर्मों के लिए।

यह आश्चर्य की बात है कि जबकि इतने सारे लोगों का मानना था
क्योंकि उन्होंने उसे आश्चर्यकर्म करते देखा था,
कुछ शब्द बोलो, या उसके चेहरे पर एक झलक पाओ, कुछ लोग आज ऐसे भटक जाते हैं जैसे ये हजारों सबूत
पर्याप्त नहीं हैं, हालांकि वे हमारे पास पहुंचते हैं
संचरण की प्रामाणिक लाइनें हैं और अनगिनत समझदार लोगों को इस्लाम स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया है।

दूसरा ज़रूरी: रसूल एक इंसान है और इसलिए इंसान की तरह काम करता है। वह ईश्वर का रसूल भी है और इस तरह वह ईश्वर का दुभाषिया और दूत भी है।

सर्वशक्तिमान.

उनका संदेश दो प्रकार के ईश्वरीय गुणों पर आधारित है
रहस्योद्घाटन: स्पष्ट और निहित। स्पष्ट-यह रहस्योद्घाटन के मामले में, मैसेंजर केवल व्याख्या करता है और
घोषणा करता है - उसकी विषय-वस्तु में उसका कोई हिस्सा नहीं है।
कुरान और वे पवित्र परंपराएँ (हदीस कुदसी जिनके अर्थ और विषयवस्तु केवल ईश्वर [6]) के हैं, लेकिन जिनके शब्द पैगंबर के हैं,

यहाँ शामिल हैं। अंतर्निहित रहस्योद्घाटन के मामले में,
जिसका सार और मूल ईश्वरीय शक्ति पर आधारित है
रहस्योद्घाटन और प्रेरणा, पैगंबर की अनुमति है
उन्हें समझाएँ और उनका वर्णन करें। जब वह ऐसा करता है, तो वह भरोसा करता है

---

6 हदीस कुदसी: यह कथनों की एक विशिष्ट श्रेणी है।
पैगम्बर। शब्द तो पैगम्बर के हैं, लेकिन अर्थ पैगम्बर का है।
भगवान के लिए. (ट्र.)

या तो प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन और प्रेरणा पर या अपनी खुद की अंतर्दृष्टि पर। अपनी खुद की व्याख्या करते समय, वह या तो अपने पैगंबरी मिशन के कारण उसे दी गई बोधगम्य शक्ति पर भरोसा करता है या अपने समय के सामान्य उपयोगों, रीति-रिवाजों और समझ के प्रकारों के अनुरूप एक व्यक्ति के रूप में बोलता है।

इस प्रकार प्रत्येक पैगम्बरी परंपरा के सभी विवरण आवश्यक रूप से शुद्ध रहस्योद्घाटन से प्राप्त नहीं होते हैं, न ही उनके संदेशवाहक होने के उत्कृष्ट संकेतों को उनके मानवीय विचारों और व्यवहारों में खोजा जाना चाहिए। चूँकि कुछ सत्य उन्हें संक्षिप्त और अमूर्त रूप में बताए गए हैं

यद्यपि वह अपने अन्तर्दृष्टि के माध्यम से तथा सामान्य समझ के अनुसार उनका वर्णन करता है, तथापि उसके द्वारा प्रयुक्त रूपकों, रूपकों या अस्पष्टताओं को स्पष्टीकरण या व्याख्या की आवश्यकता हो सकती है।

याद रखें कि मानव मन कुछ सत्यों को केवल सादृश्य के माध्यम से ही समझ सकता है। उदाहरण के लिए, एक बार पैगंबर की उपस्थिति में एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने कहा: "यह एक चट्टान की आवाज़ है जो 70 वर्षों से नीचे की ओर लुढ़क रही है और अब नरक की सबसे निचली गहराई तक पहुँच गई है।" एक घंटे बाद, खबर आई कि एक कुख्यात पाखंडी जो हाल ही में 70 वर्ष की आयु में पहुँचा था, मर गया और नरक में चला गया। इस रिपोर्ट ने पैगंबर के वाक्पटु दृष्टांत की व्याख्या दिखाई।

तीसरा आवश्यक: कई लोगों द्वारा संबंधित परंपरा
विश्वसनीय अधिकारियों (तवातुर) निर्विवाद है और
दो प्रकार के: स्पष्ट तवातुर (विश्वसनीय अधिकारियों द्वारा संचरण की कई श्रृंखलाओं वाली परंपरा)
और अर्थ के संबंध में तवातुर । यह दूसरा
एक के भी दो प्रकार हैं: वे जो मौन द्वारा सहमत हो जाते हैं
और वे जो अलग-अलग लोगों द्वारा सर्वसम्मति से बताए गए हैं
लेकिन अलग शब्दों के साथ.

पहले मामले में, बिना किसी विवाद या विवाद को जन्म दिए, दूसरों की उपस्थिति में कही गई परंपरा
मौन रहने पर निहित स्वीकृति प्राप्त होती है।
जो चुप रहते हैं वे कथन में रुचि रखते हैं और त्रुटियों के प्रति बहुत संवेदनशील माने जाते हैं
झूठ, उनकी चुप्पी का अर्थ है कहीं अधिक स्वीकृति
निश्चितता। दूसरा प्रकार, तवातुर के संबंध में
अर्थ, तब होता है जब एक घटना को अलग-अलग लोगों द्वारा सर्वसम्मति से लेकिन अलग-अलग शब्दों में बताया जाता है,
क्योंकि इससे इसकी वास्तविक घटना का भी पता चलता है।
केवल एक संचरण श्रृंखला वाली रिपोर्ट कभी-कभी कुछ मामलों में तवातुर की डिग्री के बराबर होती है
परिस्थितियों या कुछ बाहरी संकेतों के माध्यम से।

पैगम्बर के अधिकांश चमत्कार और उनकी पैगम्बरी होने के प्रमाण इन दोनों श्रेणियों में आते हैं।
कुछ ही संचारकों की केवल एक श्रृंखला के माध्यम से संबंधित हैं, उन्हें निश्चित माना जा सकता है जैसे कि वे संबंधित हैं

तवातुर के ज़रिए , क्योंकि उन्हें पुष्ट अधिकारियों द्वारा स्वीकार किया गया है। ऐसे अधिकारियों में वे लोग शामिल थे जिन्होंने 100,000 से ज़्यादा परंपराओं को याद किया, जो इतने ईश्वर-सचेत थे कि 50 सालों तक उन्होंने सुबह की नमाज़ रात की नमाज़ के वुज़ू (स्नान) (लंबी रात तक जागकर बिताना) के साथ अदा की, और जिन्होंने परंपरा की छह प्रामाणिक पुस्तकों को संकलित किया।7

बहुत जांच के बाद स्वीकार की गई कोई भी परंपरा तवातुर की निश्चितता रखती है , भले ही उसमें केवल एक ही श्रृंखला हो, क्योंकि ऐसे लोग पैगंबर की परंपराओं और उच्च शैली से इतने परिचित थे कि वे 100 रिपोर्टों में से एक झूठी परंपरा को तुरंत पहचान सकते थे और उसे अस्वीकार कर सकते थे। जैसे एक कुशल जौहरी शुद्ध हीरे को पहचान लेता है, वैसे ही वे पैगंबर के शब्दों के साथ अन्य शब्दों को भ्रमित नहीं कर सकते थे। हालाँकि, इब्न अल-जौज़िया जैसे सावधानीपूर्वक अधिकारी अपनी आलोचना में इतने अतिरंजित थे कि उन्होंने कई प्रामाणिक परंपराओं को झूठा माना। इसका मतलब यह नहीं है

हर झूठे शब्द का अर्थ ग़लत है; बल्कि इसका मतलब यह है कि वह शब्द पैगम्बर से संबंधित नहीं है।

---

7 ये बुखारी (मृ. 1095) द्वारा संकलित परंपराओं की पुस्तकें हैं।

870), मुस्लिम (मृत्यु 875), अबू दाऊद (मृत्यु 888), तिर्मिधि (मृत्यु 892), इब्न माजा (मृत्यु 886), और अल-नासाई (मृत्यु 915)। (सं.)

प्रश्न: प्रत्येक परम्परा को प्रेषकों की एक श्रृंखला के माध्यम से संबंधित करने का क्या लाभ है, ताकि वे एक प्रसिद्ध घटना के लिए भी कह सकें: "यह अमुक से और अमुक से संबंधित है, आदि"?

उत्तर: इसके कई लाभ हैं, जैसे कि सत्यनिष्ठ और विश्वसनीय कथावाचकों, सावधानीपूर्वक परंपरावादियों की सर्वसम्मति को दिखाना, साथ ही साथ उल्लेखित विवेकशील अधिकारियों की एकमतता को दिखाना। साथ ही, यह दर्शाता है कि श्रृंखला में प्रत्येक विद्वान इसकी प्रामाणिकता पर अपनी मुहर लगाता है।

प्रश्न: शरिया के मूल नियमों की तरह चमत्कारों पर इतना जोर क्यों नहीं दिया गया?

उत्तर: शरिया के नियम ज़्यादातर लोगों द्वारा अपने जीवन को दिशा देने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं और ये सभी पर लागू होते हैं। दूसरी ओर, चमत्कारों के बारे में सभी को पता होना ज़रूरी नहीं है और उन्हें सिर्फ़ एक बार सुनने की ज़रूरत होती है।
उदाहरण के लिए, कुछ धार्मिक दायित्वों (जैसे कि अंतिम संस्कार की प्रार्थना) को केवल कुछ लोगों द्वारा ही मनाया जाना चाहिए, न कि पूरे समुदाय द्वारा। इसी तरह, चमत्कारों के बारे में भी केवल कुछ लोगों को ही जानने की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि चमत्कार, चाहे वह शरिया नियम से कितना भी मजबूत क्यों न हो, केवल एक या दो कथावाचकों द्वारा प्रसारित किया जाता है, जबकि शरिया नियम 10 या 20 लोगों द्वारा प्रसारित किया जाता है।

चौथा आवश्यक: संदेशवाहक ने कुछ ऐसी भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी की जो बार-बार होती हैं, न कि अलग-अलग घटनाओं की जिनका मानव इतिहास में विशेष महत्व है। उनके भी कई पहलू हैं, जिनमें से प्रत्येक को एक अलग परंपरा के माध्यम से समझाया गया है। एक रिपोर्टर इन पहलुओं को एक ही कथन की तरह जोड़ता है, जिससे परंपरा वास्तविकता से अलग दिखाई देती है।

उदाहरण के लिए, महदी के बारे में कई कहानियों में अलग-अलग विवरण और वर्णन हैं। लेकिन मामले की सच्चाई यह है कि ईश्वर के दूत ने रहस्योद्घाटन पर भरोसा करते हुए एक महदी के बारे में बताया जो हर सदी में विश्वासियों के मनोबल को बनाए रखने, उन्हें सामाजिक उथल-पुथल पर निराशा में पड़ने से रोकने और पैगंबर के परिवार (सबसे शानदार वंश) के सदस्यों के प्रति उनकी हार्दिक भक्ति को सुरक्षित रखने के लिए प्रकट होगा।8 उन्होंने हर सदी में एक महदी की भविष्यवाणी की जो समय के अंत के लिए वादा किए गए महान महदी के समान है। उदाहरण के लिए, अब्बासिद खलीफा अल-महदी, जिन्हें पैगंबर के परिवार से संबंधित माना जाता है, में महान महदी की कई विशेषताएं थीं। इसलिए, महदी के बारे में कहानियाँ अलग-अलग हैं

8 पैगम्बर का परिवार: पैगम्बर, अली, फातिमा, हसन और हुसैन। इन लोगों को अहल अल-बैत, यानी घर का परिवार (या लोग) के नाम से जाना जाता है। पैगम्बर की पत्नियाँ इस पदनाम में शामिल नहीं हैं। (ट्र.)

महान महदी के गुणों को भ्रमित करने के कारण
वे महान खलीफा या संत जो उनसे पहले आये थे।

पाँचवी ज़रूरी बात: चूँकि सिर्फ़ भगवान ही जानता है कि क्या हो रहा है
अदृश्य, पैगम्बर को स्वयं यह पता नहीं था।
अपने साथियों से कहा कि जो कुछ सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कहा है,
उससे अदृश्य के विषय में बातें कीं।

सर्वशक्तिमान सर्वशक्तिमान अत्यंत बुद्धिमान और दयालु भी है।
इसलिए उसकी बुद्धि और दया के लिए यह आवश्यक है कि
भविष्य की अधिकांश घटनाओं को छिपाना, क्योंकि लोग उनमें से कई को
अप्रिय मानते हैं, उनके बारे में कोई भी पूर्व जानकारी दुखद होगी। यही
कारण है कि हम ऐसा करते हैं
पता नहीं हम कब मरेंगे और दुर्भाग्य क्यों
हम अनुभव करेंगे कि पर्दे के पीछे ही रहेंगे
अदृश्य.

दिव्य बुद्धि और करुणा की भी आवश्यकता है
कि पैगम्बर को यह पता न चले कि आगे क्या होने वाला है
उसके बाद उसके परिवार और साथियों के साथ क्या हुआ
उसकी गहरी करुणा और कोमलता के कारण मृत्यु।9 फिर भी सर्वशक्तिमान
के पास एक था

---

[9] उदाहरण के लिए, ईश्वर के दूत ने एक बार अपनी पत्नियों से कहा: "काश!
मुझे पता था कि आपमें से कौन उस कार्यक्रम में भाग लेगा," जो दर्शाता है
कि उसे नहीं मालूम था कि आयशा जंग में हिस्सा लेंगी
ऊँट की। अगर उसे पता होता, तो उसके लिए उसका प्यार और स्नेह
चोट लगी है। हालांकि, बाद में उन्हें किसी तरह इस बारे में बताया गया और उन्होंने अली से
कहा: "शायद आप दोनों के बीच कोई मामला होगा
और आयशा। उसके साथ नरमी से पेश आओ और उसे सुरक्षित उसके घर पहुँचा दो।

उनमें से कुछ के बारे में उसे बताने के पीछे ईश्वरीय उद्देश्य था,
यद्यपि उनके सभी दुखद पहलू नहीं थे। उन्होंने पैगंबर को सुखद घटनाओं के बारे में बताया, या तो रूपरेखा में या विस्तार से, जिसे पैगंबर ने फिर बताया
उसके साथियों.

अंततः, उनकी ख़बरें सही-सही प्रसारित कर दी गईं
हमारे अपने युग में महान परंपरावादियों द्वारा
धर्मपरायणता, न्याय और सत्यनिष्ठा की पराकाष्ठा पर, और
जो ऐसी विशिष्ट चेतावनियों से डर से कांप उठते थे
जैसे: "जो कोई भी जानबूझकर मेरे बारे में झूठ बोलता है उसे आग में रहने के लिए तैयार रहना चाहिए"10 और लेकिन कौन करता है
जो परमेश्वर के विरुद्ध झूठ बोलता है, उससे बड़ा कौन है?
(39:32).

छठा ज़रूरी: कई इतिहास की किताबें और जीवनी-ग्रंथ पैगंबर के व्यवहार और चरित्र का वर्णन करते हैं। लेकिन ज़्यादातर किताबें उनके मानवीय स्वभाव पर चर्चा करती हैं, और इस तरह
उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व और उनके पवित्र अस्तित्व को नज़रअंदाज़ करें
प्रकृति, दोनों ही बहुत उदात्त और शानदार हैं। क्योंकि, "कारण जैसा है" के नियम के अनुसार
कर्ता, सभी मुसलमानों की प्रार्थनाओं का पुरस्कार है
उनकी सिद्धियों के विवरण में जोड़ा गया
जिस दिन उन्होंने अपनी पैगम्बरी की घोषणा की (सन् 1500 के अंत तक)
हर दिन उसे अनगिनत आह्वान प्राप्त होते हैं

10 Jalal al-Din al-Suyuti, Jami‘ al-Saghir; related from 70 Com-panions.

मुसलमानों के साथ-साथ ईश्वर की असीम दया भी है, जिसे वह समान रूप से प्राप्त करता है।

इसके अलावा, चूँकि वह सृष्टि का परिणाम और सबसे उत्तम फल है, साथ ही ब्रह्मांड के निर्माता का प्रिय और व्याख्याकार भी है, इसलिए उसकी सच्ची प्रकृति और सच्ची पूर्णताएँ उसके दर्ज मानवीय गुणों के विवरण में समाहित नहीं हो सकतीं। निश्चित रूप से बद्र की लड़ाई के दौरान सहायक के रूप में महादूत गेब्रियल और माइकल द्वारा सेवा की गई एक व्यक्ति की प्रतिष्ठा, उदाहरण के लिए, एक घोड़े की कीमत पर उसके सौदेबाजी के विवरण में नहीं खोजी जा सकती।

गलती से बचने के लिए, हमें उनके सच्चे स्वभाव और उनके संदेशवाहक पद पर उनके शानदार आध्यात्मिक व्यक्तित्व पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अन्यथा हम उनके प्रति अनादर दिखाने या उनके बारे में अनिश्चितताओं को मन में रखने का जोखिम उठा सकते हैं।

व्यक्ति।

निम्नलिखित सादृश्यों पर विचार करें: मान लीजिए कि एक पौधा लगाया गया खजूर का बीज अंकुरित होकर एक लंबा, फलदार वृक्ष बन जाता है जो ऊपर और बाहर की ओर बढ़ता है; या कि एक सेते हुए मोर के अंडे से चूजा निकलता है, एक सुंदर मोर में विकसित होता है, और दिव्य शक्ति की कलम से सुशोभित होकर और भी बड़ा और सुंदर हो जाता है। खजूर के बीज और अंडे में गुण, गुण और सटीक रूप से संतुलित तत्व होते हैं, लेकिन वे उतने आकर्षक और आकर्षक नहीं होते हैं।

पेड़ और उससे निकले मोर की तरह ही महत्वपूर्ण।

इसे देखते हुए, खजूर-पत्थर और अंडे के गुणों के साथ-साथ पेड़ और मोर के गुणों का वर्णन करते समय, प्रत्येक वस्तु के गुणों को अलग-अलग किया जाना चाहिए ताकि वर्णन का अनुसरण करने वाले किसी भी व्यक्ति को यह उचित लगे। यदि ऐसा नहीं किया जाता है (उदाहरण के लिए, यह दावा करना कि एक खजूर-पत्थर [और पेड़ नहीं] हज़ारों खजूर पैदा करता है, या यह कि अंडा [पहले से ही] पक्षियों का राजकुमार है), तो लोग विरोधाभास और इनकार की ओर ले जाएंगे।

ईश्वर के रसूल की मानवीय प्रकृति की तुलना खजूर के बीज या अंडे से की जा सकती है, लेकिन उनकी सच्ची प्रकृति, जो पैगम्बर के मिशन से प्रकाशित होती है, वह तूबा के पेड़ या जन्नत के शाही पक्षी की तरह है। इसके अलावा, उनकी सच्ची प्रकृति लगातार और अधिक परिपूर्ण होती जा रही है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए, जब कोई उस महान व्यक्ति के बारे में सोचता है जो बाज़ार में एक बेडौइन के साथ मोल-भाव कर रहा था, तो उसे उसके शानदार मूल स्वभाव पर ध्यान देना चाहिए, जो स्वर्गारोहण के दौरान राफ़्राफ़ पर सवार हुआ, गेब्रियल को पीछे छोड़ दिया, और दिव्य उपस्थिति तक पहुंच गया।

अन्यथा, व्यक्ति अपनी सांसारिक आत्मा के प्रति अपर्याप्त सम्मान दिखाने या उसे समझाने में असफल होने का जोखिम उठाता है।
वास्तविक स्वभाव.

पाँचवाँ संकेत: हम कई भविष्यवाणियों का उल्लेख करेंगे

भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने वाली परंपराएं इस प्रकार हैं:

• पैगम्बर ने उपदेश मंच से घोषणा की
अपने साथियों की उपस्थिति में: "मेरा पोता हसन
वह एक महान व्यक्ति है। उसके माध्यम से, परमेश्वर मेल-मिलाप करेगा
दो बड़ी सेनाएँ।"11 चालीस साल बाद, जब दो
सबसे बड़ी मुस्लिम सेनाओं ने एक दूसरे का सामना किया, हसन
मुआविया के साथ शांति स्थापित की और इस भविष्यवाणी को पूरा किया।

• उन्होंने अली से कहा: "तुम शपथ तोड़ने वालों से लड़ोगे,
अन्यायी और पथभ्रष्ट लोग,"12 इस प्रकार ऊंट और सिफिन और उन
लोगों की लड़ाई की भविष्यवाणी की गई
एक बार जब जुबैर से अच्छे और स्नेहपूर्ण शब्दों में बात हो रही थी ,

11 बुखारी, किताब अल-सुलह, 3:244; इब्न हनबल, मुसनद, 5:37.

12 हकीम, मुस्तद्रक, 3:139; बहाकी, दलाईल अल-नुबुव्वा,
6:414.

13 ख़ारिजियों का मानना था कि जो लोग कोई गंभीर गलती करते हैं या
पाप करो और ईमानदारी से पश्चाताप मत करो अब मुसलमान नहीं हैं।
पेशा ही पर्याप्त नहीं है, क्योंकि विश्वास के साथ-साथ
नेक काम। वे जिहाद को इस्लाम के स्तंभों में से एक मानते थे, क्योंकि उनका मानना था कि "अच्छाई का आदेश देना और बुराई से रोकना"
तलवार के माध्यम से सत्य को सही साबित करना। हालाँकि मिटा दिया गया
वे इस्लामी इतिहास की पहली दो शताब्दियों में स्थापित सत्ता के विरुद्ध निरंतर विद्रोह के कारण जाने जाते थे, तथा आज भी पाए जाते हैं।
ओमान और उत्तरी तथा पूर्वी अफ्रीका के छोटे-छोटे इलाकों में। (सं.)

पैगम्बर ने अली से कहा: "जुबैर तुमसे लड़ेगा, लेकिन वह गलत होगा।"14

- उसने अपनी पत्नियों से कहा: “तुममें से एक गंभीर विद्रोह का नेतृत्व करेगी। उसके आस-पास के कई लोग मारे जाएंगे, और हव'ब के कुत्ते उस पर भौंकेंगे।”15 यह बात ऊँट की लड़ाई के दौरान आयशा, तल्हा और जुबैर के खिलाफ अली की लड़ाई, सिफिन में मुआविया के खिलाफ लड़ाई और हरौरा और नहरवान में ख़ारिजियों के खिलाफ़ लड़ाई से साबित होती है।

- पैगम्बर ने अली से कहा कि अब्दुल रहमान इब्न मुलजम अल-खैरीजी, जिसे वे जानते थे, अली की दाढ़ी को अपने सिर के खून से रंग देगा ।16

इसके अलावा, उन्होंने ख़ारिजाइट धुल-थद्या के पास मौजूद एक शारीरिक निशान का भी ज़िक्र किया। जब उस व्यक्ति की लाश मृत ख़ारिजाइट्स के बीच पाई गई, तो अली ने इसे दूसरों को अपने कारण की सच्चाई के सबूत के तौर पर दिखाया, इस तरह चमत्कार को सार्वजनिक कर दिया।17

---

14 इब्न कथिर, अल-बिदया वा अल-निहाया, 6:213; न्यायाधीश, उक्त., 3:366.

15 बहाक़ी, उक्त., 6:405-410; हकीम, उक्त., 3:120.

16 इब्न हनबल, मुसनद, 1:102; हेथामी, मजमा', 9:138; न्यायाधीश, उक्त., 3:113.

17 बुखारी, 9:22; मुस्लिम, 7:745; बहाकी, दलैल, 6:426.

• उम्म सलमा और अन्य ने बताया कि मेस-

सेंगर ने तफ़ (करबला) में हुसैन की मृत्यु की भविष्यवाणी की थी,18 जो एक दुखद घटना थी जो 50 साल बाद घटित हुई। उन्होंने कुछ विवरणों के साथ बार-बार भविष्यवाणी भी की,

कि उसके परिवार को मार दिया जाएगा और

उसकी मृत्यु के बाद उसे निर्वासन मिला।19 उसने जो भविष्यवाणी की थी वह पूरी हुई। सत्य।

प्रश्न: अली के असाधारण साहस और ज्ञान तथा पैगम्बर मुहम्मद के साथ उनके सम्बन्ध ने उन्हें इस पद के लिए योग्य बनाया।
उन्हें खलीफा बनाने का फैसला क्यों किया गया? अबू बकर, उमर और 'उथमान ने उनसे पहले शासन किया? और मुस्लिम क्यों समुदाय ने अपने कार्यकाल के दौरान बहुत अव्यवस्था का अनुभव किया खिलाफत?

उत्तर: पैगंबर के परिवार से एक महान संत ने कहा है: "भगवान के दूत ने अली की खिलाफत की इच्छा की, लेकिन उन्हें सूचित किया गया

प्रेरणा के माध्यम से कि भगवान ने अन्यथा इच्छा की।
इसके लिए उसने अपनी इच्छा त्याग दी और परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण कर दिया। इच्छा।"

परमेश्वर की इच्छा अलग होने का एक कारण यह अवश्य रहा होगा यह रहा: यदि अली, मुहम्मद के तुरंत बाद खलीफा बन गए होते

---

18 इब्न हनबल, मुसनद, 6:294; हेथामी, मजमा', 9:188; बेहाकी, ibid., 6:468.

19 हकीम, 4:482; अल-जामी अल-सगीर, नहीं। 2558.

पैगम्बर की मृत्यु के समय, जब साथियों को पहले से कहीं अधिक सहमति और एकता की आवश्यकता थी, संभवतः, जैसा कि उनके खिलाफत के दौरान हुआ था, व्यक्तियों और जनजातियों में प्रतिस्पर्धा करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई होगी।

अपने शुद्ध, निडर, वीरतापूर्ण और स्वतंत्र व्यवहार और रवैये के कारण, साथ ही

उनके साहस को सर्वविदित माना जाता है। ऐसी प्रतिस्पर्धा से

विश्वासियों को विभाजित कर दिया है।

इसके अलावा, युवा मुस्लिम समुदाय, जो

जनजातीय और जातीय अंतर्संबंधों के माध्यम से तेजी से, धीरे-धीरे 73 संप्रदायों का उदय हुआ, जैसा कि पैगंबर ने कहा था

इस प्रकार, आंतरिक संघर्ष और अशांति को बढ़ावा देने वाली परिस्थितियों में, अली के साहस वाला व्यक्ति

और बुद्धिमत्ता की जरूरत थी, कोई ऐसा व्यक्ति जो इसका आनंद ले सके हाशिमियों और पैगंबर के परिवार की ताकत और सम्मान। हर कठिनाई से लड़कर, अली ने

पैगंबर की भविष्यवाणी: "मैंने कुरान के लिए लड़ाई लड़ी

रहस्योद्घाटन। आप इसके सही स्पष्टीकरण के लिए लड़ेंगे

इसकी जबरन, झूठी व्याख्या के खिलाफ़।”20

अली की अनुपस्थिति में सांसारिक राज्य का वैभव

शायद उमय्यदों को पूरी तरह से गुमराह कर दिया होता। लेकिन उनकी और पैगंबर की मौजूदगी ने उन्हें निराश कर दिया।

परिवार ने उमय्यद नेताओं को उन पर प्रतिबंध लगा दिया-

---

20 इब्न हनबल, मुसनद, 3:83; हेथामी, मजमा', 9:133; तिर्मिधि, 5:635.

वे स्वयं को सुरक्षित रखें, मुस्लिम समुदाय के समक्ष अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखें, तथा इस्लाम के सत्यों और सिद्धांतों तथा कुरान के आदेशों की रक्षा और प्रचार करने के लिए अपनी ओर से सर्वोत्तम प्रयास करें (यदि स्वेच्छा से नहीं तो) या कम से कम अपने विषयों और अनुयायियों को प्रोत्साहित करें।

परिणामस्वरूप, उनके शासनकाल के दौरान अनगिनत सावधान मुस्लिम न्यायविद, प्रतिष्ठित परंपरावादी, संत और पवित्र धर्मनिष्ठ लोग उभरे। अगर उन्हें पैगंबर के परिवार की पूर्ण धर्मनिष्ठता, संतत्व और सद्गुण का सामना नहीं करना पड़ता, तो वे शायद शुरू से ही पूरी तरह से भटक गए होते, जैसा कि उनके और 'अब्बासिड्स' दोनों के शासन के अंत में हुआ।

प्रश्न: खिलाफत पैगम्बर के परिवार में क्यों नहीं रही, जबकि उसके सदस्य सबसे अधिक योग्य थे?

उत्तर: सांसारिक राज्य भ्रामक है, और पैगम्बर के परिवार को इस्लाम की सच्चाई और कुरान के आदेशों को सुरक्षित रखने के लिए नियुक्त किया गया था। खिलाफत या राज्य द्वारा धोखा न खाने के लिए, व्यक्ति को या तो पैगम्बर की तरह अचूक होना चाहिए या चार सही मार्ग वाले खलीफाओं की तरह असाधारण रूप से शुद्ध हृदय वाला होना चाहिए,21

---

21 चार सही मार्गदर्शित खलीफा: पैगंबर की मृत्यु के बाद पहले चार शासक, अर्थात् अबू बकर, उमर इब्न अल-खत्ताब, उथमन इब्न अफ्फान और अली इब्न अबू तालिब। (सं.)

उमय्यद खलीफा उमर इब्न अब्दुल अजीज, या
अब्बासिद खलीफा अल-महदी.

मिस्र में फ़ातिमिद, उत्तर में अल-मोहद
अफ्रीका और फारस के सफाविद सभी यह दर्शाते हैं कि
सांसारिक राज्य पैगंबर के लिए उपयुक्त नहीं है
परिवार, क्योंकि यह उन्हें अपने आवश्यक कार्यों की उपेक्षा करने के लिए प्रेरित करता है
इस्लाम की रक्षा और सेवा करना उनका कर्तव्य है।
सांसारिक राज्य से विरत होकर उन्होंने इस्लाम की सेवा की
और कुरान को शानदार ढंग से और सफलतापूर्वक पढ़ा।

हसन के वंशज प्रमुख संतों पर विचार करें,
विशेष रूप से चार सबसे प्रतिष्ठित (हसन अल-खरा-कानी, हयात इब्न क़ैस
अल-हरानी, शेख हसन अल-शादज़िली, और विशेष रूप से 'अब्द अल-
कादिर अल-जिलानी) और
हुसैन से आने वाले इमाम, विशेष रूप से ज़ैन
अल-अबिदीन और जाफर अल-सादिक। प्रत्येक सर्वोच्च रैंक का आध्यात्मिक
मार्गदर्शक बन गया और,
अधर्म के काले बादल हटाओ, कुरान की रोशनी फैलाओ
और इस्लाम की सच्चाई। उन्होंने खुद को सच्चा साबित कर दिया
पैगम्बर के उत्तराधिकारी.

प्रश्न: इसके पीछे दिव्य बुद्धि क्या थी?
भयानक और खूनी उथल-पुथल, और क्यों
ईश्वरीय करुणा ऐसी चीजों को घटित होने देती है
क्या वे मुसलमान इसके लायक नहीं हैं?

उत्तर: एक मजबूत वसंत बारिश सब्जियों, बीजों और में निहित पूर्वाग्रहों
को सक्रिय और विकसित करती है

पेड़ लगाओ ताकि हर पेड़ अपने आप में खिले और फले-फूले
फैशन और उसके प्राकृतिक कार्य का एहसास। उसी में
वैसे, साथियों के समय में उथल-पुथल
और उनके उत्तराधिकारियों ने विभिन्न प्रतिभाओं को सक्रिय किया।
लोग इस्लाम को बचाने के लिए उठ खड़े हुए, उन्हें डर था कि यह खत्म हो जाएगा
खतरे से बचने के लिए महिलाओं और पुरुषों ने एक कर्तव्य निभाया
मुस्लिम समुदाय में प्रदर्शन किया और प्रयास किया
अपनी क्षमता के अनुसार इसे पूरा करें। प्रत्येक समूह ने एक अलग कार्य
किया, जैसे कि पैगंबर की परंपराओं को संरक्षित करने का प्रयास करना,
शरीयत की रक्षा करना,
कुरान और विश्वास की सच्चाइयों को बनाए रखना, और
इत्यादि। इससे धार्मिक और
प्राकृतिक विज्ञानों का विकास होगा, साथ ही बहुत से लोग
एक शानदार सभ्यता के बीज विशाल मुस्लिम दुनिया में बिखरे हुए थे,

और प्राचीन दुनिया का आधा हिस्सा "गुलाब के बगीचों" में बदल गया। फिर
भी, "कांटे" (विचलित संप्रदाय) भी
इन गुलाब के बगीचों में दिखाई दिया।

ऐसा लगा जैसे दैवीय शक्ति ने उस युग को हिला दिया हो
क्रोध ने उसे जोर से पलट दिया, और इस प्रकार विद्युतीकृत कर दिया
सभी उत्साही लोग। उस आंदोलन की केन्द्रापसारक शक्ति से प्रेरित होकर,
बड़ी संख्या में प्रतिष्ठित न्यायविदों ने,
प्रबुद्ध परंपरावादी, धन्य स्मरणकर्ता
कुरान और परंपराएँ, पवित्रता के लोग और प्रमुख
संत पूरे मुस्लिम जगत में फैल गए। इस प्रकार

ईश्वरीय शक्ति ने मुसलमानों को उत्साह और उमंग से भर दिया। उन्हें कुरान के खजाने के प्रति जागरूक किया।

अब हम अपने विषय पर लौटते हैं।

उन्होंने हजारों घटनाओं की भविष्यवाणी की, जो सभी सच हुईं। यहाँ हम केवल कुछ का ही उल्लेख कर रहे हैं। अधिकांश पर सभी सहमत हैं परंपराओं की छह सबसे प्रामाणिक पुस्तकों द्वारा, जिनमें दो सबसे प्रसिद्ध शामिल हैं: सहीह अल-बुखारी और सहीह अल-मुस्लिम। इनमें से कई परंपराओं में उनके अर्थ के संबंध में तवातुर की निश्चितता है , जबकि अन्य, सावधानीपूर्वक सत्यापन के कारण शोधकर्ताओं के अनुसार, इन्हें निश्चित माना जा सकता है जैसे कि इन्हें तावतुर के माध्यम से वर्णित किया गया हो। सभी प्रामाणिक हैं।

- “आप (सहयोगी) अपने सभी दुश्मनों को हरा देंगे और मक्का, ख़ैबर, दमिश्क पर विजय प्राप्त करेंगे, यरूशलेम, इराक और फारस। आप साझा करेंगे फ़ारसी और बीजान्टिन शासकों के खजाने आपस में।”22 ये साम्राज्य थे अपने समय की महाशक्तियाँ। पैगम्बर ने ऐसा नहीं किया कहो “मुझे लगता है” या “मुझे लगता है”; बल्कि, उसने ऐसा कहा जैसे उसने यह देखा था। जब वह अंदर था, तब उसने इसकी भविष्यवाणी की थी कुछ मुट्ठी भर अनुवर्ती के साथ सबसे गंभीर परिस्थितियों

  मक्का और उसके आसपास व्याप्त शत्रुता के कारण यह कदम उठाया गया है।

22 इब्न हनबल, मुसनद, 3:83; 'अली अल-कारी', शरह अल-शिफ़ा' (से बुखारी, मुस्लिम, और अन्य), 1:678-79.

• "मेरी मृत्यु के बाद, तुम्हें अबू बकर और उमर के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।"23 दूसरे शब्दों में, अबू बकर और उमर खलीफा के रूप में उसके उत्तराधिकारी होंगे और ईश्वर और उसके रसूल को खुश करने के लिए इतनी अच्छी तरह से काम करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि अबू बकर का शासन छोटा होगा, लेकिन उमर लंबे समय तक शासन करेगा और कई विजय प्राप्त करेगा।

• "पृथ्वी मेरे सामने रखी गई थी, और मुझे पूर्व और पश्चिम में इसके सबसे दूर के कोने दिखाए गए थे। मेरा राष्ट्र मेरे सामने जो कुछ भी रखा गया था, उस पर विस्तार करेगा।"24

• बद्र की लड़ाई से पहले, उन्होंने सटीक स्थानों का संकेत दिया जहां बहुदेववादी कुरैशी नेताओं को मार दिया जाएगा, और कहा: "अबू जहल यहां मारा जाएगा, 'उतबा यहां, उमय्या यहां," आदि, और कहा: "मैं उमय्या इब्न अल-खलफ को मार दूंगा।"25 • उन्होंने अपने साथियों को मुता की लड़ाई (दमिश्क के पास) के दौरान क्या हो रहा था, इसकी जानकारी दी, जैसे कि वे इसे देख रहे हों, हालांकि इसमें कुछ समय लगेगा-

23 न्यायाधीश, 3:75; तिर्मिधि, इब्न हनबल, इब्न माजा और बहाकी द्वारा भी संबंधित।

24 मुस्लिम, 4:2215; हाकिम, 4:445; तिर्मिज़ी, इब्न हंबल और इब्न माजा द्वारा भी उल्लेखित।

25 मुस्लिम, नहीं. 1779; इब्न हनबल, 1:390; क़दी 'इयाद, शिफ़ा', 1:343; हकीम, 2:327.

पैदल वहां पहुंचने में एक महीना लग गया। उसने कहा: "ज़ैद झंडा ले लिया गया है और मारा गया है; अब इब्न रवाहा इसे ले लिया है और मारा गया है; अब जाफर ने इसे ले लिया है और मारा गया है; अब भगवान की तलवारों में से एक (यानी, खालिद) ने इसे ले लिया है।"26 दो या तीन हफ़्ते बाद, याला इब्न मुनब्बीह युद्ध के मोर्चे से लौटे। उनकी उपस्थिति में, पैगंबर ने वर्णन किया

विस्तार से लड़ाई और याला ने भगवान की कसम खाई कि सबकुछ ठीक वैसा ही हुआ जैसा बताया गया था।

- "मेरे बाद खिलाफत 30 साल तक चलेगी और फिर उसकी जगह एक क्रूर राजतंत्र ले लेगा।27 यह मामला निश्चित रूप से पैगम्बरत्व से शुरू हुआ और एक दया। फिर यह दया और खिलाफत होगी, उसके बाद जिसे यह एक कठोर राजतंत्र में बदल देगा, और अंततः अधर्म और अत्याचार में।"28 दूसरे शब्दों में: चार सही मार्गदर्शित खलीफाओं की खिलाफत और हसन की 6 महीने की खिलाफत, जिसके बाद खिलाफत एक राजतंत्र बन गया, और फिर अत्याचार और भ्रष्टाचार में तब्दील हो गया अपने राष्ट्र.

26 बुखारी, 5:182; हकीम, 3:298; अबू नुअयम, दलाइल अल-नु-बुव्वा, 2:529।

27 अल-जामी अल-सगीर, नं. 3336; इब्न हनबल, 4:273; इब्न हिब्बन, प्रामाणिक, 8:227; अबू दाऊद, सुन्नत, 8; तिर्मिज़ी, फ़ितन, 48.

28 वही.

• “उथमान को कुरान पढ़ते समय मार दिया जाएगा।
भगवान शायद उसे कमीज़ पहना देंगे, लेकिन वे
वह उसे उससे दूर करना चाहेगा।”29 इस प्रकार उसने
इसका मतलब था कि उस्मान खलीफा बनेंगे, उनका पद मांगा जाएगा,
और उन्हें खलीफा बनाया जाएगा।
कुरान पढ़ते समय शहीद हो गये।

• एक प्रामाणिक कथन के अनुसार, जब
पैगम्बर को कपडे पहनाये गये, उन्होंने अब्दुल्ला इब्ने अब्दुल्लाह को आदेश दिया।
जुबैर को खून को दफनाने के लिए कहा गया। यह जानने पर कि इब्न
ज़ुबैर ने इसे आशीर्वाद के रूप में पी लिया था, उन्होंने कहा: "हाय
लोगों को बताओ कि उन पर क्या बीतेगी क्योंकि
तुम्हारे लिए, और जो कुछ घटेगा उसके लिए तुम पर हाय
लोगों के कारण तुम पर यह बीतेगी।”30 इस प्रकार उसने भविष्यवाणी की
कि साहसी इब्न जुबैर नेतृत्व करेंगे
मुसलमानों को भयंकर हमलों का सामना करना पड़ेगा
ताकि लोगों को बड़ी विपत्तियों का सामना करना पड़े। इब्न
जुबैर ने मक्का में अपनी खिलाफत की घोषणा की।
उमय्यदों के शासन का विरोध किया और वीरतापूर्ण लड़ाइयाँ लड़ीं
वह उनके विरुद्ध लड़ता रहा, जब तक कि अंततः अत्याचारी हज्जाज ने
भीषण युद्ध के बाद उसे शहीद नहीं कर दिया।

---

29 न्यायाधीश, 3:100; इब्न हनबल, 6:114; तिर्मिज़ी, नहीं. 2706; मजमा',
5:188.

30 हकीम, 3:554; अल-मतालिब अल-'आलिया, 4:21; क़ादी 'इयाद, शिफ़ा'
अल-शरीफ़, 1:339.

• पैगंबर ने उमय्यद राज्य की स्थापना की भविष्यवाणी की और कहा कि यजीद और वालिद सहित उसके अधिकांश शासक अन्यायी होंगे।31 उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि मुआविया मुसलमानों पर शासन करेगा और उसे न्यायपूर्ण और सौम्य रहने की सलाह दी: "जब आप शासन करते हैं, तो नरमी से काम लें।"32 पैगंबर ने उमय्यदों के बाद अब्बासियों के लंबे शासन की भी भविष्यवाणी की, कहा: "अब्बास के वंशज काले झंडों के साथ दिखाई देंगे और उनसे (उमय्यदों) की तुलना में कई गुना लंबे समय तक शासन करेंगे।"33 • उन्होंने चंगेज खान और हुलगू के भयानक विनाश की भविष्यवाणी की, जिसके कारण अब्बासिद राज्य का पतन हो गया:

"अरबों पर उस बुराई के लिए धिक्कार है जो आ पहुंची है।"34 • पैगंबर ने साद इब्न अबी वक्कास से कहा, जब वह गंभीर रूप से बीमार थे: "उम्मीद है कि आपको बख्श दिया जाएगा ताकि कुछ लोग आपके माध्यम से लाभ उठा

सकें

31 अल-जामी अल-सगीर, नं. 412, 2579; शिफ़ा', 1:338; तिर्मिज़ी और हकीम द्वारा संबंधित।

32 इब्न हज़र, मतालिब अल-अलिया, 4085, इब्न हनबल और अबू याला द्वारा संबंधित।

33 इब्न हनबल, 3:216; हकीम, अल-मुस्ताद्रक, 3:326; बहाकी, दलैल, 6:513.

34 बुखारी, बुकु अल-फ़ितन, 9:60; मुस्लिम, नहीं. 2880; न्यायाधीश, 1:108.

दूसरों को तुम्हारे कारण नुकसान होगा,”35 यह दर्शाता है कि साद एक महान सेनापति होगा और कई विजय प्राप्त करेगा। जबकि कई लोग इस्लाम में परिवर्तित होकर उससे लाभान्वित होंगे, कई अन्य लोगों को उसके कारण नुकसान होगा क्योंकि वह उनके राज्यों को नष्ट कर देगा। बाद में, साद ने मुस्लिम सेनाओं की कमान संभाली जिसने फारस के सासानी साम्राज्य को नष्ट कर दिया और कई लोगों को इस्लाम के मार्गदर्शन में लाया।

• जब इस्लाम अपनाने वाले एबिसिनियन शासक नेगस की मृत्यु पैगंबर के प्रवास के 7 साल बाद हुई, तो उसने अपने साथियों को बताया कि क्या हुआ था और उसके लिए अंतिम संस्कार की नमाज़ पढ़ी। एक हफ़्ते बाद, नेगस की मृत्यु की घोषणा करने वाली खबर उसी दिन आई जिस दिन पैगंबर ने इसकी घोषणा की थी।36 • जब पैगंबर अपने चार सबसे करीबी दोस्तों के साथ उहुद या हिरा पर्वत की चोटी पर थे, तो पहाड़ कांप उठा। उन्होंने कहा: "स्थिर रहो, क्योंकि तुम पर एक पैगंबर, एक सच्चा (अबू बकर) और शहीद (उमर, उस्मान और अली) हैं।"37

35 अबू नु'आयम, हिलियात अल-अवलिया', 1:94, बुखारी और मुस्लिम से भी संबंधित है।

36 बुखारी, 2:109; मुस्लिम, इब्न मलिक, अबू दाऊद और नसाई द्वारा भी इसका उल्लेख किया गया है।

37 मुस्लिम, 4:1880; बुखारी, तिर्मिज़ी, हाकिम और अबू दाऊद द्वारा भी इसका उल्लेख किया गया है।

अब हे दुखी, निर्दयी और अभागे व्यक्ति जो यह कहता है कि मुहम्मद एक बुद्धिमान व्यक्ति थे और फिर सत्य के उस सूर्य से अपनी आँखें बंद कर लेता है! उसके 15 प्रकार के प्रमुख चमत्कारों में से, तुमने अभी तक केवल एक प्रकार का छोटा सा हिस्सा ही सुना है - जो कि उसकी भविष्यवाणियों से संबंधित है जिसमें तवातुर की निश्चितता है। जो व्यक्ति अपनी अंतर्दृष्टि से ऐसी भविष्यवाणियों का केवल सौवाँ भाग भी बता सकता है, वह सर्वोच्च प्रतिभा वाला व्यक्ति होगा।

यदि हम उसे केवल एक प्रतिभाशाली व्यक्ति मान लें, जैसा कि आप मानते हैं, तो क्या ऐसा व्यक्ति, जिसके पास सौ प्रतिभाशाली व्यक्तियों की अंतर्दृष्टि हो, किसी भी बात को झूठ समझ सकता है या इतना गिरकर स्वयं को गलत जानकारी दे सकता है?
ऐसे व्यक्ति की दोनों लोकों में सुख की बात पर ध्यान न देना निरी मूर्खता है।

छठा चिन्ह:

- रसूल ने अपनी बेटी फातिमा से कहा: "तुम मेरे साथ (मेरी मृत्यु के बाद) जुड़ने वाली पहली पारिवारिक सदस्य हो।"38 जब छह महीने बाद उसकी मृत्यु हो गई, तो उनके शब्द सत्य साबित हुए। उन्होंने अबू ज़र्र से भी कहा: "तुम्हें यहाँ (मदीना) से निकाल दिया जाएगा, लेकिन तुम यहाँ रहोगी।

38 बुखारी, 4:248; मुस्लिम, 4:w1904; इब्न हनबल, 6:77, बहाक़ी, 7:164.

अकेले मरना और अकेले मरना।"39 उसने जो कहा वह 20 साल बाद हुआ। • एक

बार वह उम्म हराम के घर (अनस इब्न मलिक की चाची) में जागा और मुस्कुराते हुए कहा: "मैंने सपना देखा कि मेरा समुदाय सिंहासन पर बैठे राजाओं की तरह समुद्र में लड़ रहा था।" उम्म हराम ने पूछा: "दुआ करें कि मैं उनके साथ रहूं।" उसने दृढ़ता से उत्तर दिया: "तुम होगे।"40 चालीस साल बाद वह साइप्रस की विजय के दौरान अपने पति उबादा इब्न सामित के साथ थी। उसकी वहीं मृत्यु हो गई, और उसकी कब्र एक दर्शनीय स्थल बनी हुई है। • "ठाकिफ जनजाति एक झूठे को पैदा करेगी जो नबी होने का दावा करता है, साथ ही एक खून का प्यासा तानाशाह भी।"41 दूसरे शब्दों में,

कुख्यात मुख्तार (जिसने नबी होने का दावा किया धन्य है वह सेनापति जो इसे जीत लेता है, और धन्य है उसकी सेना।"42

39 शिफ़ा अल-शरीफ़, 1:343, इब्न हनबल, इब्न हिब्बन और इब्न कथिर द्वारा संबंधित।

40 अल-जामी अल-सगीर, 6:24, बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अन्य लोगों द्वारा संबंधित।

41 हाकिम, 3:453, मुस्लिम, इब्न हंबल और तिर्मिज़ी द्वारा भी उल्लेखित है।

1453 में कॉन्स्टेंटिनोपल पर सुल्तान महमद विजेता का कब्जा हो गया, जिससे उसे उच्च आध्यात्मिक पद प्राप्त हुआ।

• "यदि धर्म को प्लीएडेस पर लटका दिया जाता, तो फारसियों के वंशज उस तक पहुँच जाते और उसे अपने अधीन कर लेते,"43 जो फारस के अद्वितीय विद्वानों और संतों की ओर संकेत करता है।

• "कुरैश का एक विद्वान पृथ्वी के भागों को ज्ञान से भर देगा।"44 यह इमाम शाफ़ई को संदर्भित करता है, जिन्होंने इस्लाम के चार कानूनी संस्थानों में से एक की स्थापना की थी।

स्कूल.

• “मेरी कौम 73 फिरकों में बंट जाएगी और उनमें से सिर्फ़ एक ही बचेगा।” जब उनसे पूछा गया कि वे कौन हैं, तो उन्होंने जवाब दिया: “वे जो मेरा और मेरे साथियों का अनुसरण करते हैं,” यानी सुन्ना और कौम (अहल अल-सुन्ना व अल-जमाआ) के लोग।45

42 बुखारी, तारिख अल-सगीर, 139; हकीम, 4:422, इब्न हनबल और हेथामी भी।

43 अल-लु'लू' वा अल-मार्जन, 3:183, बुखारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी द्वारा संबंधित।

44 कश्फ़ अल-ख़फ़ा', 2:53, इब्न हनबल, तायालिसी, इब्न हज़ार और बहाकी द्वारा संबंधित।

45 इब्न हनबल, 2:332; अबू दाऊद, इब्न माजा और तिर्मिज़ी द्वारा भी संबंधित।

- “कादरिया इस समुदाय के मागियन हैं,”46 जिससे कादरिया संप्रदाय की भविष्यवाणी की गई,47
  जो कई शाखाओं में विभाजित हो जाएगा और अस्वीकार कर देगा तकदीर।

- उन्होंने भविष्यवाणी की कि कई समूह कई हिस्सों में विभाजित हो जाएंगे
  गुटों के बीच मतभेद तब उत्पन्न हुआ जब उन्होंने अली से कहा: "आपके कारण, यीशु की तरह, दो समूह नष्ट हो जायेंगे: एक इसलिए क्योंकि एक अत्यधिक प्रेम के कारण (आपके प्रति), और दूसरा इसलिए क्योंकि (तुम्हारे लिए) अत्यधिक शत्रुता का कारण।”48 ईसाई, यीशु के प्रति उनके अत्यधिक प्रेम के कारण, सीमाओं को लांघा और उसे परमेश्वर का “पुत्र” माना, जबकि यहूदी अपनी दुश्मनी में इतने आगे बढ़ गए कि उन्होंने उसके धर्म को नकार दिया। पैगम्बरत्व और सिद्धताएँ। यह संदर्भित करता है राफिदाइट्स, ख़ारिजाइट्स और नसीबा, क्रमशः उमय्यदों के चरमपंथी पक्षधर थे।

---

46 अल-जामी अल-सगीर, 4:एल50, अबू दाऊद, हकीम और द्वारा संबंधित इब्न माया.

47 दूसरी इस्लामी सदी में प्रकट होकर, उन्होंने स्वतंत्र समाज की वकालत की इच्छाशक्ति, कहा गया कि लोग अपना अच्छा और बुरा आचरण स्वयं बनाते हैं, और कार्य-कारण को मानवीय आचरण का एक आवश्यक अंग मान लिया गया, इस प्रकार ईश्वरीय नियति को अस्वीकार करना।

48 हाकिम, 3:123; इब्न हंबल, इब्न हिब्बन और द्वारा भी संदर्भित बज़ार.

49 मजमा अल-ज़वायद, 10:22; फत अल-रब्बानी, 24:20; नसाई, अल-ख़ासाईस, 3:19.

प्रश्न: कुरान मांग करता है कि हम दूसरों से प्रेम करें। पैगम्बर के परिवार ने इस बात को बहुत प्रोत्साहित किया। शियाओं का उनके प्रति प्रेम एक प्रेरणा का स्रोत हो सकता है।
बहाना, क्योंकि प्रेम के लोगों की तुलना लोगों से की जा सकती है
नशे की लत। तो फिर शिया, खास तौर पर
राफिदियों को उनके प्रेम से लाभ क्यों मिला?
क्या पैगम्बर ने उनके अत्यधिक प्रेम के लिए उनकी निंदा की?

उत्तर: प्यार दो तरह का होता है। पहला

क्या किसी से प्रेम करना सच्चा प्रेम पाने का एक साधन है,
जो कि पैगंबर के परिवार के लिए प्यार है
ईश्वर और उसके रसूल का प्रेम। ऐसा प्रेम व्यक्ति के प्रेम को बढ़ाता है
पैगम्बर के प्रति प्रेम और प्रेम करने का साधन बन जाता है
सर्वशक्तिमान ईश्वर। इस प्रकार यह वैध है, इसकी अधिकता हानिरहित है और इसे अपराध नहीं माना जाता है, और यह
दूसरों के प्रति निन्दा और शत्रुता का आह्वान न करें।

दूसरा साधन को ही अपना वास्तविक उद्देश्य मान लेता है।
लोग पैगम्बर को भूल जाते हैं और अपना प्यार उनके लिए समर्पित कर देते हैं
अली (रफीद) को उनके वीरतापूर्ण कार्यों और सिद्धियों के कारण, तथा हसन और हुसैन को उनके असाधारण गुणों के कारण, भले ही वे ईश्वर और उसके पैगम्बर को पहचानते हों या नहीं। यह प्रेम कोई साधन नहीं है।

ईश्वर और उसके रसूल से प्रेम करना, और इसकी अधिकता हमें
दूसरों के प्रति अपमान और शत्रुता रखना। राफिदियों का
अली के प्रति अत्यधिक प्रेम के कारण उन्होंने अली को अस्वीकार कर दिया।
अबू बकर और उमर की खिलाफत, उनकी पूर्णता से इनकार करती हैं-

प्रेम में पड़कर आप भटक जाते हैं। इस तरह का अत्यधिक और नकारात्मक प्रेम आध्यात्मिक विनाश का कारण बनता है। •

“जब फ़ारसी और रोमन लड़कियाँ आपकी सेवा करेंगी, तो आप आंतरिक संघर्षों और गृहयुद्ध का सामना करेंगे।

दुष्ट लोग सत्ता में आ जाएंगे और अच्छे लोगों को लूट लेंगे।”50 यह बात 30 साल बाद सच हुई। • “अली ख़ैबर पर विजय प्राप्त करेंगे।”51 पैगम्बर

के चमत्कार के रूप में और सभी उम्मीदों से परे, अगले दिन अली ख़ैबर के किले के द्वार पर पहुंचे, इसे एक ढाल के रूप में इस्तेमाल किया, और अंततः ख़ैबर पर विजय प्राप्त की।

जब उसने विजय के बाद द्वार को एक तरफ फेंक दिया, तो आठ (एक अन्य संस्करण के अनुसार 40) मजबूत आदमी इसे नहीं उठा सके।52

• "क़यामत तब तक नहीं आएगी जब तक दो गिरोह आपस में लड़ न लें, हालाँकि वे एक ही दावे करते हैं,"53 अली और मुआविया के बीच सिफ़्फ़ीन की लड़ाई की भविष्यवाणी।

---

50 हेथामी, 10:237; अल-जामी अल-सगीर, 813; शिफ़ा', 1:237; इब्न हिब्बन, 8:253.

51 बुखारी, 5:171; मुस्लिम, नहीं. 2406; इब्न हनबल, 5:333; न्यायाधीश, 3:109.

52 सुयुति, तारिख अल-खुलाफ़ा', 164; इब्न कथिर, अल-बिदया, 4:189, हकीम, इब्न इशाक और बहाकी द्वारा भी संबंधित है।

53 अल-जामी अल-सगीर, 6:174; बुखारी, मुस्लिम और अबू दाऊद द्वारा संबंधित।

• “अम्मार को एक विद्रोही समूह द्वारा मार दिया जाएगा।”54
जब सिफिन में अम्मार मारा गया तो अली ने कहा
इसे इस बात का सबूत माना जाता है कि मुआविया और उनके अनुयायी
विद्रोही थे। हालाँकि, मुआविया और अम्र
इब्न अल-अस ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है: "विद्रोही उसके हैं
हम सभी हत्यारे हैं, हम सभी नहीं।”

• "जब तक उमर जीवित है, तब तक (मेरे समुदाय में) अव्यवस्था नहीं दिखाई देगी।"55

• जब साहल इब्न अम्र को पहले कैदी बना लिया गया था
इस्लाम धर्म अपनाने के बाद उमर ने धर्मगुरु से कहा: "मुझे उसके दांत
निकालने दो, क्योंकि वह बहुत ही वाक्पटु है।"
भाषण कुरैशी अविश्वासियों को लड़ने के लिए उकसाता है
हम पर हमला किया।" पैगंबर ने जवाब दिया: "उमर, शायद वह
वह पद ग्रहण करेगा जो तुम्हें अच्छा लगेगा।”56 जब
पैगम्बर की मृत्यु के पश्चात् सहल ने शोकग्रस्त साथियों को सांत्वना देने तथा
उन्हें स्थिर करने के लिए मक्का में एक शानदार उपदेश दिया। उल्लेखनीय
रूप से, यह उपदेश
अर्थ और शब्दावली में लगभग एक जैसा था
जो एक ही समय पर और एक ही कीमत पर दिया गया
इसका उद्देश्य मदीना में अबू बकर द्वारा किया गया था।

---

54 मुस्लिम, 4:2236; बुखारी, 1:122; लगभग 30 साथियों से सम्बंधित।

55 बहाक़ी, 6:386; मुस्लिम, 4:2218; बुखारी द्वारा भी संबंधित।

56 हकीम, 4:282; इब्न हजर, अल-इसाबा फाई तमीज़ अल-सहाबा, 2:93;
शिफ़ा', 1:344.

• "मुझे आश्चर्य है (सुराका), जब तुम चोसरो (फारसी राजा) के दो कंगन पहनोगे तो तुम्हारा क्या होगा।"57 चोसरो को उमर के शासनकाल के दौरान पराजित किया गया था, जिन्होंने सुराका को कंगन पहनाए और कहा: "भगवान की स्तुति हो, जिन्होंने इन्हें चोसरो से उतार कर सुराका को पहनाया।"58 पैगंबर ने यह भी घोषणा की: "एक बार चोसरो (अर्थात् ससानिद राजवंश) का शासन समाप्त हो गया, तो कोई अन्य चोसरो नहीं होगा"59 (इस प्रकार ईरान में ससानिद शासन के अंत की भविष्यवाणी की गई।)

• जब चॉसरो (पैगंबर के समय के सस्सानिद राजा) का दूत मदीना पहुंचा, तो पैगंबर ने उससे कहा: "चॉसरो को उसके बेटे शिरविया परविज़ ने मार डाला है।"60 इसकी पुष्टि करने के बाद, दूत (जिसे फ़िरोज़ बताया जाता है) ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। • जब ईश्वर के दूत मक्का की विजय के लिए निकलने वाले थे, तो ख़तीब इब्न अबी बलता द्वारा भेजा गया

एक गुप्त पत्र पहले से ही कुरैश के पास आ रहा था। उन्होंने अली और मिक़दाद को यह संदेश भेजा

57 इब्न हजर, उक्त, सं. 3115; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफ़ा', 1:703.

58 शिफ़ा', 1:344; अल-इसाबा भी , नहीं। 3115.

59 मुस्लिम, 4:2236; बुखारी, तिर्मिज़ी और तबा-रानी द्वारा भी संबंधित।

60 'अली अल-कारी, उक्त, 1:700; अल-जामी अल-सगीर, 875; अबू नुअयम, 2:348.

उनसे कहा: “पत्रवाहक फलां जगह पर है। जाओ और उसे ले आओ।” उन्होंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था।

जब पैगम्बर ने ख़तीब से पूछा कि उसने पत्र क्यों भेजा है, तो ख़तीब ने बहाना बना दिया और उसे क्षमा कर दिया गया।61

• ईश्वर के दूत ने प्रार्थना की: "उतबा इब्न अबी लहब को ईश्वर के कुत्तों में से एक खा जाए।"62 बाद में, यमन की यात्रा करते समय इस व्यक्ति को एक शेर ने खा लिया। • मक्का की विजय के बाद, बिलाल अल-हबाशी काबा की छत पर खड़े हुए और लोगों को प्रार्थना (अज़ान) के लिए बुलाया। कई कुरैशी

नेता, जैसे कि अबू सुफ़यान, अत्ताब इब्न असीद और हारिथ इब्न हिशाम, काबा के पास एक साथ बैठे थे।

अत्ताब ने कहा: “मेरे पिता भाग्यशाली हैं कि उन्हें यह क्षण नहीं देखना पड़ा।” हारिथ ने तिरस्कारपूर्वक पूछा: “क्या मुहम्मद इस काले कौवे के अलावा किसी और को मुअज़्ज़िन के रूप में नहीं ढूंढ सकते थे?” अबू

सुफ़यान ने कोई टिप्पणी नहीं की, उन्होंने कहा: "मुझे डर है कि मैं जो कुछ भी कहूँगा, वह उसे पता चल जाएगा, और इसलिए वह कुछ नहीं कहेगा। भले ही कोई उसे न बताए, लेकिन इस बाथा (यानी मक्का) की चट्टानें उसे बता देंगी।"

61 बुखारी, 5:184; मुस्लिम, नहीं. 2494; इब्न हनबल, 1:80.

62 शिफ़ा', 1:343; हकीम, बेहाकी और इब्न इशाक द्वारा संबंधित।

इसके कुछ समय बाद, ईश्वर के दूत उनके पास आये और उनकी बातचीत को शब्दशः दोहराया।

उसी समय अत्ताब और हारित ने इस्लाम धर्म अपना लिया।63

अब तुममें से जो लोग पैगम्बर को नहीं पहचानते, वे इस बात पर गौर करें कि दो जिद्दी कुरैशी नेता केवल एक चमत्कार देखकर ईमान ले आए।

इस बात पर विचार करो कि तुम कितने अधिक बर्बाद हो चुके हो कि तुम सैकड़ों चमत्कारों को सुनने के बाद भी आश्वस्त नहीं हो, जैसे कि यह, जो तवातुर के माध्यम से आया था।

लेकिन चलिए अपने विषय पर वापस आते हैं।

- मुसलमानों ने बद्र की लड़ाई के दौरान अब्बास को पकड़ लिया। जब फिरौती मांगी गई तो अब्बास ने कहा कि उसके पास पैसे नहीं हैं। ईश्वर के रसूल ने कहा: "तुमने वह रकम अपनी पत्नी उम्म फदल के पास फलां जगह छोड़ दी (उसने सही रकम बताई और जगह का नाम बताया)।"64 अब्बास ने इसकी पुष्टि की: "केवल हम दोनों ही यह जानते थे," और फिर पूर्ण विश्वास प्राप्त किया।

- लाबिद नामक एक खतरनाक यहूदी जादूगर ने पैगंबर को नुकसान पहुंचाने के लिए एक मजबूत और प्रभावी मंत्र का आविष्कार किया।

---

63 इब्न हजर, अल-मतालिब अल-'आलिया, 4366; इब्न हिशाम, सर, 2:413.

64 हेथामी, मजमा अल-ज़वायद, 6:85; इब्न हनबल, हकीम और बहाकी द्वारा संबंधित।

कंघी में कुछ बाल लपेटकर, उसने उसे जादू से भर दिया और उसे एक कुएं में फेंक दिया। ईश्वर के दूत ने अपने कुछ साथियों से, जिनमें अली भी शामिल थे, कहा: “अमुक कुएं पर जाओ और उससे जादू हटाओ।” उन्होंने ऐसा किया, और जैसे ही उन्होंने बाल खोले, रसूल की बेचैनी कम हो गई।65 • एक बार जब पैगंबर अबू हुरैरा और हुदैफा सहित कुछ महत्वपूर्ण साथियों के साथ थे, तो उन्होंने बताया कि उनमें से एक का क्या हश्र होगा

बाद में अपने धर्मत्याग के कारण: "तुममें से एक व्यक्ति आग में होगा जिसका दांत माउंट उहुद से भी बड़ा होगा।" अबू हुरायरा बाद में बताते हैं: "मैं बहुत डर गया था, क्योंकि उस समूह के केवल दो सदस्य ही बचे थे। उनमें से एक मैं था। अंत में, दूसरा व्यक्ति यमामा की लड़ाई में एक योद्धा के रूप में मारा गया।

मुसैलिमा की संगति में धर्मत्यागी।''66

• इस्लाम धर्म अपनाने से पहले, उमर और सफ़वान ने पैगम्बर को मारने और बड़ा इनाम लेने का फ़ैसला किया। जब उमर इस इरादे से मदीना आया, तो अल्लाह के रसूल ने उसे बुलाया,

65 बुखारी, 4:148; मुसलमान, 4:1719; इब्न माजा, 3545; इब्न हनबल, 4:367.

66 मजमा अल-जवायद, 8:289; इसे तबरानी ने और थोड़े अंतर के साथ मुस्लिम ने भी उल्लेख किया है; शिफा, 1:342.

उसने साजिश रची और अपना हाथ उमैर की छाती पर रख दिया।

उमर ने पाप स्वीकार किया और मुसलमान बन गया।67 उसकी कई

भविष्यवाणियां परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकों में संचरण की श्रृंखला के साथ दर्ज हैं।

यहाँ वर्णित अधिकांश में तवातुरीन अर्थ की निश्चितता है , जो इमाम अल-बुखारी द्वारा अल-जामी अल-सहीह और इमाम अल-मुस्लिम द्वारा अल-जामी अल-सहीह (आमतौर पर बुखारी और मुस्लिम या सहीह अल-बुखारी और सहीह अल-मुस्लिम के रूप में जाना जाता है) में वर्णित है, जिन्हें सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं द्वारा कुरान के बाद सबसे प्रामाणिक स्रोतों के रूप में स्वीकार किया गया है, और सुनन अल-तिर्मिज़ी, सुनन अल-नसाई, सुनन अबू दाऊद, मुसनद अल-हाकिम, मुसनद अल-अहमद इब्न हनबल और दलाईल अल-बयहाकी में भी वर्णित है।

अब हे भ्रमित व्यक्ति, मुहम्मद को बुद्धिमान व्यक्ति कह कर इसे समझाने का प्रयास मत करो।

उनकी भविष्यवाणियाँ, जो सभी सच हुई हैं (या होंगी), केवल दो तरीकों से समझाई जा सकती हैं। पहला यह कि उनकी दृष्टि इतनी गहरी और प्रतिभापूर्ण थी कि वे सभी समय और स्थानों में पैठ रखते थे और इस तरह अतीत और भविष्य के बारे में जान लेते थे। अगर किसी में यह गुण होता, तो वह इससे ज़्यादा कुछ नहीं होता

67 मजमा अल-ज़वायद, 8:286; शिफ़ा', 1:342; इब्न कथिर, अल-बिदया, 3:313।

एक आश्चर्य, सृष्टिकर्ता की ओर से एक चमत्कारी उपहार

यह ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा चमत्कार है, तथा यह सबसे महान चमत्कारों में से एक है।

दूसरा यह कि वह एक अधिकारी है जिसे एक ऐसे व्यक्ति द्वारा निर्देश दिया जाता है जो हर चीज को नियंत्रित और देखता है, सभी समय और स्थानों को आदेश देता है, और रिकॉर्ड करता है

सब कुछ एक बड़े बहीखाते में। फिर वह अपने से संबंधित है
रसूल जो चाहे और जब चाहे। इस प्रकार
मुहम्मद दूसरों को वैसा ही निर्देश देते हैं जैसा उन्हें दिया जाता है।
उसका शाश्वत प्रशिक्षक.

• खालिद इब्न अल-वालिद को लड़ने के लिए नियुक्त करते समय
दावत अल-जंदाल के प्रमुख उकैदिर के विरुद्ध,
पैगम्बर ने उससे कहा: "तुम उसे (उकायदिर) पाओगे"
जंगली बैल के शिकार पर," और उसे बिना किसी प्रतिरोध के पकड़ लिया जाएगा।68 खालिद ने उकैदिर को ठीक उन्हीं परिस्थितियों में पाया और पकड़ लिया।

• कुछ समय बाद कुरैश ने बानी के खिलाफ बहिष्कार के लेखों वाली पत्ती लटका दी

काबा की दीवार पर हाशिम (पैगंबर का कबीला),
रसूल ने उनसे कहा: "कीड़ों ने खा लिया है
पत्ते पर भगवान का नाम अंकित है, सिवाय उन हिस्सों के जिन पर भगवान का नाम अंकित है।”
वे गए और उन्होंने पाया कि यह सच है।

---

68 इब्न साद, तबक़ात, 2:119; न्यायाधीश, 4:519; शिफ़ा', 1:344; बेहाकी, 2:66.

69 इब्न कथिर, अल-बिदया, 3:96; बहाक़ी, 2:311; शिफ़ा', 1:345; इब्न हिशाम, 1:371.

- “यरूशलेम के राज्य के दौरान एक महामारी फैलेगी विजय।" इस शहर पर विजय प्राप्त की गई थी उमर की खिलाफत और व्यापक महामारी 30 जून 1944 को भड़की आग में लगभग 70,000 लोग मारे गए दिन.70
- ईश्वर के दूत ने की स्थापना की भविष्यवाणी की बसरा और बगदाद,71 कि खजाने बरसेंगे दुनिया भर से बगदाद में आये लोग, और अरब तुर्कों और लोगों से लड़ेंगे कैस्पियन सागर के आसपास रहने वाले72 जिनमें से अधिकांश बाद में अरबों को धर्मांतरित किया और उन पर शासन किया अपनी ज़मीनें। उन्होंने कहा: "गैर-अरबों का बोलबाला रहेगा तुम्हारे बीच में, तुम्हारी लूट का माल खाकर और मार-पीट कर तुम्हारे सिर से उतर जाऊँगा।”73
- "युवा, दुष्ट कुरैशी मेरे समुदाय को बर्बाद कर देंगे।"74 इसने ऐसे दुष्ट उमय्यद नेतृत्व की भविष्यवाणी की थी-

---

70 बुखारी, 7:168; मुस्लिम, नहीं. 2219; इब्न हनबल, 4:195.

71 बसरा: अल-जामी अल-सगीर, 6:268, अबू दाऊद द्वारा संबंधित; बगदाद: अल-बिदया वा अल-निहाया, 10:102; अबू द्वारा भी संबंधित नुऐम और खतीब।

72 अल-शिफा', 1:337, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और से संबंधित तिर्मिज़ी.

73 मजमा अल-ज़वायद, 7:310, हकीम, तयालिसी और द्वारा वर्णित इब्न हनबल.

74 बुखारी, 9:60; इब्न हनबल, 2:288; हकीम, मुस्ताद्रक, 4:479.

उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि यज़ीद और वालिद

यमामा जैसे कुछ क्षेत्रों में लोग

धर्मत्याग,75 और युद्ध के दौरान कहा

ट्रेंच: "इसके बाद, न तो कुरैश और न ही

संघी मुझसे लड़ेंगे, लेकिन मैं उनसे लड़ूंगा।”76

• पैगम्बर ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी कुछ महीने पहले ही कर दी थी

ऐसा हुआ: “परमेश्वर के एक दास को चुनाव करने का अवसर दिया गया, और उसने उसे चुन लिया जो उसके साथ है”

भगवान।”77

• "उसका (ज़ैद इब्न सावहान) एक अंग उससे पहले जन्नत में पहुँच जाएगा।"78 यह बात तब सच हुई जब

एक लड़ाई के दौरान ज़ैद ने अपना एक हाथ खो दिया।

अदृश्य से संबंधित ये भविष्यवाणियाँ उनके 10 प्रकार के चमत्कारों में से केवल एक हैं।

इनमें से कुछ प्रकारों का उल्लेख यहां नहीं किया गया है, तथा भविष्यवाणियों से संबंधित अन्य चार प्रकारों का सारांश दिया गया है

पच्चीसवाँ वचन। भ्रष्ट मन और हृदय वाला कोई भी व्यक्ति केवल इसी एक प्रकार के वचन पर विचार कर सकता है

---

75 बुखारी, 4:247; मुस्लिम, 4:1781.

76 इब्न हनबल, 4:262, बुखारी, इब्न हिब्बान और द्वारा भी संबंधित तबरानी।

77 मुस्लिम, संख्या 2382; बुखारी और तिर्मिज़ी द्वारा भी संदर्भित।

78 मजमा अल-ज़वायद, 9:398, बहाकी, इब्न अदिय द्वारा संबंधित, और अबू याला.

अन्य चार के साथ मिलकर यह विश्वास करने के लिए कि
मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं और उन्हें सर्वशक्तिमान, हर चीज़ के निर्माता द्वारा निर्देश दिया गया था
और वह ग़ैब का भी जाननेवाला है।

सातवाँ संकेत: हम कुछ उदाहरणों का उल्लेख करते हैं
पैगम्बर के भोजन बढ़ाने से संबंधित चमत्कार
जिनके अर्थ में तवातुर की निश्चितता है । लेकिन
आगे बढ़ने से पहले, कुछ परिचयात्मक टिप्पणियाँ हैं
उपयुक्त।

नीचे दिए गए प्रत्येक चमत्कार से संबंधित जानकारी प्रेषित की गई
विभिन्न माध्यमों से - कभी-कभी तो 16 से भी अधिक - यह सब बड़े समूहों के सामने हुआ और
अनेक सत्यनिष्ठ एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा वर्णित।
उदाहरण के लिए, 70 लोगों में से एक को चार
मुट्ठी भर भोजन घटना बताता है जबकि बाकी
चुप रहते हैं (अर्थात् वे उसका विरोध नहीं करते)।
मौन सहमति दर्शाता है। यह विशेष रूप से सच है
सच्चे, सीधे और ईमानदार साथियों के लिए जो सभी झूठ को अस्वीकार करते हैं
और उसका विरोध करते हैं।
नीचे दी गई घटनाएं कई लोगों द्वारा बताई गई हैं
और गवाहों की चुप्पी से इसकी पुष्टि होती है, इस प्रकार प्रत्येक घटना तवातुर की सीमा तक निश्चित हो जाती है
अर्थ में।

इसके अलावा, इतिहास की पुस्तकें और आत्मकथाएँ
पैगम्बर ने लिखा है कि साथियों ने, अगले पैगंबर के रूप में,

कुरान और उसकी आयतों की सेवा करते हुए, उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया
रसूल के कार्यों और शब्दों को रिकॉर्ड और संरक्षित करें,
विशेष रूप से चमत्कार और ईश्वरीय घटनाओं से संबंधित
आदेशों की सत्यता की पुष्टि करने के लिए।
कभी भी किसी तुच्छ कार्य की उपेक्षा नहीं की
या पैगंबर की स्थिति, जैसा कि किताबों से पुष्टि होती है
परंपरा।

जब पैगम्बर जीवित थे, तब चमत्कार और
धार्मिक आदेशों का आधार बनने वाली परंपराएँ
कई साथियों द्वारा लिखे गए थे, विशेष रूप से- "सात अब्दुल्ला", विशेष रूप से
अब्दुल्ला इब्न
अब्बास (कुरान के व्याख्याकार) और अब्दुल्ला इब्न अम्र इब्न अल-अस। करीब 30
या 40 साल बाद, हज़ारों ताबिउन शोधकर्ताओं ने इन्हें दर्ज किया,

और बाद में इस्लामी न्यायशास्त्र के चार इमाम
और हजारों समझदार परंपरावादी भी
उन्हें लिखें और प्रेषित करें.

पैगम्बर के प्रवास के दो शताब्दियों बाद,
छह प्रतिष्ठित और सबसे प्रामाणिक पुस्तकों के संकलनकर्ता
परंपराओं की किताबें, जिनके मुखिया इमाम हैं
अल-बुखारी और इमाम मुस्लिम ने यह कार्यभार अपने कंधों पर लिया।
परंपराओं को संरक्षित करने की। इस बीच, सावधानीपूर्वक आलोचकों ने झूठी
रिपोर्टों की पहचान की
विधर्मी या लापरवाह और अज्ञानी लोग।

बाद की शताब्दियों में, गहन ज्ञान वाले लोगों और इब्न अल-जौजी और जलाल अल-दीन अल-सुयुती जैसे सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं द्वारा परंपराओं को मनगढ़ंत और विकृतियों से अलग किया जाता रहा, जिन्हें कई बार जागते हुए ईश्वर के दूत की उपस्थिति और बातचीत का सम्मान प्राप्त हुआ, जिसकी पुष्टि आध्यात्मिक अनुभूति वाले लोगों द्वारा की गई।

इस प्रकार नीचे दिए गए चमत्कार कई सुरक्षित और भरोसेमंद हाथों से हमारे पास आते हैं, जिसके लिए हम ईश्वर का शुक्रिया अदा करते हैं, क्योंकि यह उनकी कृपा से है। किसी को भी उनकी प्रामाणिकता पर संदेह करने का अधिकार नहीं है। पैगंबर के आशीर्वाद से भोजन की वृद्धि के बारे में प्रामाणिक रूप से वर्णित चमत्कारों के उदाहरण इस प्रकार हैं:

पहला उदाहरण: सहीह अल-बुखारी, सहीह अल-मुस्लिम और परंपरा की अन्य छह सबसे प्रामाणिक किताबें बताती हैं कि पैगम्बर की ज़ैनब से शादी का जश्न मनाने के दौरान, उम्म सुलयम (अनस की मां) ने कुछ मुट्ठी भर खजूर भूनकर अनस से कहा कि वे इसे अपने साथ ले जाएं।

उन्हें पैगम्बर के पास ले जाया गया। उन्होंने ऐसा ही किया, और उनसे कहा गया: “जाओ और फलां-फलां को (कुछ लोगों के नाम लेते हुए) और जो भी तुम्हें मिले, उन्हें आमंत्रित करो।”

अनस ने वैसा ही किया जैसा उसे बताया गया था, और धीरे-धीरे लगभग 300 साथियों ने पैगम्बर के कमरे और बड़े हॉल को भर दिया जहां गरीब, विद्वान साथी रहते थे।

पैगम्बर ने उनसे कहा: "दस के गोले बनाओ।"

खजूर हाथ में लेकर, उसने प्रार्थना की और लोगों से कहा कि वे खुद ही खाना खा लें। हर व्यक्ति ने तब तक खाया जब तक कि वह संतुष्ट नहीं हो गया। फिर उसने अनस से मेज साफ करने को कहा। अनस

बाद में बताया: “मैं नहीं बता सकता था कि वहाँ और खाना था या नहीं

जब मैं बर्तन बाहर रखता हूँ या जब मैं उसे बाहर निकालता हूँ।”79

दूसरा उदाहरण: अबू अय्यूब अल-अंसारी, जिन्होंने अपने प्रवास के बाद कुछ महीनों तक पैगंबर की मेज़बानी की थी, बताते हैं: "मैंने दो लोगों के लिए पर्याप्त भोजन बनाया: ईश्वर के दूत और अबू बकर। पैगंबर,

हालाँकि, उन्होंने मुझे 30 प्रतिष्ठित अंसारी लोगों को आमंत्रित करने के लिए कहा

(सहायक) तीस आदमी आये और खाना खाया। फिर उसने पूछा

मुझे अन्य 60 लोगों को आमंत्रित करने के लिए कहा, जो मैंने किया। वे भी आए

और खाया। फिर अल्लाह के रसूल ने मुझे 70 लोगों को आमंत्रित करने को कहा

और भी, जो मैंने किया। वे आये और खाया।

जब उन्होंने खाना खत्म किया तो कटोरे में अभी भी खाना बचा हुआ था।

उस चमत्कार को देखने के बाद, जिन लोगों ने खाया था, उन सभी ने

निष्ठा की शपथ। एक सौ अस्सी पुरुष

दो लोगों के लिए बना खाना खाया।”80

तीसरा उदाहरण: 'उमर, अबू हुरैरा, सलामा अल-अक़्वा, और अबू 'अम्रत अल-अंसारी रिपोर्ट करते हैं कि दौरान

एक सैन्य अभियान में सेना के पास भोजन नहीं था।

---

79 बुखारी, 4:234; बहाक़ी, दलैल, 3:465; मुसलमानों से भी संबंधित.

80 अल-शिफ़ा', 1:292; तबरानी, इब्न कथिर और बहाकी द्वारा संबंधित।

सेंगर को जब इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने उन्हें एकत्र होने को कहा।
उनका सारा खाना। हर कोई कुछ खजूर लेकर आया—
सबसे बड़ी मात्रा कुछ मुट्ठी भर थी - और उन्हें डाल दिया
एक चटाई पर। सलमा बताती हैं: “मैंने राशि का अनुमान लगाया
लेटे हुए बकरे के बराबर हो।” परमेश्वर के दूत ने उसकी वृद्धि के लिए प्रार्थना की और सभी को बुलाया
वे अपना कटोरा लाने के लिए आगे बढ़े और हर सैनिक का कटोरा भर गया। फिर भी, कुछ खाना बचा हुआ था
वहाँ मौजूद एक साथी ने बाद में कहा: "मैं
खजूर की प्रचुरता से पता चला
कि यदि सभी लोग एक साथ हों तो भी पर्याप्त होगा
पृथ्वी आई।”81

चौथा उदाहरण: परंपरा की प्रामाणिक पुस्तकें,
बुखारी और मुस्लिम सहित, रिपोर्ट करते हैं कि 'अब्द अल-रहमान इब्न अबू बक्र ने कहा: "हम, 130 साथी, एक अभियान पर भगवान के दूत के साथ थे। चार मुट्ठी गेहूं से रोटी बनाने के लिए आटा तैयार किया गया था, एक बकरा मारा गया था और

पकाया गया, और उसके जिगर और गुर्दे भून दिए गए।
ईश्वर की कसम कि ईश्वर के रसूल ने प्रत्येक को
भुने हुए भाग से एक टुकड़ा लें और पका हुआ भाग डालें
हमने कटोरों में मांस खाया। हमने तब तक खाया जब तक हमारा पेट नहीं भर गया, और

81 मुस्लिम, संख्या 1729, बुखारी द्वारा भी संदर्भित।

फिर भी कुछ बच गया, मैंने उसे ऊँट पर लाद लिया।”82

पाँचवाँ उदाहरण: जैसा कि प्रामाणिक पुस्तकों में दर्ज है, जाबिर अल-अंसारी शपथ के तहत बताते हैं: “अहज़ाब या खंदक (खाई) की लड़ाई के दौरान, हमारा भोजन लगभग 1,000 लोगों द्वारा चार मुट्ठी जौ और एक पके हुए बकरे के मांस से बनी रोटी खाने के बाद भी कम नहीं हुआ। भोजन मेरे घर में पकाया गया था। और जब सभी ने खाया और चले गए, तब भी बर्तन में मांस उबल रहा था और आटे से रोटी बन रही थी। ईश्वर के दूत ने अपने मुँह से पानी आटे और बर्तन में डाला था, और फिर बहुतायत के लिए प्रार्थना की थी।”83 चूँकि इस घटना को 1,000 लोगों ने देखा था, जाबिर ने शपथ के साथ इसका वर्णन किया था, और किसी ने भी इसका खंडन नहीं किया है, इसलिए इसे उतना ही निश्चित माना जा सकता है जितना कि इसे 1,000 लोगों द्वारा वर्णित किया गया हो।

छठा उदाहरण: जैसा कि प्रामाणिक तरीके से बताया गया है, अबू तल्हा (अनस के चाचा) ने कहा: "भगवान के दूत ने थोड़ी मात्रा में राई की रोटी से 70 से 80 लोगों को खाना खिलाया

82 मुस्लिम, संख्या 2057; हाकिम, 2:618; बुखारी और इब्न हंबल द्वारा भी संदर्भित।

83 मुस्लिम, नहीं. 3029; बुखारी, 5:138; इब्न हनबल, मुसनद, 3:218.

जिसे अनस अपनी बांह के नीचे ले आया। पैगम्बर ने रोटी को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ने का आदेश दिया और फिर बहुतायत के लिए प्रार्थना की। चूंकि सभी के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी, इसलिए लोगों ने दस-दस की शिफ्ट में खाना खाया।

सभी लोग संतुष्ट होकर चले गए।”84

सातवाँ उदाहरण: शिफाअल-शरीफ और सहीह अल-मुस्लिम सहित परंपरा की प्रामाणिक किताबें बताती हैं कि जाबिर अल-अंसारी ने कहा: "एक आदमी ने भगवान के दूत से पूछा-

अपने परिवार को खिलाने के लिए भोजन की तलाश में एक व्यक्ति ने एक सेंगर से संपर्क किया। पैगंबर ने उसे जौ का आधा भार दिया। वह और उसके परिवार ने लंबे समय तक उसमें से खाया। जब उन्होंने देखा कि यह कम नहीं हो रहा है, तो उन्होंने यह देखने के लिए इसे मापा कि यह कितना कम हो गया है। इससे बहुतायत का आशीर्वाद समाप्त हो गया, और जौ कम होने लगा। जब उस व्यक्ति ने ईश्वर के दूत को बताया कि क्या हुआ था, तो उन्होंने उत्तर दिया: 'यदि आपने इसे नहीं मापा होता, तो यह आपके जीवन भर के लिए पर्याप्त होता।'"85

आठवां उदाहरण: सुनन अल-तिर्मिधि, सुनन अल-नसाई, दलाईल अल-बहाकी जैसी प्रामाणिक पुस्तकें।
शिफाअल-शरीफ और अन्य लोग समूरा इब्न जुनदुब को उद्धृत करते हैं कि भगवान के लिए मांस का एक कटोरा लाया गया था
मैसेंजर ने सुबह से लेकर शाम तक लोगों के समूहों को खाना खिलाया।

---

84 बुखारी, 4:234; मुस्लिम, नहीं. 2040; बहाक़ी, 6:88; इब्न हनबल, 3:218.

85 शिफ़ा', 1:91; मुस्लिम, नहीं. 2281; बहाक़ी, 6:114.

शाम.86 जैसा कि इन परंपराओं की प्रामाणिकता के बारे में परिचय में बताया गया है, ऐसा लगता है जैसे कि वहां मौजूद हर व्यक्ति ने इस घटना को बताया और समुरा ने इसे अपने तरीके से बताया।

उनकी ओर से और उनकी स्वीकृति से।

नौवां उदाहरण: जैसा कि कादी इयाद (शिफा अल-शरीफ के लेखक), इब्न अबी शायबा और तबरानी जैसे विश्वसनीय और भरोसेमंद शोधकर्ताओं ने बताया है , अबू हुरैरा कहते हैं: "अल्लाह के रसूल ने मुझे सूफ्फा के उन गरीब लोगों को बुलाने को कहा जो मस्जिद के हॉल को अपना घर बनाते थे। उनकी संख्या 100 से ज़्यादा थी और मैंने उन सभी को ढूँढ़ा और बुलाया। हमारे सामने खाने की एक प्लेट रखी गई। हम सबने उसमें से अपनी मर्ज़ी के मुताबिक खाया। जब हम उठे तो प्लेट उतनी ही भरी हुई थी जितनी हमारे सामने रखी गई थी। हालाँकि, खाने पर हमारी उंगलियों के निशान से पता चल रहा था कि हमने उसमें से खाया था।"88 हालाँकि सिर्फ़ अबू हुरैरा ने ही इस घटना का ज़िक्र किया है, लेकिन यह इतना निश्चित है मानो सूफ्फा के हर सदस्य ने इसे बयान किया हो, क्योंकि अबू हुरैरा ने अपनी आयतों में इसे बयान किया है।

---

86 तिर्मिज़ी, सं. 2629; दारिमी, हकीम और इब्न हनबल द्वारा भी संबंधित।

87 सुफ्फा के लोग गरीब मुहाजिरीन (मदीना में प्रवास करने वाले) थे, जो मस्जिद के हॉल में रहते थे और इस्लाम के प्रति समर्पित थे, विशेष रूप से पैगंबरी परंपराओं को संरक्षित करने के प्रति।

रसूल ने उनकी आजीविका का प्रबन्ध किया। (ट्र.)

88 शिफ़ा', 1:293; बहाक़ी, 6:101; तबरानी और इब्न हनबल द्वारा संबंधित।

नाम और उनकी पुष्टि पर निर्भर करता है। क्या ऐसे परिपूर्ण, सत्यनिष्ठ लोग चुप रहते यदि कथन सत्य न होता?

दसवाँ उदाहरण: इमाम अली ने बताया कि अल्लाह के रसूल ने अब्दुल मुत्तलिब के वंशजों को इकट्ठा किया, जो लगभग 40 लोग थे, जिनमें से कुछ एक बार में एक युवा ऊँट खा सकते थे और एक गैलन से ज़्यादा दूध पी सकते थे। लेकिन अल्लाह के रसूल ने सिर्फ़ मुट्ठी भर खाना बनाया था। उन्होंने तब तक खाया जब तक वे संतुष्ट नहीं हो गए, और खाने की मात्रा कम नहीं हुई। फिर रसूल ने उनके लिए दूध से भरा एक लकड़ी का कटोरा लाया जो शायद सिर्फ़ तीन या चार लोगों के लिए काफ़ी था। उन्होंने तब तक पिया जब तक वे संतुष्ट नहीं हो गए, और दूध की मात्रा कम नहीं हुई।[89] यह चमत्कार अली की बहादुरी और वफ़ादारी की तरह ही निश्चित है।

ग्यारहवाँ उदाहरण: अली और फ़ातिमा की शादी की दावत में, ईश्वर के दूत ने बिलाल से कहा: "कुछ मुट्ठी भर आटे से कुछ रोटी बनाओ, और एक छोटा ऊँट कटवाओ।" बिलाल ने बताया: "मैं खाना लाया, और उसने आशीर्वाद के लिए उस पर अपना हाथ रखा। बाद में, साथी समूहों में आए, खाया, और चले गए। दूत ने बचे हुए भोजन की प्रचुरता के लिए प्रार्थना की और प्रत्येक को एक पूरा कटोरा भेजा

[89] मजमा अल-ज़वायद, 8:302, इब्न हनबल, बज़ार द्वारा संबंधित, और तबरानी.

अपनी पत्नियों से कहा कि वे खाएँ और जो कोई उनके पास आए उसे खिलाएँ।”90 ऐसी धन्य बहुतायत ऐसी धन्य शादी के लिए आवश्यक थी।

बारहवाँ उदाहरण: इमाम जाफ़र अल-सादिक ने बताया कि फ़ातिमा ने सिर्फ़ अपने और अली के लिए ही खाना पकाया था। उसने अली को ईश्वर के दूत को उनके साथ खाने के लिए आमंत्रित करने के लिए भेजा। वह आया और उनसे कहा कि वे अपनी पत्नियों में से प्रत्येक के लिए भोजन का एक बर्तन भेजें और फिर बचा हुआ भोजन उसके, अली, फ़ातिमा और उनके बच्चों के लिए अलग रख दें। फ़ातिमा कहती है: "जब हमने बर्तन हटाया, तो वह अभी भी पूरी तरह भरा हुआ था। ईश्वर की इच्छा से, हमने उसमें से काफी देर तक खाया।"91 मुझे आश्चर्य है कि आप इस चमत्कार पर विश्वास क्यों नहीं करते जैसे कि आपने खुद इसे देखा हो, क्योंकि यह कथावाचकों की एक ऐसी शानदार और सम्मानित पंक्ति के माध्यम से हम तक पहुँचता है। शैतान भी इसका खंडन नहीं कर सकता!

तेरहवाँ उदाहरण: ऐसी सत्य परम्परा

अबू दाऊद, अहमद इब्न हनबल और जैसे अधिकारी

बहाक़ी दुकैन अल-अहमद इब्न साद अल-मुज़ैन से, नु'मान इब्न मुकर्रिन अल-अहमद अल-मुज़ैन से वर्णन करते हैं, जो अपने छह भाइयों के साथ थे

90 शिफ़ा': 1:297; बहाक़ी, दलैल, 3:160.

91 शिफा', 1:294; इब्न हजर, अल-मतालिब अल-आलिया, 4:73. संचरण की श्रृंखला इस प्रकार है: उनके पिता मुहम्मद अल-

बाकिर, अपने पिता इमाम ज़ैन अल-अबिदीन से, अली से।

साथी, और जरीर से निम्नलिखित घटना मूल रूप से उमर द्वारा रिपोर्ट की गई और विभिन्न चैनलों के माध्यम से प्रसारित की गई:

"ईश्वर के दूत ने एक बार उमर से कहा: 'अहमसी जनजाति के 400 घुड़सवारों को उनकी यात्रा के लिए भोजन उपलब्ध कराओ।' उमर ने जवाब दिया: 'हे ईश्वर के दूत, सभी खाद्य सामग्री एक साथ मिलाकर एक युवा ऊँट के आकार के बराबर है।' पैगंबर ने उसे उन्हें देने के लिए कहा। खजूर के आधे भार से, उमर ने उन्हें इतनी मात्रा दी कि 400 घुड़सवार संतुष्ट हो गए।

बाद में इस घटना की रिपोर्ट करते समय उन्होंने कहा: 'खाना कम नहीं हुआ।'"92 गवाहों की चुप्पी से इसकी पुष्टि होती है। ऐसी कहानियों को सिर्फ़ इसलिए नज़रअंदाज़ न करें क्योंकि वे सिर्फ़ दो या तीन लोगों द्वारा बताई गई हैं, क्योंकि चुप्पी से पुष्टि उनके अर्थ को अर्थ द्वारा तवातुर की प्रामाणिकता और निश्चितता प्रदान करती है।

चौदहवाँ उदाहरण: जैसा कि बुखारी और मुस्लिम सहित परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकों में वर्णित है , जाबिर के पिता यहूदियों के भारी कर्ज में डूबे हुए मर गए। जाबिर ने अपने पिता की सारी संपत्ति लेनदारों को दे दी, लेकिन वे संतुष्ट नहीं थे। उसके बगीचे में लगे फल सालों तक शेष कर्जों का भुगतान नहीं कर पाए।

[92] मजमा अल-ज़वायद, 8:304; बहाक़ी, 5:365; इब्न हनबल, 5:445.

ईश्वर के दूत ने कहा: "फलों को तोड़ो और उन्हें ढेर में लगाओ
ऊपर।" उसने वैसा ही किया। फिर दूत इधर-उधर चला गया
जब जाबिर ने अपने पिता का क़र्ज़ चुका दिया तो उसने उनसे कहा, "मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो।"
कर्ज, फिर भी बाग की वार्षिक उपज के बराबर फल
रह गया।

एक अन्य कथन के अनुसार, जो बचा वह
यह रकम उसके द्वारा ऋणदाताओं को दी गई रकम के बराबर थी।
यहूदी लेनदारों को बहुत आश्चर्य हुआ।93 चूँकि यह
चमत्कार अपने गवाहों की ओर से संबंधित है,
अर्थ में तवातुर का आश्वासन है ।

पंद्रहवाँ उदाहरण: ऐसे सावधानीपूर्वक शोधकर्ता
जैसा कि तिर्मिज़ी और बेहाकी ने अबू हुरैरा को यह कहते हुए उद्धृत किया है:
"एक लड़ाई के दौरान ("तबुक की लड़ाई के दौरान"
एक अन्य कथन के अनुसार) सेना के पास हथियार ख़त्म हो गए
भोजन। ईश्वर के दूत ने पूछा: 'क्या वहाँ कुछ भी नहीं है
बिल्कुल भी?' मैंने जवाब दिया: 'मेरे सैडल बैग में कुछ (दूसरे संस्करण में "15")
तारीखें बची हैं।' उसने मुझसे कहा
उन्हें ले आओ, जो मैंने किया। अपना हाथ थैले में डालते हुए,
उसने मुट्ठी भर खजूर निकाले और उन्हें प्लेट में रखते हुए बहुतायत के लिए प्रार्थना की। फिर उसने पुकारा
सेना दस-दस के समूहों में थी। जब सभी ने खाना खा लिया, तो ईश्वर के दूत ने
मुझसे कहा: 'वह (थैला) ले लो
जो तुम लाए हो, उसे थामे रहो, और उसे मत मोड़ो

93 बुखारी, 3:210; अबू दाऊद, 1:17; इब्न हनबल द्वारा भी संबंधित
और नासाई.

मैंने थैला उठाया, उसमें हाथ डाला और उसमें उतने ही खजूर पाए जितने मैं लाया था। बाद में, पैगंबर के समय और फिर अबू बकर, उमर और उस्मान के समय में, मैंने उन खजूरों को खाया।

अबू हुरैरा, ईश्वर के रसूल, ब्रह्मांड के शिक्षक और सृष्टि के गौरव के पवित्र विद्यालय सुफ्फा में एक नियमित और महत्वपूर्ण छात्र और शिष्य थे। इसके अलावा, पैगंबर ने अबू हुरैरा के लिए एक मजबूत याददाश्त के लिए प्रार्थना की थी।

इस प्रकार यह चमत्कार, जो अनेक लोगों के सामने हुआ, निश्चित माना जाना चाहिए, मानो इसे पूरी सेना ने बताया हो।

सोलहवां उदाहरण: हदीस की सटीक पुस्तकें, जिनमें बुखारी भी शामिल है, बताती हैं कि एक बार अबू हुरैरा को भूख लगी और वे अल्लाह के रसूल के पीछे-पीछे उनके घर चले गए।

उपहार के रूप में लाए गए दूध के कटोरे को देखकर, ईश्वर के दूत ने उन्हें सुफ्फा के लोगों को आमंत्रित करने के लिए कहा। अबू हुरैरा बताते हैं: "मैंने खुद से कहा: 'मैं यह सारा दूध पी सकता हूँ, क्योंकि मुझे इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।' लेकिन चूँकि यह पैगंबर का आदेश था, इसलिए मैंने उन सभी को - 100 से ज़्यादा लोगों को - लाकर दिया। पैगंबर ने कहा

[94] एक अन्य संस्करण में, अबू हुरैरा ने कहा: "मैंने ईश्वर के मार्ग में उनमें से बहुत सारे भार दिए। जब 'उथमान शहीद हो गए, तो खजूर और थैला लूट लिया गया।" शिफा, 1: 295, इब्न हनबल, बैहकी और तिर्मिज़ी द्वारा संबंधित है।

मैंने उन्हें दूध देने के लिए कहा। मैंने एक-एक करके सभी को कटोरा दिया और उनमें से प्रत्येक ने तृप्त होने तक पीया।

अंततः पैगम्बर ने मुझसे कहा: 'हम दोनों ही बचे हैं।

पहले तुम पियो!' जब मैं पी रहा था, तो उसने मुझसे बार-बार कहा: 'और पियो,' जब तक कि मैंने कहा: 'मैं उस महान परमेश्वर की कसम खाता हूँ जिसने तुम्हें सच्चाई के साथ भेजा है कि मैं और अधिक पीने के लिए बहुत अधिक भरा हुआ हूँ।' तब पैगम्बर ने बाकी का पानी यह कहते हुए पी लिया: 'अल्लाह के नाम पर' और उसकी प्रशंसा करते हुए।'"95

यह चमत्कार, जो दूध की तरह ही शुद्ध और मीठा है, परंपरा की सभी छह प्रामाणिक पुस्तकों में वर्णित है, खासकर इमाम बुखारी द्वारा, जिन्होंने 500,000 परंपराओं को याद किया था। इसके अलावा, इसे अबू हुरैरा द्वारा वर्णित किया गया है, जो पैगंबर के पवित्र स्कूल सुफ्फा के एक वफादार, प्रसिद्ध छात्र और एक तेज याददाश्त वाले साथी थे। उन्होंने उस स्कूल के सभी अन्य छात्रों का प्रतिनिधित्व किया, और इसलिए उनकी रिपोर्ट में तवातुर की निश्चितता है।

ऐसा सच्चा व्यक्ति, जिसने अपना जीवन इस्लाम और पैगम्बरी परंपराओं के लिए समर्पित कर दिया, जिसने यह परंपरा सुनी और बताई कि: "जो कोई भी जानबूझकर मेरे बारे में झूठ बोलता है उसे आग में अपनी सीट के लिए तैयार रहना चाहिए," एक निराधार घटना या कहावत कैसे बता सकता है? ऐसा करने से मूल्य और प्रामाणिकता को नुकसान होगा-

95 तिर्मिज़ी, सं. 2479; बुखारी, 8:120; न्यायाधीश, 3:15; बहाक़ी, 4:101.

उन सभी परम्पराओं की सत्यता जो उसने याद कर ली थी और
उसे लोगों द्वारा विरोधाभास का लक्ष्य बनाओ
सुफ्फा!

> हे प्रभु, आपके दिए गए आशीर्वाद के कारण
> अपने रसूल पर कृपा बरसा,
> आपने हमारे लिए प्रावधान किया है!

एक महत्वपूर्ण बात: कमज़ोर चीज़ें मज़बूत बन जाती हैं जब एक साथ जुड़ जाते हैं। बारीक मुड़े हुए धागे बन जाते हैं एक मजबूत रस्सी और, जब लपेटा जाता है, तो मजबूत रस्सियों को तोड़ा नहीं जा सकता। अब, 15 प्रकार के चमत्कारों से हम केवल एक ही प्रकार दिखाया गया है, जो इससे संबंधित है बहुतायत का आशीर्वाद। अब तक उद्धृत 16 उदाहरण इस तरह का केवल एक हिस्सा बनता है। प्रत्येक उदाहरण पैगम्बर होने का प्रमाण देने के लिए पर्याप्त रूप से मजबूत है। हालाँकि, अगर असंभव मान लिया जाए तो भी कुछ लोगों को कमज़ोर माना जाता है, फिर भी हम उन्हें ठीक से कमज़ोर नहीं कह सकते, क्योंकि जो कुछ भी बलवान के साथ जुड़ जाता है वह भी बन जाता है मज़बूत।

जब एक साथ विचार किया जाता है, तो ऊपर बताए गए 16 उदाहरण एक महान और शक्तिशाली चमत्कार का संकेत देते हैं अर्थ में तवातुर की निश्चित शक्ति के साथ । और यह चमत्कार, जब 14 अन्य भागों के साथ जुड़ जाता है बहुतायत के चमत्कारों में से जिनका अभी तक उल्लेख नहीं किया गया है, वह एक सर्वोच्च चमत्कार प्रकट करता है जो सबसे अटूट चमत्कार जितना मजबूत है।

सक्षम केबल। अंत में, इस सर्वोच्च चमत्कार को इसमें जोड़ें
अन्य 14 प्रकार के चमत्कारों को देखिए और देखिए कि क्या निश्चित,
वे मुहम्मद के पैगम्बर होने के लिए निर्णायक और अकाट्य प्रमाण प्रदान करते हैं।

इस प्रकार उनकी पैगम्बरियत का स्तंभ,
ऐसे प्रमाणों का संग्रह, पर्वत के समान मजबूत है। आप उन लोगों के संदेह को समझ सकते हैं जो
उनकी पैगम्बरी पर विश्वास न करें क्योंकि उनके विषय में संदेह है।
जो लोग उत्कृष्ट और स्थापित स्वर्ग को कमजोर या नाजुक मानते हैं क्योंकि उनके पास नहीं है
दृश्यमान स्तंभ। बहुतायत के ये चमत्कार दर्शाते हैं कि पैगंबर इतने प्रिय दूत थे और
मैं उस दयालु और उदार परमेश्वर का आदरणीय सेवक हूँ, जो हमें भोजन उपलब्ध कराता है।
सृष्टि के निर्माता, जब भी आवश्यक हुआ, उन्होंने अपने सामान्य कार्य करने के तरीके को बदल दिया और उन्हें अपनी ओर से भोज भेजे।
अदृश्य - जैसे वह शून्य से सृजन करता है।

अरब में पानी और कृषि की कमी है।
और इसलिए इसके लोग, विशेष रूप से साथी
इस्लाम के प्रारंभिक काल में, लोग अक्सर
भोजन और पानी की कमी। नतीजतन, उनके कुछ
सबसे बड़े चमत्कार भोजन और पानी से जुड़े थे।

पैगम्बर होने का प्रमाण देने के बजाय, ये आश्चर्यकर्म
ज़रूरत के प्रति प्रतिक्रियाएँ थीं, एक दिव्य उपहार, ईश्वर का अनुग्रह
हे प्रभु, और परम दयालु द्वारा प्रदान किया गया भोज

एक उन लोगों के लिए जिन्होंने उनकी पैगम्बरी की पुष्टि की
किसी भी चमत्कार को देखने से पहले। जब चमत्कार
हुआ, उनका विश्वास और दृढ़ विश्वास भी और अधिक बढ़ गया
अधिक मजबूत, उज्जवल और अधिक जीवंत।

आठवाँ चिन्ह: यह भाग चमत्कारों से संबंधित है
पानी से जुड़ा हुआ.

परिचय: यदि कई लोगों से जुड़ी किसी घटना की रिपोर्ट का खंडन नहीं किया जाता है,
तो घटना
निश्चित रूप से घटित हुआ, भले ही केवल एक या अधिक लोगों द्वारा इसकी सूचना दी गई हो।
दो व्यक्ति, क्योंकि लोग, अपने स्वभाव से ही, एक दूसरे से जुड़े होते हैं
झूठ को झूठ कहने की प्रवृत्ति होती है। अगर संबंधित लोग
साथी थे, जो झूठ के प्रति अधिक असहिष्णु थे
साधारण लोगों की तुलना में, यदि वर्णित घटनाएँ ईश्वर के रसूल से संबंधित हों, और यदि
व्यक्तिगत कथावाचक कोई प्रसिद्ध साथी हो, तो वह कथावाचक सभी गवाहों की ओर से वर्णन
करता है।

किसी भी स्थिति में, नीचे उल्लिखित प्रत्येक चमत्कार नीचे आया
विभिन्न संचरण लाइनों के माध्यम से और कई साथियों द्वारा हजारों सटीक लोगों को सौंपा गया
था
तबीउन विद्वान। इन विद्वानों ने, बदले में, उन्हें अगले युग के अधिकारियों को प्रेषित किया।
प्रत्येक युग का
सावधानीपूर्वक अनुसंधानकर्ताओं ने उन्हें अत्यंत सावधानी और सम्मान के साथ अपने
उत्तराधिकारियों को सौंप दिया। इस प्रकार वे
हजारों विश्वसनीय हाथों से गुजर कर यह हम तक पहुंचा है।

इसके अलावा, पैगंबर और उनके मार्गदर्शक खलीफाओं के जीवित रहते हुए संकलित की गई परंपराओं के पाठ सुरक्षित रूप से बुखारी और मुस्लिम जैसे सबसे प्रतिभाशाली परंपरा विद्वानों के हाथों में पहुँच गए, जिन्होंने सबसे सावधानीपूर्वक जांच और वर्गीकरण के माध्यम से उन्हें एकत्र किया, प्रस्तुत किया और पढ़ाया। भगवान उन्हें भरपूर इनाम दे!

रसूल अल्लाह की उंगलियों से पानी का बहना और बहुत से लोगों का उससे पानी पीना, तवातुर की निश्चितता है, क्योंकि यह उन लोगों द्वारा वर्णित है जो झूठ पर सहमत होने में असमर्थ हैं। इसके अलावा, यह लोगों के बड़े समूहों के सामने तीन बार हुआ। कई समझदार शोधकर्ता (विशेष रूप से बुखारी, मुस्लिम, इमाम मालिक, इमाम शुऐब और इमाम क़तादा) इस चमत्कार को प्रसिद्ध साथियों (जिनमें अनस, जाबिर और इब्न मसऊद शामिल हैं) के एक समूह से प्रसारित करते हैं। ऐसे चमत्कारों के असंख्य उदाहरणों में से, हम यहाँ केवल नौ का उल्लेख करते हैं।

पहला उदाहरण: बुखारी, मुस्लिम और परंपरा की अन्य प्रामाणिक किताबें अनस से संबंधित हैं कि: "वहाँ

हम 300 लोग ज़ावरा में अल्लाह के रसूल के साथ थे। उन्होंने हमें दोपहर की नमाज़ के लिए वुज़ू करने को कहा , लेकिन हमें पर्याप्त पानी नहीं मिल पाया। उन्होंने हमें थोड़ा पानी लाने का आदेश दिया, जो हमने किया, और उन्होंने अपने हाथ उसमें डुबोए। मैंने देखा कि उनकी उंगलियों से पानी बह रहा था जैसे

एक फव्वारा। सभी 300 लोगों ने उसी से वुज़ू किया
पानी पीया।”96 अनस इस घटना का वर्णन करता है-
300 व्यक्तियों की ओर से डेंट। क्या वे ऐसा कर सकते थे?
अगर वह झूठ बोल रहा था तो क्या वह चुप रहा?

दूसरा उदाहरण: परम्परा की विश्वसनीय पुस्तकें,
विशेषकर सहीह अल-बुखारी और सहीह अल-मुस्लिम,
जाबिर इब्न अब्दुल्ला अल-अंसारी ने कहा: "हम
(1,500 लोग) अभियान के दौरान प्यासे हो गए
हुदैबिया। ईश्वर के दूत ने वुज़ू किया ।
एक चमड़े का पानी का थैला (क़िरबा) लिया और फिर अपना हाथ उसमें डुबोया
मैंने देखा कि उसकी उंगलियों से फव्वारे की तरह पानी बह रहा था। सभी 1,500
लोगों ने उसमें से पानी पिया और अपने गिलास भर लिए।
पानी की थैलियाँ।” सलीम इब्न अबी अल-जाद ने बाद में जाबिर से पूछा
कितने लोग वहाँ थे, और बाद में जवाब दिया: "पानी भी पर्याप्त होगा

100,000 लोग थे, लेकिन हम केवल 1,500 थे।”97

चूंकि इस चमत्कार को 1,500 लोगों ने देखा था, इसलिए इसके
संवाददाताओं की संख्या पर विचार किया जाना चाहिए।
1,500 के रूप में, क्योंकि लोग विरोध करते हैं और मना करते हैं
झूठ। जहाँ तक साथियों का सवाल है, जिन्होंने अपना बलिदान दिया
आत्मा और संपत्ति, पिता और माता, जनजातियाँ

---

96 नसाई, 1:60; बुखारी, 4:233; मुस्लिम, नहीं. 2279; तिर्मिधि,
सं. 3635.

97 मुसलमान, नहीं. 1856; बुखारी, 4:234; बहाक़ी, 4:110.

सत्य और सच्चाई की खातिर अपने वतन और मातृभूमि की रक्षा करते हुए, क्या वे झूठ का सामना होने पर चुप रह सकते थे, खासकर पैगंबर की चेतावनी सुनने के बाद: "जो कोई भी जानबूझकर मेरे बारे में झूठ बोलता है उसे आग में अपनी सीट के लिए तैयार रहना चाहिए।" उनकी चुप्पी स्वीकृति का संकेत देती है।

तीसरा उदाहरण: परंपरा की प्रामाणिक पुस्तकों के अनुसार, विशेष रूप से अल-बुखारी और अल-मुस्लिम, जाबिर बताते हैं: "बुवात के अभियान के दौरान, ईश्वर के दूत ने वज़ू का आदेश दिया। हमने उत्तर दिया कि पानी नहीं है। दूत ने हमें थोड़ा सा पानी खोजने की कोशिश करने के लिए कहा। हमने थोड़ा सा पानी लिया। उन्होंने अपना हाथ उस पर रखा और एक प्रार्थना पढ़ी, जिसे मैं सुन नहीं सका, और फिर कारवां में सबसे बड़ा पानी का कुंड मांगा। वे इसे मेरे पास लाए, और मैंने इसे ईश्वर के दूत के सामने रख दिया। उन्होंने अपनी उंगलियाँ अलग करके अपने हाथ उसमें रखे, जबकि मैंने वह थोड़ा पानी उनके हाथों पर डाला। मैंने देखा कि पानी बहुत ज़्यादा बह रहा है-

उन्होंने अपनी उंगलियों से धीरे से पानी निकाला और हौज को भर दिया। मैंने उन लोगों को बुलाया जिन्हें पानी की ज़रूरत थी। जब उन्होंने पानी पी लिया और वुज़ू के लिए पानी ले लिया, तो मैंने पैगंबर को बताया कि सभी लोग आ गए हैं। उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठाए, जिससे हौज अभी भी पूरी तरह से भरी हुई थी।''98

98 मुस्लिम, संख्या 3006-14.

इस चमत्कार में तवातुरीन अर्थ की निश्चितता है , क्योंकि जाबिर, उस समय पैगंबर के सेवक
और इस प्रकार घटना में प्रथम स्थान रखते हुए, इसे संबंधित करता है
सभी गवाहों के नाम पर। इब्न मसूद, जो भी
ने रिपोर्ट किया, कहते हैं: "मैंने पैगम्बर की उंगलियों से पानी को फव्वारे की तरह बहते देखा।"99

इन तीन उदाहरणों पर एक साथ विचार करें और देखें
यह कितना अकाट्य और निश्चित चमत्कार है।
साथ में, वे साबित करते हैं कि पानी बह रहा है
पैगम्बर की उँगलियाँ स्पष्ट तवातुर है। यह चमत्कार है
इतना महान कि मूसा का जल उत्पन्न करने का चमत्कार भी
एक चट्टान के 12 अलग-अलग बिंदुओं से भागना संभव नहीं है
इसे इसके समतुल्य माना जाता है। चट्टान से पानी का फूटना
यह संभव है, और इसके उदाहरण सामान्य घटनाओं में मिल सकते हैं, लेकिन मांस और हड्डियों से प्रचुर मात्रा में पानी बहने की कोई समानता नहीं है।

चौथा उदाहरण: इमाम मालिक अपनी रिवायत में कहते हैं
मुअद इब्न जबल से मुवत्ता' कि: “के दौरान
ताबुक अभियान के दौरान हमें एक फव्वारा मिला
मुश्किल से बह रहा था - जेट लगभग उतना मोटा था
पतली डोरी। ईश्वर के दूत ने हमें एक छोटी डोरी इकट्ठा करने को कहा
कुछ लोग अपने साथ थोड़ा पानी भी लाए।
हथेलियाँ, जिनसे ईश्वर के दूत ने अपना चेहरा धोया

---

99 बुखारी, 4:235, तिर्मिज़ी और नसाई द्वारा भी उल्लेखित है।

और हाथ। फिर हमने इसे वापस फव्वारे में डाल दिया।
अचानक फव्वारे को पानी देने वाली धारा साफ हो गई, और पानी इतनी अधिक मात्रा में बहने लगा कि पूरी सेना के लिए पर्याप्त हो गया।”

इमाम इब्न इसहाक, कथावाचकों में से एक, रिपोर्ट करते हैं: "झरने का कुआँ गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ के साथ ज़मीन के नीचे बह गया। ईश्वर के दूत ने मुआज़ से कहा कि वह इस जगह को बगीचों में बदलते देखने के लिए लंबे समय तक जीवित रह सकता है।" और ऐसा ही हुआ।100 पाँचवाँ उदाहरण: बुखारी (बारा से) और (सलमा इब्न अल-

अक्वा से), साथ ही अन्य सटीक किताबें (अन्य कथावाचकों से), बताती हैं: "हुदै-बिया के अभियान के दौरान हममें से चार सौ लोग एक कुएँ पर पहुँचे। वहाँ मुश्किल से 50 लोगों के लिए पर्याप्त पानी था।

हमने कुएँ से सारा पानी निकाल दिया। भगवान के दूत कुएँ के पास आकर बैठ गए और एक बाल्टी पानी माँगने लगे, जिसे हमने मँगवाया। उन्होंने अपनी लार बाल्टी में डाली, प्रार्थना की और फिर इस पानी को वापस कुएँ में डाल दिया। अचानक पानी फूटने लगा और कुएँ के किनारे तक पहुँच गया। पूरी सेना और उनके जानवरों ने तब तक पानी पिया जब तक वे तृप्त नहीं हो गए, और फिर उन्होंने अपने पानी के थैले भर लिए।"101

---

[100] मुवत्ता', यात्रा, 2; इब्न हनबल, 5:228; से भी संबंधित है
बुखारी और मुस्लिम।

101 बुखारी, 4:234; बहाक़ी, 4:110; मुसलमानों से भी संबंधित.

छठा उदाहरण: प्रामाणिक परम्परा की पुस्तकें, जैसे कि मुस्लिम और इब्न जरीर अल-तबारी की पुस्तकें, अबू क़तादा के माध्यम से बताती हैं: “हम मदद के लिए जा रहे थे, क्योंकि मुता की लड़ाई में कमांडर शहीद हो गए थे। मेरे पास एक पानी की थैली थी। ईश्वर के दूत ने मुझसे कहा था: 'अपनी पानी की थैली को सावधानी से रखना, क्योंकि यह हमारे लिए बहुत उपयोगी होगी।' इसके तुरंत बाद, प्यास ने हमें जकड़ लिया। हम 72 (अल-तबारी के अनुसार 300) थे। ईश्वर के दूत ने मुझसे कहा: 'अपनी पानी की थैली लाओ।' मैंने ऐसा ही किया। उन्होंने इसे लिया और इसके किनारे को अपने होठों तक लाया। मुझे नहीं पता कि उन्होंने इसमें सांस ली या नहीं। फिर हम सभी 72 लोगों ने इसमें से पिया और अपनी पानी की थैलियाँ भर लीं। जब मैंने इसे वापस लिया, तो यह अभी भी उतना ही भरा हुआ था जितना पहले था।”102

इस चमत्कार पर विचार करें और कहें: “हे परमेश्वर, उसे और उसके परिवार को जल की बूंदों के समान शांति और आशीर्वाद प्रदान करें।”

सातवाँ उदाहरण: परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकें, विशेष रूप से सहीह अल-बुखारी और सहीह अल-मुस्लिम, रिपोर्ट करती हैं कि इमरान इब्न हुसैन ने कहा: "हमारा पानी एक सैन्य अभियान में समाप्त हो गया। पैगंबर ने मुझे और अली से कहा: 'ऐसी जगह पर एक महिला अपने जानवर के साथ अपना रास्ता बना रही है, जो लदा हुआ है

102 मुसलमान, नहीं. 681; अबू दाऊद, नहीं. 437-41; अबू नुअयम, 4:282.

पानी की थैलियाँ। जाओ और उसे ले आओ।' 'अली और मैंने उसे उसके बोझ के साथ ठीक वैसे ही पाया जैसा और जहाँ बताया गया था, और उसे (उसके पास) ले आए। उसने आदेश दिया: 'एक बर्तन में थोड़ा पानी डालो।' हमने वैसा ही किया। जब उसने बहुतायत के लिए प्रार्थना की, तो हमने पानी को वापस उसके थैले में डाल दिया। तब रसूल ने कहा: 'हर कोई आकर अपना थैला भर ले।' हर कोई आया, पीया और अपने थैले भर लिए। बाद में, उसने कहा कि महिला के लिए कुछ इकट्ठा किया जाना चाहिए, इसलिए उन्होंने जो कुछ इकट्ठा किया उससे उसका घाघरा भर दिया।

इमरान आगे कहते हैं: "मैंने कल्पना की कि दोनों पानी की थैलियाँ लगातार भर रही हैं। ईश्वर के दूत ने उससे कहा: 'अब तुम जा सकती हो। हमने तुम्हारा पानी नहीं लिया; बल्कि, ईश्वर ने हमें (अपने खजाने से) पानी दिया।'"103

आठवां उदाहरण: कुछ परंपरावादी, मुख्य रूप से इब्न खुज़ैमा ने अपने सहीह में बताया है कि उमर ने कहा: “तबुक के अभियान के दौरान हमारा पानी ख़त्म हो गया था।
हममें से कुछ लोगों को अपने ऊँटों को काटना पड़ा और उसके अंदर का पानी पीना पड़ा। अबू बकर ने ईश्वर के रसूल से बारिश के लिए प्रार्थना करने की अपील की। उन्होंने प्रार्थना करने के लिए अपने हाथ उठाए और उन्हें नीचे किया ही था कि बादल छा गए और भारी बारिश होने लगी। जब हमने अपने बर्तन भर लिए, तो बादल चले गए। यह बारिश सीमित थी

103 मुसलमान, 682; बुखारी, 4:233.

इस घटना का हमारे क्षेत्र में आने से कोई लेना-देना नहीं था, क्योंकि यह उस स्थान से आगे नहीं जाता था जहां हम स्थित थे।"104 इस प्रकार इस घटना का संयोग से कोई लेना-देना नहीं था; यह पूरी तरह से पैगम्बर मुहम्मद का चमत्कार था।

नौवां उदाहरण: अम्र इब्न शुऐब, अब्दुल्लाह इब्न अम्र इब्न अल-अस के पोते और जिनके ननिहाल में एक बेटा था।

चार इमामों के भरोसेमंद राशन के बारे में बताते हैं कि पैगम्बर बनने से पहले, ईश्वर के दूत अपने चाचा अबू तालिब के साथ धु अल-हिजाज़ (अराफात के पास) की यात्रा ऊँट पर कर रहे थे। जब अबू तालिब ने कहा कि उन्हें प्यास लगी है, तो ईश्वर के दूत ने घोड़े से उतरकर ज़मीन पर पैर पटक दिया।

पानी निकला और अबू तालिब ने उसमें से पानी पिया।105

एक विवेकशील विद्वान का कहना है कि यद्यपि इसे इरहासत माना जाता है, क्योंकि यह उनकी पैगम्बरी की घोषणा से पहले हुआ था,106 इसे उनकी पैगम्बरी का एक आश्चर्य भी माना जा सकता है, क्योंकि यह पानी उसके बाद 1,000 वर्षों तक उसी स्थान पर बहता रहा।

---

104 मजमा अल-ज़वायद, 6:194, बज़ार, बहाकी और तबरानी से संबंधित।

105 शिफ़ा', 1:290, बहाक़ी, 2:15; इब्न साद और तबरानी द्वारा भी संबंधित।

106 इरहासत: असाधारण घटनाओं की वह श्रृंखला जो पैगम्बर मुहम्मद के जन्म से पहले, उनके जन्म के समय और उनके पैगम्बर होने की घोषणा करने से पहले घटित हुई। (ट्र.)

इसी प्रकार, 90 विभिन्न आख्यानों में (लेकिन 90 अलग-अलग घटनाओं में नहीं) पानी से जुड़े चमत्कारों का वर्णन मिलता है।
पहले सात उदाहरण तवातुर के अर्थ में निश्चित रूप से स्थापित हैं । हालाँकि अंतिम दो
कई मजबूत जंजीरों के माध्यम से वर्णित नहीं किया गया है
संचरण, प्रामाणिक स्रोत, मुख्यतः इमाम
बैहाकी और हाकिम, आठवें अध्याय में वर्णित चमत्कार का समर्थन और पुष्टि करने के लिए एक और चमत्कार की रिपोर्ट करते हैं।
उदाहरण: उमर ने बताया कि उन्होंने अल्लाह से अपील की
सेना को पानी की आवश्यकता थी, इसलिए दूत से वर्षा के लिए प्रार्थना करने को कहा गया।
ईश्वर के दूत ने अपने हाथ उठाए, बादल उमड़ पड़े
तुरन्त ही, सेना की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त वर्षा हुई।
इसके बाद बादल छंट गए।107 ऐसा लगा जैसे
बादलों को पानी देने के लिए भेजा गया था, क्योंकि वे आये थे,
पर्याप्त पानी दिया और फिर गायब हो गया।

जिस प्रकार यह कथन आठवें उदाहरण का समर्थन करता है, इब्न अल-जौज़िया, जो एक बहुत ही सावधानीपूर्वक शोधकर्ता थे,
कई प्रामाणिक परंपराओं को झूठा मानकर खारिज करते हुए कहते हैं: “यह
यह घटना बद्र की लड़ाई के दौरान घटित हुई थी और
उल्लेखित: और उसने तुम पर पानी उतारा
स्वर्ग तुम्हें उसके द्वारा शुद्ध करने के लिए... (8:11)।” चूँकि यह आयत
घटना का संदर्भ देते हुए कहा गया है कि इसकी सत्यता पर संदेह नहीं किया जा सकता।
इसके अलावा, यह बार-बार दोहराया जाने वाला और सर्वसम्मत कथन है-

107 अबू नुअयम, 2:523; हकीम और बेहाकी द्वारा भी संबंधित।

चमत्कार की सूचना दी कि इसके तुरंत बाद बारिश हुई
पैगम्बर ने प्रार्थना करने के लिए अपने हाथ उठाए। कई बार ऐसा हुआ कि,
तवातुर के ज़रिए बताया गया है कि जब उसने उठाया
उसके हाथ मंच पर थे, बारिश शुरू होने से पहले ही
उसने उन्हें नीचे उतारा।

नौवां संकेत: ईश्वर के दूत का एक प्रकार का चमत्कार यह है कि पेड़ उसके आदेशों का

पालन करते हैं और उसके पास आते हैं।
यह चमत्कार, पानी से जुड़े चमत्कारों की तरह है
उसकी उंगलियों से बहता हुआ, तवातुर की निश्चितता है
अर्थ में। कई उदाहरण बताए गए हैं
विभिन्न चैनलों के माध्यम से।

दूत के आदेश पर पेड़ों का खुद को उखाड़कर उसके पास आना स्पष्ट
तवातुर माना जा सकता है, क्योंकि सबसे प्रसिद्ध,

भरोसेमंद साथी (जैसे, अली, इब्न अब्बास, इब्न
मसूद, इब्न उमर, याला इब्न मुर्रा, जाबिर, अनस इब्न
मलिक, बुरायदा, उसामा इब्न ज़ायद, और घायलन इब्न
सलमा) ने भी उसी चमत्कार की निश्चितता के साथ रिपोर्ट दी।
सैकड़ों तबीउन विद्वानों को उनकी रिपोर्टें प्राप्त हुईं
सीधे तौर पर, जो हमारे पास आये हैं और इस प्रकार
कई तवातुर का अधिकार । इसलिए इस चमत्कार में तवातुरिन अर्थ की
निश्चितता है । हम केवल कुछ उदाहरणों का उल्लेख करते हैं।

पहला उदाहरण: इब्न माजा, दारिमी और बहाकी
('अली और अनस इब्न मलिक के माध्यम से), और बज़ार और

इमाम बेहकी (उमर से) कहते हैं: “तीन साथियों ने बताया कि अल्लाह के रसूल परेशान थे
अविश्वासियों के इनकार से। उसने प्रार्थना की: 'हे प्रभु, दिखाओ
मुझे एक संकेत दे ताकि मैं अब किसी की बात पर ध्यान न दूँ
मेरा खंडन करता है।' अनस बताता है कि गेब्रियल भी था
वहाँ उपस्थित थे, और उनके निर्देश पर ईश्वर के दूत ने घाटी के एक ओर स्थित एक पेड़ को पुकारा जिसमें वे स्थित थे। वह अपना स्थान छोड़कर चला गया और

उसके पास आया। उसने उसे वापस जाने को कहा, और वह वापस चला गया। लौटकर अपने स्थान पर बस गया।”108

दूसरा उदाहरण: कादी इयाद, विद्वान
मुस्लिम पश्चिम (उत्तरी अफ्रीका और अल-अंडालस), से संबंधित है
'अब्दुल्ला इब्न' उमर से अपने अल-शिफ़ा' अल-शरीफ़ में
सबसे प्रतिष्ठित कथावाचकों की एक सशक्त श्रृंखला के माध्यम से:
“एक बद्दू ने अल्लाह के रसूल से संपर्क किया
एक अभियान। रसूल ने पूछा: 'तुम कहाँ हो
मैं कहाँ जा रहा हूँ?’ उसने उत्तर दिया: ‘मेरे परिवार के पास।’
पूछा: ‘क्या तुम्हें कुछ बेहतर की इच्छा नहीं है?’ जब
बेडौइन ने पूछा कि वह क्या हो सकता है, भगवान के दूत ने उत्तर दिया: 'यह गवाही देने के लिए कि कोई भगवान नहीं है
'परन्तु ईश्वर अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, और मुहम्मद उसका सेवक और रसूल है।' बेडौइन
पूछा: 'क्या आप इसे साबित कर सकते हैं?' भगवान के दूत ने उत्तर दिया:

108 शिफ़ा', 1:302; बेहाकी, इब्न माजा, दारिमी, बज़ार से संबंधित,
और इब्न हनबल।

‘घाटी के किनारे का वह पेड़ गवाही देगा।’”

इब्न उमर घटना का बाकी हिस्सा बताते हैं: "उस पेड़ हिल गया, अपनी जड़ों को उखाड़ लिया, मिट्टी को छोड़ दिया, और अल्लाह के रसूल के पास पहुंचा। उसने उससे तीन बार गवाही मांगी, और हर बार उसने उसकी सच्चाई की गवाही दी।

फिर उसने पेड़ को आदेश दिया कि वह वापस जाकर अपने स्थान पर बैठ जाए और उसने वैसा ही किया।”109

इब्न साहिब अल-असलामी बताते हैं कि बुरायदा ने कहा:
"एक बार एक बेडौइन ने चमत्कार के लिए पूछा जब हम ईश्वर के दूत के साथ एक अभियान पर थे। दूत ने एक पेड़ की ओर इशारा किया और उससे कहा: 'उस पेड़ से कहो कि ईश्वर के दूत उसे बुला रहे हैं।' पेड़ हिल गया, खुद को मुक्त किया, और दूत के पास आकर कहा: 'आप पर शांति हो, हे ईश्वर के दूत!' बेदुइन ने कहा: 'अब इसे अपनी जगह पर वापस जाने के लिए कहो।' जब ईश्वर के दूत ने उसे ऐसा करने का आदेश दिया, तो पेड़ वापस चला गया। जब बेदुइन ने कहा: 'मुझे अपने आप को आपके सामने झुकाने दो,' तो दूत ने उत्तर दिया: 'किसी को भी ऐसा करने की अनुमति नहीं है।' बेदुइन ने कहा: 'तो मैं तुम्हारा हाथ चूमूंगा,' और उसने उसे ऐसा करने की अनुमति दी।110

109 लक्षण, 1:298; तिर्मिधि, इब्न हिब्बान, बहाकी और हकीम द्वारा संबंधित।

110 शिफ़ा', 1:299; बज़ार, मुसनद, 3:49.

तीसरा उदाहरण: परंपरा की प्रामाणिक पुस्तकें,
मुस्लिम की सहिह सहित, जाबिर को उद्धृत करते हुए:
"हम अल्लाह के रसूल के साथ एक अभियान पर गए थे। वह शौच के लिए जगह तलाश रहे थे। जब
उसने देखा कि वहाँ कोई परदे वाली जगह नहीं थी, वह चला गया
दो पेड़ों को काटकर उनमें से एक को अगली शाखा से खींच लिया
दूसरे पेड़ की तरह था आज्ञाकारी ऊँट
उसकी लगाम खींची जा रही थी। उसने उनसे कहा: 'शामिल हो जाओ
भगवान की कृपा से, वे सब मेरे ऊपर एक साथ आ गए।' पेड़ों ने वैसा ही किया
और एक पर्दा बना दिया। शौच के बाद, वह
उन्हें अपने स्थानों पर वापस जाने का आदेश दिया।”111 एक अन्य संस्करण में, जाबिर ने इसे बहुत मामूली, महत्वहीन अंतर के साथ वर्णित किया है।112

चौथा उदाहरण: उसामा इब्न ज़ैद, एक बहादुर कमांडर और भगवान के रसूल के सेवक, रिपोर्ट करते हैं: "हम
ईश्वर के दूत के साथ एक अभियान पर गये।
शौच के लिए कोई परदे वाली जगह न मिलने पर, वह
मुझसे पूछा: 'क्या तुम्हें कोई पेड़ या चट्टान दिख रही है?' जब मैंने
उन्होंने कहा कि मैंने ऐसा किया, तो उन्होंने मुझसे कहा: 'जाओ और पेड़ों से कहो कि
ईश्वर के दूत ने उन्हें एक साथ जुड़ने का आदेश दिया ताकि
वह खुद को राहत दे सकता है, और फिर चट्टानों को ऐसा करने के लिए कह सकता है
वही.' मैं गया और उनसे ऐसा करने को कहा, और मैं कसम खाता हूँ
भगवान की कृपा से पेड़ एक साथ जुड़ गए और चट्टानें बन गईं

111 मुस्लिम, नहीं. 3006-12; बहाक़ी, 6:8.

112 शिफ़ा', 1:299.

एक दीवार। शौच के बाद, ईश्वर के दूत ने कहा
मैं: ‘उन्हें अलग होने के लिए कहो।’ मैं राजसी की कसम खाता हूँ
एक, जिसके हाथ में मेरी आत्मा है, कि पेड़ और
चट्टानें अलग हो गईं और अपने स्थान पर वापस चली गईं।”113

इन दोनों घटनाओं की रिपोर्ट याला ने भी की थी
इब्न मुर्रा, घायलन इब्न सलामा अल-थकाफ़ी, और इब्न
हुनैन की लड़ाई के सिलसिले में मसूद।

पांचवां उदाहरण: इमाम इब्न फवारक, जिन्हें 'अल्लाह के नाम से जाना जाता है'
न्यायशास्त्र में अपनी उत्कृष्टता और उत्तम चरित्र के कारण दूसरे शाफ़ी ने
बताया: "ईश्वर के दूत को कभी-कभी घोड़े पर यात्रा करते समय नींद आती
थी। ताइफ़ की लड़ाई के दौरान एक रात, एक कमल का फूल

उसके सामने एक पेड़ आ गया। उसके लिए रास्ता बनाने के लिए
और अपने घोड़े को नुकसान पहुंचाने से बचने के लिए, पेड़ दो हिस्सों में बंट गया और
ईश्वर के दूत अपनी गाड़ी पर सवार होकर यहां से गुजरे।
घोड़ा। वह पेड़ हमारे समय तक वैसा ही बना हुआ है।”114

छठा उदाहरण: या'ला बताती है: "एक अभियान के दौरान एक तल्हा या समुरा पेड़
आया और इधर-उधर घूमने लगा

ईश्वर के दूत, मानो परिक्रमा कर रहे हों, और फिर
अपने स्थान पर वापस चला गया। ईश्वर के दूत ने कहा: 'यह
मुझे सलाम करने के लिए भगवान से अनुमति मांगी।'”115

---

113 उक्त, 1:300, बहाकी, इब्न हनबल और अबू याला द्वारा संबंधित।

114 वही, 1:301.

115 शिफ़ा', 1:301; न्यायाधीश, 2:617; इब्न हनबल, 4:170; बहाक़ी, 6:23.

सातवाँ उदाहरण: परंपरावादी इब्न मसऊद के कथन को उद्धृत करते हैं: "जब नुसायबिन के जिन्न अल्लाह के रसूल से इस्लाम में धर्मांतरित होने के लिए बटन अल-नखल आए, तो एक पेड़ ने उन्हें उनके आने की सूचना दी।" इमाम मुजाहिद इब्न मसऊद से वर्णन करते हैं कि जब जिन्न ने उनके पैगम्बर होने का प्रमाण मांगा, तो एक पेड़ रसूल के पास आया और फिर उनके आदेश पर अपनी जगह पर वापस चला गया। यह चमत्कार उन्हें धर्मांतरित करने के लिए पर्याप्त था।116

जिन लोगों ने ऐसे ही एक हज़ार चमत्कारों के बारे में सुना है और फिर भी उन पर ईमान नहीं लाते, वे शैतानों से भी ज़्यादा भटके हुए हैं। जिन्न ऐसे लोगों को हमारे बीच के मूर्ख लोग कहते हैं [जो] अल्लाह पर बहुत ज़्यादा झूठ बोलते थे (72:4)।

आठवाँ उदाहरण: तिर्मिज़ी इब्न अब्बास से रिपोर्ट करते हैं: "ईश्वर के दूत ने एक बद्दू से पूछा: 'अगर वह पेड़ की शाखा मेरे पास आती है जब मैं उसे पुकारता हूँ, तो क्या तुम गवाही दोगे कि मैं दूत हूँ?' उसने जवाब दिया कि वह ऐसा करेगा, और इसलिए दूत ने उसे बुलाया। शाखा टूट गई और उसके पास कूद गई। फिर जब दूत ने उसे ऐसा करने का आदेश दिया तो वह अपनी जगह पर वापस कूद गई।"117

116 बुखारी, 5:58; मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिधि और इब्न हनबल द्वारा भी संबंधित।

117 तिर्मिज़ी, सं. 3632; न्यायाधीश, 2:620; बहाक़ी, 6:15.

विभिन्न कथाओं के माध्यम से ऐसे कई उदाहरण बताए गए हैं। सात या आठ रस्सियाँ मिलकर एक मजबूत रस्सी बनाती हैं।
केबल जब वे एक साथ आते हैं। उसी तरह,
जब इन वृक्ष-संबंधी चमत्कारों की रिपोर्ट दी गई
सबसे प्रसिद्ध साथियों को एक साथ लिया जाता है, वे
तवातुरिन अर्थ की निश्चितता होनी चाहिए या यहां तक कि
वास्तविक शब्दों में। वास्तव में, वे की डिग्री प्राप्त करते हैं
साथियों के गुजरने के माध्यम से स्पष्ट तवातुर
उन्हें अगली पीढ़ी तक ले जाना।

विशेष रूप से, परम्परा की ऐसी प्रामाणिक पुस्तकें
जैसे बुखारी की सहीह, मुस्लिम की सहीह, इब्न हिब्बन की सहीह
सहीह, और तिर्मिज़ी की सुनन नोट करें और श्रृंखला को रिकॉर्ड करें
प्रेषकों की सूची (पैगंबर के समय से)
इतनी अच्छी तरह और विश्वासपूर्वक कि एक विवरण पढ़ना
उदाहरण के लिए, बुखारी की सहिह में इसे सहाबा से सुनने के बराबर माना गया है।

जब पेड़ सर्वशक्तिमान ईश्वर के दूत को पहचानते हैं,
उसके रसूल होने की पुष्टि करो, पुकारो और सलाम करो
यदि वे उसका अनुसरण करें और उसके आदेशों का पालन करें, तो वे
अविश्वासी जो स्वयं को मनुष्य कहते हैं, बेकार लकड़ी के टुकड़ों के अलावा और कुछ कैसे माने जा सकते हैं?
नरक की आग के योग्य?

दसवाँ चिन्ह: यह शोक ध्रुव से सम्बंधित है,
जिसे तवातुर के रूप में रिपोर्ट किया जाता है और पेड़ से संबंधित चमत्कारों को मजबूत करता है। यह घटना, जो

पैगंबर की मस्जिद में एक विशाल घटना घटी थी
मण्डली ऐसे चमत्कारों को पुष्ट करती है, क्योंकि खंभा एक पेड़ से आया था। लेकिन यह चमत्कार अपने आप में मुतवातिर है (इसमें स्पष्ट रूप से निश्चितता है)

तवातुर), जबकि वृक्षों से संबंधित चमत्कारों को समग्र रूप से देखा जाए तो वे मुतवा-तिर हैं।

पैगम्बर खजूर के पेड़ पर टेक लगाते थे
अपनी मस्जिद में धर्मोपदेश देते समय।
जब उन्होंने नवनिर्मित मंच पर अपना उपदेश देना शुरू किया, तो मण्डली ने ध्रुव की ध्वनि सुनी
ऊँट की तरह कराहना। उसकी कराह तभी बंद हुई जब
मैसेंजर ने उस पर हाथ रखकर उसे सांत्वना दी।

यह चमत्कार सर्वविदित है और इसमें स्पष्ट तवातुर की निश्चितता है। इसे 15 विभिन्न माध्यमों से साथियों के एक प्रतिष्ठित समूह द्वारा रिपोर्ट किया गया, जिनमें ऐसे प्रख्यात विद्वान और विद्वान शामिल थे।

अनस इब्न मलिक और जैसे प्रमुख परंपरा कथावाचक
जाबिर इब्न अब्दुल्ला अल-अंसारी (दोनों ने सेवा की)
पैगंबर), अब्दुल्ला इब्न उमर, अब्दुल्ला इब्न
अब्बास, साहल इब्न साद, अबू सईद अल-खुदरी, उबैय इब्न
काब, बुरायदा और उम्म सलमा (बेटे की माँ)
विश्वासियों) सैकड़ों तबीउन अधिकारियों को प्राप्त हुआ
साथियों से, और प्रामाणिक पुस्तकों से
परम्परा, विशेषकर बुखारी और मुस्लिम, ने इसे आगामी शताब्दियों तक प्रसारित किया।

जाबिर ने बताया कि ईश्वर के दूत अपनी मस्जिद में धर्मोपदेश देते समय खंभे के सहारे झुक जाते थे, जिसे "खजूर का तना" कहा जाता है। एक मंच बनने के बाद, पैगंबर अपना धर्मोपदेश उसी से देते थे। इस अलगाव के कारण, खंभा गर्भवती ऊँट की तरह कराहता था। अनस ने बताया कि यह भैंस की तरह कराहता था और मस्जिद को हिला देता था।

साहल इब्न साद कहते हैं: "जब वह कराहता था, तो कई लोग फूट-फूट कर रो पड़ते थे।"

उबे इब्न काब के अनुसार, खंभा इतना रोया कि वह टूट गया। एक अन्य रिपोर्ट में बताया गया है कि ईश्वर के दूत ने कहा: "यह इसलिए कराह रहा था क्योंकि इसे ईश्वर के नामों के पाठ (उपदेश के दौरान) से अलग कर दिया गया था।" एक अन्य संस्करण के अनुसार, उन्होंने कहा: "अगर मैंने इसे गले नहीं लगाया होता और सांत्वना नहीं दी होती, तो यह पैगंबर से अलग होने के कारण न्याय के दिन तक रोता रहता।"

बुरैदा के अनुसार, जब खंभा रोने लगा तो पैगम्बर ने उस पर अपना हाथ रखा और कहा: "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें उसी जंगल में वापस भेज दूंगा जहां से तुम आए थे ताकि तुम फिर से जड़ें जमा सको, पूरी तरह से फलो-फूल सको और फिर से फल दो। या, अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें जन्नत में लगा दूंगा और अल्लाह के दोस्त तुम्हारे फल खाएंगे।" फिर उसने यह बात सुनी और मस्जिद में मौजूद लोगों ने खंभे की आवाज़ सुनी

कह दो: “मुझे जन्नत में रोप दो, और अल्लाह के दोस्त मेरे फल उस जगह खाएंगे जहाँ सड़न नहीं होती।”
ईश्वर के दूत ने उत्तर दिया कि वह ऐसा ही करेगा और आगे कहा: "उसने अनंत काल की दुनिया को क्षणभंगुर दुनिया से अधिक पसंद किया है।"

प्रसिद्ध विद्वान हसन अल-बसरी जब भी अपने शिष्यों को इस चमत्कारी घटना के बारे में बताते थे, तो रो पड़ते थे और कहते थे: "लकड़ी का एक टुकड़ा ईश्वर के महान, सबसे प्यारे रसूल के लिए इतना प्यार और जोश दर्शाता है। आपको इस प्यार को लकड़ी के टुकड़े से कहीं ज़्यादा महसूस करने की ज़रूरत है।"118 और हम कहते हैं: "यह सच है, और उनके लिए प्यार और जोश उनके शानदार सुन्ना और शरीयत का पालन करके संभव है।"

प्रश्न: भोजन और पानी से संबंधित प्रचुरता के चमत्कारों की रिपोर्ट शोक ध्रुव के समान कई माध्यमों से क्यों नहीं की गई, जबकि अधिक लोगों ने उन्हें देखा था?

जवाब: चमत्कार दो तरह के होते हैं। कुछ लोगों ने उनकी नबी होने की पुष्टि की है।

118 बुखारी, सहीह, 4:237; इब्न हनबल, मुसनद, नं. 2236, 2237, 2400, 2401, 2430-32; मुस्लिम, सहीह, नहीं. 2374; क़दी 'इयाद, अल-शिफ़ा' अल-शरीफ़, 1:304-5; नसाई, सुनान, 3:102; तिर्मिज़ी, सुनान, नहीं. 3631; बहाक़ी, दलाइल अल-नुबुव्वा, 6:66; अबू नुअयम, दलाइल अल-नुबुव्वा, 2:399; दारिमी, सुनान, नहीं. 39; कन्ज़ अल-उम्मल, 12:411-18.

यह एक ऐसा प्रमाण है जो विश्वासियों के विश्वास को मजबूत करता है, पाखंडियों को विश्वास और ईमानदारी के लिए प्रेरित करता है,
और अविश्वासियों को विश्वास दिलाती है। यही कारण है कि हर किसी ने इसे देखा और इसे सफल बनाने के लिए इतना प्रयास किया गया
इसे फैलाओ। भोजन से जुड़े अन्य प्रकार के चमत्कार
और जल चमत्कार या दिव्य उपहार हैं, यहां तक कि दयालु भगवान द्वारा प्रदान की गई दावतें भी
चमत्कारों को प्रकट करने के बजाय, आवश्यकता को पूरा करना चाहिए।

यद्यपि वे उसकी भविष्यद्वक्ताता के चमत्कारी प्रमाण हैं, परन्तु उनका वास्तविक महत्व यह है कि परमेश्वर, जो
एक ही खजूर के बीज से सैकड़ों टन खजूर तैयार करता है, एक ही खजूर के बीज से 1,000 लोगों के लिए भोज का प्रबंध करता है
थोड़ा सा भोजन और पवित्र योद्धाओं की प्यासी सेना को तृप्त करता है
पैगम्बर के मंदिर से प्रचुर मात्रा में पानी बहता है
उंगलियाँ। यही कारण है कि भोजन और से संबंधित प्रत्येक चमत्कार
पानी चमत्कार की डिग्री तक नहीं पहुंचता है
शोक ध्रुव.

हालाँकि, इन दो प्रकार के चमत्कारों के उदाहरणों को, उनकी संपूर्णता में, गलत माना जाता है।
शोक ध्रुव के रूप में व्यापक रूप से रिपोर्ट किया गया। इसके अलावा, जबकि वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति केवल प्रभाव ही देख सकता था
(न कि घटनाएं) प्रचुर मात्रा में भोजन और
पानी, कुछ लोग तो बस उन्हें घटते हुए देख रहे हैं,
खंभे की कराह सभी ने सुनी।
यह भी एक कारण था कि बाद वाला इतना व्यापक रूप से क्यों फैला।

प्रश्न: साथियों ने रिकॉर्ड सुरक्षित रखा
पैगंबर के हर कार्य और स्थिति के बारे में
अत्यंत सावधानी बरती जाती है। तो फिर ऐसे महत्वपूर्ण चमत्कार क्यों नहीं किए जाते
10 या 12 से ज़्यादा लाइनों के प्रसारण से संबंधित? और मुख्य रिपोर्टर सिर्फ़ जाबिर, अनस और अबू हुरैरा जैसे साथी ही क्यों हैं, और क्यों नहीं,

उदाहरण के लिए, अबू बकर और उमर?

उत्तर: पहले भाग का उत्तर नीचे दिया गया है
चौथे संकेत का "तीसरा आवश्यक।"
दूसरा भाग, जैसे एक मरीज डॉक्टर के पास जाता है, वैसे ही इंजीनियरिंग के मामलों के बारे में इंजीनियरों से सलाह ली जाती है, और
मुफ़्तियों से धार्मिक मुद्दों के बारे में पूछा जाता है, कुछ विद्वानों के साथियों को यह काम सौंपा जाता है और उन्हें समर्पित किया जाता है
स्वयं को आगामी पीढ़ियों को निर्देश देने के लिए
पैगंबरी परंपराओं में। उदाहरण के लिए, अबू हुरैरा
उमर ने अपना जीवन परंपराओं के संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया, जबकि
प्रशासनिक मामलों और खिलाफत के कंधों पर
इस प्रकार उमर ने केवल कुछ ही रिवायतें बयान कीं,
क्योंकि उन्हें मुसलमानों को शिक्षा देने के लिए अबू हुरायरा, अनस और जाबिर जैसे लोगों पर भरोसा था।
परंपराएँ.

वास्तव में, एक परंपरा को स्थापित माना जा सकता है यदि यह एक प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा रिपोर्ट की जाती है जो सच्चे, ईमानदार और विश्वसनीय साथियों से संबंधित है।

इसे देखते हुए, इसे अन्य तरीकों से जोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है।

यही कारण है कि कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं केवल
एक, दो, या तीन चैनल.

ग्यारहवाँ संकेत: यहाँ हम केवल आठ का हवाला देंगे
चट्टानों और पहाड़ों जैसी निर्जीव वस्तुओं से संबंधित चमत्कारों के
अनगिनत उदाहरण।

पहला उदाहरण: काजी इयाद ने अपने शिफा में बताया है:
अल-शरीफ और कथावाचकों की एक शानदार श्रृंखला के माध्यम से
बुखारी जैसे महान परम्परा अधिकारियों से, कि
पैगंबर के सेवक इब्न मसऊद कहते हैं: "हम कर सकते थे
भगवान के साथ भोजन करते समय भगवान की महिमा करते हुए भोजन सुनें
सन्देशवाहक।”119

दूसरा उदाहरण: परम्परा की सटीक पुस्तकें

अबू ज़र और अनस की रिपोर्ट के अनुसार अनस ने कहा:
"हम ईश्वर के रसूल के साथ थे। उन्होंने अपने हाथ में कुछ कंकड़ लिए
और वे ईश्वर की स्तुति करने लगे। फिर
उसने उन्हें अबू बकर के हाथों में सौंप दिया, और उन्होंने अपनी महिमा
जारी रखी। ”120

अबू ज़र्र से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ने फिर कहा
उमर और उस्मान के हाथों में कंकड़,
क्रमिक रूप से, और उन्होंने अपना महिमामंडन जारी रखा।
अनस और अबू ज़र दोनों कहते हैं कि ईश्वर का संदेशवाहक-

---

119 बुखारी, 4:235, तिर्मिज़ी, सं. 3712.

120 शिफ़ा', 1:306; बहाक़ी, दलैल, 6:66.

अंत में गेर ने उनके हाथों में कंकड़ रख दिए, जिसके बाद कंकड़ों ने अपनी महिमा बंद कर दी।121

तीसरा उदाहरण: अली, जाबिर और आयशा कहते हैं कि चट्टानें और पहाड़ कहेंगे: "शांति हो तुम पर हे ईश्वर के रसूल," ईश्वर के रसूल से। अली कहते हैं: “जब भी हम मक्का के उपनगरों में घूमते थे उनकी पैगम्बरी के शुरुआती दौर में पेड़ों और जिन चट्टानों के पास से हम गुजरते थे वे कहती थीं: 'तुम्हें शांति मिले, हे ईश्वर के रसूल।'”122

जाबिर कहते हैं: “जब ईश्वर का दूत आया किसी चट्टान या पेड़ के पार खड़े होकर वे उसके आगे सिर झुकाकर कहते थे: "आप पर शांति हो, हे पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भगवान।”123जाबिर इब्न समुरा के अनुसार, भगवान के दूत ने एक बार कहा था: “मैं एक चट्टान को पहचानता हूँ जो कभी मुझे नमस्कार करो।”124 कुछ लोगों के अनुसार, वह काबा का काला पत्थर। आयशा ने वर्णन किया: "भगवान का संदेशवाहक ने कहा: 'जब गेब्रियल मेरे पास संदेश लेकर आए, तब से मैं जब भी किसी चट्टान या पेड़ के पास से गुजरता, तो वह मुझे दिखाई देता। कह दो: “ऐ अल्लाह के रसूल, आप पर सलामती हो।”'125

---

121 शिफ़ा', 1:306; मजमा अल-ज़वायद, 5:179; तबरानी द्वारा संबंधित और बज़ार.

122 अर्थशास्त्र, सं. 3630; न्यायाधीश, 2:607; अबू नुअयम, 2:389.

123 शिफ़ा', 1:307, बहाक़ी द्वारा संबंधित।

124 मुसलमान, नहीं. 2277; तिर्मिज़ी, नहीं. 3703; इब्न हनबल, 5:89.

125 शिफ़ा', 1:37; बहाक़ी, 2:135.

चौथा उदाहरण: अब्बास ने बताया कि ईश्वर के दूत ने अब्बास और उसके चार बेटों (अब्दुल्ला, उबैदुल्ला, फदल और कुसम) को एक टुकड़े से ढक दिया।

कपड़े का एक टुकड़ा लिया और प्रार्थना की: "हे मेरे भगवान, यह मेरे पिता का है भाई और ये उसके बेटे हैं। उन्हें परदा डालो आग जैसे मैंने उन्हें अपने वस्त्र से ढक दिया है। ” घर का छत, दरवाज़ा और दीवारें एक साथ इस प्रार्थना में शामिल हो गईं और कहने लगीं: “आमीन, आमीन।”126

पाँचवाँ उदाहरण: मुख्यतः इमाम बुखारी और ऐसे अन्य अन्य परंपरावादी जैसे इब्न हिब्बन, अबू दाऊद, और तिर्मिज़ी, अनस, अबू हुरैरा, 'उथमान' की रिपोर्ट और सईद इब्न ज़ैद (स्वर्ग का वादा करने वालों में से दो): “अल्लाह के रसूल, अबू बकर, उमर और उस्मान उहुद पर्वत पर चढ़े। पहाड़, या तो विस्मय में या खुशी के कारण कांप उठे। ईश्वर के दूत ने आदेश दिया यह: 'चुप हो जाओ, हे उहुद, क्योंकि तुम्हारे ऊपर एक पैगंबर है, एक एक सच्चा, और दो शहीद।”127 इस तरह, भगवान का पैगम्बर ने उमर और हज़रत मुहम्मद की शहादत की भविष्यवाणी की थी। 'उथमान.

इस परम्परा के पूरक में बताया गया है कि परमेश्वर का मदीना की ओर प्रवास के दौरान अविश्वासियों द्वारा पीछा किये जाने पर रसूल स. स. साबिर पर्वत पर चढ़ गये।

---

126 मजमा अल-ज़वायद, 9:269; बहाक़ी, 6:71; इब्न माजा, 2:209.

127 अबू दाऊद, संख्या 4651; तिर्मिज़ी, संख्या 3781; इनसे भी संबंधित बुखारी, मुस्लिम, हकीम और इब्न माजा।

तैन ने कहा: "हे ईश्वर के रसूल, कृपया मुझे छोड़ दें, क्योंकि मुझे डर है कि यदि आप मुझ पर हैं और वे आप पर हमला करते हैं तो ईश्वर मुझे दंडित करेगा।" इस पर, माउंट थावर ने उन्हें पुकारा: "हे ईश्वर के रसूल, मेरे पास आओ!" यही कारण है कि अंतर्ज्ञान वाले लोग साबिर पर डर और थावर पर सुरक्षा महसूस करते हैं।128 यह उदाहरण दर्शाता है कि ये महान पर्वत ईश्वर के सेवक हैं जो उनकी महिमा करते हैं और अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। इसके अलावा, वे पैगंबर को जानते हैं और उनसे प्यार करते हैं।

छठा उदाहरण: अब्दुल्लाह इब्न उमर ने कहा: "जबकि

पुलपिट पर उपदेश देते हुए, ईश्वर के दूत ने पढ़ा: वे ईश्वर को उसके सच्चे माप से नहीं मापते। पुनरुत्थान के दिन धरती पूरी तरह से उसकी मुट्ठी में होगी, और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा जाएगा (39:67), और कहा: 'अल्लाह, जो सबको मजबूर करता है, अपनी महिमा करता है और कहता है: "मैं ही सबको मजबूर करने वाला हूं, मैं ही सबको मजबूर करने वाला हूं, मैं ही महान और सर्वोच्च हूं।"' जब उसने यह कहा, तो पुल-पिट इतना हिल गया कि हमें डर लगा कि ईश्वर का रसूल नीचे गिर जाएगा।"129 सातवाँ उदाहरण: इब्न अब्बास ("उम्माह के विद्वान" और "कुरान के व्याख्याता") और इब्न

128 शिफ़ा', 1:308; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफ़ा', 1:630।

129 मुस्लिम, 4:2147; हाकिम, 2:252; नासाई और इब्न हंबल द्वारा वर्णित।

मसूद (पैगंबर के सेवक और एक महान साथी विद्वान) ने बताया कि काबा में 360 मूर्तियाँ थीं, जिन्हें सीसे से पत्थर पर जड़ा गया था। मक्का की विजय के दिन, ईश्वर के दूत ने एक घुमावदार छड़ी से उन पर एक-एक करके इशारा किया, और कहा: सत्य आ गया है, और झूठ गायब हो गया है। झूठ का हमेशा गायब होना तय है (17:81)। जिस भी मूर्ति की ओर उसने इशारा किया, वह गिर गई। अगर उसने मूर्ति के चेहरे की ओर इशारा किया, तो वह पीछे की ओर गिर गई; अगर उसने मूर्ति की पीठ की ओर इशारा किया, तो वह अपने चेहरे पर गिर गई। इस तरह वे सभी गिर गए।130

आठवाँ उदाहरण: यह भिक्षु बहीरा की प्रसिद्ध कहानी है। उनके पैगंबर होने से पहले, ईश्वर के दूत अपने चाचा अबू तालिब और कुछ अन्य कुरैशी व्यापारियों के व्यापारिक कारवां के साथ दमिश्क की यात्रा पर गए थे। वे मठ के पास रुके जहाँ बहीरा, एक प्रसिद्ध संन्यासी, रह रहा था। वह अप्रत्याशित रूप से बाहर आया। जब उसने कारवां के बीच विश्वसनीय मुहम्मद को देखा, तो उसने कहा: "वह दुनिया का स्वामी है और एक पैगंबर होगा।" कुरैशी ने पूछा: "आप यह कैसे जानते हैं?" पवित्र भिक्षु ने उत्तर दिया: "जब आप आ रहे थे, तो मैंने कारवां के ऊपर बादल का एक टुकड़ा देखा। जब आप बैठे, तो यह उसकी तरफ चला गया और छाया बन गया

[130] मजमा अल-ज़वायद, 6:176, बुखारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी द्वारा संबंधित।

मैंने यह भी देखा कि चट्टानें और पेड़ उसे देख रहे थे।

उसके सामने सजदा करो। वे ऐसा सिर्फ़ पैग़म्बरों के लिए करते हैं।”131

ऐसे ही लगभग 80 उदाहरण हैं।

एक साथ, ये आठ उदाहरण इतने मजबूत हैं

अटूट श्रृंखला। समग्र रूप से देखा जाए तो निर्जीव वस्तुओं से संबंधित ऐसे चमत्कार गवाही देते हैं

मुहम्मद की पैगम्बरी के बारे में निश्चितता है

तवातुर का अर्थ है। प्रत्येक उदाहरण दूसरों से अतिरिक्त शक्ति प्राप्त करता है, जैसे कि एक पतला स्तंभ

मोटे स्तंभों से जुड़कर मजबूत किया गया।

लोग अकेले में कमज़ोर हैं। लेकिन जब वे जुड़ते हैं

एक सेना, प्रत्येक के पास चुनौती देने के लिए पर्याप्त शक्ति है

1,000 लोग.

बारहवाँ चिन्ह: अगले तीन उदाहरण, संबंधित हैं-

ग्यारहवें चिह्न से जुड़े हुए, बहुत महत्वपूर्ण हैं।

पहला उदाहरण: जैसा कि सभी दुभाषियों के सावधानीपूर्वक सत्यापन और सभी परंपरावादियों के माध्यम से स्थापित किया गया है

रिपोर्ट, कविता: जब आपने फेंका, तो यह आप नहीं थे

जिसने फेंका, परन्तु परमेश्वर ने फेंका (8:17), निम्नलिखित घटना को संदर्भित करता है: बद्र की लड़ाई के दौरान, परमेश्वर के

दूत ने मुट्ठी भर मिट्टी और कंकड़ लिये और

131 तिर्मिज़ी, सं. 3699; न्यायाधीश, 2:615; इब्न हिशाम, 1:115; शिफ़ा',
1:83.

उन्हें काफ़िरों की सेना पर फेंका, और कहा: “तुम्हारे चेहरे विकृत हो जाएँ।” मिट्टी प्रत्येक काफ़िर की आँखों में चली गई, और प्रत्येक ने “तुम्हारे चेहरे विकृत हो जाएँ” सुना। परिणामस्वरूप वे अपनी आँखों को लेकर व्यस्त हो गए और उन्हें पीछे हटना पड़ा, हालाँकि उन्होंने हमला शुरू किया था।132 परंपरावादी, विशेष रूप से इमाम मुस्लिम, रिपोर्ट करते हैं कि हुनैन की लड़ाई के दौरान भी यही घटना हुई थी। परिणामस्वरूप, और ईश्वर की शक्ति और

अनुमति से, प्रत्येक के चेहरे पर मुट्ठी भर मिट्टी लगी और उन्हें अपनी आँखों को लेकर व्यस्त होकर युद्ध के मैदान से भागना पड़ा।133 क्योंकि ये असाधारण घटनाएँ मानवीय क्षमता और भौतिक कारणों से परे हैं, कुरान घोषणा करता है: जब तुमने फेंका, तो यह तुम नहीं थे जिन्होंने फेंका, बल्कि भगवान ने फेंका (8:17)।

दूसरा उदाहरण: विश्वसनीय परंपरावादी, खासकर इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम, रिपोर्ट करते हैं कि ख़ैबर की लड़ाई के बाद एक यहूदी महिला ने एक बकरे को भूनकर, ज़हर देकर, पैग़म्बर के पास भेजा। उनके साथियों ने अभी उसे खाना शुरू ही किया था कि अचानक उन्होंने कहा:

[132] मजमा अल-ज़वायद, 6:84; अबू दाऊद, इब्न हनबल और बहाकी द्वारा संबंधित।

133 मुस्लिम, संख्या 1775.

“अपने हाथ हटाओ! यह मुझे बताता है कि इसमें ज़हर है।”

सभी ने खाना बंद कर दिया, सिवाय बिशर इब्न अल-बरा के, जिन्होंने इसका एक निवाला खा लिया था और बाद में उनकी मृत्यु हो गई।

ज़हर के बारे में ईश्वर के दूत ने यहूदी महिला (ज़ैनब) को बुलाया। जब उससे पूछा गया कि उसने ऐसा क्यों किया, तो उसने कहा: "मैंने सोचा था कि अगर आप एक पैगम्बर हैं तो यह आपको नुकसान नहीं पहुँचाएगा, और अगर आप एक राजा हैं तो यह लोगों को आपसे बचाएगा।"134

इस असाधारण घटना की चमत्कारिकता को और भी बढ़ा देनेवाली बात पर गौर कीजिए: एक रिपोर्ट के मुताबिक, कुछ साथियों ने भी बकरी को बोलते हुए सुना था। यहूदियों ने उसी समय परमेश्वर के दूत और उसके करीबी साथियों को नुकसान पहुँचाने की कोशिश की थी।

हालाँकि, पैगम्बर की चेतावनी सच साबित हुई और उनकी साज़िश का पर्दाफाश हो गया और उसे नाकाम कर दिया गया। जब पैगम्बर ने, जिनके साथियों ने कभी उनसे कोई झूठ नहीं सुना था, कहा: “यह बकरा मुझसे कहता है कि...,” तो हर कोई उसी यकीन के साथ उस पर यकीन करने लगा जैसे कि उन्होंने खुद बकरे की बात सुनी हो।

तीसरा उदाहरण: नीचे मूसा के सफेद हाथ और लाठी के सदृश एक और चमत्कार के तीन उदाहरण दिए गए हैं।

134 अबू दाऊद, परिचय, 11; बुखारी, 2:121; न्यायाधीश, 3:219; दारिमी, 1:35; इब्न हनबल, 1:305; बहाक़ी, 6:256.

पहला: इमाम अहमद इब्न हंबल अबू सईद अल-खुदरी के हवाले से बताते हैं और पुष्टि करते हैं कि ईश्वर के दूत ने क़तादा इब्न नुमान को एक अंधेरी बरसात की रात में एक छड़ी दी और कहा: "यह छड़ी तुम्हारे आस-पास के क्षेत्र को 7 मीटर तक रोशन करेगी। जब तुम घर पहुँचोगे, तो तुम्हें एक काली छाया दिखाई देगी जो शैतान है। उसे अपने घर से भगा दो।" क़तादा छड़ी लेकर चला गया, जो मूसा के सफ़ेद हाथ की तरह रोशनी दे रही थी। जब वह घर पहुँचा, तो उसने वर्णित व्यक्ति को पाया और उसे भगा दिया।135

दूसरा: बद्र की लड़ाई के दौरान, जो कि चमत्कारों का स्रोत थी, उक्काशा इब्न मिहसन अल-असद ने मुश्रिकों से लड़ते हुए अपनी तलवार तोड़ दी। ईश्वर के रसूल ने उसकी टूटी तलवार की जगह एक छड़ी रख दी और उसे लड़ाई जारी रखने के लिए कहा। अचानक, ईश्वर की शक्ति और अनुमति से, छड़ी एक लंबी सफेद तलवार में बदल गई। उसने उससे लड़ाई की और उसे तब तक अपने पास रखा जब तक कि वह यमामा की लड़ाई के दौरान शहीद नहीं हो गया।136 यह घटना निर्विवाद है, क्योंकि उक्काशा को उस तलवार पर इतना गर्व था कि उसके पूरे जीवन में इसे व्यापक रूप से "सहायता" के रूप में जाना जाता था।

[135] मजमा अल-ज़वायद, 2:166, इब्न हनबल, इब्न खुजैमा और हकीम द्वारा संबंधित।

[136] सिरा इब्न हिशाम, 1:637; बहाक़ी, 4:97; इब्न अल-जौज़ी, ज़ाद अल-मआद, 3:186।

तीसरा: इब्न अब्द अल-बर्र, जो अपने समय के सबसे प्रतिभाशाली विद्वानों में से एक हैं, बताते हैं और पुष्टि करते हैं कि अल्लाह के रसूल के चचेरे भाई अब्दुल्ला इब्न जहश ने उहुद की लड़ाई के दौरान अपनी तलवार तोड़ दी थी। रसूल ने उन्हें एक छड़ी दी, जो बाद में उनके हाथ में तलवार बन गई। इब्न जहश ने उससे युद्ध किया और युद्ध के बाद वह चमत्कार तलवार ही रही।137 वर्षों बाद, जैसा कि इब्न सैय्यद अल-नास ने पैगंबर की जीवनी में लिखा है, इसे बुख़ाई तुर्की को 200 दिरहम में बेच दिया गया।138 ये दोनों तलवारें चमत्कार हैं

मूसा की लाठी के समान, सिवाय इसके कि उसके बाद वे तलवारें ही रहीं, जबकि मूसा की लाठी ने उसकी मृत्यु के बाद अपना चमत्कारी पहलू खो दिया।

तेरहवीं निशानी: चमत्कार का एक और प्रकार, एक मुतवातिर चमत्कार जिसके विभिन्न उदाहरण हैं, वह है पैगम्बर द्वारा अपनी सांस से बीमारों और घायलों को चंगा करना।

अपनी संपूर्णता में, ऐसे चमत्कार अर्थ में मुतवातिर हैं। कुछ घटनाओं में तवातुर की निश्चितता भी होती है। बाकी को परंपरा के वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार प्रामाणिक माना जाना चाहिए, हालांकि उनका वर्णन केवल एक संचरण श्रृंखला पर निर्भर करता है, क्योंकि वे संबंधित हैं

---

137 चरण, 3:879; इब्न हजर, अल-इसाबा, नहीं। 4583; बेहाकी द्वारा भी संबंधित।

138 'उयुन अल-अथर, 2:20; इब्न हजर, अल-इसाबा, नहीं। 4583.

और इस विज्ञान के विवेकशील नेताओं द्वारा सत्यापित किया गया है।

अनेक प्रासंगिक उदाहरणों में से हम केवल कुछ का ही हवाला दे रहे हैं:

पहला उदाहरण: काजी इयाद ने अपने शिफा में अनेक माध्यमों और उच्च कोटि के कथावाचकों की एक श्रृंखला के माध्यम से साद इब्न अबी वक्कास के बारे में बताया है, जो ईश्वर के रसूल के सेवक और सैन्य कमांडर थे, उमर की खिलाफत के दौरान फारस पर विजय प्राप्त करने वाली सेना के प्रधान सेनापति थे, और उन दस सहाबाओं में से एक थे जिन्हें उनके जीवनकाल में ही स्वर्ग का वादा किया गया था।

उन्होंने कहा: "मैं उहुद की लड़ाई के दौरान ईश्वर के रसूल के पास था। उन्होंने काफ़िरों पर तीर चलाए-

जब तक उसका धनुष टूट नहीं गया, जिसके बाद उसने मुझे अपने तीर देने शुरू कर दिए। हर बार जब उसने मुझे एक पंखहीन तीर दिया, तो उसने मुझे इसे चलाने का आदेश दिया, जो मैंने किया। और यह पंखों के साथ एक की तरह उड़ गया, एक अविश्वासी के शरीर को भेदते हुए। इस बीच, क़तादा इब्न नुमान को चोट लगी और उसकी एक आँख बाहर निकल आई। ईश्वर के दूत ने अपने हाथ का उपयोग करके आँख की पुतली को उसके सॉकेट में बदल दिया। आँख तुरंत ठीक हो गई, जैसे कि कुछ हुआ ही न हो, और दूसरी से बेहतर हो गई। "139

यह घटना इतनी चर्चित हुई कि जब

क़तादा के पोते में से एक ने खलीफा उमर इब्न से मुलाकात की

139 शिफ़ा', 1:322, इब्न इशाक, तबरानी और बहाकी द्वारा संबंधित।

अब्दुल अजीज को सम्बोधित करते हुए उन्होंने निम्नलिखित काव्यात्मक वक्तव्य दिया:

मैं उस व्यक्ति का पुत्र हूँ जिसकी आँख उसके गाल
पर उभरी हुई थी, लेकिन मुस्तफा के हाथों से आश्चर्यजनक रूप से
बहाल हो गई; फिर वह पहले जैसी हो गई; वह आँखों में
सबसे सुंदर थी, और सबसे आश्चर्यजनक बात
थी उसका बहाल होना।

यौम धिकारद की लड़ाई के दौरान एक तीर अबू क़तादा के चेहरे पर लगा। ईश्वर के रसूल ने घायल व्यक्ति का चेहरा पोंछा, और अबू क़तादा ने कहा: "मुझे कभी दर्द महसूस नहीं हुआ, न ही घाव में कोई घाव हुआ।"140

दूसरा उदाहरण: प्रामाणिक परंपरा की पुस्तकें, मुख्य रूप से सहीह अल-बुखारी और सहीह मुस्लिम, रिपोर्ट करती हैं: अली, जो आँखों के दर्द से बहुत पीड़ित थे, ख़ैबर की लड़ाई के दौरान ध्वजवाहक नियुक्त किए गए थे। जब ईश्वर के दूत ने अपनी उपचारात्मक लार अली की आँखों पर लगाई तो दर्द बंद हो गया और उनकी आँखें बहुत बेहतर हो गईं। अगली सुबह, अली युद्ध में शामिल हो गए और गढ़ के भारी लोहे के गेट को उखाड़कर उसे ढाल की तरह इस्तेमाल करते हुए ख़ैबर के गढ़ पर विजय प्राप्त की।141 उसी लड़ाई में, सलमा इब्न

140 शिफा', 1:322, तिर्मिज़ी और बैहकी द्वारा वर्णित।

141 बुखारी, 4:58; इब्न हनबल, 1:85; मुस्लिम और तबरानी से भी संबंधित।

अक्वा के पैर का घाव तब ठीक हो गया जब ईश्वर के रसूल ने उस पर फूँक मारी ।142 तीसरा उदाहरण: पैगंबर के जीवनी लेखक, जिनमें अल-

नसाई भी शामिल हैं, बताते हैं कि उस्मान इब्न हुनैफ़ ने कहा: “मेरी आँखें खोलने के लिए प्रार्थना करें।” ईश्वर के रसूल ने उनसे कहा कि वे वुज़ू करें, दो रकात नमाज़ पढ़ें और कहें: “हे ईश्वर, मेरी अपील आप तक है और मैं आपकी ओर पैगम्बर मुहम्मद, दया के पैगम्बर के माध्यम से रुख़ करता हूँ।

ऐ मुहम्मद, मैं तुम्हारे ज़रिए अल्लाह की तरफ़ रुख़ करता हूँ, ताकि वह मेरी आँखों को खोल दे। ऐ अल्लाह, उसे मेरा सिफ़ारिश करनेवाला बना दे।" वह वैसा ही करने चला गया जैसा उससे कहा गया था। जब वह वापस लौटा, तो हमने देखा कि उसकी आँखें खुल चुकी थीं।143

चौथा उदाहरण: इब्न वाहब, एक महान परंपरा विशेषज्ञ, रिपोर्ट करते हैं: जब बद्र की लड़ाई के 14 शहीदों में से एक, मुअव्विद इब्न अफरा ने अबू जहल के साथ युद्ध किया, तो शापित अबू जहल ने उसका एक हाथ काट दिया। मुअव्विद अपना कटा हुआ हाथ लेकर ईश्वर के रसूल के पास गया। रसूल ने कटे हुए हाथ को मुअव्विद की कलाई पर चिपका दिया और उस पर अपनी लार लगाई। यह तुरंत ठीक हो गया, और मुअव्विद युद्ध में वापस आया और तब तक लड़ा जब तक वह शहीद नहीं हो गया।144 इब्न

142 बुखारी, 5:170; शिफ़ा', 1:323.

143 अल-जामी अल-सगीर, नं. 1290, नसाई, तिर्मिधि, इब्न माजा, इब्न खुजैमा और हकीम द्वारा संबंधित।

144 शिफ़ा', 1:324; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफा', 1:656।

वहब की रिपोर्ट है कि उसी लड़ाई के दौरान, हुबैब इब्न यासफ़ को कंधे पर तलवार का ऐसा वार लगा कि ऐसा लगा कि उसका कंधा दो टुकड़ों में फट गया हो।

ईश्वर के दूत ने उन अंगों को एक साथ रखा, उन पर सांस दी, और घायल कंधा ठीक हो गया।145

हालाँकि इन दोनों परंपराओं का वर्णन सिर्फ़ एक ही सहाबी ने किया है, लेकिन इनका होना निश्चित माना जा सकता है, क्योंकि ये एक ऐसी लड़ाई के दौरान घटित हुई थीं जो अपने आप में चमत्कारों का स्रोत थी, इब्न वहब जैसे महान अधिकारी ने इसकी पुष्टि की थी, और इसी तरह की घटनाएँ भी दर्ज हैं। वास्तव में, प्रामाणिक कथाओं के माध्यम से स्थापित लगभग 1,000 उदाहरण संकेत देते हैं कि पैगम्बर ने घावों को ठीक किया।

प्रश्न: आप इनमें से कई परंपराओं को मुतवातिर मानते हैं, जबकि हम उनमें से अधिकांश को पहली बार सुन रहे हैं। एक मुतवातिर परंपरा कैसे हो सकती है?

इतने लम्बे समय तक अज्ञात क्यों रहे?

उत्तर: बहुत से मुतवातिर तथ्य धार्मिक विद्वानों के लिए स्पष्ट हैं और दूसरों के लिए अज्ञात हैं। बहुत सी परंपराएँ जो मुतवातिरतो परंपरावादी हैं, उन्हें दूसरों द्वारा व्यक्तिगत रूप से रिपोर्ट की गई भी नहीं माना जा सकता है। विज्ञान की किसी भी शाखा में स्वयंसिद्ध या सिद्धांत केवल उस शाखा के अधिकारियों के लिए ही स्पष्ट होते हैं, और

145 शिफा', 1:324, बहाकी, इब्न इशाक, इब्न कथिर और इब्न हजार द्वारा संबंधित।

दूसरों को अधिकारियों पर निर्भर रहना होगा या उस शाखा में प्रवेश करना होगा अपने स्वयं के अवलोकन करने के लिए। हमारे पास सभी घटनाएँ हैं

अब तक उद्धृत किए गए लोगों को परंपरावादियों द्वारा मुतवातिर माना जाता है, शरिया के विद्वान, विधिशास्त्री, तथा ज्ञान की कई अन्य शाखाओं के विद्वान, तवातुर की निश्चितता को या तो वास्तविक शब्दों में या अर्थ में मानते हैं। यदि अशिक्षित लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं

उन्हें और अगर वे लोग जो सत्य के प्रति अंधे हैं

उन्हें नहीं जानते, यह उनकी अपनी गलती है।

पाँचवाँ उदाहरण: इमाम बग़ावी ने बताया और पुष्टि की कि खाई की लड़ाई के दौरान, एक नास्तिक ने अली इब्न अल-हकम का पैर तोड़ दिया। जब ईश्वर के रसूल ने उस पर हाथ फेरा, तो पैर तुरंत ठीक हो गया।

सैनिक अपने घोड़े से उतरे बिना ही युद्ध जारी रखता रहा।146

छठा उदाहरण: परंपरावादी, मुख्यतः इमाम
बैहाकी बताते हैं कि एक बार अली बहुत बीमार थे।
वह अकेला था और अपने इलाज के लिए प्रार्थना कर रहा था,
ईश्वर का दूत आया, ईश्वर से उसे ठीक करने के लिए कहा,
और उसे अपने पैर से छूते हुए उठने को कहा।
अली तुरन्त ठीक हो गए और बाद में उन्होंने कहा: "तब से
मुझे कभी भी ऐसी बीमारी नहीं हुई।"147

---

146 उक्त., 1:323; मजमा अल-ज़वायद, 6:143; बहाक़ी, 6:185.

147 इब्न हनबल, 1:107; शिफ़ा', 1:323; इब्न हिब्बन, 9:47; बेहाकी, 6:179.

सातवाँ उदाहरण: यह प्रसिद्ध कहानी है

शूरहबिल अल-जुफी: उनकी हथेली में एक ट्यूमर था जिसके कारण उनके लिए तलवार और घोड़े की लगाम पकड़ना असंभव था।

ईश्वर के दूत ने ट्यूमर को पोंछा और उसकी मालिश की
जब तक इसका कोई निशान नहीं बचा।148

आठवां उदाहरण: छह बच्चों को सम्मानित किया गया

पैगम्बर के चमत्कार इस प्रकार हैं:

- इब्न अबी शायबा, एक उत्तम चरित्र वाले, गहन शोध करने वाले और प्रसिद्ध परंपरावादी व्यक्ति, रिपोर्ट करते हैं:
  "एक महिला अल्लाह के रसूल के पास एक किताब लेकर आई।
  मंदबुद्धि लड़का जो गूंगा था। ईश्वर का दूत
  उसने अपना मुँह पानी से धोया, हाथ धोए,
  महिला को पानी दिया और उससे कहा कि
  लड़के ने उसे पी लिया। लड़के के ऐसा करने के बाद, उसे
  वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया और इतना बुद्धिमान और समझदार हो गया कि
  वह सबसे विवेकशील व्यक्ति से भी बेहतर था।"149

- इब्न अब्बास ने बताया कि एक पागल बच्चा लाया गया था
  ईश्वर के दूत के पास। दूत ने अपना हाथ रखा
  बच्चे की छाती पर, जिससे बच्चे को अचानक झटका लगा

148 मजमा अल-ज़वायद, 8:298, तबरानी और बे-हकी द्वारा संबंधित।

149 इब्न माजा, सं. 3532; हकीम, 2:618; बहाक़ी, 6:82.

अचानक उसे एक छोटी ककड़ी जैसी काली वस्तु उल्टी हुई। बच्चा तुरन्त ठीक हो गया। 150

- इमाम बेहकी और नसाई ने बताया कि एक उबलता हुआ बर्तन मुहम्मद इब्न ख़तीब के हाथ पर गिर गया और उसे पूरी तरह से जला दिया। ईश्वर के दूत ने घायल हाथ को सहलाकर और अपनी लार लगाकर लड़के को ठीक किया।151

- एक गूंगा लड़का अल्लाह के रसूल के पास आया। जब अल्लाह के रसूल ने उससे पूछा कि तुम कौन हो तो लड़के ने कहा: "आप रसूल हैं," और बोलना शुरू कर दिया।152

- जलाल अल-दीन अल-सुयुती, जो अपने युग के अग्रणी विद्वान थे और जिन्हें जागते समय ईश्वर के रसूल से कई बार बातचीत करने का सम्मान मिला था, ने बताया कि यममा से एक नवजात शिशु को ईश्वर के रसूल के पास लाया गया था। जब रसूल ने अपना चेहरा उनकी ओर घुमाया, तो बच्चा बोलने लगा और बोला: "मैं गवाही देता हूँ कि आप रसूल हैं।" ईश्वर के रसूल ने उत्तर दिया:

---

150 इब्न हनबल, 4:172; दारिमी, 1:11-12; बहाकी और तबरानी द्वारा भी संबंधित।

151 हकीम, अल-मुस्ताद्रक, 4:62-63; तबरानी और बेहाकी द्वारा भी संबंधित।

152 इब्न कथिर, अल-बिदया वा अल-निहाया, 6:158, बहाकी से भी संबंधित है।

"भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें।" उसके बाद, शिशु ने अपने बचपन के दौरान कभी बात नहीं की। उसे इस चमत्कार और "भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें" की प्रार्थना से सम्मानित किया गया था।

भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें,"153 और इस गीत के साथ प्रसिद्ध हो गए

शीर्षक मुबारक अल-यमामा (धन्य व्यक्ति)

यममा) • एक बुरे

स्वभाव वाले लड़के ने ईश्वर के दूत को बीच में रोका

जब वह प्रार्थना कर रहा था तो उसके सामने से गुज़रकर।

ईश्वर के दूत ने कहा: "हे ईश्वर, उसे मेरे पास से जाने न देना।

कोई निशान नहीं मिला।" इसके बाद, लड़के को सज़ा दी गई

अपने बुरे व्यवहार के कारण वह चलने में असमर्थ हो गया।154

• एक बेशर्म औरत जिसका दिमाग कभी बच्चों जैसा था

भोजन का एक निवाला माँगा जो भगवान के दूत ने दिया।

सेंगर खा रहा था। उसने उसे एक दिया, लेकिन उसने जवाब दिया: "मुझे वह चाहिए जो तुम्हारे मुँह में है।" भगवान का

मैसेंजर ने उसे यह दिया। इसे खाने के बाद, उसने

मदीना की सबसे शर्मीली महिला बन गयीं।155

---

153 शिफ़ा', 1:319; कन्ज़ अल-उम्मल, 4:379; बहाक़ी, 6:59.

154 शिफ़ा', 1:328; बहाक़ी, 5:243; इब्न हिब्बन द्वारा भी संबंधित।
[इस घटना को गलत नहीं समझा जाना चाहिए। द मैसेंजर
उन्होंने यह समझ लिया होगा कि लड़का उन्हें बहुत नुकसान पहुंचाएगा
स्वयं और समाज दोनों के लिए, तथा इसे रोकने के लिए
दोनों लड़कों की भलाई, विशेष रूप से उसके अनन्त जीवन के संबंध में
परलोक में और समाज में उसके खिलाफ प्रार्थना की गई।
महत्वपूर्ण घटना कुरान में वर्णित है (18:74, 8 0-81) (ट्र.)]

155 मजमा अल-ज़वायद, 8:312; शिफ़ा', 1:325; तबरानी द्वारा संबंधित।

इन आठों की तरह, ऐसे चमत्कारों के शायद ८०० और उदाहरण हैं, जिनमें से अधिकांश को दर्ज किया गया है
परंपरा की पुस्तकों और उनकी जीवनी में।
उसका हाथ लुकमान की दवा की दुकान जैसा था, उसकी लार खद्र का जीवन देने वाला पानी (अमृत) थी, और उसकी
यीशु की स्वास्थ्य देने वाली साँस लें, और चूँकि
मानवता बीमारी के अधीन है, कई लोगों ने उसका सहारा लिया। बीमार, युवा और पागल लोग झुंड में आ गए
वे उसके पास गए और ठीक हो गए।

अबू 'अब्द अल-रहमान अल-यमनी (के रूप में भी जाना जाता है)।
तौस), सबसे महान ताबिउन विद्वानों में से एक और
जिन्होंने ४० बार तीर्थ यात्रा की और
सुबह की प्रार्थना के साथ रात की प्रार्थना के लिए स्नान
४० वर्षों तक लगातार, निश्चयपूर्वक कहा गया: “जब भी कोई पागल व्यक्ति ईश्वर के रसूल के पास आता था, तो वह
या जैसे ही पैगम्बर ने अपना सिर रखा, वह ठीक हो गई
उसके सीने पर हाथ रखना। इसमें कोई अपवाद नहीं था।”

ऐसे महान अधिकारी के रूप में, जो उस दौरान रहते थे
खुशी के समय का अंतिम चरण (खुशी का समय)
पैगम्बर और उनके चार मार्गदर्शी खलीफाओं)
इतना पक्का विश्वास था, यह निर्विवाद है
पैगम्बर ने अपने पास आने वाले हर व्यक्ति को ठीक कर दिया।
जब यह तथ्य ज्ञात हुआ, तो हम यह मान सकते हैं कि हजारों लोगों ने उनसे अपील की होगी।

चौदहवाँ संकेत: प्रभु की प्रार्थनाओं से संबंधित चमत्कार भी महत्वपूर्ण हैं। ऐसे चमत्कार

निश्चित और वास्तव में मुतवातिर हैं, जो कई बार घटित हुए हैं। उनमें से अधिकांश
तवातुर या मुतवातिर के समान ही प्रसिद्ध हैं ;
बाकी सभी में वही निश्चय है जो सुप्रसिद्ध लोगों में है

मुतवातिर परम्पराएँ, क्योंकि वे द्वारा सुनाई गई हैं
महानतम अधिकारी। ऐसे कई उदाहरणों में से, हम बताते हैं
केवल कुछ ही ऐसे हैं जो उतने ही प्रसिद्ध हैं, या उनके पास वही है
की निश्चितता, मुतावतिर।

पहला उदाहरण: परंपरावादी, जिनमें इमाम भी शामिल हैं
बुखारी और इमाम मुस्लिम ने बताया कि ईश्वर ने बारिश के लिए पैगम्बर की सभी प्रार्थनाओं को तुरंत स्वीकार कर लिया। कभी-कभी बारिश तब शुरू हो जाती थी जब वे अपने हाथ नीचे नहीं करते थे। जैसा कि पहले बताया गया है, बादल उनकी सेना की ज़रूरतों को पूरा करते थे।

पानी के लिए। बचपन में भी, उनके दादा 'अब्द
अल-मुत्तलिब बारिश के लिए प्रार्थना करने उनके साथ जाते थे, और
यह उनके प्रति सम्मान से निकला होगा। 'अब्दुल हज़रत अब्दुल कलाम' में से एक
अल-मुत्तलिब की कविताओं ने इसे प्रसिद्ध बना दिया।

पैगम्बर की मृत्यु के बाद उमर एक बार अब्बास को अपने साथ ले गए।
उसके साथ बारिश के लिए प्रार्थना करते हुए कहा: "हे भगवान, यह आपका है
प्यारे पैगम्बर के चाचा। उनके लिए हमें बारिश दो।
इसके बाद बारिश हुई।156 जैसा कि इमाम बुखारी ने बताया है

156 बुखारी, 2:35; बहाक़ी, 6:147.

और मुसलमान, भगवान के दूत से प्रार्थना करने के लिए कहा गया था
बारिश हुई और उन्होंने ऐसा ही किया। बारिश इतनी तेज थी कि उन्होंने पूछा
उसने प्रार्थना की कि बारिश रुक जाए। उसने ऐसा ही किया और बारिश रुक गई।
तुरन्त रोक दिया गया.157

दूसरा उदाहरण: यह तवातुर के रूप में भी प्रसिद्ध है
कि जब केवल 40 साथी थे तब भी
वे गुप्त रूप से प्रार्थना कर रहे थे, ईश्वर के दूत ने प्रार्थना की:
"हे भगवान, उमर इब्न अल-खत्ताब द्वारा इस्लाम को मजबूत करो।"
या 'अम्र इब्न अल-हिशाम।' कुछ दिनों बाद, उमर ने इस्लाम धर्म अपना लिया और खुलेआम इस्लाम का प्रचार और महिमामंडन करने का जरिया बन गए।158 उन्होंने उदात्त उपाधि प्राप्त की
फारूक (सत्य और झूठ के बीच अंतर)

तीसरा उदाहरण: ईश्वर के रसूल ने विभिन्न प्रतिष्ठित साथियों के लिए प्रार्थना की। उनकी प्रार्थनाएँ थीं
इतनी आसानी से स्वीकार कर लिया जाता है कि उन्हें चमत्कार माना जा सकता है। निम्नलिखित कई उदाहरणों में से कुछ हैं:

जैसा कि मुख्य रूप से बुखारी और मुस्लिम ने बताया है,
ईश्वर के दूत ने इब्न अब्बास के लिए प्रार्थना की: "हे ईश्वर,
उसे धर्म का गहन ज्ञानी बनाओ
और उसे क़ुरआन का अंतरतम अर्थ सिखाओ।"159

---

157 शिफा', 1:327, बुखारी और मुस्लिम द्वारा वर्णित।

158 तिर्मिज़ी, सं. 3684; इब्न हनबल, 2:95; न्यायाधीश, 2:465; बेहाकी, 2:215.

159 इब्न हनबल, मुसनद, 1:264; बुखारी, मुस्लिम से भी संबंधित, और हाकिम.

परिणामस्वरूप, इब्न अब्बास को 'अल्लाहु अकबर' की शानदार उपाधि प्राप्त हुई।
"कुरान का व्याख्याता" और उच्च पद
"उम्माह का विद्वान" होने का। जब इब्न अब्बास
वह अभी भी युवा था, उमर ने उसे अपने सलाहकार सभा में शामिल किया, जिसमें साथी शामिल थे
विद्वानों और बुजुर्गों.

इमाम बुखारी सहित परम्पराओं की प्रामाणिक पुस्तकों के संकलनकर्ताओं ने रिपोर्ट दी है कि अनस की माँ ने पूछा
ईश्वर के दूत से प्रार्थना करें कि अनस को बहुत-सी खुशियाँ मिलें
संतान और बहुत सारी संपत्ति। उसने प्रार्थना की: "हे परमेश्वर,
उसकी सम्पत्ति और सन्तान को बहुतायत प्रदान करें, और
जो कुछ तूने उसे दिया है, उसे धन्य कह।
बुढ़ापे में, अनस ने भगवान की कसम खाई: "मैंने 100 को दफनाया है
मेरे बच्चे। मेरी संपत्ति के बारे में, कोई भी नहीं जीया है
मैं जितनी खुशी से जी रहा हूँ, उतनी ही खुशी से जी रहा हूँ। तुम मेरी प्रचुर संपत्ति देख रहे हो,
जो पैगम्बर की प्रार्थना के कारण है।"160

इमाम बेहाकी सहित परंपरावादियों की रिपोर्ट
कि ईश्वर के दूत ने अब्द अल-रहमान के लिए प्रार्थना की
इब्न औफ़, दस साथियों में से एक ने जीवित रहते हुए स्वर्ग का वादा किया था,
ताकि उसके पास बहुत धन हो।
परिणामस्वरूप, उसके पास इतनी संपत्ति जमा हो गई कि एक बार उसने 700
ऊँटों पर लदे हुए दान को ईश्वर की राह में दान के रूप में स्वीकार करो।161 अब

---

160 बुखारी, 8:93, 100; मुस्लिम, नहीं. 2480; इब्न हनबल, 6:430.

161 शिफ़ा', 1:326; बहाक़ी, 6:218; अबू दाऊद, नहीं. 2109.

पैगंबर की प्रार्थना के आशीर्वाद पर विचार करें और कहें: "भगवान के आशीर्वाद कितने महान हैं।"

इमाम बुखारी समेत परंपरा के कथावाचक बताते हैं कि ईश्वर के दूत ने उर्वा इब्न अबी जादा के लिए व्यापार में लाभ के लिए प्रार्थना की। उर्वा कहती हैं: "कभी-कभी मैं कूफ़ा के बाज़ार जाती और शाम को 40,000 (दिरहम) कमाकर घर लौटती।"

इमाम बुखारी कहते हैं: 'अगर वह अपने हाथ में थोड़ी सी मिट्टी ले लेता, तो उसे उससे लाभ होता।'162 अब्दुल्ला इब्न जाफर, जिनके लिए ईश्वर के रसूल ने बहुतायत की प्रार्थना की थी, अपनी अपार संपत्ति के कारण प्रसिद्ध हुए। वह अपनी उदारता के लिए उतना ही प्रसिद्ध था जितना कि अपनी संपत्ति के लिए।163

उपर्युक्त चमत्कार इस बात को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं।

इमाम तिर्मिज़ी और दूसरे परंपरावादी बताते हैं कि ईश्वर के रसूल ने साद इब्न अबी वक्कास के लिए प्रार्थना की: "हे ईश्वर, उनकी प्रार्थना स्वीकार करें।"164 इसके बाद, साद अपनी प्रार्थनाओं के स्वीकार किए जाने के लिए प्रसिद्ध हो गए। इसके अलावा, हर कोई उनके अभिशाप से डरता था। ईश्वर के रसूल

162 बुखारी, 4:252; इब्न हजर, अल-इसाबा, 2:476; बहाक़ी, 6:220.

163 इब्न हजर, मतलिब अल-अलिया, 4077; अबू या'ला और तबरानी द्वारा संबंधित।

164 तिर्मिज़ी, 3752; न्यायाधीश, 3:499; इब्न हिब्बान और अबू नुऐम द्वारा भी संबंधित।

यह भी प्रार्थना की कि अबू क़तादा जवान रहे,
कह रहे हैं: "ईश्वर आपके चेहरे पर खुशियाँ लाए। हे ईश्वर, उनके चेहरे पर खुशियाँ लाए
बाल और त्वचा।" जब अबू क़तादा की 70 वर्ष की आयु में मृत्यु हुई,
वह 15 साल के लड़के जैसा युवा लग रहा था।165

एक बार कवि नबीघा ने अपनी कविता सुनाई
ईश्वर के रसूल की मौजूदगी में जब उन्होंने यह आयत पढ़ी
दोहा:

> हमारा सम्मान और प्रशंसा आसमान तक पहुंच गई है; हम और भी ऊपर जाना चाहते हैं!

रसूल ने मज़ाक में उससे पूछा: "कहाँ,
ऐ अबू लैला?" उन्होंने उत्तर दिया: "स्वर्ग के लिए, हे ईश्वर के दूत।" इसके
बाद, उन्होंने एक और अर्थपूर्ण कविता पढ़ी और ईश्वर के दूत ने प्रार्थना की:
"
भगवान तुम्हारा मुंह विकृत न करें। परिणामस्वरूप, नबीघा
जब वह बड़ी उम्र में पहुंचा तो उसके सारे दांत निकल आए
120 साल की उम्र में। जब भी उसका कोई दांत टूटता, तो वह एक नया दांत ले लेता।
इसके स्थान पर प्रकट होगा.166

ईश्वर के रसूल ने अली के लिए प्रार्थना की: "हे ईश्वर, उन्हें गर्मी और
सर्दी से बचाए रख।" परिणामस्वरूप, इमाम
अली को न तो सर्दी लगती थी और न ही गर्मी, भले ही वह आदतन सर्दी महसूस करता था।
गर्मियों में सर्दियों के कपड़े पहने या गर्मियों में कपड़े पहने-

---

165 शिफ़ा', 1:327, बहाक़ी द्वारा संबंधित।

166 इब्न हजर, अल-इसाबा, नं. 8639; बहाक़ी, 6:232; इब्न कथिर,
अल-बिदया, 6:168.

सर्दियों में। उन्होंने कहा: "मुझे सर्दी या जुकाम नहीं होता
पैगंबर की प्रार्थना के लिए धन्यवाद।”167 ईश्वर के दूत ने भी फातिमा के
लिए प्रार्थना की: “हे ईश्वर, मुझे गर्मी न लगने दें
फ़ातिमा ने कहा: "उसकी नमाज़ के बाद मुझे कभी भूख नहीं लगी।"168

तुफैल इब्न अम्र ने एक बार पैगम्बर से पूछा
अपने कबीले के लिए चमत्कार करो। पैगम्बर ने प्रार्थना की: “हे ईश्वर, उसके
लिए प्रकाश प्रदान करो।” एक प्रकाश प्रकट हुआ
तुफैल की आंखों के बीच, जिसे बाद में स्थानांतरित कर दिया गया
एक छड़ी के अंत तक। इस वजह से उसे जाना जाता था

ज़ु अल-नूर (प्रकाश का स्वामी)169

ये कुछ प्रसिद्ध घटनाएँ हैं जो

निश्चयता प्राप्त कर ली।

अबू हुरैरा ने पैगम्बर से शिकायत की
भूलने की बीमारी। पैगंबर ने उसे एक बात फैलाने के लिए कहा
जमीन पर कपड़े का टुकड़ा। फिर उसने कुछ बनाया
ऐसा लग रहा था मानो उसके हाथ अदृश्य चीजों से भर गए हों
और उन्हें कपड़े पर खाली कर दें। ऐसा करने के बाद
तीन या चार बार, उसने अबू हुरैरा से इसे चुनने के लिए कहा

167 इब्न हनबल, 1:99; इब्न माजाह, 1:43; बेहाकी द्वारा भी संबंधित
और तबरानी.

168 मजमा अल-ज़वायद, 9:203, बहाकी और तबा-रानी से संबंधित।

169 शिफ़ा', 1:328, बहाकी, इब्न जरीर और इब्न इशाक द्वारा संबंधित।

उसके बाद अबू हुरैरा ने, जैसा कि बाद में उन्होंने खुदा की कसम खाकर कहा, कभी कुछ नहीं भूला।170

चौथा उदाहरण: गंभीर उत्पीड़न के तहत, ईश्वर के दूत को कभी-कभी उत्पीड़कों की स्थिति के बारे में ईश्वर को बताना पड़ता था: पहला: फारसी चोसरो, परविज़ ने पैगंबर के पत्र को

फाड़ दिया। यह सुनकर, पैगंबर ने प्रार्थना की: "हे ईश्वर, उसे और उसके शासन को फाड़ दो जैसे उसने मेरा पत्र फाड़ा है।"

परिणामस्वरूप, परविज़ को उसके बेटे (शिरविया) ने खंजर से मार डाला, और साद इब्न अबी वक्कास ने सासानी साम्राज्य को टुकड़ों में तोड़ दिया, जिससे यह पूरी तरह से ध्वस्त हो गया।171 बीजान्टिन सम्राट और अन्य राज्यों के शासक नष्ट नहीं हुए, क्योंकि वे पैगंबर के पत्रों का सम्मान करते थे।

दूसरा: एक प्रसिद्ध मुतवातिर परंपरा में कहा गया है, और कुरान की आयतें भी इस बात की ओर इशारा करती हैं, कि इस्लाम के शुरुआती दिनों में जब ईश्वर के दूत काबा में प्रार्थना करते थे, तो कुरैशी नेता उनके चारों ओर इकट्ठा हो जाते थे और उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार करते थे। उन्हें उनकी स्थिति के बारे में ईश्वर को बताना पड़ता था। इब्न मसूद टिप्पणी करते हैं: "मैं ईश्वर की कसम खाता हूँ कि मैंने बद्र की लड़ाई के बाद उनकी सभी लाशें देखीं।"172

---

170 बुखारी, 4:253; मुस्लिम, तिर्मिज़ी और इब्न हंबल द्वारा भी इसका उल्लेख किया गया है।

171 बुखारी, 6:10; अबू नुअयम, दलाइल अल-नुबुव्वा, 2:348।

172 मुस्लिम, 3, सं. 1794; बुखारी, 5:94; इब्न हनबल, 1:417.

तीसरा: ईश्वर के रसूल ने प्रार्थना की कि मुदार जनजाति के बड़े लोग अकाल का सामना करें, क्योंकि उन्होंने उनका विरोध किया था। बारिश रुक गई, और सूखा और अकाल ने उन्हें जकड़ लिया। जब मुदार के एक उप-कबीले कुरैश ने ईश्वर के रसूल से बारिश के लिए प्रार्थना करने को कहा, तो उन्होंने ऐसा किया और इस तरह सूखा और अकाल समाप्त हो गया।173 इस घटना को मुतवातिर माना जाता है।

पाँचवाँ उदाहरण: पैगम्बर मुहम्मद के कुछ विशेष लोगों के प्रति क्रोध के परिणामस्वरूप उनका भयंकर विनाश हुआ।

हम तीन उदाहरण देते हैं:

पहला: उसने उतबा इब्न अबी लहब को श्राप दिया: “हे ईश्वर, अपने कुत्तों में से एक को उस पर भेजो।”174 कुछ समय बाद जब उतबा यात्रा कर रहा था, तो एक शेर ने उसे कारवां में से उठाकर फाड़ दिया। यह बहुत प्रसिद्ध घटना प्रमुख परंपरा विद्वानों द्वारा बताई और सत्यापित की गई थी।

दूसरा: ईश्वर के रसूल ने अमीर इब्न अज़बत को एक स्क्वाड्रन की कमान सौंपी। मुहल्लम इब्न जस्सामा ने उसे मार डाला। जब ईश्वर के रसूल को इस बात का पता चला तो वह क्रोधित हो गए और प्रार्थना की: "हे ईश्वर, मुहल्लम को क्षमा न करना।"175 मुहल्लम की मृत्यु 7 दिन बाद हुई ।

173 बुखारी, 2:37; बहाक़ी, 2:324.

174 बहाक़ी, 2:335; कन्ज़ अल-उम्मल, 438-439; अबू नुऐम, 2:454.

175 शिफ़ा', 1:329; इब्न हिशाम, सर, 4:247.

कई दिन तक। उन्होंने उसकी लाश को कब्र में रखा, लेकिन कब्र ने उसे अस्वीकार कर दिया। उन्होंने उसे कई बार दफनाने की कोशिश की, लेकिन हर बार कब्र ने शव को बाहर फेंक दिया। अंत में, आखिरकार एक आवरण बनाना पड़ा।

तीसरा: रसूल ने एक आदमी को अपने बाएं हाथ से खाते हुए देखा। उन्होंने उसे अपने दाहिने हाथ से खाने की चेतावनी दी। उस आदमी ने, जो अपने स्वाभिमान को ठेस पहुँचा रहा था, जवाब दिया: “मैं ऐसा नहीं कर सकता।” रसूल ने कहा: “तुम इसे फिर कभी इस्तेमाल न करो।” उसके बाद, वह अपना दाहिना हाथ फिर कभी नहीं उठा सका।176

छठा उदाहरण: पैगम्बर की प्रार्थना और स्पर्श के माध्यम से प्रकट हुए अनेक चमत्कारों में से, हम कुछ का उल्लेख करते हैं जो निश्चितता प्राप्त कर चुके हैं। वे इस प्रकार हैं:

पहला: पैगम्बर ने खालिद इब्न वालिद (ईश्वर की तलवार) को अपने कुछ बाल दिए और उनकी जीत के लिए प्रार्थना की। खालिद ने उन बालों को अपनी पगड़ी में रख लिया। उनकी कीमत और प्रार्थना के कारण खालिद हर लड़ाई में विजयी हुए।177 दूसरा: सलमान अल-फारिसी पहले यहूदियों के गुलाम थे। उनके आकाओं ने उनसे बहुत ऊंची दर की मांग की थी-

176 मुस्लिम, नहीं. 2021; इब्न हिब्बान, बेहाकी और तबरानी द्वारा भी संबंधित।

177 न्यायाधीश, 3:289; शिफ़ा', 1:331; बहाक़ी, 6:249.

सोम [उसकी मुक्ति के लिए], कहा: "हम आपको मुक्त कर देंगे यदि आप 300 खजूर के पेड़ लगाते हैं और उसके बाद
वे फल देते हैं, आप हमें अतिरिक्त 50 किलो दे दीजिए
सोने का।"

सलमान ने रसूल को अपनी स्थिति बताई। रसूल ने मदीना के आस-पास खजूर के पेड़ लगाए थे और एक और पेड़ लगाया गया।

एक अन्य व्यक्ति। उसी वर्ष के भीतर, सभी 300 पेड़
फल देने वाला पौधा नहीं था, सिवाय उस पौधे के जिसे दूसरे व्यक्ति ने लगाया था। रसूल ने उसे उखाड़ा और फिर से लगाया, और उसमें भी फल लगे। फिर उन्होंने कुछ और पौधे लगाए।
अंडे के आकार के सोने के टुकड़े पर उसके मुंह से पानी निकला
और प्रार्थना करने के बाद इसे सलमान को दे दिया और उनसे कहा
अपने स्वामी की माँग के अनुसार उसमें से कुछ देने के लिए सलमान ने ऐसा किया, लेकिन वह अभी भी उसी आकार का था।178 यह चमत्कारी घटना, सलमान के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना है, जिसके बारे में विश्वसनीय परंपरावादियों ने बताया है।

तीसरा: उम्म मलिक नाम की एक महिला साथी
चमड़े से बने मक्खन का उपयोग संदेशवाहक को चढ़ाने के लिए किया जाता था
बैग (एक उक्का)। एक बार उन्होंने प्रार्थना करने के बाद इसे वापस कर दिया
उसे कहा कि वह इसे खाली न करे और न ही निचोड़े। उसके बाद,
उसके बच्चे जब भी थैले में मक्खन ढूंढ़ लेते

178 इब्न हनबल, 5:441-42; इब्न साद, तबक़ात, 4:53-57; न्यायाधीश,
2:16.

वे कुछ चाहते थे। यह लंबे समय तक चलता रहा, जब तक कि उन्होंने इसे निचोड़ नहीं लिया और आशीर्वाद समाप्त नहीं कर दिया।179

सातवाँ उदाहरण: ऐसे कई मामले हैं जब पानी मीठा हो जाता है और उसमें से अच्छी खुशबू आने लगती है, जैसे:

पहला: बैहकी समेत रिवायती लोग बताते हैं कि बीर अल-कुबा (एक कुआं) अक्सर सूख जाता था। जब अल्लाह के रसूल ने अपने वुज़ू का पानी इसमें डाला तो इसमें हमेशा बहुत ज़्यादा पानी जमा हो गया।180

दूसरा: परंपरावादियों ने, विशेषकर अबू नुएम ने अपनी दलीलुल नुबुव्वा में बताया है कि जब ईश्वर के दूत ने अनस के घर के कुएं में अपनी लार डाली और प्रार्थना की, तो उसका पानी मदीना में सबसे मीठा हो गया।181

तीसरा: इब्न माजा ने रिवायत किया है कि एक बार कोई व्यक्ति ज़मज़म कुएँ के पानी से भरी एक बाल्टी रसूल के पास लाया। जब उसने कुछ पानी मुँह में डाला और बाल्टी में खाली किया तो बाल्टी से कस्तूरी जैसी गंध आई।182

179 मुस्लिम, नहीं. 2280; इब्न हनबल, 3:242; बहाक़ी, दलैल, 6:113.

180 शिफ़ा', 1:331, बहाक़ी द्वारा संबंधित।

181 वही, 1:331.

182 इब्न माजा, सं. 659; शिफ़ा', 1:332.

चौथा: इमाम अहमद इब्न हनबल यह बयान करते हैं
एक कुएँ से एक बाल्टी पानी लिया गया। भगवान के कहने के बाद
रसूल ने अपनी लार बाल्टी में डाली और पानी कुएँ में डाला, कुएँ से कस्तूरी की खुशबू आने लगी। 183

पांचवां: हम्माद इब्न सलमा, एक पवित्र कथावाचक, जो इमाम मुस्लिम और मुस्लिम पश्चिम (उत्तरी अफ्रीका और अल-अंदालस) के विद्वानों द्वारा अत्यधिक सम्मानित और विश्वसनीय है, रिपोर्ट करता है कि ईश्वर के दूत ने एक चमड़े के थैले में पानी भरा, उसमें एक प्रार्थना फूँकी, फिर उसे बाँध दिया और कुछ साथियों को दे दिया, यह कहते हुए: "इसे वुज़ू के अलावा किसी और काम के लिए न खोलना।" जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने देखा कि अंदर दूध था, जिस पर मलाई लगी हुई थी ।184

प्रसिद्ध, महत्वपूर्ण अधिकारी इन घटनाओं का वर्णन करते हैं। यहाँ उद्धृत घटनाओं के साथ, वे इस प्रकार के चमत्कारों को अर्थ में निश्चित रूप से मुतवातिर के रूप में दर्शाते हैं।

आठवां उदाहरण: जब पैगम्बर ने बांझ बकरियों को छुआ और प्रार्थना की तो उन्होंने खूब दूध दिया।
इस प्रकार के चमत्कार के विभिन्न उदाहरण हैं।

---

183 इब्न हंबल, 22, 67; इब्न माजा द्वारा भी उल्लेखित।

184 शिफा', 1:334, इब्न साद द्वारा सम्बन्धित।

हम कुछ सबसे प्रसिद्ध और सबसे अधिक उल्लेख करते हैं

प्रामाणिक, इस प्रकार:

पहला: पैगंबर की सभी विश्वसनीय आत्मकथाएँ बताती हैं कि मदीना में अपने प्रवास के दौरान, वह और अबू बकर 'अतीका बिन्त अल-हुदैय्या' के घर पर रुके थे (जिसे उम्म मबाद के नाम से भी जाना जाता है)। उसके पास एक बहुत ही दुबली-पतली, बांझ बकरी थी। जब पैगंबर ने पूछा कि क्या बकरी दूध देती है, तो उसने जवाब दिया: "इसकी नसों में खून भी नहीं है। यह दूध कैसे दे सकती है?" ईश्वर के दूत ने उसकी पीठ और कमर को सहलाया, उसके थन को सहलाया, प्रार्थना की, और फिर उससे कहा कि वह एक बर्तन लेकर आए और अपनी बकरी का दूध दुह ले। उसने ऐसा ही किया, और ईश्वर के दूत, अबू बकर और पूरे घराने ने तब तक पिया जब तक कि वे पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हो गए।

इस घटना के बाद बकरी मोटी और मजबूत हो गई और उसने खूब दूध दिया।185

दूसरा: यह इब्न मसऊद की बकरी की प्रसिद्ध कहानी है। अपने धर्म परिवर्तन से पहले, इब्न मसऊद एक चरवाहा था जो कुछ मक्का सरदारों के झुंडों की देखभाल करता था।

एक दिन अल्लाह के रसूल और अबू बकर उस जगह रुके जहाँ वह भेड़ चरा रहा था। जब उन्होंने उससे दूध माँगा तो इब्न मसऊद ने जवाब दिया: “बकरियाँ मेरी नहीं हैं।” अल्लाह के रसूल ने कहा: “बकरियाँ लाओ।”

---

[185] मजमा अल-ज़वायद, हकीम, बज़ार और इब्न साद द्वारा संबंधित।

मुझे एक बांझ बकरी दी।" इब्न मसऊद ने एक ऐसी बकरी लायी जो
पिछले 2 सालों से संभोग नहीं किया है।
बकरी के थन को पकड़कर प्रार्थना की। दूध दुहने के बाद
इसका शुद्ध, स्वादिष्ट दूध पिया,186 इब्न मसऊद बन गया
मुसलमान।

तीसरा: साद जनजाति की हलीमा मर्स्से थीं-
गेर की गीली नर्स। एक बार जब उसकी जनजाति पर हमला हुआ
अकाल और सूखे के कारण पशुओं ने दूध देना बंद कर दिया।
लेकिन जब भावी संदेशवाहक को शिशु के रूप में भेजा गया
हलीमा, उसकी बकरियों द्वारा अकेले ही पाला जाना, और
उनका आशीर्वाद लेकर शाम को पूरी तरह घर लौट आया
संतुष्ट और उनके थनों में दूध भरा हुआ है।187

यद्यपि पैगम्बर की जीवनी में ऐसे चमत्कारों के उदाहरण मिलते हैं, फिर भी ये कुछ ही उदाहरण हैं।
इस उद्देश्य के लिए पर्याप्त है।

नौवां उदाहरण: जब पैगम्बर ने लोगों के सिर को छुआ तो अनेक आश्चर्य हुए।

और चेहरे और फिर प्रार्थना की, हम केवल कुछ प्रसिद्ध लोगों को बताते हैं, जो इस प्रकार हैं:

186 इब्न हनबल, 5:210; इब्न कथिर, अल-बिदया, 6:102; इब्न हिब्बन, 8:149.

[187] मजमा अल-ज़वायद, 8:220-221, इब्न हनबल, इब्न द्वारा संबंधित हिब्बन, और इब्न साद।

पहला: उन्होंने उमर इब्न साद के सिर पर हाथ फेरा और दुआ मांगी। नतीजतन, जब वह अस्सी साल की उम्र में मरा तो उसके सिर पर एक भी सफेद बाल नहीं था।188

दूसरा: पैगम्बर ने क़ैस इब्न ज़ैद के सिर के एक हिस्से पर हाथ फेरा और दुआ मांगी। नतीजतन, जब क़ैस 100 साल का हुआ तो उसके सारे बाल सफ़ेद हो गए, सिर्फ़ उस हिस्से को छोड़कर।189 तीसरा: अब्द अल-रहमान इब्न ज़ैद इब्न अल-खत्ताब एक छोटा, बदसूरत आदमी था। पैगम्बर ने उसके

सिर पर हाथ फेरा और दुआ मांगी, जिसके बाद वह लगभग सबसे लंबा और सबसे सुंदर आदमी बन गया।190

चौथा: जब हुनैन की लड़ाई में 'ऐज़ इब्न 'अम्र का चेहरा जख्मी हो गया, तो पैगम्बर ने खून को पोंछ दिया। पैगम्बर ने उनके चेहरे का जो हिस्सा छुआ, वह इतना चमक उठा कि परंपरावादी इसे "भूरे घोड़े के माथे की सफेदी की तरह" बताते हैं।191

पांचवां: जब उसने क़तादा इब्न सलमान के चेहरे पर हाथ फेरा और प्रार्थना की, तो वह दर्पण की तरह चमकने लगा।192

188 शिफ़ा', 1:334.

189 वही, 1:334.

190 वही, 1:335.

191 उक्त., 1:334; मजमा अल-ज़वायद, 9:412, तबरानी द्वारा संबंधित।

192 शिफ़ा', 1:334; इब्न हजर, अल-इसाबा, 3:225.

छठी: ज़ैनब, उम्म सलमा की बेटी (
विश्वासियों की माँ) और भगवान की सौतेली बेटी
मैसेंजर, एक बच्चा था जब उसने कुछ छिड़का
उसके चेहरे पर उसका वज़ू का पानी लग गया। नतीजतन, उसका चेहरा
असाधारण सौंदर्य प्राप्त किया।१९३

ऐसे कई उदाहरण हैं, जिनमें से अधिकांश
परंपरावादियों द्वारा वर्णित हैं। एक साथ लिया जाए तो, वे
मुतवातिर की निश्चितता वाले चमत्कार का प्रतिनिधित्व करते हैं
अर्थ में, भले ही हम प्रत्येक को
प्रकृति में व्यक्तिगत और, तदनुसार, संदिग्ध रूप से
रिपोर्ट.

विभिन्न तरीकों से रिपोर्ट की गई किसी भी घटना के घटित होने का
निष्कर्ष निकाला जाता है, भले ही अलग-अलग
रिपोर्ट व्यक्तिगत रूप से संदिग्ध हैं। मान लीजिए कि एक ज़ोरदार
शोर सुनाई देता है। एक व्यक्ति कहता है: "ऐसा-ऐसा
घर ढह गया है।” दूसरा कहता है: “नहीं, एक अलग
घर ढह गया है।” तीसरा व्यक्ति ढहने की खबर देता है
तीसरे घर की, और इसी तरह। प्रत्येक रिपोर्ट हो सकती है
यह बात संदिग्ध और यहां तक कि असत्य भी है, लेकिन एक बात पक्की है—
एक घर ढह गया था। ऊपर बताए गए सभी छह उदाहरण प्रामाणिक हैं, और
कुछ प्रसिद्ध भी हैं।
भले ही हम हर एक को संदिग्ध मानें,
एक साथ लिए जाने पर वे एक चमत्कार की घटना को साबित करते हैं

193 शिफ़ा', 1:334; तबरानी और इब्न 'अब्द अल-बीरर द्वारा संबंधित।

जिस प्रकार घर का ढहना निश्चित है, उसी प्रकार घर का ढहना भी निश्चित है। उपरोक्त सादृश्य.

इस प्रकार अब तक उद्धृत चमत्कार की प्रत्येक श्रेणी दृढ़ता से स्थापित है, और संबंधित व्यक्तिगत घटनाएं
संपूर्णता को चित्रित या प्रस्तुत करें। जैसे कि संदेशवाहक के हाथ, उंगलियाँ, लार, साँस और प्रार्थना
उसके चमत्कारों के साधन, उसके शरीर के अन्य अंग
(भौतिक या अभौतिक) कई आश्चर्यों का साधन हैं। इतिहास की पुस्तकें और उनकी जीवनी से संबंधित पुस्तकें
इन आश्चर्यों का वर्णन करें और विविध प्रमाण प्रदर्शित करें
अपनी आध्यात्मिक, नैतिक,
और भौतिक गुण.

पंद्रहवां संकेत: चट्टानें, पेड़, चंद्रमा और
सूरज उसे पहचानो और उसकी नबी होने की गवाही दो,
प्रत्येक व्यक्ति अपने चमत्कारों में से एक का प्रदर्शन करता है।
रास्ता, जानवर, मृत, जिन्न, और स्वर्गदूतों को पहचानते हैं
और उसके पैगम्बर होने की गवाही देकर उसका नाम पुकारो।
उसके चमत्कारों का उद्देश्य। इस संकेत को तीन तरीकों से समझाया गया है भाग निम्नानुसार हैं:

पहला भाग: पशु जगत ने परमेश्वर के प्रेम को पहचाना
संदेशवाहक बन गए और उनके लिए काम करने का साधन बन गए
बहुत से चमत्कार हैं। हम उनमें से कुछ ही प्रसिद्ध चमत्कारों का उल्लेख करते हैं जिनमें मुतवातिर की निश्चितता है ।
अर्थात्, अधिकारियों द्वारा सहमति व्यक्त की गई हो, या उम्मा द्वारा स्वीकार की गई हो।

पहली घटना: इसकी प्रतिष्ठा है
मुतवातिर का अर्थ है। पैगंबर के मदीना प्रवास के दौरान, उन्होंने और अबू बकर ने अपने पीछा करने वालों से थावर गुफा में खुद को छुपाया था। दो कबूतर
इसके प्रवेश द्वार पर पहरेदारों की तरह पहरा था; एक मकड़ी द्वारपाल के रूप में कार्य करते हुए, प्रवेश द्वार को ढक रही थी
एक मोटा जाल.194

उबैय इब्न अल-खलाफ़ के रूप में, एक प्रमुख क़ुरैशी जो
युद्ध के दौरान मैसेंजर द्वारा मारा जाएगा
बद्र का बेटा, जब गुफा का निरीक्षण कर रहा था, तो उसके दोस्त भी उसमें प्रवेश करना चाहते थे। लेकिन उसने उनसे कहा: "इसका कोई मतलब नहीं है। यह
ऐसा लगता है कि जाल मुहम्मद से पहले बुना गया था
पैदा हुआ था।" दूसरों ने कहा: "क्या वे कबूतर,
वहाँ खड़े कबूतरों के बारे में यह भी बताया गया है कि अगर कोई अंदर होता तो क्या वह वहाँ होता?
मक्का की फ़तह के दौरान पैग़म्बर की छाया में थे।196

आयशा बताती हैं: "हमारे पास दाजिन नाम का एक कबूतर था
हमारे घर में। जब ईश्वर का दूत घर पर था
यह शांत रहता, लेकिन जैसे ही वह चला जाता, यह
इधर-उधर टहलना शुरू कर देते हैं।"197 इसका अर्थ है कि

---

194 इब्न हनबल, 1:248; इब्न कथिर, अल-बिदया वा अल-निहाया, 3:179-81.

195 शिफ़ा', 1:313, तबरानी, बज़ार और बहाकी द्वारा संबंधित।

196 वही, 1:313.

197 उक्त, 1:309, इब्न हनबल, बज़ार, अबू याला, और द्वारा संबंधित बैहक़ी।

पक्षी ने चुप रहकर ईश्वर के दूत की आज्ञा का पालन किया
उनकी उपस्थिति में.

दूसरी घटना: यह एक भेड़िये से संबंधित है। अबू सईद अल-खुदरी, सलमा जैसे प्रसिद्ध साथी
इब्न अल-अक्वा', इब्न अबी वहब, अबू हुरैरा और उहबान
(सीधे तौर पर शामिल चरवाहा) इस घटना की रिपोर्ट करें,
जो इसे अर्थ में तवातुर की निश्चितता प्रदान करता है ।
एक बार एक भेड़िये ने एक बकरी को झुण्ड से छीन लिया, लेकिन
चरवाहे ने बकरी को बचाया। भेड़िये ने कहा: "तुम
भगवान से डरे बिना मुझे मेरे भोजन से वंचित करें।
चरवाहा बुदबुदाया: "कितना अजीब है! क्या एक भेड़िया
बोलो?" भेड़िये ने जवाब दिया: "क्या [वास्तव में] अजीब बात है
क्या यह है कि उस पहाड़ी के पीछे एक पैगंबर आपको स्वर्ग में आमंत्रित कर रहा है,
लेकिन आप उसे पहचान नहीं रहे हैं!

सभी रिपोर्टें बोलने वाले भेड़िये पर सहमत हैं।
अबू हुरायरा की रिपोर्ट, एक अधिक के माध्यम से प्रेषित
विश्वसनीय चैनल पर, चरवाहे ने भेड़िये से कहा: "मैं
मैं तो चला जाऊँगा, लेकिन मेरी बकरियों की रखवाली कौन करेगा?" "मैं रखूँगा,"
भेड़िये ने उत्तर दिया। चरवाहा भगवान के दर्शन करने गया।
दूत बकरियों को भेड़िये की देखभाल में छोड़कर,
और शीघ्र ही वह ईमानवाला हो गया।198 जब वह लौटा,
उसने भेड़िये को बकरियों पर नज़र रखते हुए पाया; उनमें से एक भी बकरियों पर नज़र नहीं रख पाई थी।
खो गया था। फिर उसने भेड़िये के लिए एक बकरी का वध किया,
क्योंकि वह उसका शिक्षक बन गया था।

---

[198] मजमा अल-ज़वायद, 8:291, इब्न हनबल द्वारा संबंधित।

अबू सुफ़यान और सफ़वान, दो प्रमुख कुरैशी,
एक बार मैंने एक भेड़िये को हिरन का पीछा करते देखा। जब हिरन ने
काबा के बाड़े में गया, भेड़िया वापस आया
और मौखिक रूप से मुहम्मद के पैगम्बर होने की गवाही दी।
आश्चर्यचकित होकर अबू सुफ़यान ने सफ़वान को चेतावनी दी: "अगर हम रिपोर्ट करते हैं
मुझे डर है कि यह चमत्कार दूसरों के लिए भी होगा, क्योंकि मक्का के सभी लोग इसमें शामिल हो जाएंगे।
मुसलमानों के लिए यह चमत्कार निश्चित है।"199 संक्षेप में, यह चमत्कार निश्चित है और
तवातुर का अर्थ है ।

तीसरी घटना: यह ऊँट की कहानी है।
इसकी सूचना पांच या छह चैनलों के माध्यम से दी जाती है।
अबू हुरैरा, थलाबा इब्न मलिक जैसे साथी,
जाबिर इब्न 'अब्दुल्ला, 'अब्दुल्ला इब्न जाफ़र, और 'अब्दुल-लाह इब्न अबी औफ़ा'।

एक ऊँट ने ईश्वर के रसूल के सामने सजदा किया,
अगर उसे नमस्कार किया, और उससे बात की। अन्य रिपोर्टें कहती हैं
यह ऊँट अंगूर के बगीचे में पागल हो गया था और जो भी इसके पास आता था
उस पर हमला कर देता था। जब परमेश्वर का दूत प्रकट हुआ, तो यह ऊँट उसके
पास आया, और एक दुष्ट की तरह दंडवत किया।
सम्मान की निशानी के रूप में, और उसके सामने घुटने टेक दिए ताकि रसूल उस पर
लगाम लगा सके। तब ऊँट ने ईश्वर के रसूल से शिकायत की: "उन्होंने मुझे इस तरह
से इस्तेमाल किया कि मैं भी तुम्हारे साथ अन्याय करूँ।"
सबसे भारी काम, और अब वे मुझे मारना चाहते हैं,

199 शिफ़ा', 1:311.

इसलिए मैं पागल हो गया।" ईश्वर के दूत ने उसके मालिक से पूछा कि क्या यह सच है, और उसने उत्तर दिया कि यह सच है।200

पैगम्बर के पास एक ऊँट था जिसका नाम अब्दा था। पैगम्बर के मरने के बाद इस ऊँट ने दुःख के मारे कुछ भी नहीं खाया-पीया और अंततः मर गया। 201 अबू इसहाक अल-इस्फ़ारानी जैसे महत्वपूर्ण अधिकारी बताते हैं कि इस ऊँट ने ईश्वर के दूत से एक महत्वपूर्ण घटना के बारे में बात की थी। जाबिर इब्न अब्दुल्लाह बताते हैं कि एक बार उनका ऊँट सैन्य अभियान के दौरान थक गया था। जब दूत ने उसे थोड़ा सा हिलाया, तो उत्पन्न खुशी और चपलता ने ऊँट को इतनी तेज़ी से चलने पर मजबूर कर दिया कि कोई भी उसे पकड़ नहीं सका या रोक नहीं सका।202 चौथी घटना: इमाम बुखारी सहित परंपरावादी बताते हैं कि एक रात अफवाह फैली कि दुश्मन मदीना पर हमला करने वाला है। कुछ बहादुर घुड़सवार जाँच करने निकल पड़े। अपने रास्ते में उन्होंने एक आदमी को

देखा जो ईश्वर के दूत लग रहे थे

200 न्यायाधीश, 2:99; इब्न हनबल, 3:158; मुसलमान, 1:268; इब्न माजा, 1:121.

201 शिफ़ा', 1:313.

202 बुखारी, 7:6; मुस्लिम, 3:1222.

203 मुस्लिम, नहीं. 2307; अबू दाऊद, 4988; तिर्मिज़ी, 1685.

उसने किसी और से पहले ही इस मामले को सुलझा लिया। उसने अबू से कहा तल्हा: “आपका घोड़ा बहुत तेज़ और आरामदायक है,”
हालाँकि इससे पहले यह बहुत धीमी थी।
उस रात कोई भी अन्य घोड़ा उसे दौड़ में नहीं हरा सका।
एक अन्य अवसर पर, संदेशवाहक ने अपने घोड़े से कहा
रुक गया ताकि वह प्रार्थना कर सके। घोड़ा तब तक स्थिर रहा जब तक
उसने प्रार्थना समाप्त की।204

पांचवी घटना: सफीना, रसूल की सेविका,
के गवर्नर मुआद इब्न जबल से मिलने के लिए निकल पड़े
ईश्वर के दूत के आदेश पर यमन के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में एक शेर से सामना होने पर उसने उससे कहा: "मैं दूत का सेवक हूँ।" शेर ने एक आवाज लगाई और चला गया
उसे कोई नुकसान पहुंचाए बिना। एक अन्य कथा के अनुसार, सफीना का सामना शेर से तब हुआ जब वह अपने घर लौट रहा था।
मदीना। हालाँकि, वह खो गया और शेर न केवल
उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाया बल्कि वास्तव में उसे रास्ता दिखाया।205

उमर ने बताया है कि एक बेडौइन अपने साथ छिपकली ले जा रहा था। ने अल्लाह के रसूल से कहा: "अगर यह जानवर आपकी नबी होने की गवाही देता है, तो मैं आप पर ईमान लाऊंगा। वरना, मैं नहीं लाऊंगा।" जब अल्लाह के रसूल ने पूछा
छिपकली, यह मौखिक रूप से उसकी पैगम्बरी होने की गवाही देती है।206

204 शिफ़ा', 1:315.

205 न्यायाधीश, 3:606; बज़ार, तबरानी और अबू द्वारा भी संबंधित
नुअयम.

206 कन्ज़ अल-उम्मल, 12:358, बहाकी, हकीम और अबू द्वारा संबंधित
नुअयम.

उम्मे सलमा (ईमानवालों की माँ) से रिवायत है कि एक मृग ने एक बार अल्लाह के रसूल से बात की और उनकी नबी होने की गवाही दी।207 हमने बहुत से ऐसे उदाहरणों में से सिर्फ़ कुछ जाने-माने उदाहरण दिए

हैं। इसलिए हम उन लोगों से कहते हैं जो अल्लाह के रसूल को नहीं पहचानते और उनकी आज्ञा का पालन नहीं करते: "जब तुम जान लो कि भेड़िये और शेर भी अल्लाह के रसूल को पहचानते हैं और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं, तो जानवरों से पीछे रहने की कोशिश मत करो।"

दूसरा भाग: लाशें, जिन्न और फ़रिश्ते अल्लाह के रसूल को पहचानते हैं। जिन्न और फ़रिश्तों से जुड़े चमत्कार मुतवातिर हैं और उनकी संख्या हज़ारों में है। लाशों द्वारा अल्लाह के रसूल को पहचानने के कई उदाहरणों में से हम केवल कुछ ही उदाहरणों का हवाला देते हैं, जो विश्वसनीय अधिकारियों द्वारा बताए गए हैं, जो इस प्रकार हैं: पहला: हसन अल-बसरी, जो अली के एक समर्पित शिष्य और इस्लाम के बाहरी और भीतरी आयामों में सबसे बड़े तबीउन

धार्मिक विद्वान थे, ने बताया कि एक फूट-फूट कर रोता हुआ आदमी अल्लाह के रसूल के पास आया और कहा: "मेरी छोटी बेटी पास की उस नदी में मर गई, और मैंने उसकी लाश वहीं छोड़ दी।" अल्लाह के रसूल को उस पर दया आई और उन्होंने कहा: "आओ, हम वहाँ चलते हैं।" वे उस जगह पहुँचे जहाँ उसे दफ़नाया गया था। जब अल्लाह के रसूल ने उस जगह को देखा तो वह वहाँ पहुँची।

---

207 शिफ़ा', 1:314, तबरानी, बेहाकी, अबू नुआयम और इब्न कथिर द्वारा संबंधित।

दूत ने उसे बुलाया, उसने तुरंत उत्तर दिया: "मैं यहाँ हूँ, आपके आदेश का पालन करने के लिए तैयार हूँ।" ईश्वर के दूत ने पूछा कि क्या वह अपने माता-पिता के पास वापस जाना चाहती है।

“नहीं,” उसने कहा, “क्योंकि मुझे यहाँ एक बेहतर जगह मिल गई है।”208

दूसरा: इमाम बेहकी और इब्न अदी जैसे महत्वपूर्ण परंपरावादी रिपोर्ट करते हैं कि अनस इब्न मलिक ने कहा: "एक धर्मपरायण वृद्ध महिला का इकलौता बेटा अप्रत्याशित रूप से मर गया। वह बहुत दुखी हुई और उसने प्रार्थना की: "हे ईश्वर, मैं केवल आपकी कृपा प्राप्त करने और आपके रसूल की सेवा करने के लिए यहाँ आई हूँ, जिनके प्रति मैंने निष्ठा की शपथ ली थी। अपने रसूल की खातिर, मुझे मेरा बेटा वापस दे दो, जो मेरी देखभाल करने वाला एकमात्र व्यक्ति था।"

अनस कहते हैं: “वह मरा हुआ बेटा ज़िंदा हो गया और उसने हमारे साथ खाना खाया।”209

अपनी पुस्तक कसीदा अल-बुरा में , जो कि अल्लाह की प्रशंसा में लिखी गई है, पैगम्बर इमाम बुसिरी इस चमत्कारी घटना का उल्लेख करते हैं:

> यदि उनके द्वारा किये गए चमत्कार उनकी अद्वितीय स्थिति को प्रदर्शित करने के
> लिए पर्याप्त थे, तो उनके नाम का उल्लेख मात्र सड़ी हुई हड्डियों में
> जान डालने के लिए पर्याप्त होता (नव मृत की तो
> बात ही छोड़िए)।

---

208 शिफ़ा', 1:320.

209 अल-बिदया वा अल-निहाया, 6:292; शिफ़ा', 1:320; बेहाकी, 6:50।

तीसरा: बेहाकी और अन्य लोग अब्दुल्लाह इब्न उबैउल्लाह अल-अंसारी को उद्धृत करते हैं: "मैं उस समय मौजूद था जब साबित इब्न कैस इब्न शम्मास को यमामा की लड़ाई के दौरान शहीद होने के बाद दफनाया गया था। जब उन्हें दफनाया जा रहा था, तो लोगों ने उन्हें यह कहते हुए सुना: 'मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं, अबू बकर सच्चे हैं, उमर शहीद हैं और उथमान नेक और दयालु हैं।' हमने कब्र खोली तो उन्हें मृत पाया।"210 साबित ने उमर के खलीफा बनने से पहले ही उनकी शहादत की भविष्यवाणी कर दी थी।

चौथा: इमाम तबरानी और अबू नुअम ने दलाईल अल-नुबुव्वा (पैगंबरी होने के प्रमाण) में नुमान इब्न बशीर से रिपोर्ट की: "ज़ैद इब्न ख़ारिजा की बाज़ार में अप्रत्याशित रूप से मृत्यु हो गई। हम उनके शव को घर ले गए।

महिलाएं कुछ देर तक उसके इर्द-गिर्द रोती रहीं

शाम और देर शाम की नमाज़ों में, जब उसे यह कहते हुए सुना गया: 'चुप रहो, चुप रहो!' और धाराप्रवाह जारी रखा: 'मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं। शांति आप पर हो, हे रसूल।' हमने उसकी जाँच की, और पाया कि वह मर चुका था।'211

यदि जीवित लोग भी उसकी पुष्टि नहीं करते, जबकि मुर्दे उसके रसूल होने की गवाही देते हैं,

210 शिफ़ा', 1:320.

211 अल-बिदया वा अल-निहाया, 6:293; हकीम और बेहाकी द्वारा संबंधित।

वे लाशों से भी अधिक निर्जीव और मृतकों से भी अधिक मृत हैं।

ईश्वर के रसूल के सामने प्रकट होने वाले और उनकी सेवा करने वाले फरिश्तों और उन जिन्नों के बारे में जो उन पर विश्वास करते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं, उन्हें मुतवातिर का दर्जा प्राप्त है, क्योंकि कुरान की कई आयतों ने इस बात की स्पष्ट पुष्टि की है। उदाहरण के लिए, कुरान में कहा गया है कि बद्र की लड़ाई के दौरान, 5,000 फरिश्तों ने उनके साथियों के रूप में सेवा की - जैसे कि अग्रिम मोर्चे पर सैनिक। ऐसा इसलिए किया गया था ताकि वे अपने साथियों की सेवा कर सकें।

ईमान वालों के इस विश्वास को मज़बूत करें कि वे जीतेंगे, सीधे युद्ध में भाग न लें। ये फ़रिश्तें इस सम्मान के कारण सभी फ़रिश्तों में सबसे अलग हैं, ठीक उसी तरह जैसे बद्र के लोग सभी साथियों में सबसे अलग थे।

यहां दो पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए: फ़रिश्तों और जिन्न का अस्तित्व और हमारे साथ उनका संबंध (जो उनतीसवें वचन में निर्णायक रूप से सिद्ध है), और कुछ मुसलमानों की पैगम्बर के आशीर्वाद और चमत्कारों के माध्यम से उन्हें देखने और उनसे बातचीत करने की क्षमता।

बहुत से परम्परागत विद्वान, विशेषकर बुखारी और मुस्लिम, बताते हैं कि जब रसूल अल्लाह के रसूल अल्लाह के रसूल अल्लाह के रसूल अल्लाह के रसूल के साथ बैठे थे, तब अर्खंगेल गेब्रियल उनके पास आए। वह एक सफ़ेद कपड़े पहने हुए व्यक्ति के रूप में आए। उन्होंने उनसे ईमान, इस्लाम और सदाचार (एहसान) और अल्लाह के बारे में पूछा।

मैसेंजर ने उन्हें परिभाषित किया, जिससे साथियों को शिक्षा मिली और उन्हें प्रश्नकर्ता को स्पष्ट रूप से देखने का मौका मिला।
जब प्रश्नकर्ता, जो एक आगंतुक प्रतीत होता था,
हालाँकि, आश्चर्य की बात यह है कि उसमें यात्रा के कोई निशान नहीं थे,
अचानक गायब हो गया, भगवान के दूत ने कहा: "वह था
जिब्रील जो तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आया था।”212

परंपरावादी भी प्रामाणिक कथनों के माध्यम से, जिनके अर्थ में मुतवातिर की निश्चितता है, रिपोर्ट करते हैं कि साथियों ने अक्सर गेब्रियल को भगवान के साथ देखा था
रसूल के रूप में दिह्या, एक बहुत ही सुंदर साथी। उदाहरण के लिए, उमर, इब्न अब्बास, उसामा इब्न
ज़ैद, हरीथ, आइशा और उम्म सलमा रिपोर्ट करते हैं: "हम
अक्सर गेब्रियल को भगवान के दूत के साथ देखा गया
दिह्या का रूप।''213 क्या वे ऐसा कहते यदि
गेब्रियल को नहीं देख सके?

साद इब्न अबी वक्कास, फारस के विजेता और
दस साथियों में से एक को स्वर्ग का वादा किया गया था
जीवित, ने बताया: “उहुद की लड़ाई के दौरान हमने देखा
भगवान के मंदिर के दोनों ओर सफेद कपड़े पहने दो पुरुष
हम इस नतीजे पर पहुंचे कि
वे महादूत गेब्रियल और माइकल थे।”214

---

212 बुखारी, 1:19-20; शिफा, 1:341, मुस्लिम और द्वारा भी संदर्भित
कई दूसरे।

213 इब्न हनबल, मुसनद, 1:212; बुखारी, 4:250; बहाक़ी, 7:52, 87.

214 मुसलमान, नहीं. 2036; बुखारी, 7:192; न्यायाधीश, 2:264.

जब इस्लाम का ऐसा नायक कहता है कि उसने उन्हें देखा, तो क्या उसने उन्हें नहीं देखा था?

पैगम्बर के चचेरे भाई अबू सुफ़यान इब्न हारिथ इब्न अब्दुल मुत्तलिब ने बताया: "हमने बद्र की लड़ाई के दौरान आसमान और धरती के बीच सफ़ेद कपड़े पहने घुड़सवारों को देखा।"215 एक दिन, हमज़ा ने ईश्वर के रसूल से कहा कि वह गेब्रियल से मिलना चाहता है। रसूल ने काबा में उनकी बात मान ली, लेकिन हमज़ा यह दृश्य सहन नहीं कर पाए और बेहोश हो गए।216

ऐसे ही कई उदाहरण इस प्रकार के चमत्कार को प्रदर्शित करते हैं, तथा यह संकेत देते हैं कि फ़रिश्ते भी पतंगों की तरह उनकी पैगम्बरी की रोशनी के इर्द-गिर्द रहते हैं।

साथी और आम मुसलमान दोनों ही जिन्न से मिल सकते हैं और उनसे बातचीत कर सकते हैं। सबसे पक्का उदाहरण इब्न मसूद का है, जिसके बारे में परंपरावादियों ने सबसे प्रामाणिक कथनों में से एक के ज़रिए बताया है, जिसमें उन्होंने कहा है: "मैंने जिन्न को बटन अल-नखला में उस रात देखा था, जिस रात वे इस्लाम में परिवर्तित हुए थे। वे सूडानी ज़ुट जनजाति के लंबे लोगों से मिलते जुलते थे।"217

215 शिफ़ा', 1:362; इब्न हनबल, 1:347; बुखारी और बेहाकी द्वारा संबंधित।

216 शिफ़ा', 1:362; सुयुति, अल-खासाईस अल-कुबरा', 1:311।

217 इब्न हनबल, 6:165; सुयुति, उक्त., 1:343; शिफ़ा', 1:362.

एक और प्रसिद्ध घटना स्वीकार की गई और सुनाई गई
परंपरावादियों द्वारा खालिद इब्न वालिद से संबंधित है।
'उज़्ज़ा (इस्लाम-पूर्व मूर्ति) को ध्वस्त कर दिया गया, एक महिला
जिन्न एक काली औरत के रूप में उभरा। खालिद
अपनी तलवार से उसे दो टुकड़ों में काट दिया। फिर भगवान की
रसूल ने कहा: "वे उसकी पूजा करते रहे हैं
उज्जा की मूर्ति में। अब से, उसकी पूजा नहीं की जाएगी।”218

उमर ने कहा: "जब हम अल्लाह के मसीह के पास थे-
सेंगर में हामा नामक एक जिन्न एक बूढ़े आदमी के रूप में प्रकट हुआ
एक छड़ी के साथ. वह इस्लाम में परिवर्तित हो गया. भगवान का संदेश-
सेंगर ने उसे कुरान की कुछ छोटी-छोटी आयतें सिखाईं और सबक सीखकर जिन्न
चला गया।''219
हालाँकि कुछ परंपरावादी इस घटना पर सवाल उठाते हैं
सटीकता, उत्कृष्ट अधिकारी इस बात से सहमत हैं कि
घटित।

लंबे स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम
इस संबंध में कई उदाहरण दिए गए हैं। हालाँकि,
हम इसमें यह भी जोड़ते हैं: परमेश्वर के प्रकाश और शिक्षा के माध्यम से
पैगंबर, और उनके अनुसरण से, हजारों ऐसे लोग
'अब्द अल-कादिर अल-' जैसे पवित्रता के प्रतिष्ठित, ईश्वरीय लोग

---

218 अबू नुअयम, 2:535; शिफ़ा', 1:362; इब्न कथिर, अल-बिदया,
4:316.

219 बेहाकी, 5:416; सुयुति, 2:350.

जिलानी ने फ़रिश्तों और जिन्नों से मुलाकात की और उनसे बातचीत की।
इस प्रकार यह घटना सौ बार तवातुर की डिग्री तक पहुंच गई है ।

तीसरा भाग: ईश्वर के दूत की सुरक्षा एक प्रत्यक्ष चमत्कार है, जैसा कि इसमें व्यक्त किया गया है: ईश्वर तुम्हें लोगों से बचाएगा (5:67) और कई घटनाओं द्वारा दर्शाया गया है। जब ईश्वर के दूत ने ईश्वरीय संदेश की घोषणा की, तो उन्होंने केवल एक जनजाति या जाति, कुछ राजनेताओं या किसी विशेष धर्म को चुनौती नहीं दी, बल्कि सभी शासकों और सभी धर्मों को चुनौती दी। अपने चाचा और कबीले की स्थिति के बावजूद उनके सबसे बड़े दुश्मनों में से एक होने के साथ-साथ उनके खिलाफ निर्देशित कई साजिशों के बावजूद, उन्होंने अपने बिस्तर पर पूर्ण संतुष्टि के साथ अपनी अंतिम सांस ली और बिना किसी रक्षक या किसी भी प्रकार की सुरक्षा के 23 साल बाद सर्वोच्च अमूर्त क्षेत्र में पहुँच गए।

इससे ऊपर उद्धृत आयत की सच्चाई स्पष्ट रूप से पता चलती है और ईश्वर के रसूल के लिए एक ठोस समर्थन मिलता है। इस संबंध में, हम कई निर्विवाद रूप से निश्चित अनुकरणीय घटनाओं में से केवल कुछ का उल्लेख करते हैं, जो इस प्रकार हैं:

पहली घटना: सभी परंपरावादियों और पैगंबर के जीवनीकारों ने बताया है कि कुरैश ने उन्हें मारने की कोशिश की थी।
किसी शैतानी आदमी या नज्द के किसी आदमी के रूप में शैतान द्वारा दी गई सलाह पर, उन्होंने कम से कम एक को चुना

किसी भी अंतर-कबीले विवाद से बचने के लिए प्रत्येक कबीले से एक व्यक्ति को रखा जाएगा। अबू जहल और अबू लहब ने लगभग 200 आदमियों का नेतृत्व किया जिन्होंने रसूल के घर को घेर लिया। अली, जो उस रात अल्लाह के रसूल के साथ थे, को रसूल के बिस्तर पर सोने के लिए कहा गया। जब कुरैश ने घर को घेर लिया, तो रसूल वहाँ से चले गए और उन पर कुछ धूल फेंकते हुए बिना देखे ही चले गए।220

दूसरी घटना: ईश्वर के दूत और अबू बकर ने थावर गुफा को छोड़ दिया, जहां ईश्वर ने उनकी रक्षा के लिए एक मकड़ी और दो कबूतर भेजे थे, और मदीना के लिए निकल पड़े।

इस बीच, कुरैशी सरदारों ने एक बहुत बहादुर आदमी सुराक़ा को एक बड़े इनाम के बदले में उनकी हत्या करने के लिए भेजा।

अबू बकर ने जब सुराक़ा को आते देखा तो वे चिंतित हो गए। ईश्वर के दूत ने उनसे वही बात दोहराई जो उन्होंने गुफा में कही थी: "चिंता मत करो, क्योंकि ईश्वर हमारे साथ है।" फिर उन्होंने सुराक़ा की ओर देखा, और सुराक़ा के घोड़े के खुर ज़मीन में धंस गए।

सुराक़ा ने घोड़े को छुड़ाया और उनका पीछा करने लगा, लेकिन उसके घोड़े के खुर फिर से फंस गए और उसने उस जगह से धुआं उठता देखा। तभी उसे एहसास हुआ कि न तो वह और न ही कोई और उन्हें बचा सकता है।

---

220 शिफ़ा', 1:349; इब्न हनबल, 4:269; बहाक़ी, 2:465; अबू नुअयम, 1:202-4.

अल्लाह के रसूल पर हाथ डाला और उसे बदला मांगना पड़ा। अल्लाह के रसूल ने उसे यह कहते हुए आज़ाद कर दिया: “वापस जाओ और सुनिश्चित करो कि कोई और न आए।”221

इसके अलावा, एक चरवाहे ने अल्लाह के रसूल और अबू बकर को देखा और कुरैश को सूचित करने के लिए मक्का की ओर दौड़ा।
लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे याद नहीं आ रहा था कि वह उनसे क्या कहना चाहता था। कुछ भी याद न कर पाने के कारण वह वहाँ से चला गया और बाद में उसे एहसास हुआ कि उसे भूला दिया गया था।222

तीसरी घटना: घाटफान और अनमार के सैन्य अभियान के दौरान, ग़वरस नाम का एक साहसी सरदार अप्रत्याशित रूप से रसूल के पास आया। उसने अपनी तलवार रसूल के सिर पर रखते हुए पूछा: “तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?” रसूल ने जवाब दिया: “ईश्वर।” फिर उसने प्रार्थना की: “हे ईश्वर, अपनी इच्छानुसार मुझे उससे बचाओ।”

उसी समय, उसके कंधों के बीच एक वार हुआ, जिससे घवरस गिर गया और उसकी तलवार उसके हाथ से फिसल गई। ईश्वर के दूत ने तलवार ली और पूछा: “अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?” ईश्वर के दूत ने तब घवरस को माफ़ कर दिया और उसे अपने कबीले में वापस जाने की इजाज़त दे दी। ऐसे बहादुर आदमी पर आश्चर्य हुआ

221 बुखारी, 4:245-46; मुस्लिम, नहीं. 2009; बहाक़ी, 2:483.

222 शिफ़ा', 1:351; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफा', 1:715।

कुछ न करते हुए, उसके साथियों ने पूछा: “क्या हुआ? तुम कुछ क्यों नहीं कर सके?” उसने समझाया कि क्या हुआ था, और आगे कहा: “मैं मानवता के सर्वश्रेष्ठ लोगों की उपस्थिति से आया हूँ।”223

इसी तरह की एक घटना में, बद्र की लड़ाई के दौरान एक मुनाफ़िक़ चुपके से अल्लाह के रसूल के पीछे से आया। अल्लाह के रसूल पर वार करने के लिए उसने अपनी तलवार उठाई, उसी समय रसूल ने पलटकर उसकी तरफ़ देखा। इससे वह काँप उठा और अपनी तलवार नीचे गिरा दी।224 चौथी घटना: ज़्यादातर व्याख्याकार इस घटना को, जो मुतवातिर जितनी ही मशहूर है , इस बात का

खुलासा करने का मौक़ा मानते हैं:

> हमने उनकी गर्दनों में ठोड़ी तक बेड़ियाँ डाल दी हैं, ताकि उनके सिर ऊँचे रहें, और हमने उनके आगे एक अवरोध बना दिया है, और उनके पीछे एक अवरोध बना दिया है, और हमने उन्हें ढाँप दिया है, ताकि वे देख न सकें। (36:9)

अबू जहल ने एक बड़ा पत्थर उठाया और कसम खाई कि अगर उसने पैगम्बर को सजदा करते देखा तो वह उस पत्थर से उन पर वार करेगा। पैगम्बर को सजदा करते देखकर उसने पत्थर उठाया और पैगम्बर के सिर पर पटकने लगा। लेकिन उसके हाथ हवा में ही जम गए। ईश्वर के रसूल ने अपना काम पूरा किया।

---

223 न्यायाधीश, 3:29-30; शिफ़ा', 1:348; बहाक़ी, 3:373-79; मुस्लिम द्वारा भी.

224 शिफ़ा', 1:347.

नमाज़ पढ़कर उठ खड़ा हुआ। तभी अबू जहल के हाथ खुल गए, या तो अल्लाह के रसूल की इजाज़त से या फिर इसलिए कि उनके बंधे रहने की कोई वजह नहीं थी।225

इसी तरह की एक घटना में, अबू जहल के कबीले का एक व्यक्ति (वालिद इब्न मुगीरा, एक रिपोर्ट के अनुसार) काबा में एक बड़ा पत्थर लेकर गया था ताकि अल्लाह के रसूल को घायल कर सके, जबकि वह सजदा कर रहे थे। हालाँकि, उसकी आँखें बंद हो गईं और वह अल्लाह के रसूल को नहीं देख सका।

वह अभी भी देखने में असमर्थ था (हालाँकि वह सुन सकता था), वह उन लोगों के पास लौट आया जिन्होंने उसे भेजा था।226 जब

ईश्वर के दूत ने अपनी प्रार्थना समाप्त की, और हत्यारे की आंखें खुल गईं, क्योंकि उन्हें बंद रखने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

अबू बकर ने बताया कि सूरत अल-मसद के बाद, जो अबू लहब के हाथों के नाश से शुरू होता है (111:1), अबू लहब की पत्नी, जिसे उसमें जलाऊ लकड़ी ले जाने वाली बताया गया है (111:4), एक पत्थर उठाकर काबा के पास गई। अल्लाह के रसूल और अबू बकर उसके पास बैठे थे। वह अल्लाह के रसूल को नहीं देख पाई और अबू बकर से पूछा: "तुम्हारा दोस्त कहाँ है? मैंने सुना है कि उसने मेरा मज़ाक उड़ाया है। अगर मैं देखूँ तो मैं उसे देखूँगी।

225 उपरोक्त, 1:351; मुस्लिम, नहीं. 2797; इब्न हनबल, 2:37.

226 शिफ़ा', 1:351; बहाक़ी, 3:197.

उसे, मैं इस पत्थर से उसके मुँह पर वार करूँगी!”227 वह उस व्यक्ति को नहीं देख सकी जो ईश्वर की सुरक्षा में था, जो हदीस कुदसी का उद्देश्य था: “तुम्हारे बिना, मैं दुनियाओं का निर्माण नहीं कर सकता था।” और इसलिए वह उसकी उपस्थिति में प्रवेश नहीं कर सकी। वह अपनी योजना को कैसे अंजाम दे सकती थी?

पांचवी घटना: अमीर इब्न तुफैल और अर्बाद इब्न क़ैस ने पैग़म्बर की हत्या की साज़िश रची। अमीर ने अर्बाद से कहा: “मैं उसे व्यस्त रखूँगा; तुम उसे मारो।” वे उसके पास गए, लेकिन अर्बाद ने कुछ नहीं किया। जब बाद में अमीर ने उससे पूछा कि उसने ईश्वर के पैग़म्बर को क्यों नहीं मारा, तो अर्बाद ने जवाब दिया: “मैं ऐसा कैसे कर सकता था? जब भी मैं उसे मारने का इरादा करता, तो मैं तुम्हें हमारे बीच देखता। क्या तुम्हें उम्मीद थी कि मैं तुम्हें मारूँगा?”228

छठी घटना: उहुद या हुनैन की लड़ाई के दौरान, शायबा इब्न उस्मान अल-हजाबिया चुपके से पीछे से अल्लाह के रसूल के पास पहुंचे। वह अपने पिता और चाचा का बदला लेना चाहता था, जिन्हें हमजा ने मार डाला था। उसने अपनी तलवार उठाई, लेकिन अचानक वह उसके हाथ से फिसल गई। अल्लाह के रसूल ने उसकी ओर रुख किया और अपना हाथ उसके सीने पर रख दिया। इस घटना को बताते हुए शायबा ने कहा: “उस समय, कोई भी नहीं था

227 न्यायाधीश, 2:351; बहाक़ी, 2:195.

228 बहाक़ी, 5:318; शिफ़ा', 1:353; अबू नुअयम, 1:207.

मुझे कोई और अधिक प्रिय था।'' उन्होंने इस्लाम धर्म अपना लिया
तुरन्त, और भगवान के दूत ने उसे जाने और
लड़ाई। शायबा ने कहा: "मैंने भगवान के रसूल के सामने लड़ाई लड़ी। अगर मैं अपने पिता से मिलती, तो मैं उनसे लड़ती
उसे मार डाला।"229

मक्का की विजय के दिन, फ़ज़हला ने ईश्वर के दूत को मारने के इरादे से संपर्क किया
ईश्वर के दूत ने उस पर मुस्कुराकर पूछा,
उसने मन में सोचा, और प्रार्थना की कि उसे क्षमा कर दिया जाए। उस समय इस्लाम में प्रवेश करते हुए, फदहला ने बाद में स्वीकार किया: "दुनिया में कोई भी उससे अधिक प्रिय नहीं था
उस क्षण मुझसे अधिक उससे अधिक।''230

सातवीं घटना: कुछ यहूदियों ने एक यहूदी को मार गिराने की साजिश रची।
पैगंबर के सिर पर एक बड़ा पत्थर फेंका गया, जब वह एक विशेष छत के नीचे बैठे थे।
ऐसा तब करें जब ईश्वर के दूत जाने के लिए खड़े हों।
भगवान की सुरक्षा के परिणामस्वरूप, उनकी साजिश नाकाम हो गई।231

ऐसे कई उदाहरण हैं।
सबसे ऊपर इमाम बुखारी और मुस्लिम, से संबंधित हैं
आयशा कि जब खुदा तुम्हें लोगों से बचाएगा

229 शिफ़ा', 1:353; इब्न हजर, अल-इसाबा, 2:157; अबू नुऐम, 1:195.

230 शिफ़ा', 1:354; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफ़ा', 1:718.

231 शिफ़ा', 1:352; इब्न इशाक और नसाई द्वारा अल-खासाई अल-कुबरा', 1:525 में भी संबंधित है।

जब यह आयत उतरी तो ईश्वर के रसूल ने उन लोगों से कहा जो समय-समय पर उससे कहा था: "मुझे छोड़ दो, क्योंकि मेरा प्रभु, शक्तिशाली और महिमावान, मेरी रक्षा करता है।''232

जैसा कि यह ग्रंथ दर्शाता है,
ब्रह्मांड ईश्वर के दूत को पहचानता है और उससे संबंधित है, और प्रत्येक अपने चमत्कारों का एक विशिष्ट प्रकार प्रदर्शित करता है। इससे पता चलता है कि पैगंबर मुहम्मद ही ईश्वर के दूत हैं
ईश्वर के दूत और दूत, सृष्टि के निर्माता
ब्रह्माण्ड और सृष्टि के स्वामी।

शासक द्वारा नियुक्त एक महत्वपूर्ण निरीक्षक है
प्रशासन के प्रत्येक विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त है और प्रत्येक से संबंधित है क्योंकि उसे कार्य करना है
शासक के लिए प्रत्येक विभाग में एक कर्तव्य होता है। उदाहरण के लिए, एक न्यायिक निरीक्षक न्यायिक विभाग से जुड़ा होता है और अन्य विभागों में अज्ञात होता है। इसी तरह, नागरिक प्रशासन में भी ऐसा नहीं होता है।

एक सैन्य निरीक्षक को पहचानना, इत्यादि।

जैसा कि ऊपर सिद्ध किया गया है, ईश्वर का प्रत्येक विभाग
राज्य, स्वर्गदूतों से लेकर कीड़े-मकौड़ों तक, जानता है,
प्रभु के दूत को पहचानता है, या उसके बारे में सुना है
संसारों की और पैगम्बरों की मुहर। और, इसके अलावा, उनके संदेशवाहक का क्षेत्र कहीं अधिक है
सभी पिछले पैगम्बरों की तुलना में अधिक व्यापक।

232 न्यायाधीश, 2:213; बहाक़ी, 2:184; तिर्मिधि द्वारा भी संबंधित।

सोलहवाँ चिन्ह: जो आश्चर्यकर्म घटित हुए
पहले लेकिन उनकी पैगम्बरी के संबंध में हैं
इन्हें इरहासत कहा जाता है। ये तीन प्रकार के होते हैं, जो इस प्रकार हैं:

प्रथम प्रकार: मुहम्मद की पैगम्बरी की ख़बरें
टोरा, बाइबल, भजन और भेजे गए पन्नों द्वारा दिया गया
कुरान में वर्णित अन्य पैगम्बरों के बारे में भी यही कहा गया है।
वे मूलतः परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए शास्त्र हैं
उनके पैगम्बरों के बारे में यह उचित ही है कि वे उस पैगम्बर का उल्लेख करें
जो उनके धर्मों को बदल देगा,
मानव सभ्यता का आकार, और आधे को रोशन करना
इस्लाम की रौशनी से दुनिया को रोशन करना।
क्या ये पुस्तकें, जो छोटी-छोटी घटनाओं के बारे में भी भविष्यवाणी कर देती हैं, मानव इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना, मुहम्मद की पैगम्बरी का उल्लेख नहीं करतीं?

यह देखते हुए कि उन्हें ऐसा करना ही होगा, जिन लोगों को
ये शास्त्र भेजे गए थे या तो इसकी निंदा करेंगे
अपने धर्मों को विनाश से बचाने के लिए और अपनी पुस्तकों को निरस्त होने से बचाने के लिए झूठ के रूप में प्रस्तुत करें, या ऐसा ही पुष्टि करें
कि, इस सत्यनिष्ठ व्यक्ति के माध्यम से, उनके धर्म
अंधविश्वास और भ्रष्टाचार से मुक्त रहें। दोनों मित्र
और फ़ो सहमत हैं कि उनकी किताबों में ऐसा कुछ भी नहीं है
उनकी पैगम्बरियत का खंडन या अस्वीकार करता है; इसके विपरीत, वे सर्वसम्मति से इसकी पुष्टि करते हैं।
इस तरह की पुष्टि के लिए एक निश्चित कारण और एक मौलिक कारण के अस्तित्व के रूप में,

हम साबित करेंगे

तीन निश्चित प्रमाणों के माध्यम से इस बात की पुष्टि की गई है।

पहला प्रमाण: ईश्वर के दूत ने क़ुरआन की ज़बान से किताब वालों (यहूदियों और ईसाइयों) को घोषणा की: "तुम्हारे धर्मग्रंथ मुझे बताते हैं और जो कुछ मैं कहता हूँ, उसकी पुष्टि करते हैं।" इसके अलावा, वह उन्हें निम्नलिखित आयतों के माध्यम से चुनौती देते हैं:

> कह दो, "यदि तुम सच्चे हो तो अब तौरात लाओ और उसे पढ़ो।" (3:93)

> कह दो, “आओ, हम अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी स्त्रियों को और तुम्हारी स्त्रियों को, अपने आपको और अपने आपको बुलाएँ, फिर नम्रता से प्रार्थना करें और झूठ बोलनेवालों पर अल्लाह की लानत भेजें।” (3:61)

इतनी कड़ी चुनौतियों के बावजूद, किसी भी यहूदी विद्वान या ईसाई पादरी को कभी भी कोई ऐसी गलती नहीं मिली जिसके आधार पर उसे चुनौती दी जा सके। अगर वे ऐसा करते, तो उस समय के कई जिद्दी और ईर्ष्यालु अविश्वासियों के साथ-साथ पाखंडी यहूदी और सभी अविश्वासियों ने पूरे देश में इसका प्रचार किया होता।

उस समय के बहुदेववादियों की तरह, यहूदियों और ईसाइयों को भी उसके विरुद्ध युद्ध करना पड़ा, जब वे उसका विरोध करने में सक्षम नहीं थे। उन्होंने युद्ध करना चुना, लेकिन वे बिखर गए और पलायन करने को मजबूर हो गए, क्योंकि उन्हें कोई गलती नहीं मिली। अगर उन्हें पता होता, तो वे खुद को बचा हुआ समझते।

दूसरा प्रमाण: टोरा, सुसमाचार और भजन के शब्दों में कुरान का चमत्कारिक प्रभाव नहीं है।

लूस पूर्णता। इसके अलावा, कई विदेशी शब्द और विचार
उनमें प्रवेश किया है क्योंकि अनुवाद बन गए

मूल पाठ से बहुत दूर। इसके अलावा,
कही गई बातें और गलतियाँ, चाहे जानबूझकर की गई हों या
नहीं, उनके कई दुभाषियों को भ्रमित किया गया है
मूल श्लोकों के साथ अज्ञानी लोगों और विभिन्न शत्रुओं की विकृतियाँ भी शामिल कर ली गई हैं। और इसलिए ये शास्त्र बहुत अधिक विकृत हैं

परिवर्तन और भ्रष्टाचार।

प्रसिद्ध विद्वान शेख रहमतुल्लाह अल-हिन्दी
एक बार उन्होंने हजारों बदलावों को साबित करके पुजारियों और ईसाई तथा यहूदी विद्वानों को चुप करा दिया था
उन पुस्तकों के बावजूद, हालांकि, प्रसिद्ध
विद्वान हुसैन अल-जिसरी अभी भी उनसे कुछ सीख सकते हैं
मुहम्मद के बारे में 110 साक्ष्य
नबीत्व, जिसे उन्होंने अपने रिसाला अल-हमीदिया में शामिल किया।

कई यहूदी और ईसाई विद्वान मानते हैं
मुहम्मद की विशेषताएं दर्ज हैं
उनके धर्मग्रंथ। रोमन सम्राट हेराक्लियस, एक
एक गैर-मुस्लिम ने कहा: "मैं सहमत हूं कि ईसा ने मुहम्मद के आगमन की भविष्यवाणी की थी।"233 एक अन्य रोमन शासक, मुकाव-क़ीस (मिस्र का गवर्नर), और अन्य प्रसिद्ध यहूदी

233 तिर्मिज़ी, 2:167; शिफ़ा', 1:364.

इब्न सूरिया, इब्न अख़ताब और उनके भाई जैसे विद्वान
हालाँकि, काब इब्न असद, और ज़ुबैर इब्न बतिया
शेष गैर-मुस्लिमों ने स्वीकार किया: “हमारी पुस्तकों में उनका और उनके गुणों का उल्लेख है।”234

दूसरी ओर, कई प्रसिद्ध यहूदी विद्वानों और ईसाई भिक्षुओं ने अपनी हठधर्मिता तोड़ी और
यह देखने के बाद कि मुहम्मद के पास धर्म परिवर्तन का अधिकार है,
उनके धर्मग्रंथों में वर्णित विशेषताएँ
उन्होंने अपने कुछ पूर्व सह-धर्मवादी विद्वानों को अंतिम पैगम्बर का संदेश दिखाकर चुप करा दिया।
टोरा और सुसमाचार में संदर्भ। उनमें से
प्रसिद्ध 'अब्दुल्ला इब्न सलाम, वाहब इब्न' थे
मुनब्बीह, अबू यासिर, शमुल, और असिद और थलाबा
(सया के दो बेटे)235 शमुल उस दौरान रहते थे
यमन के शासक टुब्बा का शासनकाल, और दोनों में विश्वास था
मुहम्मद की पैगम्बरी भले ही उनका जन्म 15वीं सदी में हुआ हो
अभी भी कुछ समय भविष्य में है.

इब्न हयाबान ने एक बार बानी नादिर जनजाति का दौरा किया था। मुहम्मद ने अपने पैगम्बर होने की घोषणा से पहले मदीना में लोगों से कहा था: "एक पैगम्बर का उदय
निकट है, और वह यहाँ प्रवास करेगा।” इब्न हयाबान

---

234 शिफ़ा', 1:366, 384; बहाक़ी, 3:361-62; इब्न कथिर, अल-बिदया, 4:80-81.

235 शिफ़ा', 1:364; बहाक़ी, 6:240-49; तिर्मिज़ी, 2:206.

जब उस कबीले ने ईश्वर के दूत से युद्ध किया, तो असीद और थलाबा ने सार्वजनिक रूप से उन्हें पुकारा: "ईश्वर की कसम, यह वही है जिसके आने का वादा इब्न हयाबान ने किया था।"236 लेकिन उन्होंने पुकार को नज़रअंदाज़ कर दिया, और इस तरह उन्होंने जो कमाया, वह पाया।

टोरा में वर्णित पैगम्बर को देखने के बाद, इब्न बन्यामिन, मुक-हैरिक और काब अल-अखबर जैसे कई यहूदी विद्वानों ने धर्म परिवर्तन कर लिया और इस तरह उन लोगों को चुप करा दिया जो अविश्वास पर जोर देते थे।237

और फिर वहाँ प्रसिद्ध ईसाई भिक्षु है

बहिरा, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। जब वह 12 वर्ष का था, तो पैगम्बर अपने चाचा के साथ दमिश्क के एक व्यापारिक मिशन पर गए थे। अपने कक्ष से बहिरा ने देखा कि एक बादल कारवां में एक निश्चित व्यक्ति को छाया दे रहा था।

उसने उन सभी को मुहम्मद के भोज पर आमंत्रित किया।

जब उसने देखा कि छाया प्रदान करने वाला बादल वहीं रह गया है जहाँ कारवां ने डेरा डाला था, तो उसने सोचा: "जिसे मैं खोज रहा हूँ वह अभी भी वहीं होगा," और इसलिए उसने एक आदमी को भेजा कि जो भी बचा हो उसे ले आए। जब मुहम्मद

लाया गया, बहिरा ने अबू तालिब से कहा: "तुरंत मक्का लौट जाओ। यहूदी बहुत ईर्ष्यालु हैं और

236 अबू नईम, 1:82; बहाक़ी, 2:80-81.

237 शिफ़ा', 1:364; बहाक़ी, 3:161-63.

उसके खिलाफ़ साज़िश रच सकते हैं, क्योंकि उसका वर्णन टोरा में दर्ज़ है।”238

अबीसीनिया के कुछ नेस्टोरियन और नेगस (अबीसीनिया के शासक) ने अपने धर्मग्रंथों में पैगम्बर का वर्णन पाकर एक साथ इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।239 प्रसिद्ध ईसाई विद्वान दगहतर ने भी ईसाइयों की पुस्तकों में पैगम्बर का वर्णन पाया और इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। जब उन्होंने खुले तौर पर बाइजेंटाइन में अपने धर्म परिवर्तन की घोषणा की, तो उन्हें शहीद कर दिया गया।240

इस तरह के धर्मांतरण के कुछ अन्य उदाहरण हैं, हरीथ इब्न अबी शुमार अल-ग़स्सानी (एक ईसाई नेता), इब्न नतूर और अल-जरुद (दमिश्क के प्रमुख धार्मिक नेता), इलिया (वर्तमान ग्रीस में) के शासक और हेराक्लियस (बीज़ान्टियम के सम्राट)।

हेराक्लियस ने सांसारिक राज्य की खातिर अपने धर्म परिवर्तन की बात छुपाई।241 सलमान अल-फारिसी, जो एक ईसाई के रूप

में जन्मे थे, पैगंबर का वर्णन सुनने के बाद उनकी खोज में निकल पड़े।242 तमीम (एक प्रसिद्ध विद्वान), साथ ही नेगस,

238 इब्न साद, तबक़ात, 1:76; इब्न हिशाम, सीरा, 115; शिफ़ा', 1:308; हकीम, 2:615.

239 शिफ़ा', 1:364.

240 शिफ़ा', 1:364; बहाक़ी, 6:240-49; तिर्मिज़ी, 2:206.

241 बुखारी, 1:7; अबू नईम, 1:101-2.

242 न्यायाधीश, 3:604; इब्न हनबल, 5:437; इब्न हिशाम, 1:233.

अबीसीनिया के ईसाई और नजरान के पुजारी
सभी ने घोषणा की कि उन्होंने पैगंबर का वर्णन पाया
उन्होंने अपनी पुस्तकों में लिखा है और इसलिए उस पर विश्वास किया।243

तीसरा प्रमाण: अब हम सुसमाचार, टोरा और भजन संहिता से कुछ आयतों की ओर ध्यान दिलाते हैं जो वर्णन करती हैं
पैगंबर मुहम्मद

पहला उदाहरण: भजन संहिता में हम पढ़ते हैं: हे परमेश्वर,
अंतराल के बाद हमें भेजें (सबसे नवीनतम
जो (तेरा) भविष्यद्वक्ता स्थापित करेगा
रास्ता। [244] जो (आपका) मार्ग स्थापित करेगा, वह है
पैगंबर मुहम्मद

सुसमाचार में हम पढ़ते हैं: मसीहा ने कहा: मैं हूँ
अपने और अपने पिता के पास जा रहा हूँ ताकि वह भेज दे
आप पैराक्लीट (यूहन्ना १६:७), (अर्थात अहमद या
मुहम्मद) और मैं पिता से पूछूंगा, और वह मुझे उत्तर देगा।
आपको एक और पैराक्लीट दे जो हमेशा आपके साथ रहे
(यूहन्ना 14:16)। पैराक्लीट, जिसका अर्थ है "सत्य और असत्य में अंतर करने वाला", पैगम्बर मुहम्मद को संदर्भित करता है, जैसा कि उन पुस्तकों में उल्लेख किया गया है।245

---

243 शिफ़ा', 1:364.

244 यद्यपि वर्तमान संस्करण में यह शब्दशः मौजूद नहीं है
बाइबल में यह वर्णित है कि हुज्जत अल्लाह अल-आलमीन 1:1-1 में वर्णित है।
युसूफ नहबानी द्वारा मुजिजात अल-सैय्यद अल-मुर्सलिन , पी। 104. (ट्र.)

245 वेबस्टर की नई दुनिया डिक्शनरी के अनुसार , पैराक्लीट
ग्रीक शब्द पैराक्लेटोस से निकला है, जिसका अर्थ है "मध्यस्थ,

टोरा कहता है:

> परमेश्वर ने अब्राहम से कहा: “हागर बच्चों को जन्म देगी।
> उसके पुत्रों में से एक ऐसा व्यक्ति प्रकट होगा जिसका हाथ सब से ऊपर होगा,
> और सब के हाथ उसके लिए आदर से खुले रहेंगे।”246

वकील, दलील देने वाला।” हालाँकि, ग्रीस के यान्या से उन्नीसवीं सदी के विद्वान अबिदीन पाशा, जो ग्रीक को बहुत अच्छी तरह से जानते थे और जिनके ग्रीक साहित्य पर कामों की ग्रीक अधिकारियों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई थी, लिखते हैं कि इसका वास्तविक मूल पिरिकलिटोस है, जिसका अर्थ है अहमद, जिसकी बहुत प्रशंसा की जाती है (हुसैन जिसरी, रिसाला अल-हमीदिया, 59)। कुरान यह भी बताता है कि ईसा ने पैगंबर मुहम्मद की भविष्यवाणी अहमद नाम से की थी, जो मुहम्मद का पर्यायवाची शब्द है (61:6)। ईसाई दावा करते हैं कि ईसा ने पवित्र आत्मा के लिए पैराक्लीट का इस्तेमाल किया । हालाँकि, पवित्र आत्मा का मध्यस्थता, दलील या वकालत के साथ सटीक संबंध क्या है, जो पैगंबर मुहम्मद की मुख्य विशेषताओं को संदर्भित करता है, भले ही हम स्वीकार करते हैं कि यह शब्द पैराक्लीटोस से निकलता है। इसके अलावा, सुसमाचार अनुवादक उस शब्द का उपयोग करने के बजाय पैराक्लीट का अनुवाद करना पसंद करते हैं , लेकिन सभी अलग-अलग शब्दों का उपयोग करते हैं। इसके अलावा, यीशु न केवल पैराक्लीट के रूप में , बल्कि “इस संसार के राजकुमार” और “सत्य की आत्मा” के रूप में भी आने वाले व्यक्ति के बारे में शुभ समाचार देते हैं, साथ ही कई अन्य कार्य भी बताते हैं, जो एक भविष्यद्वक्ता के लिए होने चाहिए न कि किसी “आत्मा” या स्वर्गदूत के लिए। (ट्र.)

246 यद्यपि यह बाइबल के वर्तमान संस्करणों में शब्दशः मौजूद नहीं है, 'अली अल-कारी ने इसे अपने शरह अल-शिफा', 1:743 में दर्ज किया है।
टोरा कहता है: मैं दासी (हगार) के पुत्र से एक राष्ट्र बनाऊंगा (उत्पत्ति, 21:13); हगार ... लड़के को उठाओ और उसका हाथ पकड़ो, क्योंकि मैं उससे एक महान राष्ट्र बनाऊंगा (21:18)। (ट्र.)

टोरा की एक अन्य आयत कहती है:

> और उसने कहा: "हे मूसा, मैं उनके लिए उनके भाइयों (इश्माएल की संतान) में से तुम्हारे जैसा एक नबी खड़ा करूँगा। मैं अपना वचन उसके मुँह में डालूँगा, और वह उन्हें वह सब बताएगा जो मैं उसे आज्ञा दूँगा। यदि कोई मेरे शब्दों को नहीं सुनता है जो नबी मेरे नाम से बोलता है, तो मैं स्वयं उसे जवाब दूँगा।" (व्यवस्थाविवरण 18:18-19)

टोरा की तीसरी आयत इस प्रकार है:

> मूसा ने कहा: "ऐ मेरे रब, मैंने तौरात में एक ऐसा समुदाय पाया है, जो सभी समुदायों में सबसे अच्छा है, जो मानवता के लाभ के लिए उठाया जाएगा। वे भलाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और ईश्वर पर ईमान लाते हैं। यह मेरा समुदाय हो!" (ईश्वर ने) कहा: "यह मुहम्मद का समुदाय है।"247

याद दिला दें: उन किताबों में मुहम्मद नाम को सीरियाई समकक्षों में दिया गया है, जैसे मुशफ्फा, मुन्हमन्ना, हिमयता। मुहम्मद का नाम केवल कुछ ही जगहों पर स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है, और

ईर्ष्यालु यहूदियों ने उन सन्दर्भों को बदल दिया।

भजन संहिता में कहा गया है:

247 'अली अल-कारी, उक्त, 1:746।

> ऐ दाऊद! तुम्हारे बाद एक नबी आएगा जिसका नाम अहमद (मुहम्मद) होगा, वह सच्चा और पालनहार होगा, और उसकी क़ौम को क्षमा कर दिया जाएगा।248

अब्दुल्ला इब्न अम्र इब्न अल-अस, जिन्होंने पहले की ईश्वरीय पुस्तकों का गहन अध्ययन किया; अब्दुल्ला इब्न सलाम, इस्लाम अपनाने वाले पहले प्रसिद्ध यहूदी विद्वान; और काब इब्न अल-अख़बार, जो सबसे प्रमुख यहूदी विद्वानों में से एक थे, सभी ने टोरा में निम्नलिखित आयत की ओर इशारा किया, जो अभी तक अपने वर्तमान स्तर तक भ्रष्ट नहीं हुई थी। मूसा को संबोधित करने के बाद, यह आयत आने वाले पैगंबर को संबोधित करती है:

> ऐ नबी! हमने तुम्हें गवाह, शुभ सूचना देनेवाला, डरानेवाला और अनपढ़ों के लिए संरक्षक बनाकर भेजा है। तुम मेरे बन्दे हो, मैंने तुम्हारा नाम "अल्लाह पर भरोसा करनेवाला" रखा है, जो कठोर और सख्त नहीं है, और बाज़ारों में शोर मचानेवाला नहीं है, जो बुराई को बुराई से नहीं हटाता, बल्कि माफ़ कर देता है और क्षमा कर देता है। अल्लाह उसकी जान नहीं लेगा, जब तक कि उसके ज़रिए किसी टेढ़ी-मेढ़ी क़ौम को सीधा न कर दे, ताकि वह यह घोषणा कर दे कि "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है।"249

टोरा की एक अन्य आयत कहती है:

248 इब्न कथिर, अल-बिदया वा अल-निहाया, 2:326; शरह अल-शिफ़ा', 1:739.

249 बुखारी, बुयु', 50; इब्न हनबल, मुसनद, 2:174; दारिमी, 1:14-15.

> मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं। उनका जन्मस्थान मक्का है। वे तयबा में प्रवास करेंगे। उनके शासन का केंद्र दमिश्क है, और उनका समुदाय निरंतर ईश्वर की स्तुति में व्यस्त रहता है। 250

इस आयत में एक सीरियाई शब्द का अर्थ है मुहम्मद
वास्तव में मुहम्मद शब्द के लिए उल्लेख किया गया है।

टोरा की एक और आयत, तू मेरा दास और रसूल है; मैंने तुझे "ईश्वर पर भरोसा करने वाला" नाम दिया है,251 एक ऐसे पैगम्बर को संबोधित है जो मूसा के बाद, इश्माएल की संतान से उभरेगा: इसहाक के बच्चों के चचेरे भाई। साथ ही: मेरा दास एक "चुना हुआ" है, जो न तो कठोर है और न ही सख्त।

[252] "मुख्तार" (चुना हुआ) उनके नामों में से एक "मुस्तफा" का पर्याय है।

सुसमाचारों में कई स्थानों पर यीशु के बाद आने वाले पैगंबर को "दुनिया का मालिक" कहा गया है (यूहन्ना 14:30)। एक और आयत जो उसका वर्णन करती है: उसके पास एक लोहे की छड़ी है जिसके साथ वह लड़ेगा, जैसा कि उसके लोग करेंगे
समुदाय को [253] संकेत करता है कि एक पैगम्बर आएगा
जिहाद छेड़ने के लिए तलवार दी गई है। कुरान 48:29 इस आयत से सहमत है, अन्य इंजील आयतों का हवाला देता है, और कहता है कि उसका समुदाय, उसकी तरह, जिहाद छेड़ने के लिए बाध्य होगा।

---

250 दारिमी, 1:14-15; अबू नईम, दलाइल अल-नुबुव्वा, 1:72.

251 कस्तलानी, अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, 6:192।

252 'अली अल-कारी, उक्त, 1:739।

253 युसूफ नहबानी, उक्त, 105.

और सुसमाचार में उनकी समानता यह है:

> जैसे बीज अपनी टहनियाँ फैलाता है, फिर उन्हें मज़बूत बनाता है, फिर मोटा होकर अपने तने में खड़ा हो जाता है, और बोनेवालों को आश्चर्य और प्रसन्नता से भर देता है, यहाँ तक कि इनकार करनेवालों को उनके प्रति क्रोध से भर देता है। (48:29)

टोरा में एक आयत कहती है: प्रभु सिनाई से आया, सेईर से उन पर चमका, और पारान पर्वत से चमका (व्यवस्थाविवरण 33:2)। प्रभु सिनाई से आया, मूसा की पैगम्बरी को दर्शाता है, सेईर से उन पर चमका (सेईर पहाड़ियाँ दमिश्क के पास हैं) यीशु की पैगम्बरी को दर्शाता है, और वह पारान पर्वत (हिजाज़ के पारान पहाड़) से चमका, मुहम्मद के पैगम्बरी होने को दर्शाता है।254

कविता आगे कहती है,

कुरान की उक्ति: यह उनकी उपमा है

तोराह में पैगम्बर के साथियों के बारे में यह कहा गया है जो पारान के पहाड़ों से निकलेंगे:

पवित्र लोगों के झंडे उसके साथ, उसके दाहिनी ओर हैं। [255]

254 तोराह उस जगह को पारान कहता है जहाँ हागर अपने बेटे (इश्माएल) के साथ रुकी थी (उत्पत्ति, 21:21)। कुरान उस जगह को मक्का कहता है, जो उस समय निर्जन था (14: 37)। (ट्र.)

255 यह बाइबल के कई संस्करणों में लगभग एक जैसा है, जैसे कि द बाइबल कंपनी (इस्तांबुल) द्वारा प्रकाशित संस्करण। हालाँकि, हम गिदोन इंटरनेशनल संस्करण में एक अलग अनुवाद देखते हैं, यदि कोई बदलाव नहीं है, तो: वह पवित्र लोगों के असंख्य लोगों के साथ आया था

यह आयत साथियों को “पवित्र लोग” के रूप में वर्णित करती है, जिसका अर्थ है कि वे परमेश्वर के धन्य, धर्मी और संत मित्र हैं।

यशायाह 42 में निम्नलिखित आयतें हैं जो पैगम्बर मुहम्मद का वर्णन करती हैं, जो मानव इतिहास के अंतिम चरण में आएंगे:

> यह मेरा सेवक है, जिसे मैं संभालता हूँ, मेरा चुना हुआ, जिससे मैं प्रसन्न हूँ। मैं उस पर अपनी आत्मा डालूँगा, और वह राष्ट्रों के लिए न्याय लाएगा। वह चिल्लाएगा या चिल्लाएगा नहीं, या सड़कों पर अपनी आवाज़ ऊँची नहीं करेगा। वह कुचले हुए नरकट को नहीं तोड़ेगा, और वह सुलगती हुई बत्ती को नहीं बुझाएगा। वह ईमानदारी से न्याय लाएगा; वह तब तक नहीं डगमगाएगा या निराश नहीं होगा जब तक वह पृथ्वी पर न्याय स्थापित नहीं कर देता। द्वीप उसकी व्यवस्था पर अपनी आशा रखेंगे। (यशायाह 42:1-4)

मीका 4 में अराफात पर्वत और राष्ट्र का वर्णन किया गया है

मुहम्मद की स्मृति में, सभी स्थानों से आने वाले तीर्थयात्रियों द्वारा की गई प्रार्थनाओं और प्रशंसाओं के साथ:

> अन्तिम दिनों में यहोवा के मन्दिर का पर्वत सब पहाड़ों से ऊँचा किया जाएगा; वह सब पहाड़ियों से ऊँचा किया जाएगा, और लोग उसकी ओर चलेंगे। बहुत सी जातियाँ आकर कहेंगी: “आओ, हम भी उसके पास आएँ।”

दक्षिण से, उसके पहाड़ी ढलानों से (व्यवस्थाविवरण 33:2) (ट्र.)

> यहोवा के पर्वत पर चढ़कर परमेश्वर के भवन में जाओ।
> वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा, कि हम उसके पथों पर चलें।” (मीका 4:1-2)

भजन 72 की निम्नलिखित आयतें स्पष्ट रूप से पैगम्बर मुहम्मद का वर्णन करती हैं:

> वह समुद्र से समुद्र तक और नदी से नदी तक शासन करेगा।
>
> पृथ्वी के छोर तक। रेगिस्तानी जनजातियाँ उसके सामने झुकेंगी, और उसके दुश्मन धूल चाटेंगे। तर्शीश और दूर के तटों के राजा उसे श्रद्धांजलि देंगे; यमन और सबा के राजा उसे उपहार देंगे। सभी राजा उसके सामने झुकेंगे, और सभी राष्ट्र उसकी सेवा करेंगे, क्योंकि वह उन जरूरतमंदों को बचाएगा जो पुकारते हैं, उन पीड़ितों को जिनकी मदद करने वाला कोई नहीं है। वह कमजोरों और जरूरतमंदों पर दया करेगा, और जरूरतमंदों को मौत से बचाएगा। वह उन्हें उत्पीड़न और हिंसा से बचाएगा, क्योंकि उनकी दृष्टि में उनका खून कीमती है। वह लंबे समय तक जीवित रहे! लोग हमेशा उसके लिए प्रार्थना करें और पूरे दिन उसे आशीर्वाद दें... उसका नाम हमेशा अमर रहे।
>
> यह तब तक जारी रहे जब तक सूर्य रहेगा। सभी राष्ट्र उसके द्वारा धन्य होंगे, और वे उसे धन्य कहेंगे।
>
> (भजन 72:8-17)

पैगम्बर डेविड के बाद, क्या पैगम्बर मुहम्मद के अलावा कोई अन्य पैगम्बर हुआ है जिसने अपने धर्म को पूर्व से पश्चिम तक फैलाया, जिसके नाम पर कई शासक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिसके मार्ग का अनुसरण बहुत से लोग उसके प्रति गहरी श्रद्धा के कारण करते हैं, और जिसके लिए मानवता का पांचवां हिस्सा प्रतिदिन ईश्वर की शांति और आशीर्वाद की प्रार्थना करता है?

यूहन्ना 16:7 में लिखा है: " मैं तुम्हारे भले के लिए जा रहा हूँ। जब तक मैं नहीं जाऊँगा, तब तक सांत्वना देनेवाला तुम्हारे पास नहीं आएगा। पैगम्बर मुहम्मद के अलावा मानवता का सच्चा सांत्वना देनेवाला कौन हो सकता है? निश्चित रूप से वह मानवता का गौरव और सांत्वना देनेवाला है, क्योंकि वह उन सभी लोगों को बचाता है जो उसका अनुसरण करते हैं और जो अनंत विनाश से बचते हैं।

यूहन्ना 16:8 में लिखा है: जब वह आएगा, तो वह पाप और धार्मिकता और न्याय के सम्बन्ध में संसार को दोषी ठहराएगा। पैगम्बर मुहम्मद के अलावा और कौन आया और उसने अपने समय में व्याप्त अव्यवस्था को अच्छाई और सद्भाव में बदल दिया, ताकि संसार को पाप और बहुदेववाद से बचाया जा सके और इसकी राजनीति और शासन में क्रांतिकारी बदलाव लाया जा सके?

यूहन्ना 16:11: ...और न्याय के विषय में भी, क्योंकि संसार के राजकुमार का न्याय हो चुका है।
यह “राजकुमार” पैगम्बर मुहम्मद हैं, क्योंकि उन्हें मानवता का गुरु माना जाता है। वास्तव में, वह ऐसे राजकुमार हैं कि उनके जीवन के बाद से 14 शताब्दियों में से प्रत्येक में कई लाखों लोगों ने उनका अनुसरण किया है।

वे उसकी आज्ञाओं का स्वेच्छा से पालन करते हैं और प्रतिदिन उस पर परमेश्वर का आशीर्वाद मांगकर उसके प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत करते हैं।

यूहन्ना 16:12-13 में लिखा है:

> मुझे तुमसे और भी बहुत कुछ कहना है, जितना तुम अभी सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो वह

> वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा। वह अपनी भाषा में कुछ नहीं बोलेगा।
> अपना तो कहेगा, परन्तु वही कहेगा जो सुनेगा, और वह
> तुम्हें बताऊँगा कि आगे क्या होने वाला है।

ये आयतें बिल्कुल स्पष्ट हैं। पैगम्बर के अलावा
मुहम्मद, जिन्होंने सभी को सत्य की ओर आमंत्रित किया,
हमेशा वही बोलता था जो परमेश्वर से सुनता था (
गेब्रियल) ताकि उसका प्रत्येक शब्द ईश्वरीय सिद्धांत पर आधारित हो।
रहस्योद्घाटन, और लोगों को विस्तार से जानकारी दी
न्याय का दिन और परलोक?

अन्य भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में, परमेश्वर के दूत का उल्लेख विभिन्न
सीरियाई और हिब्रू भाषाओं में किया गया है।
अहमद, मुहम्मद और
मुख्तार। पैगम्बर शुऐब के पन्नों में उन्हें मुख्तार कहा गया है।
मुशफ्फा (मुहम्मद)। तोराह में उनका उल्लेख है
मुनहमन्ना (मुहम्मद) और हिमायता ("द
अल-हरम का पैगंबर”)। स्तोत्र उसे अल-मुख्तार (“चुना हुआ व्यक्ति”) कहते
हैं, तोरा उसे अल-हतम अल-खतम कहते हैं, और दोनों उसे मुकीम के रूप
में संदर्भित करते हैं
अल-सुन्ना ("वह जो कानून स्थापित करता है और लागू करता है"
मानवता के लिए दिव्य मार्ग”)। अब्राहम के पन्ने
और टोरा ने उसे मजमाज़ के रूप में उल्लेख किया है, और अन्य जगहों पर
टोरा ने उसे अह्याद कहा है।

ईश्वर के दूत ने कहा: "कुरान में मेरा नाम
बाइबल में मुहम्मद अहमद और तोराह में
अहयाद। बाइबल में, उन्हें "अहयाद का पुत्र" कहा गया है।

तलवार और छड़ी का सरदार।" उन सभी नबियों में से जो तलवार लेकर चलते थे, पैगंबर मुहम्मद,
जिसे अल्लाह ने अपनी कौम के साथ जिहाद करने को कहा है, वही सबसे महान है। इंजील में भी उसे “सबसे महान” कहा गया है।
वह जो मुकुट पहनता है।” यह पगड़ी को संदर्भित करता है,256
और अरबों ने प्राचीन काल से ही सिर पर चादर लपेटकर सिर ढकना शुरू कर दिया था। इसलिए इसका संदर्भ निस्संदेह पैगंबर मुहम्मद से है।

बाइबिल के व्याख्याकार पैराक्लीट (या फराक-लीट) को “वह व्यक्ति जो सत्य को असत्य से अलग करता है” के रूप में परिभाषित करते हैं, जिसका अर्थ है वह जो मानवता की भावी पीढ़ियों को सही मार्ग पर ले जाता है। यीशु को उद्धृत किया गया है
जैसा कि सुसमाचार में कहा गया है कि उसे अवश्य जाना चाहिए ताकि दुनिया का राजकुमार आएगा। यीशु के बाद, जो
पैगम्बर मुहम्मद के अलावा कोई और नेता बनकर आया
मानवता की, सत्य को असत्य से अलग करने की, और
क्या यीशु ने हमेशा अपने लोगों से कहा था: “एक
आएगा, और [उसके बाद] इसकी कोई ज़रूरत नहीं होगी
मैं उसका अग्रदूत हूँ और उसकी अच्छी ख़बरें लाता हूँ
इसकी पुष्टि कुरान से होती है:

> और याद रखो, मरियम के पुत्र यीशु ने कहा था: “हे
> ऐ इसराइल की सन्तान, मैं तुम्हारे पास अल्लाह का रसूल हूँ।

---

256 मुस्लिम पगड़ी उच्चता या उत्कर्ष का प्रतीक है।
मुसलमान पगड़ी पहनने का सपना देखता है, इसका अर्थ या तो यह है
उसकी महानता या वह कोई उच्च पद धारण करेगा। (ट्र.)

जो कुछ मुझसे पहले तौरात में अवतरित हुआ है, उसकी पुष्टि करता हूँ और एक रसूल की शुभ सूचना देता हूँ जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद है।" (61:6)

शमुन अल-सफा की कब्र में, प्रसिद्ध यात्री
अवलिया कलबी ने एक हिरण की खाल पर लिखी हुई सुसमाचार की निम्नलिखित आयतें देखीं:

'इतुन अजरीबुन पेरुफ्तुन। कानून गिस्लिन। बेंट अफजुलात; कि कलुशीर; तुनुमिनिन मावमिद। इस्फेडस तकर्दिस, बिस्ट बिथ। (अब्राहम की संतान से एक युवा पैगंबर होगा। वह झूठा नहीं होगा। उसका जन्मस्थान मक्का है; वह धार्मिकता के साथ आएगा; उसका धन्य नाम अहमद मुहम्मद है। उसके अनुयायी इस दुनिया में और अगले में भी समृद्ध होंगे।)257

सुसमाचारों में यीशु द्वारा मानवता के सबसे महत्वपूर्ण नेता के आगमन की बार-बार की गई खुशखबरी दर्ज है और उनका उल्लेख कुछ सीरियाई और हिब्रू नामों के साथ किया गया है, जिसका अर्थ, जैसा कि सावधानीपूर्वक विशेषज्ञों द्वारा देखा गया है,

---

२५७ जिस भाषा का उल्लेख किया गया है वह सीरियाई होनी चाहिए, क्योंकि कई सीरियाई लोग अभी भी दक्षिण-पूर्वी तुर्की में रहते हैं, जहाँ कई ईसाई संत - यीशु के सच्चे, एकेश्वरवादी अनुयायी - दफन हैं।

दिलचस्प बात यह है कि एरियस जैसे एकेश्वरवादी ईसाई विद्वानों के अध्ययन और प्रयासों के कारण, पूर्वी ईसाई आमतौर पर एकेश्वरवादी थे और इसलिए उन्होंने आसानी से इस्लाम को स्वीकार कर लिया। दूसरी ओर, पश्चिमी ईसाई धर्म ने त्रिदेवों के सिद्धांत और अन्य उधार लिए गए पंथों को बनाए रखने पर जोर दिया। (ट्र.)

अहमद, मुहम्मद, और फ़ारूक (जो सत्य और असत्य में अंतर करता है)।

प्रश्न: यीशु ने अन्तिम नबी के आगमन की शुभ सूचना अन्य भविष्यद्वक्ताओं की तुलना में अधिक जोरदार ढंग से क्यों दी?

उत्तर: पैगम्बर मुहम्मद ने यहूदियों की निंदा के विरुद्ध यीशु की पवित्रता की घोषणा की, उनके इनकार के विरुद्ध उनका बचाव किया, तथा यीशु के मार्ग को उसके महान परिवर्तन और भ्रष्टाचार से शुद्ध किया। इसके अतिरिक्त, यहूदियों के बोझिल धार्मिक कानून के स्थान पर, उन्होंने एक व्यवहार्य और सर्वव्यापी धर्म प्रस्तुत किया, जिसमें एक उच्च कानून था, जिसने यीशु के धर्म के कानून को पूरा किया। यही कारण है कि यीशु ने अक्सर यह खुशखबरी सुनाई कि “दुनिया का नेता आ रहा है।”

जैसा कि पहले बताया गया है, टोरा, सुसमाचार, भजन और अन्य नबियों के पन्नों में आने वाले वादा किए गए नबी के बारे में कई जोरदार उल्लेख हैं और उन्हें विभिन्न नामों से उल्लेखित किया गया है।

पैगम्बर का उल्लेख सभी पैगम्बरी पुस्तकों में किया गया है, तो वह मुहम्मद के अलावा और कौन हो सकता है, जो मानव इतिहास के अंतिम चरण में आये पैगम्बर थे?

दूसरा प्रकार: दूसरे प्रकार के इरहासत में शामिल हैं

पैगंबर मुहम्मद के आगमन के बारे में भविष्यवक्ताओं और रहस्यवादियों द्वारा की गई भविष्यवाणियां

ईसा मसीह और मुहम्मद की पैगम्बरी। एक हद तक, उन्हें अपने समय का संत माना जाता था।
उन्होंने पद्य में उनके आगमन की भविष्यवाणी की और उन्हें बाद की पीढ़ियों को सौंप दिया। ऐसे कई उदाहरण हैं, लेकिन हम केवल कुछ प्रसिद्ध उदाहरणों का उल्लेख करते हैं जिन्हें इतिहासकारों और पैगंबर के जीवनीकारों ने स्वीकार किया और प्रसारित किया है।

पहला उदाहरण: यमन के शासक टुब्बा ने देखा कि
पिछले शास्त्रों में पैगंबर के गुणों का उल्लेख किया गया है, उन पर विश्वास किया गया है, अली के समान स्थान प्राप्त करने की इच्छा की गई है, और निम्नलिखित दोहे में अपने विश्वास की घोषणा की है:

मैं अहमद की गवाही देता हूं
कि वह मानवता के निर्माता ईश्वर का संदेशवाहक
है;
यदि मैं उसे देखने के लिए लंबे समय तक जीवित रहूं,
मैं मंत्री बनूंगा और
उसके चचेरे भाई की तरह.258

दूसरा उदाहरण: क़ुस इब्न सईदा एक प्रबुद्ध एकेश्वरवादी होने के अलावा सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण अरब वक्ता थे। मुहम्मद को पैगंबर के रूप में उठाए जाने से पहले, उन्होंने इन आयतों के साथ मुहम्मद के संदेशवाहक होने की घोषणा की:

---

258 हकीम, 2:388; अल-बिदया वा अल-निहाया, 2:166.

हमारे बीच (ईश्वर ने) अहमद को सबसे अच्छे
पैगम्बर के रूप में भेजा, उन पर ईश्वर की
कृपा हो।259

तीसरा उदाहरण: काब इब्न लुअय, उनमें से एक पैगम्बर मुहम्मद के पूर्वजों ने घोषणा की कि प्रेरणा के माध्यम से नबीत्व:

असावधानी के समय में
मुहम्मद अचानक प्रकट होंगे, वह ऐसी ख़बरें देंगे
जो सब सच्ची होंगी।260

चौथा उदाहरण: यमनी शासक सैफ इब्न धिआज़ान ने पिछले शास्त्रों में पैगम्बर का वर्णन देखा, उन पर विश्वास किया और उनसे बहुत प्यार किया। जब अब्दुल मुत्तलिब (पैगम्बर के दादा) कुरैशी व्यापार कारवां के साथ यमन पहुंचे, तो सैफ ने उन्हें बुलाया और कहा: "हिजाज़ में एक बच्चा पैदा होगा जिसके कंधों के बीच एक निशान होगा जो मुहर जैसा दिखेगा। वह नेता होगा

मानवता का।" निजी तौर पर, उन्होंने 'अब्द अल-मुत्तलिब से कहा: "आप उनके दादा हैं,"261 इस प्रकार उन्होंने एक चमत्कारी तरीके से मुहम्मद की पैगंबरी की भविष्यवाणी की।

---

259 शिफ़ा', 1:363; अल-बिदाह, 2:230; बहाक़ी, 2:101.

260 अल-बिदाह, 2:244; शिफ़ा', 1:364.

261 हकीम, 2:388; अल-बिदया, 2:328; शिफ़ा', 1:143.

पाँचवाँ उदाहरण: ईश्वर के दूत चिंतित थे
जब उसे पहला रहस्योद्घाटन मिला। उसकी पत्नी

ख़दीजा ने वरका इब्न नवाफ़ल (उसके चचेरे भाई) को बताया
जो कुछ हुआ था, उसे सुनकर उसने उससे कहा कि वह मुहम्मद को उसके पास भेजे।
ईश्वर के दूत वरका गए
और उसे रहस्योद्घाटन के बारे में बताया। वरका ने कहा:
"हे मुहम्मद, आपके लिए शुभ सूचना है। मैं गवाही देता हूँ
कि आप अपेक्षित पैगम्बर हैं, और यीशु
तुम्हारे बारे में खुशखबरी दी है।”262

छठा उदाहरण: ग्नोस्टिक असकलान अल-हिम्येरी
वह हमेशा किसी भी कुरैशी से पूछते थे: "क्या तुममें से कोई पैगंबर होने का दावा करता है?"
हमेशा नकारात्मक जवाब दिया। मुहम्मद के बाद
जब उसने अपनी पैगम्बरी की घोषणा की तो उसने उनसे भी यही पूछा
प्रश्न किया गया और बताया गया कि ऐसा एक व्यक्ति था।
उन्होंने जवाब दिया: "यह वह है जिसके लिए दुनिया
इतने लंबे समय से इंतज़ार कर रहा है।”263

सातवाँ उदाहरण: प्रसिद्ध ईसाई विद्वान इब्न अल-आला ने पैगम्बर के पैगम्बर बनने की घोषणा से पहले और उन्हें देखे बिना ही उनके बारे में भविष्यवाणी कर दी थी।
जब वह अंततः पैगम्बर से मिले तो उन्होंने कहा: "हे प्रभु!
हे परमेश्वर, जिसने तुझे सत्य के साथ भेजा है, मैंने तेरे उद्देश्य को पाया है।

262 इब्न हनबल, 4:304; बुखारी, 1:3.

263 शिफ़ा', 1:363.

सुसमाचार में लिपिबद्ध किया गया है, और कुँवारी मरियम के पुत्र ने तुम्हारे विषय में शुभ समाचार दिया है।”264

आठवाँ उदाहरण: एबिसिनिया के नेगस, जिसका पहले उल्लेख किया गया है, ने कहा: "काश मैं इस राज्य के अधिकारी होने के बजाय उनकी सेवा में होता।"265 उन गूढ़ज्ञानवादियों के अलावा जिन्होंने ईश्वरीय प्रेरणा पर अपने

ज्ञान को आधारित करके भविष्य की ख़बरें दीं, उन भविष्यवक्ताओं ने भी (पैगंबर के समय तक) आत्माओं और जिन्न के माध्यम से अदृश्य और भविष्य की ख़बरें प्राप्त करने की अनुमति दी थी, उनके आने और पैगंबर बनने की भविष्यवाणी की। हम ऐसे कई मामलों में से केवल कुछ का हवाला देते हैं जो अर्थ में तवातुर की निश्चितता का आनंद लेते हैं और कई इतिहास की किताबों और पैगंबर की जीवनी में दर्ज हैं।

पहला उदाहरण: शिक्क, एक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता जो एक आँख, एक हाथ और एक पैर वाला आधा आदमी जैसा दिखता था, ने बार-बार मुहम्मद के मसीहा बनने की भविष्यवाणी की। उनकी रिपोर्ट इतिहास की किताबों में अर्थ में तवातुर की निश्चितता के साथ दर्ज की गई हैं।266 दूसरा उदाहरण: दमिश्क का प्रसिद्ध भविष्यवक्ता, सतीह एक राक्षस था, जिसमें लगभग कोई शक्ति

नहीं थी।

264 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफा', 1:744।

265 शिफ़ा', 1:364; बहाक़ी, 2:285.

266 अबू नईम, दलैल अल-नुबुव्वा, 1:123; शिफ़ा', 1:365.

हड्डियां, यहां तक कि अंग, और चेहरा ऐसा दिखता था
उसके वक्ष का एक भाग। वह बहुत लंबा जीवन जीता था और अपनी सच्ची
भविष्यवाणियों के लिए बहुत प्रसिद्ध था। फारस के चोसरो
विद्वान दूत मुबाज़ान को उनके पास व्याख्या करने के लिए भेजा
एक अजीब सपना जिसमें उसके महल के 14 शिखर दिखाई दिए
(मुहम्मद के जन्म की रात को) पतन।
कहा: “अब से, आपके देश में 14 शासक होंगे
और फिर पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा। एक आदमी दिखाई देगा
एक धर्म का प्रचार करो। वह तुम्हारे शासन और राज्य दोनों को ख़त्म कर देगा
धर्म,"267 अंतिम पैगम्बर के धर्म का स्पष्ट संदर्भ है
आ रहा।

सवाद इब्न करीब अल-दावसी, खुनाफर, अफ'आ नजरान, जिज़ल इब्न जिज़ल अल-किंडी जैसे प्रसिद्ध भविष्यवक्ता,
इब्न खालसात अल-दावसी और फातिमा बिन्त नुमान अल-नज्जारिया ने भी अपनी भविष्यवाणियों को इतिहास की पुस्तकों और पैगंबर की जीवनी में दर्ज किया है।
उनके आने की भविष्यवाणी की और कहा कि वह मुहम्मद होंगे।268 उस्मान के रिश्तेदार साद इब्न बिन्त अल-कुरैज़ ने मुहम्मद के पैगम्बर होने के बारे में पैगंबर मुहम्मद के बारे में जाना।
इस्लाम के शुरुआती दिनों में भविष्यवाणी और बताया जाता था
'उथमान को आदेश दिया कि जाओ और ईमान लाओ। 'उथमान ने वैसा ही किया, और
साद ने इसे निम्नलिखित दोहे में व्यक्त किया:

267 बहाक़ी, 2:126-129; शिफ़ा', 1:365.

268 बहाक़ी, 2:248; अल-बिदयाह, 2:335; शिफ़ा', 1:365.

मेरे शब्दों के माध्यम से, भगवान ने उस्मान को उस चीज़ का
मार्गदर्शन किया, जिसके माध्यम से उसकी
पूर्णता है।
सचमुच परमेश्वर सत्य का मार्गदर्शन करता है!269

जिन्न अपने भविष्यवक्ताओं को हतीफ़ कहते हैं। उन्हें देखा नहीं जा सकता, लेकिन उन्हें सुना जा सकता है। ये प्राणी बार-बार ईश्वर के दूत के आने की भविष्यवाणी करते हैं।

हातिफों की कुछ प्रसिद्ध और कई ख़बरें और संदेश इस प्रकार हैं: • एक हातिफ ने ज़ोर से पुकार कर दैयाब इब्न

अल-हारिथ और अन्य को इस्लाम में लाया:

ऐ ज़ियाब, ऐ ज़ियाब, सबसे अजीब बात सुनो: मुहम्मद को किताब के साथ भेजा गया था।

वह मक्का में पुकार रहा है, फिर भी वे उसे
स्वीकार नहीं करते।270

• एक और हातिफ ने सामिया इब्न क़र्रत अल को बुलाया-
कताफनी:

सत्य प्रकट हुआ और प्रकाशित हो गया; मिथ्यात्व नष्ट हो गया और जड़ से
उखाड़ दिया गया,271 और कुछ लोगों के धर्म परिवर्तन का
कारण बना।

---

269 सुयुति, अल-खासाईस अल-कुबरा', 1:258।

270 वही, 1:358.

271 शरह अल-शिफ़ा', 1:748.

मूर्तियों और यहां तक कि मूर्तियों को अर्पित किए जाने वाले जानवरों ने भी ईश्वर की शक्ति और अनुमति से मुहम्मद के संदेशवाहक होने का दावा किया। उदाहरण के लिए, माज़ान जनजाति के मूर्ति ने उन्हें मुहम्मद के संदेशवाहक होने की घोषणा के बारे में चिल्लाकर बताया: "वह पैगंबर हैं जिन्हें भेजा गया है। वह प्रकट सत्य के साथ आए हैं।"272 अब्बास इब्न मिरदास को दीमर नामक एक मूर्ति ने धर्मांतरित किया था। एक दिन, उस मूर्ति को यह कहते हुए सुना गया: "पैगंबर मुहम्मद के सच्चे संदेश से पहले दीमर की पूजा की जाती थी। अब दीमर का समय समाप्त हो गया है।"273 अपने धर्मांतरण से पहले, उमर ने मूर्तियों को चढ़ाए गए एक बलिदान को यह कहते हुए सुना: "हे बलिदानकर्ता, समृद्धि के साधन हाथ में हैं।

एक वाक्पटु व्यक्ति घोषणा कर रहा है: 'ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।'”274

ऐसे और भी कई उदाहरण हैं, जिनका वर्णन विश्वसनीय पुस्तकों में प्रामाणिक रिपोर्टों में मिलता है।

इसके अलावा, विभिन्न चट्टानों, कब्र स्थलों और कब्र-पत्थरों पर पुरानी लिपियों में "मुहम्मदुन मुस्लिहुन आमीन" जैसे अंश अंकित पाए गए हैं।

(मुहम्मद, एक सुधारक, एक भरोसेमंद व्यक्ति) कुछ लोग ऐसे आयोजनों के माध्यम से धर्मांतरित हुए।275 ऐसे

---

272 इब्न 'अब्द अल-बिर्र, अल-इस्तियाब, 3:446; अल-बिदया, 2:337.

273 अल-बिदया, 2:341-42; बहाक़ी, 1:118.

274 बुखारी, 5:61; अल-बिदया, 2:332.

275 इब्न हनबल, 4:215; शिफ़ा', 1:467; इब्न साद, तबकात, 4:215.

ये अंश केवल ईश्वर के दूत को संदर्भित कर सकते हैं, क्योंकि उनके जन्म से ठीक पहले के समय में केवल सात मुहम्मद थे, जिनमें से कोई भी "सुधारक" या "विश्वसनीय व्यक्ति" बनने के योग्य नहीं था या कभी नामित नहीं किया गया था।

तीसरा प्रकार: इसमें अद्भुत घटनाएँ शामिल हैं

मेसेन के समय और उसके संबंध में-

12वीं सदी के अंत में, जब यीशु मसीह का जन्म हुआ, तब उनके द्वारा संदेशवाहक बनने से पहले कई अन्य घटनाएँ घटीं, और उनमें से प्रत्येक उनके चमत्कारों में से एक है। कई उदाहरणों में से, हम कुछ ऐसे उदाहरणों का उल्लेख करते हैं जो बहुत प्रसिद्ध हुए और परंपरा अधिकारियों द्वारा सत्यापित प्रामाणिकता के रूप में स्वीकार किए गए।

पहला उदाहरण: उनके जन्म की रात को, पैगम्बर की माँ और उस्मान इब्न अल-अस और अब्द अल-रहमान इब्न अल-औफ़ की माताओं ने एक शानदार रोशनी देखी। प्रत्येक महिला ने कहा: "उनके जन्म के दौरान, हमने एक रोशनी देखी जिसने पूर्व और पश्चिम को रोशन कर दिया।"276

दूसरा उदाहरण: उस रात, मंदिर के भीतर की मूर्तियाँ

काबा पलट गया.277

---

276 शिफ़ा', 1:366; इब्न साद, उक्त, 1:63; बहाक़ी, 1:80-92; हकीम, 2:600.

277 बहाक़ी, 1:19.

तीसरा उदाहरण: उस रात, चोस्रोस का महल हिल गया और उसमें दरारें पड़ गईं, और उसके 14 शिखर ढह गए।278

चौथा उदाहरण: उस रात, फारस में सावा की छोटी झील (जिसे फारसियों ने पवित्र किया था) धरती में समा गई। इस्तखराबाद में मागियों द्वारा पूजी जाने वाली अग्नि, जो 1,000 वर्षों से लगातार जल रही थी, बुझ गई।279

इन घटनाओं से संकेत मिलता है कि उस रात पैदा हुआ व्यक्ति अग्नि-पूजा को समाप्त कर देगा, फारसी शासकों के महल को नष्ट कर देगा, और उन चीजों को पवित्र करने पर रोक लगाएगा जिन्हें पवित्र करने की अनुमति ईश्वर नहीं देता है।

पाँचवाँ उदाहरण: उनके जन्म की रात से पहले होने वाली घटनाएँ भी इरहासत मानी जाती हैं। इनमें से हाथी की घटना (105:1-5) सबसे प्रसिद्ध है। अब्राहा, एबिसिनियन साम्राज्य के लिए यमन के गवर्नर, ने काबा को नष्ट करने के लिए मक्का पर चढ़ाई की।

उसने अपने विशाल हाथी महमूद को अपनी सेना के आगे खड़ा कर दिया। जब वे मक्का के पास पहुंचे तो हाथी रुक गया। क्योंकि वे उसे आगे नहीं बढ़ा सकते थे

---

278 अबू नुअयम, 1:139; बहाक़ी, 1:126.

279 सुयुति, अल-ख़ासाईस, 1:128; शिफ़ा', 1:366.

आगे बढ़ते हुए, वे पीछे हट गए। उनके रास्ते में, अबाबील पक्षियों के एक समूह ने उन पर हमला किया और उन्हें पराजित कर दिया।

यह अनोखी घटना इतिहास की किताबों में दर्ज है।
यह मुहम्मद के पैगम्बर होने का भी संकेत है, क्योंकि इस चमत्कारी घटना ने काबा और मक्का को बचा लिया, जो उनका जन्मस्थान और प्रिय घर था और जिसकी ओर वे प्रार्थना करते थे। यह उनके जन्म के करीब के समय हुआ था।

छठा उदाहरण: जब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने बचपन के दिनों में हलीमा के परिवार के साथ रहते थे, तो हलीमा और उनके पति अक्सर एक छोटे से बादल को उनके सिर पर छाया हुआ देखते थे। उन्होंने इस घटना का वर्णन किया और यह घटना उचित रूप से प्रसिद्ध हो गयी।

इसी तरह, जब 12 साल की उम्र में वे अपने चाचा के साथ दमिश्क की यात्रा पर गए, तो ईसाई भिक्षु बहिरा ने मुहम्मद के ऊपर एक छोटा सा छाया प्रदान करने वाला बादल देखा और दूसरों को दिखाया।281 पैगम्बर बनने से पहले, ख़दीजा ने देखा कि दो फ़रिश्ते, बादल के रूप में, ईश्वर के रसूल को छाया दे रहे थे, जब वे अपनी दासी मयसारा के साथ व्यापारिक यात्रा से लौट रहे थे। जब उन्होंने मयसारा को इस बारे में बताया, तो पैगंबर मुहम्मद ने कहा कि वे एक बादल के रूप में दो फ़रिश्ते हैं, जो ईश्वर के रसूल को छाया दे रहे हैं।

---

280 इब्न साद, तबक़ात, 1:97; इब्न कथिर, अल-बिदया, 2:273; उपचार, 1:368.

281 अबू नुअयम, दलैल, 1:168-172; तिर्मिधि (तुहफ़त अल-अहवाज़ी द्वारा सत्यापित संस्करण, संख्या 3699); इब्न हिशाम, 1:180-81.

बाद में जवाब दिया: "मैंने पूरी यात्रा में यही देखा।"282 सातवाँ उदाहरण: एक प्रामाणिक

वर्णन में बताया गया है कि अपनी पैगम्बरी से पहले, ईश्वर के रसूल एक बार एक पेड़ के नीचे बैठे थे। वह पहले शुष्क स्थान अचानक हरा हो गया, और पेड़ की शाखाएँ नीचे झुक गईं और उन्हें छाया देने के लिए उनके सिर के ऊपर मुड़ गईं।283

आठवाँ उदाहरण: अल्लाह के रसूल बचपन में अबू तालिब के साथ रहे। जब भी अबू तालिब और उनके घराने ने उनके साथ खाना खाया तो वे संतुष्ट हो गए, जब वह उनके साथ नहीं खाते थे तो वे संतुष्ट नहीं होते थे।284 यह एक प्रसिद्ध और प्रमाणित घटना है।

उम्म अयमान, जिन्होंने बचपन में ईश्वर के रसूल की सेवा की थी, बताती हैं: "उन्होंने कभी भूख और प्यास की शिकायत नहीं की, न तो जब वह छोटे थे और न ही जब वह बड़े हुए।"285

नौवां उदाहरण: उसकी धात्री (हलीमा) बकरियों के दूध और माल में (कबीले के अन्य लोगों के विपरीत) उसके आशीर्वाद से वृद्धि देखी गई।286 इसके अलावा,

---

282 शिफ़ा', 1:368; बहाक़ी, दलाईल अल-नुबुव्वा, 2:65।

283 शिफ़ा', 368; शरह अल-शिफ़ा', 1:753.

284 अबू नुअयम, 1:166; शिव', 1:367.

285 शिफ़ा', 1:368; बहाक़ी, 6:125; सुयुति, अल-ख़ासाईस, 1:111.

286 अल-बिदया, 2:273; इब्न हिशाम, 1:173; शिफ़ा', 1:366.

मक्खियाँ उसे परेशान नहीं करती थीं।287 उसके वंशजों में से एक,
सैय्यद 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी को यह गुण विरासत में मिला।

दसवाँ उदाहरण: पैगम्बर के जन्म के बाद,
विशेषकर उनके जन्म की रात में, उल्कापिंड गिरते हुए
यह एक संकेत था कि शैतान
और जिन्न अब ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते थे
अदृश्य.288

चूँकि ईश्वर के दूत को यह वरदान प्राप्त होगा
रहस्योद्घाटन, ज्योतिषियों और जिन्न द्वारा दी गई अदृश्य के बारे में कोई भी जानकारी, जो आमतौर पर गलत और झूठ से मिश्रित होती है, को अवश्य ही स्वीकार किया जाना चाहिए।
यह इसलिए ज़रूरी था ताकि लोग
ऐसे शब्दों को रहस्योद्घाटन समझ लेना या संदेह करना
कुरान ने भविष्य कथन को समाप्त कर दिया,
जो मुहम्मद के जीवित होने से पहले व्यापक था
पैगंबर के रूप में। कई ज्योतिषियों ने इस्लाम धर्म अपना लिया,
क्योंकि उन्हें कोई जिन्न मुखबिर नहीं मिल सका जो उन्हें सहायता प्रदान कर सके
अदृश्य की जानकारी के साथ.289

निष्कर्ष के तौर पर, कई घटनाओं और लोगों ने मुहम्मद के दावे की पुष्टि की है, या दूसरों को इसकी पुष्टि करने के लिए प्रेरित किया है।

---

287 शिफ़ा', 1:368.

288 शिफ़ा', 1:347-48.

289 आज, भविष्य कथन एक माध्यम के रूप में फिर से प्रकट हुआ है। हालाँकि, यह विषय इस पुस्तक के दायरे से बाहर है।

हेथहुड। समस्त सृष्टि, एक व्यक्ति के रूप में और एक
एक प्रजाति, जिसका लंबे समय से इंतजार किया गया और जिसकी घोषणा की गई,
ईश्वर की अनुमति से, विश्व के आध्यात्मिक नेता का आगमन।290

यह नेता दुनिया की आध्यात्मिक स्थिति को बदल देगा
और नैतिक संरचना, इसे बीज बोने की जमीन बनाते हैं
परलोक में, संसार के वास्तविक मूल्य की घोषणा करो
क्षणभंगुर मानवता और जिन्न को शाश्वत विनाश से बचाते हैं, ईश्वरीय उद्देश्य को प्रकट करते हैं
ब्रह्माण्ड की रचना, और सृष्टिकर्ता को ज्ञात कराना
जैसा कि पिछले संकेतों और उदाहरणों से साबित हुआ है, सृष्टि की प्रत्येक प्रजाति ने उसका स्वागत किया
उसके लिए विभिन्न प्रकार के काम करने का साधन बनना
उनके चमत्कारों से उनकी पैगम्बरी होने की पुष्टि होती है।

सत्रहवाँ संकेत: कुरान के बाद रसूल का सबसे बड़ा चमत्कार उसका चरित्र और व्यक्तित्व, उसका नैतिक उदाहरण है। दोस्त और दुश्मन दोनों ही एक दूसरे से सहमत हैं

कि उनमें सभी नैतिक गुणों का उच्चतम स्तर विद्यमान था।

---

२९० यह प्राणी, जिसे परमेश्वर ने "परन्तु" शब्दों से संबोधित किया था
तुम्हारे लिए, मैंने दुनिया नहीं बनाई होगी, "यह बहुत महान है
नेता का मानना है कि उनका शासन 14 शताब्दियों के बाद भी जारी है।
उनके जीवन के सौ वर्ष पूरे होने पर, लाखों लोग और आधी दुनिया
उनके विषय, जो
आज उनकी संख्या 1.5 अरब से अधिक है, उन्हें गहराई से समझने का प्रयास करें
आदर करें और प्रतिदिन ईश्वर से शांति और आशीर्वाद की प्रार्थना करें
इस प्रकार वे प्रतिदिन उसके प्रति अपनी निष्ठा की शपथ दोहराते हैं।

अली, जो अत्यंत वीर पुरुष थे, ने बार-बार कहा था:
“लड़ाई के सबसे भयंकर दौर में हम ईश्वर के रसूल के गढ़ में वापस चले जाते थे और

उसके पीछे शरण लें।" इसी तरह, उनमें सभी प्रशंसनीय विशेषताएँ सर्वोच्च स्तर पर विद्यमान थीं। इसके लिए
सबसे बड़ा चमत्कार, हम पाठकों को कादी इयाद का संदर्भ देते हैं
शिफाअल-शरीफ, जो खूबसूरती से समझाता और साबित करता है
पैगम्बर का चमत्कारी नैतिक चरित्र।

एक और महान चमत्कार, जिसकी पुष्टि मेरे मित्र ने भी की
और दुश्मन, उसका सर्वोच्च पवित्र कानून (शरिया) है,
जैसा पहले कभी नहीं आया और न कभी आएगा
फिर से। इस सर्वोच्च चमत्कार के आंशिक स्पष्टीकरण के लिए, हमारे लेखन, विशेष रूप से 33 शब्दों से परामर्श करें,
33 अक्षर, 33 झलकियाँ और 13 किरणें।

रसूल के निश्चित और मुतवातिर चमत्कारों में से एक है अपनी तर्जनी के इशारे से चाँद को चीरना
उंगली। यह चमत्कार, कुछ अग्रणी लोगों द्वारा बताया गया है
साथी (उदाहरण के लिए, इब्न अल-मसूद, इब्न अब्बास, इब्न
उमर, इमाम अली, अनस और खुदायफा) को दुनिया के सामने इस तरह से पेश किया गया: क़ियामत करीब है, और अल्लाह का शुक्र है।
चाँद का फटना (54:1)। जिद्दी कुरैशी मुश्रिकों ने इस खबर का खंडन नहीं किया, बल्कि दावा किया कि यह
जादू था। इस प्रकार अविश्वासी भी इसके घटित होने की गवाही देते हैं। उनका मिराज (स्वर्गारोहण) स्वर्ग के निवासियों को दिखाया गया एक और भी बड़ा चमत्कार है। पाठक इसे पढ़ सकते हैं

मिराज के ग्रंथ का संदर्भ लें, जिसका एक छोटा सा हिस्सा इस ग्रंथ के अंत में परिशिष्ट के रूप में दिखाई देता है।
हम एक और चमत्कार का उल्लेख करेंगे जो पैगम्बर ने मेराज के संबंध में किया था।

जब ईश्वर के दूत ने कुरैश को इस घटना की सूचना दी, तो उन्होंने यह कहते हुए उस पर विश्वास करने से इनकार कर दिया: "यदि आप वास्तव में यरूशलेम में मस्जिद अल-अक्सा की यात्रा करते हैं, जैसा कि आप दावा करते हैं, तो इसके दरवाजों और दीवारों का वर्णन करें।"
बाद में अल्लाह के रसूल ने कहा: "मैं उनके सवाल और इनकार से इस तरह परेशान हो गया था जैसा मेरे साथ पहले कभी नहीं हुआ था। अचानक, अल्लाह ने मेरे और बैतुल-मकदिस (मस्जिद अल-अक्सा) के बीच का पर्दा हटा दिया और मुझे दिखाया। मैंने इसे देखा और इसका वर्णन किया जैसा कि यह मेरी आँखों के सामने था।"291 इस प्रकार कुरैश को एहसास हुआ कि अल्लाह के रसूल सही और पूर्ण विवरण दे रहे थे।

इसके अलावा, ईश्वर के रसूल ने उनसे कहा: "अपनी यात्रा के दौरान मैंने तुम्हारा एक कारवां देखा। यह कल इस समय यहाँ पहुँचेगा।" कुरैश ने वादा किए गए समय पर इसके आने का इंतज़ार किया। ऐसा लगता है कि कारवां लगभग एक घंटे की देरी से आने वाला था। पैगंबर के वचन को सच साबित करने के लिए,

291 मुस्लिम, 1:156-57; तिर्मिज़ी, सं. 3133; बुखारी, 5:66; इब्न हनबल, 3:378.

पृथ्वी एक घंटे तक नहीं घूमी।292 यह पुष्टि की गई है
सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं द्वारा।

यह देखते हुए कि पृथ्वी ने पैगंबर मुहम्मद के शब्दों की पुष्टि करने के लिए घूमना बंद कर दिया, और सूर्य ने भी ऐसा ही किया।
आकाश में इसके स्पष्ट विश्राम से इसका साक्ष्य मिला,
कल्पना कीजिए कि ऐसा करने वालों का दुर्भाग्य कितना बड़ा है
ऐसे व्यक्ति की पुष्टि और अनुसरण न करें, और कितना विशाल
यह उन लोगों का सौभाग्य है जो जवाब देते हैं: "हमारे पास
सुना और पालन किया" और घोषणा करें: "परमेश्वर को धन्यवाद हो
विश्वास और इस्लाम के लिए।"

अठारहवाँ संकेत: संदेशवाहक का सबसे बड़ा और
शाश्वत चमत्कार कुरान है, जिसमें शामिल है
उनकी पैगम्बरी होने के सैकड़ों प्रमाण हैं और
चमत्कार के 40 पहलू सिद्ध किये गये हैं।293 यहाँ
हम इसमें केवल कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख करते हैं
सम्मान, इस प्रकार:

पहला बिंदु: प्रश्न: कुरान की चमत्कारिकता मुख्य रूप से इसकी वाक्पटुता में निहित है, जिसे एक हजार समझदार लोगों में से केवल एक ही समझ सकता है।

विद्वानों। क्या हर किसी को इसकी झलक नहीं मिलनी चाहिए

---

292 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफ़ा', 1:704; बहाक़ी, दलाइल अल-नुबुव्वा, 2:404।

293 देखें सईद नूरसी, द वर्ड्स, खंड 2 (तुर्की: द लाइट, इंक., 2002).

क्या वे अपनी समझ के अनुसार चमत्कार कर सकते हैं?

उत्तर: कुरान में हर किसी के लिए अलग-अलग तरह के चमत्कार हैं और यह सबसे अधिक स्पष्ट रूप से इंगित करता है।

यह एक बेहतरीन तरीका है। वाकपटुता और बयानबाजी में माहिर लोगों के लिए यह एक बेहतरीन तरीका है।

अपनी चमत्कारिक वाक्पटुता को दर्शाता है; कवियों और वक्ताओं के लिए, यह अपनी चमत्कारिक और अद्वितीय उदात्तता को प्रदर्शित करता है शैली, जिसकी नकल नहीं की जा सकती, हालाँकि वह पसंद की जाती है हर किसी के द्वारा। समय बीतने से इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता ताज़गी, इसलिए यह हमेशा नया रहता है। इसके छंद और लयबद्ध गद्य और पद्य में सबसे बड़ी भव्यता है
और आकर्षण.

भविष्यवक्ताओं और भविष्यवक्ताओं के लिए, कुरान की चमत्कारिकता उन रिपोर्टों में निहित है जो यह भविष्यवक्ता के बारे में बताती है।

अदृश्य। इतिहासकारों और इतिहास लेखकों के लिए, इसकी चमत्कारिकता यह है कि यह अतीत के राष्ट्रों के बारे में समाचार बताती है, भविष्य की परिस्थितियाँ और घटनाएँ, और मध्यवर्ती दुनिया और परलोक। सामाजिक और राजनीतिक वैज्ञानिकों के लिए, यह अपने पवित्रता की चमत्कारिकता प्रस्तुत करता है सिद्धांत, जो शरिया का हिस्सा हैं।
ईश्वर और दिव्यता के ज्ञान में लगे हुए

प्रकृति के नियमों को जानने के बाद, कुरान उन्हें अपने पवित्र ईश्वरीय सत्यों की चमत्कारिकता दिखाता है। जो लोग संतत्व के लिए आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करते हैं, उनके लिए यह

प्रकट होता है

इसके छंदों में गहरे, अनेक अर्थ उभर कर आते हैं

समुद्र की लहरों की तरह लगातार गति में।

संक्षेप में, कुरान चमत्कारों के 40 पहलुओं को हर किसी के लिए एक अलग खिड़की खोलकर दिखाता है। यहां तक कि जो लोग इसे सिर्फ सुनते हैं और लाभ उठा सकते हैं
इसका बहुत सीमित अर्थ है कि कुरान से सहमत हैं
किसी भी अन्य पुस्तक की तरह नहीं लगता। कोई भी साधारण व्यक्ति जो
इसे सुनने वाला कहता है: "यह कुरान या तो अन्य से नीचे है
डिग्री में किताबें - जो पूरी तरह से असंभव है, और
जिसका दावा उसके दुश्मन [और शैतान] भी नहीं करते—
या उन सब से ऊपर है और इसलिए एक चमत्कार है। अब,
हम चमत्कारिकता के पहलू की व्याख्या करते हैं
एक साधारण व्यक्ति द्वारा, जो इसे केवल सुनता है।

चमत्कारी कुरान दुनिया को चुनौती देता है और
दो तरह की भावनाएँ जगाता है: पहला, उसके दोस्त चाहते हैं
इसकी शैली की नकल करना और उनकी तरह बोलना और लिखना
दूसरे, इसके शत्रुओं में आलोचना करने और विवाद करने तथा इसके दावे को नकारने का जुनून पैदा हो जाता है।
अपनी शैली के साथ प्रतिस्पर्धा करके चमत्कारिकता का प्रदर्शन करना।
परिणामतः, अरबी में लाखों पुस्तकें लिखी गयी हैं—
और हमारे पास अभी भी वे हैं। जो कोई भी सुनता है
उनमें से सबसे वाक्पटु और बयानबाज़ यह कहेंगे कि
कुरान इनमें से किसी से भी मेल नहीं खाता।

एक और चमत्कारी पहलू जो यह अनपढ़ लोगों को दिखाता है वह यह है कि इसका पाठ किसी को बोर नहीं करता। एक अनपढ़ व्यक्ति, यहां तक कि वह जो कुरान के अर्थ को नहीं समझता, निस्संदेह इसे पढ़ेगा।

इसे सुनते ही कहें: “अगर मैं एक बहुत ही सुंदर और प्रसिद्ध दोहा दो या तीन बार सुनूं, तो यह शुरू होता है
मुझे बोर करने के लिए। लेकिन यह कुरान के साथ सच नहीं है, क्योंकि जितना अधिक मैं सुनता हूँ, यह उतना ही अधिक सुखद होता जाता है। यह मानवीय रचना नहीं हो सकती।”

कुरान अपनी चमत्कारिकता को यहां तक दर्शाता है
बच्चे इसे कंठस्थ कर लेते हैं। हालाँकि इसके कई समान छंद और अंश भ्रम पैदा कर सकते हैं, लेकिन बच्चे इसे आसानी से याद कर लेते हैं, भले ही वे इसे याद न कर पाएँ।
किसी अन्य चीज़ के बारे में एक ही अनुच्छेद को लम्बे समय तक याद रखना। जो लोग बीमार हैं और मौत के करीब हैं,
थोड़ी सी भी आवाज से विचलित होकर कुरान की तिलावत और ध्वनि उतनी ही मधुर और आरामदायक हो जाती है जितनी कि
ज़मज़म का पानी, जिससे एक और झलक मिलती है
इसकी चमत्कारिकता का पहलू। जो देख सकते हैं उनके लिए
लेकिन सुन या सीख नहीं सकते, लगभग 40 प्रकार के लोगों में से एक हैं, जिनके लिए कुरान बिना किसी को वंचित किए अपने चमत्कारी गुणों को दिखाता है,
अन्य संकेत हैं.294

---

[294] उदाहरण के लिए, हाफ़िज़ उथमान की प्रति में कई संबंधित शब्द हैं
अलग-अलग पृष्ठों पर एक दूसरे के अनुरूप। यदि शीट
उनके कुत्ते के नीचे आठवें (सूरत अल-कहफ) छेदा जाता है,
थोड़े से विचलन के साथ यह क़ितमीर (सूरत अल-फ़ातिर) से होकर गुज़रेगा , जिससे कुत्ते का नाम पड़ा। मुख़दारुन और मुख़दारिन
(वे हमारे सामने पेश किये जायेंगे) सूरत अल-सफ्फात में उल्लेख है
एक दूसरे को और सूरा या सीन में दो बार पाए जाने वाले को, एक

दूसरा बिन्दु: चूँकि जादू उस समय व्यापक था मूसा के समय में, उसके चमत्कार उसी प्रकार के थे।

दूसरे के नीचे। मथना (जोड़े में) तीन बार आता है
कुरान; कि वे दोनों एक दूसरे के अनुरूप हैं, एक
सूरत अल-फ़ातिर की शुरुआत और दूसरा अंत की ओर
'सूरा सबा', संयोग से नहीं हो सकता।

ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं। कभी-कभी एक ही शब्द आता है
लगभग एक ही जगह पर पाँच या छह पन्नों पर। मैंने एक बार देखा था
कुरान में लाल स्याही से लिखे गए समान अंश एक दूसरे के सामने हैं
एक दूसरे के आमने-सामने के पन्नों पर। यह एक दूसरे तरह के चमत्कार की ओर इशारा करता है।
बाद में, मैंने देखा कि विभिन्न पृष्ठों पर कई और अंश एक दूसरे के आमने-सामने हैं। चूँकि
कुरान की आयतें और अध्याय
पैगंबर के निर्देश पर व्यवस्थित किए गए और बाद में उनकी नकल की गई
ईश्वरीय प्रेरणा से, इसकी डिजाइन और सुलेख चमत्कारी हैं। कोई भी विचलन मानवीय कृत्यों
का परिणाम है।

इसके अलावा, प्रत्येक लम्बा या मध्यम मदीना सूरा अल्लाह को दोहराता है
बहुत महत्वपूर्ण तरीके से: पांच, छह, सात, आठ, नौ, या ग्यारह
एक शीट के दोनों ओर या दो आमने-सामने वाले पृष्ठों पर - एक सुंदर और महत्वपूर्ण
संख्यात्मक अनुपात।

यद्यपि कुरान में प्रेरक वाक्पटुता की सभी विशेषताएं हैं
(जैसे, लय, तुक और कलात्मक शैली) जो हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं,
यह हमेशा उत्कृष्ट गंभीरता, मन की शांति और
जो लोग परमेश्वर को याद करते हैं और उससे प्रार्थना करते हैं, उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में होने की
शांति मिलती है। अन्य प्रकार की प्रेरक वाक्पटुता अक्सर परेशान करती है,
क्योंकि उनकी सुन्दरता मन की शांति में बाधा डालती है तथा गंभीरता और आंतरिक एकाग्रता को कमजोर करती है।

पिछले 8 या 9 वर्षों से मैं इमाम शाफ़ई की प्रसिद्ध कविताएँ पढ़ रहा हूँ
प्रतिदिन प्रार्थना करें। यद्यपि यह सबसे सुंदर, अर्थपूर्ण,
और अपनी तरह का एक शानदार भाषण दिया, और यहां तक कि सूखे के एक मौसम को भी समाप्त कर दिया
और मिस्र में अकाल, मैं यह देखने आया कि यह तुकांत और छंदबद्ध है

ईसा के समय में चमत्कारों की मांग थी, उनके चमत्कार भी इसी तरह के थे। जब मुहम्मद को पैगंबर के रूप में पाला गया, तब अरब में चार कलाएँ लोकप्रिय थीं: वाक्पटुता और लेखन और बोलने में प्रवाह, कविता और वक्तृता, भविष्य कथन और भविष्यवाणी, तथा अतीत और ब्रह्मांड विज्ञान का ज्ञान।

शब्दों का प्रयोग प्रार्थना की गंभीरता को बाधित करता है। इस प्रकार मैंने निष्कर्ष निकाला कि कुरान की चमत्कारिक रूप से वास्तविक, स्वाभाविक, बेजोड़ और अद्बितीय लय और तुक शांति और गंभीरता को बनाए रखती है। जो लोग ईश्वर को याद करते हैं और प्रार्थना करते हैं, वे अपने दिलों में इस चमत्कार को महसूस करते हैं, भले ही उनके दिमाग को इसका एहसास न हो।

एक और चमत्कारी पहलू यह है कि यह ईश्वर के दूत, महानतम ईश्वरीय नाम के प्रदर्शन की वस्तु, के पास मौजूद विश्वास की उच्चतम और उज्ज्वल डिग्री को दर्शाता है। एक पवित्र मानचित्र की तरह, यह परलोक और प्रभु के राज्य के उदात्त सत्यों का विवरण देता है और हमें स्वाभाविक तरीके से दिखाता है कि इस्लाम का सच्चा और व्यापक धर्म कितना महान है।

यह ब्रह्मांड के रचयिता को सृष्टि के स्वामी के रूप में संबोधित करता है, जिसमें उसकी सारी महिमा और ऐश्वर्य है। इसलिए, जैसा कि कुरान कहता है: कहो: यदि सभी मनुष्य और जिन्न इस कुरान के समान कुछ बनाने के लिए एक साथ आ जाएं, तो वे इसके समान कुछ भी नहीं बना सकते (17:88)। इस तरह के सभी प्रयास तुलना में लगभग बेकार हैं, क्योंकि कुरान की नकल नहीं की जा सकती, मुख्य रूप से ऊपर वर्णित तीन आवश्यक पहलुओं के कारण।

प्रत्येक पृष्ठ के अंत में, इसकी आयतें एक सुंदर कविता के साथ पूरी हो जाती हैं। इसकी चमत्कारिकता का एक और संकेत, यह बढ़िया पहलू इस तथ्य के कारण है कि इसकी सबसे लंबी आयत (मुदायना [ऋण व्यवसाय]) पृष्ठों के लिए आदर्श या मानक लंबाई प्रदान करती है, जबकि सूरत अल-इखलास (ईमानदारी) और सूरत अल-कवथर (बहुतायत) इसकी पंक्तियों के लिए भी यही करते हैं।

जब चमत्कारी कुरान आया, तो उसने चुनौती दी
इन चारों क्षेत्रों के सभी विशेषज्ञ। सबसे पहले, इसे सुनकर वाक्पटु लोग दंग रह गए
दूसरे, इसने कवियों और वक्ताओं को इतना चौंका दिया कि वे आश्चर्य में अपनी उंगलियाँ दबा लेते थे
और उनकी सबसे प्रसिद्ध सात कविताएँ हटा दी गईं,
जो सोने से लिखा हुआ था और लटका हुआ था
काबा की दीवारें। तीसरा, इसने भविष्यवक्ताओं को हमेशा के लिए चुप करा दिया
और जादूगरों को उनके अदृश्य ज्ञान को भुलाकर और उनके जिन्न को नष्ट करके
चौथा, इसने उन लोगों को बचाया जो स्वर्ग से निष्कासित कर दिए गए थे।
मिथकों से कुछ इतिहास और ब्रह्माण्ड विज्ञान का ज्ञान था और
मनगढ़ंत कहानियों को तोड़कर उन्हें अतीत की घटनाओं की वास्तविकता सिखाई
और सृष्टि के प्रकाशमान तथ्य।

इस प्रकार ये चार समूह कुरान के सामने घुटने टेकते हैं
पूर्ण आश्चर्य और विस्मय में, इसके छात्र बन गए और कभी इसे चुनौती देने की कोशिश नहीं की।

एक संभावित प्रश्न: हमें कैसे पता चलेगा कि किसी ने इस पर विवाद नहीं किया है या ऐसी चुनौती जायज है?
असंभव?

उत्तर: यदि ऐसा संभव होता तो कोई
वास्तव में, कुरान के विरोधियों ने ऐसा करने की कोशिश की होगी।
उन्हें ऐसी चुनौती की ज़रूरत थी, क्योंकि उन्हें लगा कि इससे उनके धर्म और जीवन के साथ-साथ उनकी संपत्ति को भी ख़तरा है। इसलिए अगर वे ऐसा करते तो वे कुरान को चुनौती देते।

ऐसा कर सकते थे। कई अविश्वासी और पाखंडी लोग
वे इस तरह की प्रतियोगिता का विज्ञापन करने के लिए तैयार थे, जैसे वे
इस्लाम के खिलाफ दुर्भावनापूर्ण प्रचार फैलाया।

यदि कोई चुनौती सफल होती तो वह यह होती कि
(अतिशयोक्ति के साथ) दर्ज किया गया है। लेकिन सारा इतिहास
हमारे पास जितनी भी किताबें आई हैं, उनमें से किसी में भी मुसय्यलिमा की कुछ
निरर्थक पंक्तियों के अलावा कुछ भी नहीं है
अल-कदज़ब (झूठा), एक स्वघोषित (और झूठा)
पैगम्बर। उन्होंने कभी भी इसे चुनौती देने की हिम्मत नहीं की, हालाँकि
कुरान ने उन्हें 23 साल तक एक तरह से चुनौती दी
जिससे वे उत्तेजित और परेशान हो गए, इस प्रकार:

> आओ और इस कुरान जैसा एक ग्रंथ बनाओ।
> अशिक्षित व्यक्ति, विश्वसनीय मुहम्मद की तरह, ऐसा करते हैं
> इसलिए। अगर वह ऐसा नहीं कर सकता, तो सबसे अधिक जानकार और लेखन में पारंगत व्यक्ति
> को प्रयास करने दें। अगर वह ऐसा नहीं कर सकता, तो अपने सभी लोगों को इकट्ठा करें
> विद्वान और वाक्पटु लोगों को साथ मिलकर काम करने दें। अपने देवी-देवताओं
> को बुलाएँ। अगर आप अभी भी
> कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकते, उच्चतम वाक्पटुता की सभी पुस्तकों का उपयोग
> करें, और सभी अविश्वासियों को आने दें
> प्रलय के दिन अपने अनुभवों का उपयोग उनके प्रयास में करें। यदि
> फिर भी आप ऐसा नहीं कर सकते, जैसा उत्पादन करने का प्रयास करें
> केवल 10 सूरा। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते, तो निराधार कहानियों और
> कल्पनाशील कहानियों से एक रचना बनाएँ
> केवल कुरान की छंदात्मक आयत और वाक्पटुता से मेल खाते हैं।
> यदि आप ऐसा नहीं कर सकते, तो केवल एक अध्याय लिखें। यदि आप यह भी
> नहीं कर सकते, तो एक छोटा अध्याय लिखें, अन्यथा आपका
> धर्म, जीवन, संपत्ति और परिवार पर होगा
> इस दुनिया और आख़िरत में दांव पर लगाओ!

इन आठ विकल्पों के साथ, कुरान ने सभी लोगों और जिन्न को चुनौती दी है और उन्हें हमेशा के लिए चुप करा दिया है।

14 शताब्दियों तक। सबसे आसान तरीका अपनाने के बजाय

(खुली चुनौती), के दौरान रहने वाले अविश्वासियों

इस्लाम के प्रारंभिक दिनों में सबसे कठिन रास्ता (युद्ध) चुना गया

और इस तरह उन्होंने अपने जीवन, संपत्ति और परिवार को खतरे में डाल दिया। अगर कोई सबसे आसान तरीका भी अपना सकता था

इस चुनौती की स्थिति में, कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति नहीं है,

विशेष रूप से पैगम्बर के समय में रहने वाले लोग और

कुरैशी बौद्धिक अभिजात वर्ग, मजबूर किया गया होगा

युद्ध का रास्ता चुनना। संक्षेप में, जैसा कि जाहिज़ ने कहा, वे

चुनौती के बाद से तलवार से संघर्ष का सहारा लेना पड़ा

शब्दों द्वारा असंभव था।

प्रश्न: कुछ विवेकशील विद्वानों का मानना है कि

कुरान की कोई भी सूरा, आयत, वाक्य या शब्द

विवादित है और किसी ने भी ऐसा सफलतापूर्वक नहीं किया है। यह अतिशयोक्तिपूर्ण लगता है और इसे स्वीकार करना कठिन है,

क्योंकि मानव निर्मित कई शब्द कुरान से कुछ हद तक समानता रखते हैं।

उत्तर: इसके चमत्कारी होने के विषय में दो मत हैं। प्रचलित मत यह है कि इसकी वाकपटुता

और अर्थ के गुण मानव क्षमता से परे हैं।

दूसरा कहता है कि कोई व्यक्ति सूरा को चुनौती दे सकता है और उससे प्रतिस्पर्धा कर सकता है, लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर उसे ऐसा करने से रोकता है।

मुहम्मद का एक चमत्कार के रूप में.

उदाहरण के लिए, यदि किसी पैगम्बर ने किसी से कहा कि खड़े रहो: “तुम खड़े होने में असमर्थ हो जाओगे” और यह आया सच है, इसे पैगम्बर का चमत्कार माना जाएगा। इस स्कूल को सरफा के नाम से जाना जाता है, जो सिखाता है कि सर्वशक्तिमान लोगों और जिन्न को रोकता है यहां तक कि एक सूरा भी नहीं बना पाए। अगर यह सच नहीं होता, तो शायद वे एक सूरा को चुनौती दें। इस प्रकार जो विद्वान मानते हैं कि कुरान के एक शब्द को भी चुनौती नहीं दी जा सकती सही है, क्योंकि सर्वशक्तिमान इसे रोकता है कुरान की चमत्कारिकता के बारे में।

हालांकि, ऐसे विद्वानों के विचार में, सूक्ष्म बिन्दु: कुरान के सभी शब्द और आयतें आपस में जुड़ी हुई हैं। कभी-कभी एक शब्द 10 अन्य आयतों से संबंधित होता है।
रेंस, इस प्रकार 10 रिश्ते और प्रदान करना वाक्पटुता के 10 उदाहरण। मेरी इशारत अल-इ'जाज़ में (चमत्कार के संकेत), कुरान की एक कुंजी व्याख्या, मैं कुछ उदाहरण दिखाता हूँ सूरत अल-फ़ातिहा और सूरत अल- की प्रारंभिक आयतें बकरा.

उदाहरण के लिए, कोई सबसे महत्वपूर्ण रत्न रख सकता है सजावटी पैटर्न में सबसे उचित स्थान पर किसी भी सुसज्जित महल की दीवार का निर्माण पूरी डिजाइन जानने के बाद ही किया जा सकता है। इसी प्रकार, आंख की पुतली को भी उसी तरह से रखा जा सकता है, जैसे कि अपने सही स्थान पर सभी को जानना आवश्यक है शरीर के कार्यों और जटिल संगठन के साथ-साथ इसका संबंध आंख के कार्य से है।

ठीक उसी तरह, विज्ञान और गहन सत्य के अग्रणी लोग कुरान के शब्दों और प्रत्येक शब्द के अर्थ के बीच कई संबंधों को प्रदर्शित करते हैं।

अन्य छंदों और अभिव्यक्तियों के साथ अनेक संबंध। अक्षरों के रहस्यों के विद्वान और भी आगे बढ़ जाते हैं
इसके अलावा, यह साबित करते हुए कि कुरान का प्रत्येक अक्षर
कई आंतरिक अर्थ हैं, जिन्हें यदि पूरी तरह से समझाया जाए,
कवर पेज.

चूँकि कुरान सृष्टिकर्ता का शब्द है
सब कुछ, प्रत्येक शब्द कोर या के रूप में कार्य कर सकता है
छिपे अर्थों से बना एक आदर्श शरीर का हृदय
इसे इसके चारों ओर या एक आदर्श वृक्ष के बीज के रूप में रखा जा सकता है।
इसलिए, यद्यपि कुछ मानव-निर्मित शब्द भिन्न हो सकते हैं
कुरान के समान हो, तथा सभी संबंधों पर विचार करके उन्हें उचित रूप से रखा जाए।
क़ुरआन की बातों में सर्वज्ञ ज्ञान की मांग की गई है।

तीसरा बिन्दु: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने एक बार मुझमें प्रेरणा दी
कुरान के चमत्कारी उपदेशों पर संक्षिप्त टिप्पणी
प्रकृति। मैं इसका अनुवाद (मूल अरबी से) दे रहा हूँ
नीचे:

परमेश्वर की जय हो, जो स्वयं अपने पापों की गवाही देता है।
एकत्व; जिसने अपने गुणों को प्रकट किया है
कुरान के माध्यम से अनुग्रह, महिमा और पूर्णता;
और जिसकी छह भुजाएँ प्रकाशमान हैं और जिनमें नी-

कोई संदेह या शंका नहीं। परमेश्वर के सिंहासन द्वारा समर्थित
संप्रभुता का, जिसमें से यह प्रकाश रखता है
रहस्योद्घाटन, यह दो दुनियाओं की खुशी की ओर ले जाता है
और इसका लक्ष्य स्वर्ग और शाश्वत आनंद का प्रकाश है।
ऊपर चमकती है चमत्कार की मुहर, नीचे चमकती है चमत्कार की मुहर
इसमें प्रमाण और साक्ष्य के स्तम्भ निहित हैं, और इसके अंदर
शुद्ध मार्गदर्शन है। यह मन को इस तरह की चेतावनियों के माध्यम से इसकी पुष्टि करने
के लिए प्रेरित करता है: क्या वे ऐसा नहीं करेंगे
समझें और चिंतन करें? आध्यात्मिक सुख
हृदय पर कृपा करता है और विवेक को अपनी चमत्कारिकता की गवाही देता है। चाहे
वह किसी भी ओर से हो या किसी भी कोने से,
तो फिर क्या संदेह के तीर ऐसे चमत्कारी कुरान पर आक्रमण कर सकते हैं?

चमत्कारी कुरान में निम्नलिखित विषयवस्तु शामिल है
सभी पैगम्बरों और सभी संतों को दी गई सभी पुस्तकें
और एकेश्वरवादी चाहे किसी भी मार्ग, स्वभाव,
और समय। दूसरे शब्दों में, सभी दिल और बुद्धि वाले लोग कुरान के नियमों और
बुनियादी बातों का उल्लेख करते हैं
अपनी पुस्तकों को इस तरह से प्रस्तुत करें जिससे उनकी पुष्टि प्रकट हो,
और इसलिए वे "स्वर्ग के पेड़" की जड़ों की तरह हैं
"कुरान।"

कुरान वास्तव में एक रहस्योद्घाटन है। एक शानदार
जिसने इसे उतारा, उसने मुहम्मद के हाथों से कराये चमत्कारों से यह सिद्ध कर दिया है।
यहाँ तक कि कुरान की अपनी आयतें भी इस बात को प्रमाणित करती हैं।
चमत्कारिकता से पता चलता है कि यह परमेश्वर की ओर से आता है

सर्वोच्च सिंहासन। अंत में, पैगंबर मुहम्मद की बेचैनी जब रहस्योद्घाटन शुरू हुआ, उनकी अर्ध-चेतना
इसे प्राप्त करते समय उनकी स्थिति, और उनकी बेजोड़ ईमानदारी
कुरान के प्रति आदर और भक्ति यह साबित करती है कि
यह रहस्योद्घाटन है, जो अतीत से प्राप्त हुआ है295 और पैगम्बर को सौंपा गया है।

कुरान शुद्ध मार्गदर्शन है, क्योंकि इसके विपरीत
(अविश्वास) स्पष्टतः गुमराही है।
क़ुरआन ईमान की रौशनी का ज़रिया है,
इस प्रकाश का विपरीत अंधकार है। कुरान में कहा गया है कि अंधकार अंधकार है।
सत्य का झरना जिसमें न तो कल्पना है
न ही अंधविश्वास कोई रास्ता खोज सकता है। सत्यवादी दुनिया
इस्लाम की अपनी रहस्योद्घाटन द्वारा आकार, अच्छी तरह से पाया-

---

[295] अतीत अनंत काल (अज़ेल) जैसा कि लोग कल्पना करते हैं, समय का शुरुआती बिंदु मात्र नहीं है और इसलिए किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए आवश्यक है।
वास्तव में, बीता हुआ अनंत काल एक दर्पण की तरह है जो अतीत, वर्तमान,
और भविष्य। समय के प्रवाह से खुद को अलग रखते हुए, लोग
अतीत के समय की एक सीमा की कल्पना करते हैं जो चीजों की एक निश्चित श्रृंखला के माध्यम से
विस्तारित होती है। वे इसे अतीत अनंत काल कहते हैं। ऐसी विधि
तर्क का यह तरीका न तो सही है और न ही स्वीकार्य है। निम्नलिखित सूक्ष्म बिंदु मामले को स्पष्ट कर सकते हैं। कल्पना कीजिए कि आप एक हाथ में एक पेंसिल पकड़े हुए हैं।
दर्पण। दाईं ओर प्रतिबिंबित सब कुछ अतीत का प्रतिनिधित्व करता है,
जबकि बाईं ओर दिखाई देने वाली हर चीज़ भविष्य का प्रतिनिधित्व करती है।
दर्पण केवल एक दिशा को प्रतिबिंबित कर सकता है, क्योंकि यह दोनों दिशाओं को नहीं दिखा सकता है
इसे पकड़ते समय आप दोनों तरफ से एक साथ घूम सकते हैं। ऐसा करने के लिए, आपको
आपको अपनी मूल स्थिति से इतना ऊपर उठना होगा कि बाएँ और
अधिकार एक हो जाते हैं, और उनके बीच कोई अंतर नहीं रह जाता
पहला और अंतिम, शुरुआत या अंत। (ट्र.)

यह जो पवित्र नियम प्रस्तुत करता है, तथा जो सर्वोच्च गुण प्रदर्शित करता है, वे सभी अदृश्य तथा दृश्य जगत के संबंध में इसकी पूर्ण सत्यता की गवाही देते हैं।

कुरान लोगों को रास्ता दिखाता है और उनका मार्गदर्शन करता है।
दोनों दुनिया में खुशी। जो कोई भी इस पर संदेह करता है उसे
इसे एक बार पढ़ें और इसके शब्दों पर ध्यान दें। इसके उत्तम और जीवनदायी फल
दर्शाते हैं कि यह गहराई से जड़ जमाए हुए है
सत्य और सच्ची शक्ति, क्योंकि एक फल की शक्ति एक सत्य और सच्ची शक्ति का संकेत देती है ...
पेड़ का जीवन। बस देखो कि कितने परिपूर्ण, जोरदार,
और चमकदार फल - संतत्व, पवित्रता के लोग,
और गहन शिक्षा - यह प्रत्येक शताब्दी में प्राप्त होती है।
दृढ़ विश्वास और अंतर्ज्ञान के माध्यम से
अनगिनत संकेतों से, कुरान इतना सम्मानित है और
लोग, जिन्न और फ़रिश्तों के बीच इतनी लोकप्रिय है कि इसकी तिलावत से वे पतंगों की तरह इसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं।

इसके अलावा, सभी गहनतम ज्ञान वाले लोग इस बात पर सहमत हैं कि कुरान की पुष्टि और पुष्टि तर्कसंगत प्रमाणों से की गई है। दर्शनशास्त्र के ऐसे प्रतिभाशाली लोग
इब्न सिना (एविसेना) और इब्न रुश्द (एवेरोएस) के रूप में, और
विशेष रूप से सबसे विद्वान धर्मशास्त्री, यह साबित करते हैं
कुरान की बुनियादी बातों की सच्चाई को अपने हिसाब से समझना
तर्क के तरीके। मानवता का स्वभाव, इतना लंबा
क्योंकि यह अदूषित है, कुरान की सच्चाई की पुष्टि करता है,
क्योंकि केवल इसका प्रकाश ही व्यक्ति के विवेक को संतुष्ट कर सकता है
और उसके हृदय को विश्राम प्रदान करें।

कुरान एक शाश्वत चमत्कार है जो निरंतर अपनी चमत्कारिकता को प्रकट करता रहता है। यह अन्य चमत्कारों की तरह कभी फीका या नष्ट नहीं होता, न ही समय के साथ पुराना होता है। कुरान का मार्गदर्शन इतना समावेशी और व्यापक है कि महादूत गेब्रियल और छोटे बच्चे इसे साथ-साथ सुनते हैं, दोनों ही इससे अपनी शिक्षा प्राप्त करते हैं। इब्न सीना जैसे प्रतिभाशाली दार्शनिक इसके सामने सामान्य पाठकों के साथ घुटने से घुटने मिलाकर इसकी शिक्षा प्राप्त करते हैं। कभी-कभी सामान्य पाठक, अपनी पवित्रता और विश्वास की ताकत के कारण इब्न सीना से अधिक लाभ उठाते हैं।

कुरान का मार्गदर्शन ऐसी गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि ब्रह्मांड को किताब के पन्नों की तरह देखा और समझा जा सकता है। जैसे एक घड़ीसाज़ घड़ी को खोलकर उसके छोटे से छोटे हिस्से का वर्णन करता है, वैसे ही कुरान ब्रह्मांड को उसके सभी क्षेत्रों और कणों के साथ समझाता है। सबसे बढ़कर, यह कहता है कि "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है" और उसकी एकता की घोषणा करता है।

ऐ खुदा, क़ुरआन को दुनिया में हमारा साथी और क़ब्र में हमारा हमदर्द बना, आख़िरत में हमारा सिफ़ारिश करनेवाला और सीरत के पुल पर हमारा नूर, जहन्नम से बचाव और सुरक्षा के लिए एक पर्दा और जन्नत में दोस्त और हर तरह की भलाई के लिए एक मार्गदर्शक और नेता बना। ऐ खुदा, हमारे दिलों और क़ब्रों को ईमान और क़ुरआन की रौशनी से रोशन कर और क़ुरआन की गवाही को उस व्यक्ति के लिए रोशन कर जिसकी तरफ़ तूने इसे भेजा है। उस पर कृपा हो

> और उनके परिवार को दयालु और चिंताशील परमेश्वर की ओर से शांति और आशीर्वाद मिले। आमीन।

उन्नीसवाँ संकेत: पिछले संकेतों ने सिद्ध कर दिया
कि मुहम्मद सर्वशक्तिमान ईश्वर के दूत हैं।
हजारों लोगों के द्वारा उनके संदेशवाहक होने का प्रमाण मिलता है।
निर्णायक प्रमाण, वह सबसे उज्ज्वल संकेत और सबसे अधिक है
ईश्वर की एकता और शाश्वत खुशी का निश्चित प्रमाण। यहाँ हम एक संक्षिप्त विवरण देते हैं
इस उज्ज्वल चिन्ह का वर्णन, यह सत्य-भाषण
सबूत। चूँकि वह सबूत है जिसके ज़रिए
ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें उसे पहचानना होगा
साक्ष्य और जिस तरह से यह साक्ष्य के रूप में कार्य करता है, दोनों।

ईश्वर के दूत, हर दूसरे प्राणी की तरह, व्यक्तिगत रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता का प्रमाण हैं। इसके अलावा, उन्होंने ही अपने जीवन में इस सत्य की घोषणा की है।
अपने और अन्य सभी प्राणियों के शब्दों का सम्मान करें। अब हम
15 आवश्यक बातों में बताएं कि यह कितना स्पष्ट, ईमानदार और
यह प्रमाण सत्य है।

पहला आवश्यक: वह जो सबूत देता है
शब्द, कर्म और आचरण में ब्रह्मांड का निर्माता है
सभी के लिए, सृष्टि के सत्यों द्वारा सत्य और पुष्टि की गई
जीव, ईश्वर की एकता के प्रमाण बनकर, इसकी पुष्टि करते हैं
जो इस एकता की घोषणा करता है। इसलिए सारी सृष्टि
उसके कारण का समर्थन करता है। उसका कारण भी सत्य है क्योंकि
उनकी घोषणा, जिसमें मुख्य रूप से ईश्वरीय एकता शामिल है, संकेत करती है-

परम पूर्णता और शाश्वत सुख का शुद्ध आशीर्वाद प्रदान करता है, तथा सभी सार्वभौमिक सत्यों की सुंदरता और पूर्णता के साथ पूर्ण सामंजस्य रखता है। इसे देखते हुए, ईश्वर का दूत ईश्वरीय एकता और शाश्वत सुख का एक स्पष्ट और सच्चा प्रमाण है, और सारी सृष्टि उसकी सत्यता की पुष्टि करती है।

दूसरा ज़रूरी: चूँकि इस सच्चे और प्रमाणित प्रमाण में हज़ारों चमत्कार हैं जो सभी पैग़म्बरों से बेहतर हैं, साथ ही एक शाश्वत पवित्र कानून और मानवता और जिन्न को शामिल करने वाला संदेश है, इसलिए वह सभी पैग़म्बरों का मुखिया है। इस प्रकार, वह उनके सभी चमत्कारों के साथ-साथ उनकी सर्वसम्मत मान्यता का सार भी रखता है।

दूसरे शब्दों में, अन्य सभी पैगम्बर इसी विश्वास पर सहमत हैं, और उनके चमत्कार उनकी ईमानदारी और सच्चाई का समर्थन करते हैं।

इसके साथ ही, वे सभी संतों के गुरु और नेता हैं, साथ ही पवित्रता और गहन ज्ञान वाले सभी लोगों के भी, जिन्होंने उनकी शिक्षा, मार्गदर्शन और पवित्र कानून (शरीयत) के माध्यम से पूर्णता प्राप्त की है।

इस प्रकार उनके पास उनके चमत्कारों और सर्वसम्मत पुष्टि का सार है, साथ ही उनके सत्यापित निष्कर्षों की ताकत भी है। चूँकि उन्होंने सत्य तक पहुँचने के लिए जिस मार्ग का अनुसरण किया था, उसे खोला है - और खुला रखता है - इसलिए उनके सभी आश्चर्य, निष्कर्ष और एक ही विश्वास पर आम सहमति उनकी सत्यनिष्ठा का समर्थन करती है। ईश्वर की एकता का यह प्रमाण,

जैसा कि सभी पिछले संकेतों में दिखाया गया है, इसमें ऐसे निश्चित, स्पष्ट और निश्चित चमत्कार और अद्भुत इर्शासत हैं कि, उनके पैगंबर होने के अन्य सबूतों के साथ, उनकी पुष्टि पर विवाद नहीं किया जा सकता है।

तीसरा सार: ईश्वर की एकता के इस संदेशवाहक के पास अनेक प्रत्यक्ष चमत्कार हैं, तथा जो शाश्वत सुख का शुभ समाचार देता है, उसके धन्य व्यक्तित्व में ऐसे उत्कृष्ट गुण हैं, उसके संदेशवाहकत्व में ऐसे उत्कृष्ट गुण हैं, तथा उसके द्वारा प्रचारित धर्म और पवित्र कानून में ऐसे बहुमूल्य गुण हैं कि उसके कट्टर शत्रुओं ने भी उसे स्वीकार किया।

चूँकि वह अपने व्यक्तित्व, कार्य और धर्म में सर्वाधिक प्रशंसनीय गुणों को सम्मिलित करता है, इसलिए वह सृष्टि में पाई जाने वाली सभी सिद्धियों और उच्च, प्रशंसनीय गुणों का मूर्त रूप, स्वामी और प्रतिनिधि है।

अपने अस्तित्व, कार्य और धर्म में उन्होंने जो उत्तम स्थिति प्राप्त की है, वह उनकी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा का इतना सशक्त प्रमाण और समर्थन है कि उसे हिलाया नहीं जा सकता।

चौथा आवश्यक: ईश्वर की एकता और शाश्वत सुख का यह संदेशवाहक, सभी सिद्धियों का स्रोत और सर्वोच्च नैतिकता का शिक्षक, केवल वही बोलता है जो प्रकट होता है और जो उसे अपने शाश्वत गुरु द्वारा बोलना सिखाया जाता है। ऐसा इसलिए है, जैसा कि पिछले संकेतों में आंशिक रूप से समझाया गया है, ब्रह्मांड के निर्माता ने उसे अपने पैगम्बर होने को साबित करने के लिए हजारों चमत्कार प्रदान किए हैं।

और यह दिखाने के लिए कि वह उसकी ओर से बोलता है और उसका संदेश संप्रेषित करता है। दूसरा, क़ुरआन के 40
चमत्कारी पहलू दर्शाते हैं कि पैगम्बर सर्वशक्तिमान के व्याख्याकार हैं।

तीसरा, उसकी पूर्ण ईमानदारी, धार्मिकता, ईमानदारी, विश्वसनीयता, और अन्य सभी कार्य और स्थितियाँ दर्शाती हैं
वह सिर्फ़ अपने सृष्टिकर्ता की ओर से बोलता है।
सभी सत्यवादी लोग जिन्होंने उसकी बात सुनी है, वे पुष्टि करते हैं,
गहन अध्ययन और प्रेरित खोज के माध्यम से, और
सच्चे ज्ञान की निश्चितता के साथ विश्वास करें कि वह
वह स्वयं अपनी इच्छा से नहीं बोलता; बल्कि ब्रह्माण्ड का रचयिता उसे सिखाता है और बोलने के लिए प्रेरित करता है।
उसने उसे क्या सिखाया है। सबूतों से यह स्पष्ट हो गया
इन आवश्यक चीजों में, जब एक साथ जोड़ दिया जाता है, तो बहुत
उनकी ईमानदारी और सच्चाई के लिए मजबूत समर्थन।

पाँचवाँ सार: परमेश्वर के शाश्वत वचन का यह व्याख्याता आत्माओं को देखता है, स्वर्गदूतों से बातचीत करता है, और
मानवता और जिन्न दोनों को समान रूप से मार्गदर्शन करता है। वह मानवता और जिन्न को, निराकार निवास के निवासियों को सिखाता है,
और स्वर्गदूतों से पता चलता है कि इन निवासों से परे के क्षेत्रों तक उसकी पहुँच है और उनके साथ उसके संबंध हैं। ऊपर बताए गए चमत्कार और उसका जीवन ही इसे साबित करता है। इस प्रकार
अदृश्य के बारे में उनकी रिपोर्टें उनसे मिलती जुलती नहीं हैं
भविष्यवक्ता। कोई भी व्यक्ति, जिन्न, आत्मा या देवदूत (

गेब्रियल) को अपनी रिपोर्ट में कुछ कहने का अधिकार है। और वहाँ हैं
कई बार ऐसा होता है जब गेब्रियल भी उसके पीछे पड़ जाता है।

छठा सार: फ़रिश्तों, मानवता और जिन्न का यह स्वामी सृष्टि के वृक्ष का सबसे उत्तम है

और सबसे उज्ज्वल फल, उसकी करुणा का अवतार, भगवान के प्यार का प्रतिबिंब, सबसे

सर्वशक्तिमान का शानदार सबूत, सबसे उज्ज्वल प्रकाश

सत्य की कुंजी, ब्रह्माण्ड के छिपे हुए सत्यों की कुंजी,

सृष्टि के रहस्य को प्रकट करने वाला, सृष्टि के दिव्य उद्देश्य को बताने वाला,

ईश्वर के राजत्व का उद्घोषक, उसकी सुन्दर कला का वर्णन करने वाला,

तथा, अपने गुणों के कारण,

उनकी व्यापक क्षमताओं में सबसे उत्कृष्ट

सृष्टि की सम्पूर्ण परिपूर्णताओं का प्रतिरूप।

ऐसे चरित्र गुण, उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व के साथ, स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं कि वे ही हैं

ब्रह्माण्ड के निर्माण का अंतिम कारण या दूसरे शब्दों में कहें तो सृष्टिकर्ता ने अपने विवेक से ब्रह्माण्ड का निर्माण किया।

पैटर्न। यह भी तर्क दिया जा सकता है कि अगर भगवान नहीं होते

यदि उसने उसे बनाया होता, तो वह ब्रह्माण्ड को नहीं बनाता।

निश्चय ही, कुरान की सच्चाइयां और ईमान की रोशनी

जिसे वह मानवता और जिन्न के साथ लाया था

उसके अस्तित्व में देखे गए सर्वोच्च गुण और शानदार सिद्धियाँ, इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं

तर्क।

सातवीं ज़रूरी बात: यह “सत्य का प्रमाण”
(अल-हक़) और "सत्य का प्रकाश" ऐसा धर्म और पवित्र कानून प्रदान करता है जिसमें सभी सिद्धांत शामिल हैं
दोनों दुनिया में खुशी हासिल करने के लिए। वे ब्रह्मांड की सच्चाई और कार्यों को पूरी तरह से समझाते हैं, साथ ही
ब्रह्मांड के निर्माता के नाम और गुण।

इस्लाम और उसके पवित्र कानून इतने परिपूर्ण और व्यापक हैं, तथा ब्रह्मांड और उसके निर्माता का वर्णन करते हैं
इस तरह से कि जो कोई इस्लाम पर विचार करे, उसे पता चले कि यह उसी का ऐलान है जिसने इसे बनाया
इस सुंदर ब्रह्मांड और यह कि यह ब्रह्मांड का वर्णन करता है
कविता और उसके निर्माता.

एक शानदार महल की तरह जो अपने वास्तुकार की कला को उजागर करता है कौशल, और वास्तुकार द्वारा लिखी गई पुस्तक ताकि
अन्य लोग इसे बेहतर जानते होंगे, धर्म और पवित्र कानून
पैगम्बर मुहम्मद द्वारा प्रचारित,
अपनी व्यापकता, उदात्तता और सत्यता के माध्यम से,
वे उसी सत्ता द्वारा डिजाइन किए गए हैं जिसने ब्रह्मांड का निर्माण किया और उसका प्रबंधन करना जारी रखा है। वास्तव में,
ब्रह्माण्ड की उत्तम व्यवस्था, संसार में अपनी अभिव्यक्ति के लिए इस्लाम की सबसे सुन्दर व्यवस्था की मांग करती है।
चेतन प्राणियों का.

आठवां आवश्यक: इन गुणों से प्रतिष्ठित और सबसे अडिग प्रमाणों द्वारा समर्थित,

पैगम्बर मुहम्मद ने मानव जाति को अपना संदेश दिया-

वह अदृश्य के नाम पर सभी लोगों को समय और स्थान की परवाह किए बिना, जिन्न और शैतान की आवाज़ सुनाता है। और, उसकी आवाज़ इतनी शक्तिशाली है कि वे सभी उसे सुनेंगे, जैसे हम सुनते हैं।

नौवीं बात: उनकी वाणी इतनी प्रभावशाली और दिल को छूने वाली है कि हर समय लोग उन्हें सुनते हैं और उनकी आवाज हर सदी में गूंजती है।

दसवीं ज़रूरी बात: उसके व्यवहार से पता चलता है कि वह देखता है और जो कुछ वह देखता है, उसे संप्रेषित करता है, क्योंकि सबसे खतरनाक समय में भी वह अत्यंत दृढ़ विश्वास और आश्वासन के साथ बोलता है और दुनिया को चुनौती देता है।

ग्यारहवीं आवश्यक बात: वह इतनी प्रबलता और हृदय की गहराई से आह्वान करता है कि आधी दुनिया और मानवता का पाँचवाँ भाग कुरान के प्रति आज्ञाकारी हो गया है।

बारहवीं अनिवार्य बात: वह इतनी ईमानदारी से आमंत्रित करता है, और इतनी मौलिकता से मार्गदर्शन और प्रशिक्षण देता है, कि वह अपने सिद्धांतों को सभी समय और स्थानों पर स्थायी, कभी न मिटने वाले निशान के रूप में छोड़ जाता है।

तेरहवीं अनिवार्य बात: उसका भरोसा और आत्मविश्वास वह जिन आज्ञाओं का प्रचार करता है, वे इतनी महान हैं कि वह उनमें से किसी एक को भी कभी वापस नहीं लेगा या उस पर कभी खेद नहीं करेगा, भले ही पूरी दुनिया उसके खिलाफ एकजुट हो जाए।

उनके जीवन का हर प्रसंग इसका गवाह है।

चौदहवीं आवश्यक बात: वह इतने दृढ़ विश्वास और निश्चय के साथ पुकारता है कि वह किसी का ऋणी नहीं रहता और परिस्थितियाँ चाहे जो भी हों, उसे कोई चिन्ता नहीं होती।

वह पूरी ईमानदारी और ईमानदारी के साथ, बिना किसी हिचकिचाहट के, दूसरों को जो संदेश देता है, उसे स्वीकार करने और उसका पालन करने में सबसे आगे रहता है। उसकी धर्मपरायणता और संतोष, साथ ही दुनिया के क्षणभंगुर प्रलोभनों के प्रति उसका तिरस्कार, इस तथ्य को साबित करता है जो दोस्तों और दुश्मनों दोनों को समान रूप से पता है।

पंद्रहवीं अनिवार्य बात: वह प्रथम और सर्वोपरि है

इस्लाम का पालन करने, अपने निर्माता की पूजा करने और धार्मिक निषेधों का पालन करने में। यह साबित करता है कि वह अनंत काल के राजा का दूत, उद्घोषक और सबसे ईमानदार सेवक है, साथ ही साथ उसके शाश्वत वचन का व्याख्याता भी है।

इन 15 आवश्यक बातों से, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इस व्यक्ति ने, जो ऊपर वर्णित गुणों से विख्यात था, अपना जीवन एक सिद्धांत के लिए समर्पित कर दिया और लगातार इसकी घोषणा की: "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है," और इस प्रकार ईश्वर की पूर्ण एकता की घोषणा की।

हे ईश्वर, उसे और उसके परिवार को शांति प्रदान करें तथा उसके समुदाय के लोगों के अच्छे कार्यों के लिए आशीर्वाद प्रदान करें।
तेरी महिमा है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो कुछ तूने हमें सिखाया है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

उन्नीसवाँ पत्र / परिशिष्ट 2

का चमत्कार
चंद्रमा का विभाजन

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु
है, कृपालु है।

क़ियामत का दिन आ पहुँचा और चाँद फट गया, फिर जब भी वे कोई निशानी देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं, "यह तो उसका जादू है।" (54:1-2)

प्रश्न: भौतिकवादी दार्शनिक और उनके अनुयायी, जो पैगम्बर मुहम्मद के इस उज्ज्वल चमत्कार को नकारना चाहते हैं, कहते हैं: "यदि यह घटना वास्तव में घटित हुई होती, तो यह पूरी दुनिया में जानी जाती और सभी ऐतिहासिक दस्तावेजों में इसका उल्लेख होता।"

उत्तर: यह चमत्कार लोगों के एक समूह के सामने हुआ ताकि उन्हें उनकी पैगम्बरियत का यकीन दिलाया जा सके। यह उस समय हुआ जब लोग सो रहे थे; धुंध, बादल और समय के अंतर जैसी बाधाओं ने दूसरों को इसे देखने से रोक दिया; और विज्ञान और सभ्यता अभी तक उन्नत या व्यापक नहीं हुई थी।

इस प्रकार आकाश का अवलोकन काफी सीमित था। अंतिम लेकिन कम महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसा कोई कारण नहीं है कि इसे सीमित किया जाना चाहिए था।

दुनिया भर में देखा गया। भ्रम के ऐसे बादलों को दूर करने के लिए, निम्नलिखित पाँच बिंदुओं पर विचार करें:

पहला बिन्दु: मुहम्मद साहब की हठधर्मिता

अविश्वासी समकालीनों के बारे में यह घटना सर्वविदित और दर्ज है। जब कुरान ने इस घटना की घोषणा की
चाँद टूट गया, किसी भी अविश्वासी ने विरोध करने की हिम्मत नहीं की
अगर उन्होंने यह घटना नहीं देखी होती तो वे
इस आयत का इस्तेमाल पैगम्बर पर हमला करने के बहाने के रूप में किया
और अधिक भयानक रूप से.

लेकिन पैगम्बर या पैगंबर की जीवनी में ऐसा कुछ नहीं है
इतिहास की किताबों से पता चलता है कि उन्होंने इससे इनकार किया था। उनकी प्रतिक्रिया
था: यह स्पष्ट रूप से उसके जादू का हिस्सा है, और कहा
यदि अन्य स्थानों पर कारवां ने इसे देखा था, तो यह वास्तव में हुआ था; अन्यथा, पैगंबर ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया था
अगली सुबह यमन और अन्य स्थानों से आने वाले कारवां ने जब घोषणा की कि वे

जब अविश्वासियों ने यह चमत्कार देखा तो उन्होंने उत्तर दिया: "
अबू तालिब के अनाथ के जादू ने यहां तक को प्रभावित किया है
स्वर्ग!"

दूसरा बिंदु: सावधानीपूर्वक शोध करने वाले अधिकांश अग्रणी विद्वान, जैसे कि साद अल-दीन अल-
तफ्ताज़ानी ने निष्कर्ष निकाला कि, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है,
पैगम्बर की उंगलियों से बहते पानी और लकड़ी के खंभे की सुनाई देने वाली विलाप की चमत्कारिक घटनाएँ
जिसके खिलाफ पैगंबर ने उद्धार करते समय झुकाव किया था-

उपदेश देते समय, जब वह एक पुलपिट के निर्माण के बाद उससे अलग हो गया, तो चंद्रमा का विभाजन मुतवातिर है। इसका मतलब है कि यह

एक के बाद एक सत्यवादी समूह द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी प्रसारित किया जाता है, और यह कि प्रेषक इतने विशाल समुदाय का निर्माण करते हैं कि वे झूठ पर सहमत होने में असमर्थ होते हैं। यह उतना ही निश्चित है जितना कि हेली का धूमकेतु, जो 1,000 साल पहले दिखाई दिया था, या एक ऐसे द्वीप का अस्तित्व जिसे हमने नहीं देखा है।

इसलिए निराधार बातों को बढ़ावा देना अनुचित है
ऐसी निश्चित, प्रत्यक्षदर्शी बातों के बारे में संदेह। वास्तव में, उनकी स्वीकार्यता के लिए यह पर्याप्त है कि वे असंभव नहीं हैं। चंद्रमा को विभाजित करना ज्वालामुखी विस्फोट द्वारा पहाड़ को विभाजित करने जैसा ही संभव है।

तीसरा बिंदु: पैगम्बर अपनी पैगम्बरी होने का प्रमाण देने और इनकार करने वालों को यकीन दिलाने के लिए चमत्कार करते हैं, न कि उन्हें विश्वास दिलाने के लिए। इस प्रकार हर चमत्कार उन लोगों को यकीन दिलाने के लिए दिखाया जाता है जिन्होंने पैगम्बरी होने का दावा सुना है। अगर वे सभी को उन्हें देखने या उन पर विश्वास करने के लिए मजबूर करते हैं, तो सर्वज्ञ की बुद्धि, हमें स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाने और धर्म भेजने का ईश्वरीय उद्देश्य, जिसका तात्पर्य है कि मन की स्वेच्छा से स्वीकृति के लिए जमीन तैयार की जाए, का उल्लंघन होगा।

इस प्रकार यदि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने चंद्रमा को कई घंटों तक विभाजित छोड़ दिया होता ताकि हर कोई उसे देख सके

और इसे अपने ऐतिहासिक अभिलेखों में दर्ज कर लेते, तो
एक और खगोलीय घटना के बजाय केवल एक और खगोलीय घटना रही है
उनके संदेशवाहकत्व से संबंधित कोई अनोखी घटना या साक्ष्य
अगर हर किसी को मजबूर किया गया होता
विश्वास करने के लिए, स्वतंत्र इच्छा को रद्द कर दिया जाएगा और अबू
जहल की कोयले जैसी आत्मा अबू बक्र के बराबर होगी
हीरे जैसी आत्मा। इस प्रकार बनाने का उद्देश्य
मानवता को एक विशेष कार्य और जिम्मेदारी दी गई है,
साथ ही रहस्योद्घाटन भेजने का उद्देश्य भी,
नकारा जा सकता है। इसीलिए यह चमत्कार नहीं दिखाया गया
ताकि इसे विश्व भर में रिकॉर्ड किया जा सके।

चौथा बिंदु: कुछ लोग तर्क देते हैं कि यदि यह घटना वास्तव में घटित हुई थी, तो चीनी, जापानी और मूल अमेरिकी
ऐतिहासिक विवरणों में इसका उल्लेख मिलता है।296 लेकिन यह कैसे संभव हो सकता है?
उन्होंने इसे अन्य बाधाओं के साथ देखा है,
स्पेन जैसे यूरोपीय देशों में सूर्यास्त अभी मुश्किल से ही हुआ था,
फ्रांस और इंग्लैंड (सभी अज्ञानता के धुंध में लिपटे हुए), अमेरिका में दिन और चीन में सुबह
और जापान।

पांचवां बिंदु: यह चमत्कार कोई साधारण घटना नहीं है जो किसी विशेष कारण या आकस्मिक घटना से घटित हुई हो।

---

[296] कुछ पुस्तकों में यह भी कहा गया है कि चंद्रमा टूटकर पृथ्वी पर आ गिरा था।
दो भागों में विभाजित किया गया है। सत्यनिष्ठ विद्वान इसे अस्वीकार करते हैं, क्योंकि इसे जोड़ा गया था
एक पाखंडी जो इस प्रत्यक्ष चमत्कार के मूल्य को शून्य तक कम करना चाहता था।

डोमली ताकि कानून के आधार पर इसकी आलोचना की जानी चाहिए
कारण और प्रभाव का। बल्कि, सर्वज्ञ निर्माता
सूर्य और चंद्रमा ने इसे एक असाधारण घटना बना दिया
अपने रसूल की नबूवत की पुष्टि और समर्थन के लिए
उनके दावे को पुख्ता सबूत के तौर पर पेश किया गया।
कुछ लोगों के लिए और दिव्य बुद्धि द्वारा निर्दिष्ट,
ईश्वरीय मार्गदर्शन और मानवीय जिम्मेदारी की प्रकृति के साथ-साथ एक
संदेशवाहक को बढ़ाने के कारण के लिए यह आवश्यक था। अगर यह उन
लोगों द्वारा देखा गया होता जो
वे इसे देखने के लिए अभिप्रेत नहीं थे और जिन्होंने अभी तक नहीं सुना था
उनकी पैगम्बरी की घटना, और यदि यह कारण और प्रभाव के नियम के
अनुसार घटित हुई होती, तो यह
चमत्कार के बजाय एक साधारण खगोलीय घटना
उनके संदेशवाहकत्व से संबंधित और उससे जुड़ा हुआ।

निष्कर्ष के तौर पर, ये तर्क पर्याप्त हैं
क्या कोई भी व्यक्ति इस संभावना के प्रति आश्वस्त हो सकता है कि
चमत्कार हुआ। इसके होने के अनेक प्रमाणों में से हम केवल छह का ही
उल्लेख करेंगे, क्योंकि इन छहों का प्रभाव बहुत अधिक है।
छह-स्तरीय आम सहमति की ताकत:

- सभी साथी, जो न्याय और सत्यनिष्ठा के लोग हैं, इस बात पर सहमत हैं कि यह घटना घटी थी।
- सभी सटीक कुरान व्याख्याकार इस बात से सहमत हैं कि चाँद का फटना इस बात का संकेत है कि मुहम्मद की उंगलियों के इशारे से यह घटना घटी।

• सभी सत्यनिष्ठ परंपरावादियों ने इस घटना का वर्णन किया
प्रसारण के विभिन्न प्रामाणिक चैनलों के माध्यम से।

• सत्य, संतत्व, प्रेरणा और आध्यात्मिक खोज के सभी लोग इस बात की गवाही देते हैं
कि यह घटना घटित हुई थी।

• सभी अग्रणी धर्मशास्त्री और विद्वान विद्वान
अन्य मतभेदों के बावजूद, इस घटना की पुष्टि करें
राय की.

• मुहम्मद का समुदाय, जो एक प्रामाणिक
पैगंबर परंपरा के राज्य कभी भी एक बात पर सहमत नहीं हो सकते
त्रुटि होने पर, उसकी घटना को स्वीकार करता है।

ये छह साक्ष्य स्पष्ट रूप से विभाजन को साबित करते हैं
चंद्रमा का। इस प्रकार हमने यह स्थापित किया है

चमत्कार की वास्तविकता को उसकी संभावना पर आपत्तियों का खंडन करके
प्रमाणित किया जा सकता है। कुछ समापन वाक्यों में, हम बात करेंगे
सत्य के नाम पर और विश्वास के लिए।

भविष्यद्वक्ताओं की मुहर, का चमकीला चाँद
संदेशवाहक का स्वर्ग, उसकी संतता साबित हुई
उनके स्वर्गारोहण के माध्यम से। उनकी संतत्व की सबसे बड़ी चमत्कारिक
उपलब्धि, उनकी पूजा की गुणवत्ता के माध्यम से प्राप्त हुई,
उन्हें ईश्वर के प्रियतम का दर्जा दिया। मुहम्मद को स्वर्ग की यात्रा कराकर, ईश्वर ने उन्हें
ईश्वर का प्रियतम बना दिया।
अपने निवासियों और उच्चतम क्षेत्रों के लोगों को दिखाया
कि वह उनका श्रेष्ठ और प्रिय है।

मनुष्य के इशारे से आकाश में स्थित और धरती से बंधे चाँद को विभाजित करने की अनुमति देकर, लोगों ने उनके पैगम्बर होने का एक और महान प्रमाण देखा। इस प्रकार पैगम्बर पैगम्बर होने और संत होने के दो चमकदार पंखों (चाँद के दो चमकीले हिस्सों की तरह) पर पूर्णता के शिखर पर उड़ गए, दो धनुष की लंबाई (सर्वोच्च पद और ईश्वर के सबसे निकट स्थान) तक चढ़ गए, और स्वर्ग और पृथ्वी के सभी निवासियों के लिए गर्व का कारण बन गए।

उस पर और उसके परिवार पर ऐसी बरकतें और शांति हो जो धरती और आसमान को भर दे। तेरी महिमा हो। हमें कोई ज्ञान नहीं है सिवाय उस चीज़ के जो तूने हमें सिखाई है। तू सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है।

हे ईश्वर, जिसके एक इशारे से चाँद फट गया, उसके लिए मेरा और रिसाले-ए-नूर के छात्रों का दिल कुरान के "सूर्य" के प्रति वैसा ही समर्पित और वफ़ादार बना दे जैसा चाँद सूरज के प्रति है। आमीन।

इकतीसवाँ शब्द

पैगम्बर का स्वर्गारोहण
मुहम्मद

(नोट: पैगम्बर के स्वर्गारोहण में विश्वास का परिणाम है
और इस विश्वास से प्रकाश और शक्ति प्राप्त करता है
विश्वास के स्तंभ.297 उदगम सिद्ध नहीं किया जा सकता
जो लोग इन स्तम्भों को स्वीकार नहीं करते, उनके लिए यह स्वतंत्र है। इसलिए हम उन विश्वासियों को संबोधित करते हैं जो इस पर संदेह करते हैं।
हालांकि, समय-समय पर हम अविश्वासियों को संबोधित करेंगे। स्वर्गारोहण की सच्चाई के कुछ पहलू
रिसाले-ए-नूर में अन्यत्र इसका उल्लेख किया गया है।
मेरे भाइयों के आग्रह पर, हम ईश्वर की कृपा चाहते हैं और
उन्हें उस सत्य के सार के साथ एकजुट करने में मदद करें और
उन सभी को एक दर्पण में इकट्ठा करना ताकि मुहम्मद (उन पर शांति हो) की परिपूर्णताएं प्रतिबिंबित हों
आशीर्वाद, अपनी सम्पूर्ण सुन्दरता में।)

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

उसकी जय हो जिसने अपने सेवक को रात में पहुँचाया
मस्जिद अल-हरम से मस्जिद अल-अक्सा तक, ईर्ष्या-

---

२९७ ये ईश्वर के अस्तित्व और एकता, फ़रिश्तों, धर्मग्रंथों, पैगम्बरत्व और ईश्वरीय संदेशवाहक होने में विश्वास (विश्वास सहित) हैं
ईश्वर के सभी पैगम्बरों और संदेशवाहकों में), और पुनरुत्थान
और ईश्वरीय आदेश और नियति, मानव स्वतंत्रता को छोड़े बिना
होगा. (ट्र.)

हमने उन चीज़ों को बरकत दी थी, ताकि हम दिखा सकें
उसे हमारी आयतों में से कुछ दिखाओ, निस्संदेह वह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है (17:1)

यह कुछ भी नहीं बल्कि एक रहस्योद्घाटन है। शक्तिशाली के साथ एक
शक्ति ने इसे सिखाया, जो बुद्धि और शक्ति में ऊंचा था:
वह सबसे ऊँचे क्षितिज पर था, तभी वह उठा।
वह पास आया और करीब आ गया। वह कुछ दूरी पर था।
दो धनुष की लम्बाई या उससे भी करीब। और उसने उस पर प्रकाश डाला
उसके सेवक ने जो प्रकट किया, उसका हृदय नहीं डगमगाया-
बताओ उसने क्या देखा। तो क्या तुम उससे इस विषय में झगड़ते हो कि उसने क्या देखा?
निश्चय ही उसने उसे देखा था।
वह समय जब) वह (गेब्रियल) लोटे-वृक्ष के पास उतरा
सबसे दूर की सीमा का। इसके बगल में निवास का बगीचा है।
यह तब था जब लोटे के पेड़ को घेर लिया गया था
यह। आँख डगमगाई नहीं, न ही यह भटकी। सचमुच उसने किया
उसके रब की कुछ बड़ी निशानियाँ देख लो। (53:4-18)

प्रथम श्लोक के विशाल भण्डार में से हम केवल दो बिंदुओं का वर्णन करें जो सर्वनाम He में हैं निश्चय ही उसे वाक्पटुता के सिद्धांत के रूप में संदर्भित किया जाता है, क्योंकि वे हमारी वर्तमान चिंता में शामिल हैं।

पैगम्बर मुहम्मद की यात्रा का उल्लेख करने के बाद मक्का में मस्जिद अल-हरम से मस्जिद अल-अक्सा तक यरूशलेम में (उनके स्वर्गारोहण की शुरुआत), कुरान निष्कर्ष देता है: निस्संदेह वह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है। निस्संदेह वह है में सर्वनाम वह, जो संकेत करता है स्वर्गारोहण के सबसे दूर के बिंदु तक जो ऊपर 53:4-18 में इंगित किया गया है, या तो सर्वशक्तिमान ईश्वर को संदर्भित करता है या पैगम्बर.

यदि यह पैगम्बर से संबंधित है, तो नियमों के अनुसार
भाषा और कविता के पूर्ववर्ती भाग का,
इसका अर्थ है: यह विशेष यात्रा वास्तव में व्यापक है। यह एक सार्वभौमिक उत्थान का प्रतीक है
इस दौरान पैगम्बर ने सभी बातें सुनीं और देखीं
प्रभु के संकेत और दिव्य कला के चमत्कार जिन्होंने आकर्षित किया
ईश्वरीय कृपा से उसकी दृष्टि और कान में शांति आई
सार्वभौमिक डिग्री में नामों की अभिव्यक्तियाँ जहाँ तक
सबसे दूर की सीमा का लोटे- वृक्ष और दूरी
दो धनुष की लंबाई। इस प्रकार, इसके निर्णायक वाक्यांश के माध्यम से,
कविता उस विशेष यात्रा को कुंजी के रूप में वर्णित करती है
एक (उच्च) यात्रा का उद्घाटन [या द्वार खुला]
यह सार्वभौमिक है और असाधारण घटनाओं से भरा है।

यदि यह सर्वनाम सर्वशक्तिमान ईश्वर को संदर्भित करता है, तो इसका अर्थ है:
परमेश्वर ने अपने सेवक को अपनी उपस्थिति की यात्रा पर बुलाया
और उसे भेजकर एक कर्तव्य सौंपा
मस्जिद अल-हरम से मस्जिद अल-अक्सा तक'
(जहाँ पैगम्बर एकत्रित हुए थे) वहाँ उनकी मुलाकात हुई
उनके साथ मिलकर उन्होंने दिखाया कि वे सभी पैगम्बरों के धर्म के सिद्धांतों के पूर्ण, निर्विवाद उत्तराधिकारी हैं। फिर ईश्वर ने उन्हें बाहरी दोनों ही माध्यमों से आगे बढ़ाया।
और उसके प्रभुत्व के आंतरिक आयाम जहाँ तक

सबसे दूर की सीमा का लोटे-ट्री और दो की दूरी
धनुष की लम्बाई.

हम जानते हैं कि वह एक सेवक था और उसका स्वर्गारोहण एक विशेष घटना थी।

हालाँकि, चूँकि वह

पूरे ब्रह्मांड से जुड़ा एक भरोसा दिया गया,
एक ऐसा प्रकाश दिया गया जो ब्रह्मांड को बदल देगा
रंग, और एक कुंजी भी थी जो अनन्त खुशी का द्वार खोलती है, सर्वशक्तिमान ईश्वर
खुद का वर्णन इस प्रकार करते हैं
वह जो सब कुछ सुनता और देखता है, ताकि उसका
विश्वास, प्रकाश और कुंजी शक्ति में विश्वव्यापी, व्यापक और सर्वव्यापी ज्ञान

अवलोकन किया जाए और समझा जाए।

स्वर्गारोहण में निहित यह महान सत्य
चार सिद्धांतों के तहत निपटा जाएगा:
आरोहण आवश्यक है, इसकी वास्तविकता क्या है, इसका क्या अर्थ है?
बुद्धि क्या है, और इसके फल और लाभ क्या हैं?

चार सिद्धांत

पहला सिद्धांत:
स्वर्गारोहण क्यों आवश्यक था?

प्रश्न: सर्वशक्तिमान ईश्वर मनुष्य से भी अधिक निकट है।
किसी की गले की नस, खुद से ज्यादा हर चीज के करीब,
और भौतिकता और स्थान से पूरी तरह मुक्त। इसलिए, जबकि सभी संत अपने
भीतर उनसे बातचीत कर सकते हैं
दिलों में, मुहम्मद को संत क्यों माना गया?
लंबी यात्रा (आरोहण) करने के लिए बात करने के लिए
ईश्वर?

उत्तर: हम इस गहन रहस्य पर चर्चा करेंगे
द ट्वेल्थ वर्ड से दो तुलनाओं के माध्यम से, जो

कुरान की चमत्कारिकता के रहस्य से संबंधित
और स्वर्गारोहण का।

पहली तुलना: एक राजा के पास दो प्रकार के गुण होते हैं
बातचीत और साक्षात्कार, और इसके दो तरीके हैं
संबोधन और अनुग्रह का। एक यह है कि वह बातचीत करता है
किसी सामान्य व्यक्ति या नागरिक से किसी विशेष मामले या विशेष आवश्यकता के बारे में
निजी फोन पर बात करना। दूसरा सर्वोच्च संप्रभुता के शीर्षक के तहत है,

सर्वोच्च राजत्व के नाम पर और
देश पर शासन करने के साथ-साथ अपने आदेशों को प्रकाशित और प्रचारित करने के लिए, वह अपने एक मित्र से बातचीत करता है।
उन मामलों से जुड़े दूत या उनमें से किसी एक के साथ
उसके उच्च अधिकारी उन आदेशों से संबंधित थे, या बोलते थे
एक शानदार शाही फरमान के माध्यम से उसकी महिमा को दर्शाया गया।

जैसा कि तुलना में कहा गया है, इस ब्रह्मांड के निर्माता,
बाह्य और आंतरिक अस्तित्व का स्वामी
आयाम, और अनंत काल के भगवान के दो प्रकार हैं
बातचीत करने और बोलने के दो तरीके और
पक्षपात करना। एक विशेष और निजी है; दूसरा
सार्वभौमिक और सामान्य। स्वर्गारोहण मुहम्मद की संतत्व को एक ऐसे रूप में दर्शाता है जो उससे कहीं अधिक सार्वभौमिक है, और
अन्य सभी संतत्वों से कहीं अधिक श्रेष्ठ। यह पैगंबर का वार्तालाप और प्रत्यक्ष सम्मान है

सर्वशक्तिमान परमेश्वर को उनके नाम प्रभु के माध्यम से संबोधित करना
ब्रह्माण्ड के निर्माता और अस्तित्व के निर्माता की उनकी उपाधि।

दूसरी तुलना: एक व्यक्ति दर्पण ऊपर उठाए हुए है
सूर्य की ओर। अपनी क्षमता के अनुसार, दर्पण
सूर्य की सप्तरंगी किरणों से जो मिल सकता है, वह प्राप्त करता है
प्रकाश। उस व्यक्ति का सूर्य के साथ संबंध है
दर्पण और उसकी प्रतिबिंबित करने की क्षमता के अनुसार
सूरज। अगर वह दर्पण के चमकते हुए भाग की ओर निर्देशित करता है
अपने अँधेरे घर या छोटे, निजी और
छत से ढके बगीचे में, वह केवल दर्पण की क्षमता के अनुसार ही लाभ उठा सकता है, अनुपात में नहीं
सूर्य के मूल्य के लिए.

दूसरा व्यक्ति शीशा नीचे रखता है और सीधे सूर्य की ओर देखते हुए उसकी भव्यता को देखता है और उसकी महानता को समझता है। फिर वह एक बहुत ऊंचे स्थान पर चढ़ता है।
ऊंचे पहाड़ पर स्थित है और बिना किसी पर्दे के सूर्य की ओर मुख करके, इसके विस्तृत प्रभुत्व की महिमा का साक्षी है।
पीछे, यह व्यक्ति सीधा संपर्क बनाने की कोशिश करता है
अपने घर या बगीचे की छत पर बड़ी खिड़कियाँ बनाकर सूर्य की निरंतर रोशनी प्राप्त करता है, और
सूर्य से सीधे लाभ पाने के अन्य साधन।
इसका सामना करते हुए, वह व्यक्ति ऋणी होकर कह सकता है: “हे
मिलनसार सूर्य, दुनिया की सुंदरता और सभी का प्रिय
आकाश, जो पृथ्वी के चेहरे को प्रकाश से चमकाता है और उसे बनाता है
और सभी फूल खुशी और आनंद में मुस्कुराएँ! आप
मेरे घर और बगीचे को रोशन और गर्म किया है,
जैसे आप दुनिया को रोशन करते हैं और पृथ्वी के चेहरे को गर्म करते हैं।

पहला व्यक्ति ऐसा नहीं कह सकता, क्योंकि उसके दर्पण में सूर्य का प्रतिबिंब दर्पण के केंद्र तक ही सीमित है।

क्षमता।

इसी प्रकार, वह एकल, सभी का सदा-प्रार्थना-योग्य,
जो अनादि सूर्य और समस्त पृथ्वी का स्वामी है।
अनंत काल, स्वयं को आध्यात्मिक प्रकृति में प्रकट करता है
मानवता दो रूपों में है जिसमें असंख्य तत्व समाहित हैं
डिग्री। पहली अभिव्यक्ति हृदय में होती है
प्रभु के साथ अपने रिश्ते को प्रतिबिंबित करें।
हर किसी को शाश्वत की अभिव्यक्ति प्राप्त हो सकती है
सूर्य का प्रकाश और कुछ अंशों में वार्तालाप
उनकी क्षमता, उनके चरित्र के अनुसार
संतत्व की ओर आध्यात्मिक यात्रा, और दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों को प्राप्त करने की उनकी क्षमता और
गुण। परिणामस्वरूप, संतत्व में असंख्य डिग्रीयां होती हैं और यह किसी विशेष नाम या गुण की छाया में यात्रा करने से प्राप्त होता है।

दूसरा यह कि चूँकि हमारा स्वभाव व्यापक है और हम संसार के सबसे प्रबुद्ध फल हैं,
सृष्टि के वृक्ष पर, हम सभी दिव्य नामों को प्रतिबिंबित कर सकते हैं
हमारी आत्माओं के दर्पण में। इस प्रकार सर्वशक्तिमान ईश्वर स्वयं को और अपने सभी सुंदर नामों को सबसे अधिक मानवकृत करता है
मानवता के सर्वोत्तम प्रतिनिधि के रूप में व्यापक रूप से।
इस प्रकार की अभिव्यक्ति मुहम्मद के स्वर्गारोहण के दौरान हुई, जिसमें उनके संतत्व को बल मिला।

इसका अर्थ यह हुआ कि यह संदेशवाहक बनने का पहला चरण बन गया।

संतत्व में व्यक्ति के हृदय और आत्मा के बीच परदे होते हैं।

दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ, जैसा कि

उपरोक्त दूसरी तुलना में पहला व्यक्ति।

पैगम्बरी में कोई पर्दा नहीं होता, जैसा कि पैगंबर मुहम्मद के मामले में है।

दूसरी तुलना में दूसरा व्यक्ति, क्योंकि यह है

यह सीधे तौर पर एक ही सत्ता में अपने सभी नामों के साथ उस महान् सत्ता के

प्रकटीकरण से जुड़ा है। चूँकि

पैगम्बर का स्वर्गारोहण सबसे बड़ा आश्चर्य था

यह उनके संतत्व का प्रतीक था और इसकी अंतिम और महानतम स्थिति थी, इसे संदेशवाहकत्व में परिवर्तित कर दिया गया।

अपने आंतरिक पहलू में, स्वर्गारोहण संतत्व का प्रतीक है तथा यह सृजित से सृजनकर्ता की ओर की यात्रा है।

अपने प्रत्यक्ष पहलू में, यह संदेशवाहक है और सृष्टिकर्ता से सृजित की ओर वापसी का प्रतीक है।298

संतत्व ईश्वर के करीब पहुंचने की यात्रा है। इसके लिए ईश्वर की प्राप्ति की आवश्यकता होती है।

कई रैंक और इसलिए एक लंबा समय लगता है। दूत-जहाज, जिसका प्रकाश सबसे बड़ा है, वास्तविक से आगे बढ़ता है-

---

[298] दूसरे शब्दों में, स्वर्गारोहण का आंतरिक पहलू संतत्व का प्रतीक है और इसका अर्थ है आध्यात्मिक प्रगति या ईश्वर की ओर यात्रा।

अपने प्रत्यक्ष या बाह्य पहलू में, यह बैठक से वापसी है

ईश्वर के साथ उनका संदेश (मैसेन-जरशिप) पहुँचाने के मिशन के साथ। यह आपकी पढ़ाई खत्म करने और फिर शुरू करने जैसा है

सिखाना. (ट्र.)

ईश्वरीय निकटता का एहसास - ईश्वर द्वारा एक को चुनना और उसे व्यक्तिगत रूप से अपने करीब बनाना—उसकी सारी व्यापकता। यह एक पल में होता है, जो परंपरा के अनुसार: "स्वर्गारोहण हुआ एक पल में। पैगंबर गए और वापस आ गए उसी क्षण।"

यहाँ हमें अविश्वासी से कहना चाहिए:

चूँकि यह ब्रह्माण्ड एक अत्यन्त व्यवस्थित देश जैसा है,
भव्य शहर हो या सुसज्जित महल, उसका एक शासक अवश्य होना चाहिए,
मालिक, और बिल्डर। वहाँ इतना शानदार है,
राजसी स्वामी, सर्वसिद्ध शासक, सर्वकृपालु निर्माता।
एक ऐसा व्यक्ति भी है जिसका दृष्टिकोण सार्वभौमिक है,
उस पूरे देश, शहर या महल के साथ संबंध
और अपनी इंद्रियों, भावनाओं और क्षमताओं के माध्यम से प्रत्येक से जुड़ा हुआ है। यह देखते हुए, शानदार निर्माता
पूर्णतः उत्कृष्ट संबंध होगा
उस आदमी के साथ, जिसके पास एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण और व्यापक चेतना है, और वह उसका पक्ष लेगा
पवित्र पता.

इस रिश्ते से सम्मानित लोगों में, पैगम्बर मुहम्मद ने इस रिश्ते को पूरी तरह से प्रदर्शित किया
डिग्री। उनकी उपलब्धियां खुद ही बोलती हैं: दुनिया का आधा हिस्सा और मानवता का पांचवां हिस्सा गरीबी रेखा के नीचे है
उन्होंने अपने नियंत्रण और प्रभाव से ब्रह्मांड को एक नया आध्यात्मिक रूप देकर और उसे सुसज्जित करके प्रबुद्ध किया।
इसका एक उदात्त अर्थ है। आरोहण, पूर्णतम
उस रिश्ते की डिग्री, सबसे अधिक हकदार है और
उसके लिए उपयुक्त है.

दूसरा सिद्धांत:
स्वर्गारोहण की वास्तविकता क्या है?

उत्तर: यह पैगम्बर मुहम्मद की यात्रा है
पूर्णता की डिग्री के माध्यम से। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने
प्राणियों की व्यवस्था और स्वभाव में प्रकट विभिन्न नाम और उपाधियाँ, और
प्रदर्शित करता है
उनके आधिपत्य के विविध कार्य-उनका पालन-पोषण,
प्रशिक्षण, निरंतरता और प्रदान करना - के परिणामस्वरूप
आविष्कार करने और अपने पूर्ण अधिकार का प्रयोग करने में
"स्वर्ग" के स्तरों में प्राणियों का प्रशासन करना जहाँ वह विभिन्न तरीकों से अपने
प्रभुत्व को कार्यान्वित करता है
तरीकों और प्रत्येक स्तर की शर्तों के अनुसार।

अपने प्रभु के कार्यों को अपने विशेष लोगों को दिखाने के लिए
सेवक और इस प्रकार उसे सभी को शामिल करने में सक्षम बनाता है
मानव पूर्णता, सभी दिव्य अभिव्यक्तियों को प्राप्त करें, ब्रह्मांड के सभी स्तरों को
देखें, उसकी घोषणा करें
प्रभुता की संप्रभुता, उसकी स्वीकृति की घोषणा करो
सृष्टि के रहस्यपूर्ण अर्थ को उजागर करते हुए, ईश्वर
सर्वशक्तिमान ने उसे बुराक पर सवार किया। ईश्वर ने उसे उठाया
बिजली की तरह आकाश के माध्यम से, उसे बढ़ावा दिया
उच्च रैंक तक, और दिव्य प्रभुत्व प्रदर्शित किया
उसे एक हवेली से दूसरी हवेली और एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में ले जाया गया
उसने उसे अपने भाई पैगम्बर भी दिखाए, जिनके निवास उन लोकों के स्वर्गों में
हैं,
एक के बाद एक। अंत में उसने उसे पद पर उठा लिया-

दो धनुष की लंबाई की दूरी का सम्मान और
उनके सभी नामों की विशेष अभिव्यक्ति के साथ
पूरी तरह से, अपने भाषण के साथ, और
स्वयं का दर्शन.

हम इस उदात्त सत्य की जांच दो तरीकों से कर सकते हैं
तुलना.

पहली तुलना: जैसा कि चौबीसवें वचन में बताया गया है, एक राजा के पास अपनी सरकार के विभागों, नामों और विशेषताओं में उसकी प्रजा के वर्गों की तुलना में अलग-अलग उपाधियाँ, पदनाम और चिह्न होते हैं

अपने शासन के क्षेत्रों और कार्यालयों में (जैसे, न्यायपूर्ण शासक)
न्याय विभाग, सिविल सेवा में संप्रभु, सेना में कमांडर-इन-चीफ, मुख्य शिक्षक

शिक्षा विभाग में) उसके पास एक सीट या एक
प्रत्येक क्षेत्र और विभाग में अध्यक्ष, जिसके पास
सिंहासन का अर्थ। एक राजा के पास 1,000 सिंहासन हो सकते हैं।
उसकी संप्रभुता के क्षेत्रों में नाम और उपाधियाँ और उसके
सरकार के विभागों के साथ-साथ 1,000 सिंहासन
एक दूसरे के भीतर या समीप स्थित संप्रभुता का।

ऐसा लगता है मानो राजा वहाँ मौजूद हो और जानता हो कि क्या हो रहा है।
उनके सामूहिक प्रयास से हर क्षेत्र में काम हो रहा है
व्यक्तित्व और फ़ोन। वह प्रत्येक में देखता है और देखा जाता है
अपने कानूनों, विनियमों और प्रतिनिधियों के माध्यम से विभाग का प्रबंधन करता है। वह
प्रशासन करता है और निरीक्षण करता है

अपने शासन के माध्यम से प्रत्येक स्तर पर पर्दे के पीछे, ज्ञान-

बढ़त, और शक्ति। प्रत्येक क्षेत्र में उसका एक अलग केंद्र और मुख्यालय है। प्रत्येक क्षेत्र और विभाग के अलग-अलग नियम हैं। राजा एक को नियुक्त करता है

अपने विषयों के बारे में, उसे उन सभी क्षेत्रों को दिखाता है और
विभागों, और उसे अपने शाही गवाह बनाता है
प्रत्येक के लिए अद्वितीय प्रभुत्व और आदेश। फिर उसने
उसे अपने समक्ष लाता है, उसे कुछ निश्चित कार्य सौंपता है
सभी से संबंधित सामान्य और सार्वभौमिक आदेश
क्षेत्रों और विभागों, और उसे वापस भेज देता है।

इसी प्रकार, सारे संसार के स्वामी, प्रभु!
अनंत काल के, उनके प्रभुत्व के स्तरों में विशेषताएँ और गुण हैं जो भिन्न हैं और फिर भी एक दूसरे से संबंधित हैं
अन्य, उनके दिव्यता के क्षेत्रों में नाम और संकेत
भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन एक दूसरे के भीतर दिखाई देते हैं, और उनकी राजसी कार्य करने में अभिव्यक्तियाँ और प्रेरणाएँ
ऐसे कार्य जो भिन्न हैं लेकिन एक दूसरे से मिलते जुलते हैं।
उनकी शक्ति के निष्पादन में शीर्षक जो भिन्न हैं लेकिन संकेत देते हैं
एक दूसरे से, उनके गुणों के प्रकटीकरण में पवित्र रहस्योद्घाटन जो भिन्न हैं फिर भी एक दूसरे की ओर इशारा करते हैं; उनके कार्यों की अभिव्यक्ति में संचालन जो भिन्न हैं लेकिन

एक दूसरे के पूरक हैं, और उनके राजसी पहलू
उनकी रंगीन कला और बहुरंगी प्राणियों में प्रभुत्व जो भिन्न होते हुए भी एक दूसरे का अवलोकन करते हैं।

उन्होंने ब्रह्माण्ड को अद्भुत ढंग से व्यवस्थित किया
इस रहस्यमय वास्तविकता के कारण अद्भुत फैशन-

ब्रह्माण्ड में अलग-अलग संरचनाएँ हैं

दूसरा, कणों से आकाश तक,
स्वर्ग के प्रथम स्तर से परमेश्वर के महानतम सिंहासन तक। प्रत्येक

स्वर्ग एक अलग दुनिया की छत है, एक कुर्सी

दिव्य प्रभुता का प्रयोग, दिव्य कार्यों का केंद्र। उनकी पूर्ण एकता के कारण, सभी दिव्य नाम

सभी क्षेत्रों और स्तरों में पाया जा सकता है, और वह
अपने सभी शीर्षकों के साथ स्वयं को दिखाएं।

हालाँकि, जिस प्रकार न्यायप्रिय शासक की उपाधि

तुलना में राजा हावी है

न्याय विभाग और अन्य अधीनस्थ हैं,

प्राणियों के प्रत्येक स्तर पर और प्रत्येक स्वर्ग में, एक दिव्य उपाधि हावी होती है और अन्य अधीनस्थ होती हैं

उदाहरण के लिए, जिस भी स्वर्ग में पैगम्बर मुहम्मद की मुलाकात पैगम्बर ईसा से हुई, जो कि एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे।
दिव्य नाम के प्रकटीकरण के साथ ही सर्वव्यापी

शक्तिशाली, सर्वशक्तिमान ईश्वर उस स्वर्ग में निरंतर प्रकट होते हैं, मुख्यतः उसी नाम से।

पुनः, स्वर्ग के क्षेत्र में जो कि
पैगंबर मूसा का निवास, वक्ता के रूप में भगवान की उपाधि,
जो उसने मूसा को प्रतिष्ठित किया, वह प्रमुख है।

अंत में, पैगम्बर मुहम्मद को ईश्वर के महानतम नाम के प्रकटीकरण से सम्मानित किया गया

और उसके सभी अन्य नामों के साथ-साथ उसे एक दिया गया है
सार्वभौमिक पैगम्बरत्व—से जुड़ा होना चाहिए

उनके आधिपत्य के सभी क्षेत्र। साथ ही, आरोही का
वास्तविकता यह है कि पैगम्बर मुहम्मद को उनसे मिलना था।
वे पैगम्बर जिनके आसन उन क्षेत्रों में हैं और
उन सभी स्तरों के माध्यम से.

दूसरी तुलना: सेनापति का पद, जो एक राजा का पद है, सेना के सम्पूर्ण स्वरूप में देखा जाता है।
रैंक। एक निजी अपने कॉर्पोरल को एक नमूने के रूप में देखता है
वह उस प्रभावशाली उपाधि को मानता है, और इसलिए उसकी बात सुनता है और उसका पालन करता है।
एक कॉर्पोरल अपने सार्जेंट को उसी तरह देखता है, और
इसलिए वह उसकी आज्ञा का पालन करता है। एक सार्जेंट अपने लेफ्टिनेंट को देखता है
उसी तरह, और इसी तरह। वह प्रत्येक में शीर्षक देखेगा
क्षेत्र के आकार के अनुपात में क्षेत्र (जैसे, कप्तान, मेजर, कर्नल, जनरल और फील्ड मार्शल) का चयन करें।

यदि सेनापति किसी सैनिक को यह दायित्व सौंपता है कि
सभी सैन्य रैंकों से जुड़ा कर्तव्य, या देता है
उसे एक ऐसा पद दिया गया जिससे वह हर कार्यालय में उपस्थित हो सके
और इसे एक इंस्पेक्टर की तरह नियंत्रित करना चाहिए, सैनिक को
आवश्यक ज्ञान दिया जाए और मान्यता दी जाए
कर्मियों द्वारा। इस प्रकार कमांडर-इन-चीफ
उसके लिए अध्ययन और निरीक्षण दौरे की व्यवस्था करता है
सभी रैंकों के सैनिक को कमांडर-इन-चीफ की मौजूदगी में प्रवेश दिया जाएगा।

एक निजी बातचीत, एक सजावट प्राप्त करें और
आदेश जारी किया जाए और उसे वहीं वापस भेज दिया जाए जहां से वह आया था।

निम्नलिखित बिन्दु पर ध्यान देना आवश्यक है: यदि राजा के पास अपनी राजनीतिक शक्ति के अतिरिक्त आध्यात्मिक, संत-शक्ति भी है, तो वह अपने कार्य के लिए दूसरों को नियुक्त नहीं करेगा।
अलग-अलग कार्यालयों में नाम दर्ज होगा। बल्कि, वह मौजूद रहेगा
हर जगह व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर और निश्चित रैंक के व्यक्तियों के रूप में प्रकट होकर सीधे आदेश देते हैं। वास्तव में, वहाँ
ये उन राजाओं की कथाएं हैं जो संतत्व के उच्चतम स्तर तक पहुंचे और इस प्रकार उन्होंने कई क्षेत्रों में अपना शासन चलाया
कुछ व्यक्तियों के रूप में। दूसरे शब्दों में, चूँकि
सेनापति शक्तिशाली है, फरमान और
हर कार्यालय में सीधे उन्हीं से आदेश आते हैं
और उसके आदेश, इच्छा और
शक्ति।

स्वर्ग और पृथ्वी का शासक, पूर्ण प्रभु और अनंत काल का स्वामी जिसके पास "हो जाओ" का आदेश है और वह है, उसके पास प्रभुत्व का एक क्षेत्र है,

प्राणियों के स्तरों में शासन का एक स्तर और
कणों से लेकर ग्रहों तक के विभिन्न वर्ग,
मक्खियों से लेकर आकाश तक, जो सभी भिन्न हैं लेकिन हैं
एक दूसरे से संबंधित। प्रत्येक क्षेत्र में, उनके नियम,
क़ानून और आदेशों का पूरी तरह से पालन किया जाता है
आदेश और आज्ञाकारिता। इस प्रकार समझने के लिए
इस ब्रह्मांड के ऊंचे लक्ष्य और जबरदस्त परिणाम,
प्रत्येक स्तर और वर्ग के लिए विशेष पूजा के कर्तव्यों का साक्षी बनें, उनमें से एक की संप्रभुता का पालन करें

महानता के प्रभुत्व और उसके शासन की महिमा को समझो, समझो कि उसे क्या पसंद है, और उसके संदेशवाहक बनो
संप्रभुता के लिए, व्यक्ति को सभी स्तरों से होकर गुजरना होगा और
उसके शासन के क्षेत्र सर्वोच्च तक पहुँचने तक
सिंहासन (सबसे महान, सर्वव्यापी का शीर्षक
क्षेत्र) और उस अंतिम पद को प्राप्त करना जिस तक एक सेवक पहुंच सकता है (जिसे दो धनुषों की दूरी कहा जाता है)
लंबाई), और महिमा और अनुग्रह के एक से मिलो।
यह स्वर्गारोहण की वास्तविकता है।

जैसे आम लोग अपने मन में यात्रा करते हैं
कल्पना की गति और उनकी यात्रा
दिल बिजली की गति से घूमते हैं, स्वर्गदूत (जिनके शरीर प्रकाश के हैं)
आत्मा की गति से घूमते हैं
भगवान के सिंहासन को फिर से धरती पर वापस लाएं। पैराडाइस के लोग सभा स्थल से पैराडाइस तक 500 साल की दूरी तय करेंगे 299

बुराक का भी यही हाल है। इसी तरह पैगम्बर मुहम्मद का शरीर भी बुराक का ही है। जहाँ तक हो सके, उसकी यात्रा में उसकी उन्नत आत्मा का साथ दें
भगवान के सिंहासन के रूप में। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसके शरीर में
उसकी आत्मा की क्षमताएँ और उसके कर्तव्यों को पूरा करने के साधन, और क्योंकि उसकी आत्मा शुद्ध प्रकाश है,
प्रकाश की क्षमताएं हैं, और यह प्रकाश से अधिक परिष्कृत है
संतों के हृदय, मृतकों की आत्माओं से हल्के होते हैं और

[299] यह दूरी सामान्यतः पैदल 500 वर्षों में तय की जाती है।

स्वर्गदूतों के रूप, और प्राणियों की ऊर्जावान से भी बेहतर
लिफाफे.

अब हम उस अविश्वासी से कहते हैं जो विश्वास नहीं करता
ईश्वर को पहचानें या पैगम्बर को जानें, और ऐसा ही
स्वर्गारोहण में विश्वास नहीं: ब्रह्मांड और सब कुछ
इसके जीवों और विविध कार्यों का अस्तित्व है, और इसमें निरंतर सृजन देखा जाता है। एक व्यवस्थित कार्य अवश्य होना चाहिए
एक लेखक होना चाहिए, एक सार्थक पुस्तक का एक लेखक होना चाहिए,
और एक कुशल डिजाइन के लिए एक डिजाइनर होना जरूरी है। इसलिए
ब्रह्माण्ड को भरने वाले बुद्धिमान और उद्देश्यपूर्ण कार्य अवश्य होने चाहिए
एक लेखक है, और पृथ्वी को कवर करने वाले अर्थपूर्ण अक्षर और अद्भुत शिलालेख या डिजाइन और नवीनीकृत
सीज़नली में एक लेखक और एक डिज़ाइनर होना चाहिए।

इसके अलावा, दो शासकों के हस्तक्षेप का परिणाम
वही मामला अव्यवस्था का है। लेकिन हम देख सकते हैं कि वहाँ
मक्खी के पंख से लेकर हर चीज़ में पूर्ण व्यवस्था है
आकाश का दीपक (सूर्य)। इसलिए शासक एक है, क्योंकि अगर
यह सत्य नहीं है, और यह देखते हुए कि हर चीज में दिखाई देने वाली कला और ज्ञान इतना अद्भुत और विस्मयकारी है कि उन्हें सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ की आवश्यकता है
निर्माता, वहाँ उतने ही देवता होने चाहिए जितने
वहाँ प्राणी हैं। चूँकि ऐसे देवता दोनों होंगे
एक साथ एक दूसरे के विपरीत और समान
[क्योंकि ब्रह्माण्ड में कार्य और जीव हैं
अनंत विविधताएं और फिर भी कई मायनों में एक दूसरे से मिलती जुलती

तरीके], यह अकल्पनीय है कि यह अद्भुत आदेश
परेशान नहीं होगा.

चूंकि ये प्राणी स्पष्ट रूप से आदेश द्वारा चलते हैं और सेना की तुलना में कहीं
अधिक संगठित रूप में चलते हैं,
और चूंकि प्रत्येक प्राणी समूह, स्वर्गीय से
बादाम के फूलों के लिए वस्तुओं, एक परिपूर्ण और में प्रदर्शित करता है
संगठित तरीके से और कहीं अधिक व्यवस्थित ढंग से
सेना की तुलना में, वर्दी, सजावट और अन्य
वह सनातन सर्वशक्तिमान द्वारा दिए गए सुंदर वस्त्र धारण करता है और अपनी इच्छानुसार
कार्य करता है।
उन्हें सौंपा गया है, इस ब्रह्मांड में एक पूर्ण शासक है
अदृश्य के पर्दे के पीछे, जिनके आदेश
सभी प्राणियों द्वारा उनका ध्यान रखा जाता है और उनका पालन किया जाता है।

जैसा कि उसके बुद्धिमानी भरे कार्य और राजसी कार्य गवाही देते हैं, कि
शासक एक राजसी संप्रभु है। जैसा कि उसके द्वारा दिखाया गया है
वह अत्यन्त दयालु प्रभु है।
उनकी सबसे खूबसूरत कलाकृतियाँ इस बात की गवाही देती हैं कि वे
एक निर्माता जो कला का प्रेमी है और जो अपने
अपनी कला। जैसा कि सजावट और
वह जिज्ञासा-रोमांचक कलाओं का प्रदर्शन करता है, वह एक बुद्धिमान निर्माता
है जो प्रशंसापूर्ण दृष्टि को आकर्षित करना चाहता है
सचेत प्राणियों को उनकी कलाकृतियों की ओर आकर्षित करना। जैसा कि समझा जाता है
अपने आधिपत्य की बुद्धि से, वह सूचित करना चाहता है
ब्रह्माण्ड की रचना में प्रदर्शित अद्भुत और विस्मयकारी सजावट के प्रति सचेत प्राणी

इसका क्या मतलब है, और जीव कहां से आते हैं और वे कहां हैं
इसलिए यह बुद्धिमान शासक और सर्वज्ञ है
निर्माता अपनी प्रभुता प्रदर्शित करना चाहता है।

वह स्वयं को भी ज्ञात करना चाहता है और

इन सभी निशानों के माध्यम से जागरूक प्राणियों द्वारा प्यार किया गया
अनुग्रह और दया के साथ-साथ चमत्कारों के भी
वह कला प्रदर्शित करता है। इसे देखते हुए, वह एक दूत का उपयोग करेगा
चेतन प्राणियों को बताएँ कि वह उनसे क्या चाहता है
वह जो करे और जो उसे अच्छा लगे, उसे चुनेगा। वह एक सचेत व्यक्ति को चुनेगा
उसके द्वारा उसके आधिपत्य की घोषणा करना।
उनकी पसंदीदा कला, वह एक हेराल्ड को सम्मानित करेंगे
उसकी उपस्थिति की निकटता, और उसे प्रदर्शित करने के लिए उसका उपयोग करें
उन्हें। सृष्टि के निर्माण के अपने उदात्त उद्देश्यों के बारे में चेतन प्राणियों को सूचित करके अपनी पूर्णता को प्रदर्शित करना
ब्रह्मांड में, वह उनमें से एक को शिक्षक के रूप में नियुक्त करेगा
और एक मार्गदर्शक ताकि सृष्टि का रहस्य और
अस्तित्व की पहेली निरर्थक नहीं रहती।

ताकि उनके द्वारा प्रदर्शित कला की सुन्दरता
बेकार न रह जाए, सिखाने के लिए वह एक मार्गदर्शक चुनेगा
उनमें निहित उद्देश्यों के बारे में उन्हें सूचित करना।
जो चीजें उसे प्रसन्न करती हैं, वह एक सचेत व्यक्ति का चयन करेगा
उसे सभी से ऊपर उठाएँ, और उस व्यक्ति का उपयोग दूसरों को उन चीज़ों के बारे में बताने के लिए करें। वास्तविकता और बुद्धिमत्ता के लिए इसकी आवश्यकता होती है। सबसे योग्य व्यक्ति के रूप में
ये कर्तव्य पैगंबर मुहम्मद ने निभाए थे

उन्हें पूरी तरह से, एक तथ्य सत्य और द्वारा प्रमाणित
इस्लाम की दुनिया जिसकी उन्होंने स्थापना की और इस्लाम की जो रोशनी उन्होंने
दिखाई, उसके सिर्फ गवाह बनकर ही वह
सभी प्राणियों से ऊपर उठकर पद प्राप्त करना है

के साथ एक सार्वभौमिक और उन्नत बातचीत आयोजित करने का
ब्रह्मांड के निर्माता। यह आरोही का है

वास्तविकता।

संक्षेप में, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने ही सृष्टि को बनाया, संगठित किया और
इस ब्रह्मांड को महान उद्देश्यों के लिए सजाया और
महान लक्ष्य, जैसे कि ऊपर उल्लेख किया गया है। हम कर सकते हैं
सार्वभौमिक दिव्य प्रभुत्व को उसकी सभी सूक्ष्मताओं के साथ देखें, और इस
शक्तिशाली दिव्य संप्रभुता को उसकी सभी सूक्ष्मताओं के साथ देखें
इसकी सच्चाई। इसलिए पूर्ण शासक बोलेगा
और हमें उसके उद्देश्यों के बारे में सूचित करें। लेकिन हर कोई नहीं
सर्वोच्च, सार्वभौमिक स्थिति तक पहुंच सकते हैं
शासक का सार्वभौमिक संबोधन सीधे। यह देखते हुए,
कुछ विशेष लोगों को यह दायित्व सौंपा जाएगा।
वे स्वयं मनुष्य होने के नाते अन्य मनुष्यों को शिक्षा दे सकते हैं। उन्हें आध्यात्मिक
रूप से भी अत्यंत उन्नत होना चाहिए, क्योंकि केवल ऐसे लोग ही ईश्वर की कृपा
प्राप्त कर सकते हैं।
प्रत्यक्ष पता.

जिसने ब्रह्माण्ड के उद्देश्यों को सिखाया
निर्माता ने सबसे उत्तम रूप से, ब्रह्मांड का अनावरण किया और
सृष्टि के रहस्यमय अर्थ को उजागर किया, तथा इसकी सर्वोत्तम घोषणा की
उनके प्रभुत्व के राज्य की सुन्दरता मुहम्मद थे।

आध्यात्मिक रूप से सभी से ऊपर उठने और सबसे उच्च और व्यापक पद पर पहुँचने के लिए, वह भौतिक दुनिया से यात्रा करके और फिर अपने दिव्य नामों, गुणों और कार्यों और सृष्टि के सभी स्तरों की 70,000 परतों से परे पहुँचकर आरोहण करेगा। यही आरोहण है।

प्रश्न: मैं इस पर कैसे विश्वास कर सकता हूँ? हज़ारों वर्षों की यात्रा करके उस प्रभु तक पहुँचना जो सभी चीज़ों से ज़्यादा निकट है और 70,000 पर्दों को पार करके उससे मिलना क्या मायने रखता है?

उत्तर: सर्वशक्तिमान ईश्वर स्वयं से भी अधिक प्रत्येक वस्तु के निकट है, किन्तु प्रत्येक वस्तु उससे असीम रूप से दूर है।
अगर सूरज सचेत होता और बोल सकता, तो वह आपके हाथ में एक दर्पण के ज़रिए आपसे बात करता। वह आपके साथ जो चाहे कर सकता था। हालाँकि वह आपकी आँख की पुतली से भी ज़्यादा नज़दीक है, जो एक दर्पण की तरह है, लेकिन आप उससे लाखों मील दूर हैं और उसके करीब नहीं जा सकते। अगर आप चाँद के बराबर की स्थिति में पहुँच जाएँ और उसके आमने-सामने आ जाएँ, तो आप उसके लिए सिर्फ़ एक तरह का दर्पण होंगे।

इसी तरह, वह महान्, अनंत काल का सूर्य, स्वयं से भी अधिक सब के निकट है, फिर भी सब कुछ उससे असीम रूप से दूर है। उसके साथ एक तरह की निकटता का सम्मान पाने के लिए, व्यक्ति को अस्तित्व के सभी स्तरों से गुजरना चाहिए। अस्तित्व के प्रतिबंधों से मुक्त

एक विशेष को प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को सार्वभौमिकता के हजारों आवरणों से ऊपर उठना चाहिए, उसके निकट आना चाहिए
एक दिव्य नाम जो समस्त सृष्टि को समाहित करता है, और
फिर उसके आगे कई अन्य डिग्री पार करें।

एक प्राइवेट का पद कमांडर-इन-चीफ से बहुत नीचे होता है।
वह उसे एक तुच्छ नमूने के माध्यम से देखता है
आदेश है कि वह एक कॉर्पोरल में, बहुत दूरी पर और कई पर्दों से परे देख सके।
अपनी स्थिति के करीब होने के लिए, निजी को उच्च पद पर पदोन्नत किया जाना चाहिए
और लेफ्टिनेंट, कैप्टन, मेजर के व्यापक रैंक,
और इसी तरह। हालांकि, कमांडर-इन-चीफ हमेशा अपने नियमों के माध्यम से निजी के साथ मौजूद रहता है,
यह सत्य है कि यह आज्ञाओं, ज्ञान और आदेशों का पालन करता है।
सोलहवें शब्द में इस बात पर दृढ़तापूर्वक तर्क दिया गया है।

प्रश्न: मैं स्वर्ग या स्वर्गदूतों के स्तरों पर विश्वास नहीं करता। मैं कैसे विश्वास कर सकता हूँ कि कोई स्वर्ग में यात्रा कर सकता है और स्वर्गदूतों से मिल सकता है?

उत्तर: उन लोगों को समझाना बहुत कठिन है जो
मन अपनी आँखों पर निर्भर करता है। लेकिन चूँकि सत्य यही है
इतना शानदार कि अंधे भी देख सकते हैं, हम कहते हैं
निम्नलिखित: वैज्ञानिक आम तौर पर सहमत हैं [और लगभग
200 वर्षों से यह प्रयास किया जा रहा है कि वह स्थान
"ईथर" से भरा हुआ है। जैसे सूक्ष्म और परिष्कृत मामले

प्रकाश, बिजली और गर्मी अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं
एक अधिक सूक्ष्म और परिष्कृत पदार्थ जो अंतरिक्ष को भर देता है।

जिस प्रकार फल ईश्वर के अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं,

पेड़ जो उन्हें फल देते हैं, फूल उनके फूलों की क्यारियाँ, अंकुर

उनका क्षेत्र, और मछली समुद्र, इसलिए भी सितारे प्रस्तुत करते हैं

उनके मूल का अस्तित्व मन की आंखों के लिए है।

आकाशीय क्षेत्र में विभिन्न संरचनाएं हैं

और अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग नियम लागू हैं

आकाश को उन लोगों के अस्तित्व की आवश्यकता है

नियम अलग-अलग होने चाहिए। हमारे पास अमूर्त दुनियाएँ हैं

हमारे शरीर के अंदर (जैसे, मन, हृदय, आत्मा, कल्पना और स्मृति)। निश्चित रूप से ब्रह्मांड,

वृहद मानव और वह वृक्ष जिसका फल मानवता है,

इसमें भौतिक दुनिया के अलावा अन्य दुनियाएँ भी शामिल हैं।

प्रत्येक विश्व में, चाहे वह पृथ्वी हो या परादीस, एक स्वर्ग अवश्य होता है।

जहाँ तक स्वर्गदूतों का प्रश्न है, हम कहते हैं: पृथ्वी एक मध्यम आकार की वस्तु है

वह ग्रह जो तारों के बीच महत्वहीन और घना है।

और फिर भी सबसे मूल्यवान और प्रबुद्ध चेतन

और चेतन प्राणी इस पर बहुत अधिक संख्या में नृत्य करते हुए पाए जाते हैं। इसलिए तारे, सजे हुए महल और पूरी तरह से

पृथ्वी के अंधेरे घर की तुलना में महलों का निर्माण किया,

और आकाश, जो तारों के समुद्र के समान है,

सचेत, सजीव, असंख्य और विभिन्न प्रकार के स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों का निवास।

उनतीसवाँ वचन स्वर्गदूतों के बारे में अधिक विस्तार से चर्चा करता है।

निष्कर्ष में, आकाश “ईथर” से बना है

और ऐसी सूक्ष्म और परिष्कृत सामग्री का स्रोत हैं-

प्रकाश, ऊष्मा, बिजली और गुरुत्वाकर्षण जैसे तत्व, ऊर्जा या बल। जैसा कि परंपरा में बताया गया है "स्वर्ग एक फैली हुई और संयमित लहर है," उन्हें इस तरह से बनाया गया था कि सितारे और ग्रह उनके भीतर आसानी से घूम सकें। बुद्धि और तर्क की आवश्यकता है कि सभी स्वर्ग अलग-अलग सात स्तरों से मिलकर बने होने चाहिए

राज्य और संरचनाएं, जिनमें से प्रत्येक एक दुनिया के लिए स्वर्ग है (उदाहरण के लिए, पृथ्वी की दुनिया से लेकर मध्यवर्ती दुनिया [कब्र की] और प्रतीकों या आदर्श रूपों की दुनिया, और परलोक की दुनिया तक)।

प्रश्न: हम विमान द्वारा केवल एक निश्चित ऊँचाई तक ही चढ़ सकते हैं। कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से कुछ ही मिनटों में वह दूरी कैसे तय कर सकता है जिसे तय करने में सामान्यतः हज़ारों वर्ष लगते हैं?

उत्तर: विज्ञान के अनुसार, जिसके निष्कर्षों को आप बिना किसी सवाल के स्वीकार करते हैं, पृथ्वी जैसा भारी पिंड एक मिनट में लगभग 400 मील और एक वर्ष में लगभग 200 मिलियन मील की यात्रा करता है। क्या सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो पृथ्वी को उस नियमित गति में रखता है और उसे गोफन में पत्थर की तरह घुमाता है, किसी को अपने सर्वोच्च सिंहासन तक पहुँचाने में असमर्थ हो सकता है?

क्या वह बुद्धि जो भारी पृथ्वी को ईश्वरीय प्रभुत्व (गुरुत्व) के नियम द्वारा दरवेश की तरह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगवाती है, वह किसी व्यक्ति को बिजली की तरह सर्व-दयालु भगवान के पास उठाने में असमर्थ हो सकती है?

दयालु परमेश्वर के “गुरुत्वाकर्षण” के माध्यम से सिंहासन
एक की दया और अनन्त सूर्य का आकर्षण?

प्रश्न: यदि वह ऊपर चढ़ सकता था, तो उसने ऐसा क्यों किया?
उसे ऐसा क्यों करना चाहिए? क्या यह उसके लिए पर्याप्त नहीं होता
क्या वह पवित्र लोगों के समान हृदय और आत्मा में ऊपर उठ सकता है?

उत्तर: राजसी निर्माता दिखाना चाहता है
उसके आन्तरिक और बाह्य क्षेत्र में उसके अद्भुत चिन्ह
आयाम, इस दुनिया की कार्यशालाओं और स्रोतों को बनाएं
हमारे कर्मों का पालन किया जाता है, तथा परलोक से संबंधित उनके परिणाम
प्रदर्शित किए जाते हैं। इसे देखते हुए, तथा आवश्यकतानुसार
तर्क और बुद्धि से, वह मुहम्मद को ले जाएगा
अपनी आँखों से अपने सर्वोच्च सिंहासन की ओर (कुंजी)
दृश्यमान वस्तुओं की दुनिया), कान (जो उसकी अनुभूति करते थे
ध्वनि और आवाज़ की दुनिया में संकेत), और उसका संपूर्ण
धन्य शरीर, जो उसकी आत्मा की मशीन की तरह है।
विभिन्न सदस्यों और घटकों से मिलकर बना,
इसने उन्हें अपने अनगिनत कर्तव्यों को निभाने में सक्षम बनाया।
जैसे दिव्य बुद्धि शरीर को साथ ले जाती है
स्वर्ग में आत्मा, क्योंकि शरीर पूजा के कई कर्तव्यों को पूरा करने और असंख्य
सुखों और दर्द का अनुभव करने में सक्षम बनाता है, यह भी

वह शुद्ध ज्ञान है कि वह मुहम्मद को
धन्य शरीर उसकी आत्मा के साथ ऊपर चढ़ने में
सबसे दूर की सीमा का लोटे-वृक्ष, का “तना”
निवास का उद्यान.

प्रश्न: तर्क के नाम पर, कैसे
वह दूरी जिसे तय करने में सामान्यतः हजारों वर्ष लगते हैं
क्या यह कवर कुछ ही मिनटों में पूरा हो जाएगा?

उत्तर: सर्वशक्तिमान निर्माता की कला में, गतियाँ
अनंत रूप से भिन्न डिग्री हैं। उदाहरण के लिए, बिजली, आत्मा, कल्पना और
ध्वनि एक दूसरे से काफी अलग हैं। इसके अलावा, विज्ञान ने स्थापित किया है

ग्रहों की गति की गति आश्चर्यजनक रूप से भिन्न है। तो यह अनुचित क्यों होना
चाहिए
मुहम्मद के भौतिक शरीर ने एक प्रकार का
परिष्कार, स्वर्गारोहण में उनकी आत्मा के साथ था,
और उसकी गति से आगे बढ़े? कभी-कभी आप सोते हैं
10 मिनट में एक साल का अनुभव प्राप्त करें।
यदि स्वप्न में बोले गए और सुने गए शब्द स्थायी हों
यदि केवल एक मिनट में जानकारी एकत्र की जाती, तो इसमें एक दिन लग जाता
और जागते हुए भी उन्हें बोलने या सुनने में अधिक समय लगता है।
इस प्रकार एक समय अवधि का अर्थ है एक दिन
और दूसरे के लिए एक वर्ष।

इस सादृश्य पर विचार करें: Aclock गति को मापता है
किसी व्यक्ति का, तोप का गोला, ध्वनि, प्रकाश, बिजली,
आत्मा और कल्पना को दिखाने के लिए इसमें 10 हाथ हैं
घंटे, मिनट और सेकंड को अंशों तक घटाया जा सकता है
घंटे की दसवीं शक्ति। इसमें 10 वृत्त भी हैं, एक
दूसरे के चारों ओर और उससे 60 गुना बड़ा, क्रमशः। यदि घंटे वाली सुई वाला
वृत्त आकार का है

एक सामान्य घड़ी में, घंटे के अंश वाली सुई का दसवाँ घात वाला वृत्त होना चाहिए

पृथ्वी की वार्षिक कक्षा के आकार से अधिक या उससे भी अधिक।

मान लीजिए दो लोग हैं। एक व्यक्ति एक कुर्सी पर बैठा है।
घंटे की सुई को देखता है और उसकी गति के अनुसार निरीक्षण करता है,
जबकि दूसरा हाथ अंशों को दर्शा रहा है
एक घंटे से दसवीं शक्ति तक। यह एक बहुत बड़ा होगा
अंतर, एक सामान्य घड़ी और पृथ्वी की वार्षिक कक्षा के बीच के अनुपात जितना बड़ा है,

वे उसी समयावधि के दौरान क्या देख सकते थे।

चूँकि समय एक पहलू या एक "रिबन" की तरह है
गति, एक नियम जो गति में लागू होता है वह भी गति में होता है
समय के साथ बल। जबकि हम उतनी ही मात्रा में देखेंगे
एक घंटे के दौरान चीजों की एक के रूप में एक पर मुहिम शुरू की
घंटे की सुई, जो सबसे छोटे वृत्त में घूमती है
सबसे धीमी गति, ईश्वर का दूत, जैसे कि हाथ पर लगा हुआ जो घंटे के अंशों को दर्शाता है

दसवीं शक्ति, दिव्य सहायता के पर्वत पर पहुँचती है
और, एक ही समय अंतराल में, संपूर्ण यात्रा करता है
आकस्मिकता का क्षेत्र बिजली की तरह चमकता है। आकस्मिक अस्तित्व के आंतरिक
और बाह्य आयामों में चमत्कारों को देखना और दिव्य क्षेत्र तक ऊपर उठना

सीमाओं, उसे दिव्य वार्तालाप से सम्मानित किया जाता है और
उसकी सुन्दरता का दर्शन, आदेश प्राप्त करता है, और लौटता है
अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित। उसके लिए ऐसा करना संभव था, और

उसने ऐसा किया। [यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि भगवान के पास कुछ भी नहीं है
भौतिकता से संबंधित है और पूरी तरह से अप्रबंधित है
समय और स्थान के द्वारा। इसलिए, इन सभी उदाहरणों और तुलनाओं का उद्देश्य एक
बहुत ही सूक्ष्म बात को स्पष्ट करना है
मानव मस्तिष्क द्वारा समझने योग्य।]

प्रश्न: अगर यह संभव भी हो, तो भी हर संभव चीज घटित नहीं होती। क्या ऐसा
कुछ है जो समान हो?
हम किसी अनोखी चीज़ के घटित होने को सिर्फ़ इसलिए कैसे स्वीकार कर सकते हैं
क्योंकि वह संभव है?

उत्तर: ऐसे अनगिनत मामले हैं।
उदाहरण के लिए, अच्छी दृष्टि वाले लोग ऊपर चढ़ सकते हैं
खगोलविद एक सेकंड में नेपच्यून पर अपनी नज़र रख सकते हैं।
खगोल विज्ञान के नियमों को अपने मन में बैठा लें और
एक मिनट में सितारों से परे यात्रा करें। आस्तिक ऐसा कर सकते हैं
पूर्व-निर्धारित प्रार्थनाओं के कार्यों और स्तंभों पर विचार करते हुए आगे बढ़ें और ब्रह्मांड
को पीछे छोड़ दें
एक प्रकार के उत्थान के माध्यम से, दिव्य तक जाएँ
उपस्थिति। सिद्ध संत आध्यात्मिक यात्रा कर सकते हैं और आध्यात्मिक क्षेत्रों से परे यात्रा
कर सकते हैं
40 दिनों में ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन और उनके नामों और गुणों का वर्णन किया गया
है। अब्दुल कादिर अल जिलानी और इमाम रब्बानी जैसे लोगों ने सच्चाई से बताया कि
वे
आध्यात्मिक रूप से दिव्य सिंहासन तक चढ़ने के लिए उपयोग किया जाता है
एक मिनट में.

देवदूत, जिनके शरीर प्रकाशमय हैं, आते हैं और जाते हैं
ज़मीन और दिव्य सिंहासन के बीच बहुत ही
थोड़े समय के लिए। स्वर्ग के लोग स्वर्ग में चढ़ेंगे
बहुत कम समय में स्वर्ग के बागों को गैथरिंग के सर्वोच्च मैदान से प्राप्त किया गया। ऐसे कई उदाहरण दर्शाते हैं कि यह शुद्ध ज्ञान है, पूरी तरह से तर्कसंगत है, और यह निस्संदेह हुआ है। पैगंबर

मुहम्मद, सभी संतों के स्वामी, सभी विश्वासियों के नेता, स्वर्ग के सभी लोगों के मुखिया, और सभी द्वारा स्वीकार किए गए।
सभी स्वर्गदूत, यात्रा करने के लिए चढ़े (श्रेणी से परे)
संतत्व) को उनके पद के अनुरूप उपयुक्त रूप में स्वीकार किया गया।

तीसरा सिद्धांत:

आरोहण की बुद्धि क्या है?

उत्तर: यहाँ ज्ञान इतना उच्च है कि
मानव मस्तिष्क इस तक नहीं पहुंच सकता, यह इतना गहरा है कि मानव
मन इसे समझ नहीं सकता, और इतना सूक्ष्म और सूक्ष्म
कि बुद्धि इसे समझ नहीं सकती। हालाँकि, भले ही
हम इसकी बुद्धिमत्ता या वास्तविक ईश्वरीयता को नहीं जान सकते
इसके लिए कुछ संकेत हमें यह दिखाने की अनुमति देते हैं
कई उद्देश्यों का अस्तित्व। वे इस प्रकार हैं।

उनकी एकता का प्रकाश दिखाने के लिए
ब्रह्माण्ड भर में उनके सभी नामों का प्रकटीकरण, साथ ही उनकी एकता को सर्वव्यापी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

उसके कुछ या सभी नामों का केन्द्रित प्रकटीकरण

एक निश्चित बात पर, इस ब्रह्मांड के निर्माता ने एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को स्वर्गारोहण से विभूषित किया
बहुलता के क्षेत्र और भौतिकता की सबसे दूर की सीमा और शुद्ध एकता के प्रभुत्व और आध्यात्मिकता के प्रारंभिक बिंदु के बीच एक कड़ी के रूप में।

समस्त प्राणियों की ओर से उसे सम्बोधित करते हुए, उन्होंने चेतन प्राणियों के नाम से उसे समस्त दिव्य प्रयोजन समझाये तथा उसके माध्यम से उन्हें ज्ञात कराया।
उन्होंने अपनी दृष्टि से अपनी कला का निरीक्षण करना भी चाहा
दर्पणों में सौंदर्य और प्रभु की पूर्णता
अपने प्राणियों का पालन करना और उन्हें देखने के लिए प्रेरित करना

दूसरों द्वारा.

इसके अलावा, उसके कार्य इस बात की गवाही देते हैं कि निर्माता
दुनिया में अनंत सुंदरता और पूर्णता दोनों हैं
जिनमें से अधिकांश को उनके स्वयं के कारण प्यार किया जाता है। इस प्रकार

अनंत सौंदर्य और पूर्णता वाले व्यक्ति का ईश्वर के सौंदर्य और पूर्णता के प्रति असीम प्रेम होता है, एक ऐसा प्रेम जो
यह उनकी कला के कार्यों में प्रकट होता है, जिसे वह

प्रेम करता है क्योंकि वह उसमें अपनी सुन्दरता और पूर्णता देखता है
उनके कार्यों में सबसे अधिक प्रिय और श्रेष्ठ

कला के सबसे बड़े पात्र सजीव प्राणी हैं। सबसे प्यारे और श्रेष्ठ सजीव प्राणी चेतन प्राणी हैं।
उनकी व्यापकता के कारण, मानवता के बीच सबसे प्यारे चेतन प्राणी पाए जाते हैं।

प्रेम योग्य व्यक्ति वह है जिसने अपने
या उसकी क्षमता पूरी तरह से और प्रकट हुई
सभी प्राणियों में देखी जाने वाली पूर्णता के नमूने।

एक बिंदु पर और एक दर्पण में सभी प्राणियों में व्याप्त उसके प्रेम की सभी अभिव्यक्तियों को देखना, और
उसकी सुंदरता की सभी किस्मों को एक पर केंद्रित प्रदर्शित करना
व्यक्ति, प्राणियों के निर्माता ने एक व्यक्ति को चुना,
सृष्टि के वृक्ष का एक शानदार, प्रबुद्ध फल,
जिसका हृदय उस वृक्ष के बीज के समान है
आवश्यक तत्व। यह दर्शाने के लिए कि वह उनसे कितना प्रेम करता है
ब्रह्मांड के नाम पर व्यक्ति, उसने उसे आकर्षित किया
स्वर्गारोहण के माध्यम से उनकी उपस्थिति तक, जो कि
बीज (मूल) को फल से जोड़ने वाला धागा
(अंत), और उसे अपने दर्शन से सम्मानित किया
आवश्यक सौंदर्य। ताकि अन्य लोग उसका अनुकरण कर सकें
पवित्रता और उत्कृष्टता, उसने उसे अपने अनुग्रह से सम्मानित किया
वचन और उसे अपना आदेश सौंपा।

इस उत्कृष्ट ज्ञान को समझने के लिए, इस पर विचार करें
नीचे तुलना देखें.

पहली तुलना: जैसा कि ग्यारहवें अंक में बताया गया है
शब्द, विशाल खजाने वाले एक शानदार राजा की कल्पना करो
वह दुर्लभ शिल्प में अत्यधिक कुशल है, उसके पास
अनगिनत ललित कलाओं का व्यापक ज्ञान, और
अनगिनत विज्ञानों में गहराई से पारंगत है। चूँकि सुंदरता और पूर्णता वाला
कोई भी व्यक्ति देखना और विघटित करना चाहता है

इन्हें खेलकर, वह चाहता है कि हर कोई उसके प्रभुत्व को देखे
राजसी वैभव, उसकी संपत्ति की चमक, उसकी अद्भुत कला, उसकी
अद्भुत कौशल। वह अपनी सुंदरता भी देखना चाहता है-
अपनी आँखों से पूर्णता और मर्मज्ञता से
जहाँ तक बारीक, नाजुक बिंदुओं की बात है, और दृष्टि के माध्यम से
अन्य।

इसलिए वह एक भव्य, शानदार, विस्तृत महल बनवाता है। वह उसे अद्भुत तरीके से अपार्टमेंट और हवेलियों में बांटता है, उसे रत्नों से सजाता है।

अपने खजाने को संभालता है और उसे बेहतरीन और सबसे बेहतरीन चीजों से सजाता है
अपनी कला के सुंदर कार्यों से वह इसे सुसज्जित करता है
उनके ज्ञान और विज्ञान की सबसे नाजुक कृतियाँ,
इसे सजाता है और चमत्कार से इसे पूरा करता है
अपनी सीख के काम करता है। इसके बाद, वह मेजें फैलाता है
बहुत सारे उपहार और सबसे स्वादिष्ट भोजन के योग्य
प्रत्येक समूह का एक सदस्य होता है और एक भोज तैयार करता है। फिर, दिखाने के लिए
अपनी पूर्णता के कारण, वह अपने लोगों को खाने और देखने के लिए आमंत्रित करता है
महल.

वह एक प्रतिनिधि नियुक्त करता है और उसे अधिकार देता है
वह उसे अपने साथ सर्वोच्च पद पर आने के लिए आमंत्रित करता है।
सभी हवेलियों का भ्रमण करने के लिए नीचे की मंजिल से ऊपर
और एक के बाद एक या एक से ऊपर मंजिलें। उसे दिखाते हुए
क्रमिक मशीनरी, उसकी सभी कार्यशालाएँ
नीचे से आने वाली उपज के लिए अद्भुत कला और भंडारगृहों को देखकर, वह उसे
अपने निजी अपार्टमेंट में ले आता है-

वहाँ वह अपनी उपस्थिति और प्रार्थना से उसका सम्मान करता है।
अपने धन्य व्यक्ति का दर्शन, जो सभी का मूल है
उन परिपूर्णताओं, और उसे महल के बारे में सूचित करता है
वह अपनी सच्ची प्रकृति और अपनी पूर्णता के बारे में जानता है।

उसे अपनी बाकी प्रजा का मार्गदर्शन करने के लिए नियुक्त किया,
वह उसे महल के निर्माता का वर्णन करने के लिए वापस भेजता है
इसकी सामग्री, शिलालेखों और चमत्कारों के माध्यम से।
गाइड शिलालेखों का अर्थ भी समझाएगा,
कलाकृतियाँ और सुव्यवस्थित एवं सुव्यवस्थित फर्नीचर और सजावट क्या संकेत देती हैं, और कैसे
वे महल की पूर्णता और कौशल की ओर इशारा करते हैं
मालिक उन्हें सही व्यवहार सिखाएगा और
महल का दौरा करते समय और देखने के दौरान औपचारिकताएं
प्रदर्शनी, और प्रोटोकॉल और समारोह का वर्णन करें जो खुशी और इच्छाओं को पूरा करते हैं
विद्वान और कुशल राजा, जो प्रकट नहीं होता
उन्हें।

ठीक उसी तरह, महान निर्माता,
अनंत काल के भगवान, अपने को देखने और प्रदर्शित करने की इच्छा रखते हैं
अनंत सौंदर्य और परिपूर्णता। इसलिए उसने बनाया
इस संसार के महल में इस तरह से निवास करें कि प्रत्येक प्राणी अपनी पूर्णता को अनेक भाषाओं में व्यक्त करे
और अनेक संकेतों से अपनी सुन्दरता की ओर संकेत करता है।
यह ब्रह्माण्ड अपने निवासियों से यह दर्शाता है कि वे कितने असंख्य हैं
प्रत्येक में अमूर्त खजाने छिपे हुए हैं

सुंदर नाम और प्रत्येक पवित्र उपाधि में कितनी सूक्ष्मताएँ छिपी हैं। यह इस तरह से दर्शाता है

कि यद्यपि वैज्ञानिक, विज्ञान के सभी पहलुओं के साथ

कानून और सिद्धांतों, इस पुस्तक का अध्ययन किया है

आदम के समय से ही ब्रह्माण्ड में अभी भी

उस किताब के ईश्वरीय नामों और संकेतों के बारे में सौवां हिस्सा भी नहीं मिला है

परिपूर्णता.

इस प्रकार सुंदरता की राजसी, सुंदर

वह महान् परमेश्वर, अनन्त पूर्णता वाला रचयिता, जिसने ब्रह्माण्ड के उस महल को इस प्रकार बनाया है,

उनकी सम्पूर्णताओं को देखने और प्रदर्शित करने के लिए एक प्रदर्शनी

उत्कृष्ट सौंदर्य के लिए आवश्यक है कि वह किसी को अपने संकेतों के अर्थ बताए

ताकि वे पृथ्वी पर रहने वाले सचेत प्राणियों के लिए बेकार और लाभहीन न रहें।

उनकी बुद्धिमत्ता

इसके लिए आवश्यक है कि कोई व्यक्ति इस मार्ग से यात्रा करे

उच्च लोक, जो महल के स्रोत हैं

चमत्कार और भंडार जहां उनके परिणाम

जीवन संचित करता है; वह उसे अन्य सभी से ऊपर उठाता है,

उसकी उपस्थिति में उसकी निकटता से उसका सम्मान करें,

उसे परलोक की सैर कराओ और उसे सब कुछ सौंप दो

अपने सेवकों को शिक्षा देना, संदेश देना जैसे कर्तव्य निभाना

उनके आधिपत्य की संप्रभुता, उनके सेवकों को सूचित करती है

खुद को प्रसन्न करने वाली चीजों की, और अपने विस्तार की

ब्रह्माण्ड के निर्माण और संचालन में संकेत; कि
उसे अपनी श्रेष्ठता उन चमत्कारों के माध्यम से दिखानी चाहिए जो परमेश्वर उसे
करने में सक्षम बनाता है; और वह
कुरान जैसे आदेश के माध्यम से घोषणा करनी चाहिए
कि वह व्यक्ति एक सच्चा व्यक्तिगत दुभाषिया है
वह महान्.

अब तक हमने इस तुलना के माध्यम से स्वर्गारोहण में बुद्धिमत्ता के कुछ उदाहरणों को प्रदर्शित किया है।
आप सादृश्य द्वारा दूसरों का अनुमान लगा सकते हैं।

दूसरी तुलना: मान लीजिए एक जानकार,
कुशल व्यक्ति एक चमत्कारी पुस्तक लिखना चाहता है, प्रत्येक
जिसके पृष्ठ में उतनी ही सच्चाईयां हैं जितनी भर जाएंगी
100 पुस्तकें, जिनमें से प्रत्येक पंक्ति में इतने सूक्ष्म अर्थ हैं जितने 100 पृष्ठ भर सकते हैं, और प्रत्येक शब्द ...
जिसमें उतने ही सत्य होंगे जितने
100 पंक्तियाँ भरें। यदि ऐसे सभी अर्थ और सत्य
एक किताब अपने चमत्कार-प्रदर्शन लेखक की पारलौकिक पूर्णता की ओर इशारा करती है, वह निश्चित रूप से इसे नहीं छोड़ेंगे
बंद और इसलिए बेकार। इसके बजाय, वह सिखाएगा
इसे दूसरों को दें ताकि अन्य लोग लाभ उठा सकें, ताकि उसका
छिपी हुई परिपूर्णताएं उजागर होंगी और उसकी सुंदरता (बौद्धिक और आध्यात्मिक उत्कृष्टता) निखरेगी
देखा, और ताकि वह प्रसन्न हो और
खुद से प्यार करता था। इस उद्देश्य से, वह किसी को चाहता था
उस संपूर्ण अद्भुत पुस्तक को पढ़ें, हर समय

उसे इसके अर्थ और सत्य का ज्ञान देना ताकि
यह ज्ञान दूसरों तक पहुंचाया जा सकता है।

ठीक उसी तरह, अपने को दिखाने के लिए
पूर्णता, सौंदर्य, और उनके नामों की सच्चाई,
शाश्वत लेखक ने ब्रह्मांड को इस तरह "लिखा" है
जिस तरह से सभी प्राणी असंख्य तरीकों से उसकी अनंत पूर्णता, नाम और विशेषताओं की घोषणा और अभिव्यक्ति करते हैं। यदि किसी पुस्तक का अर्थ ज्ञात नहीं है, तो उसका कोई महत्व नहीं है
मूल्य। लेकिन एक किताब (जैसे ब्रह्मांड), प्रत्येक अक्षर
जिसके हजारों अर्थ निहित हैं, नहीं हो सकते
कुछ भी नहीं रह जाएगा। इसे देखते हुए, जिसने लिखा
यह इसे ज्ञात कर देगा और इसे समझाने का कारण बनेगा
प्रत्येक समूह की क्षमता के अनुसार भागों में
जीव.

वह इसे सबसे व्यापक दृष्टिकोण, सबसे सार्वभौमिक चेतना वाले व्यक्ति को सिखाएगा, और
सबसे बड़ी क्षमता। लेकिन सभी के साथ ऐसी किताब पढ़ाने के लिए
इसके सार्वभौमिक सत्य की आवश्यकता है कि,
बहुलता के स्तरों की सबसे दूर की सीमाएँ (भौतिक दुनिया, पुस्तक का पहला पृष्ठ) जहाँ तक दायरे की बात है
यूनिटी (इसका अंतिम पृष्ठ) के अनुसार, व्यक्ति को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि
एक अत्यंत श्रेष्ठ और सार्वभौमिक यात्रा। इसके माध्यम से
तुलना करके, कुछ समझ हासिल की जा सकती है
स्वर्गारोहण में बुद्धि के उत्कृष्ट उदाहरण।

प्रश्न: वे नास्तिक जो

मुझे विश्वास है कि अभी भी इस तरह के मुद्दे पर कुछ भ्रम की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है

जैसे: • पैगम्बर

मुहम्मद के लिए यह स्वर्गारोहण विशेष क्यों है?

• आपके कहने का क्या मतलब है कि मुहम्मद
ब्रह्माण्ड का बीज, कि ब्रह्माण्ड था
उसकी ज्योति से निर्मित, और वह सबसे दूर है
और सबसे प्रबुद्ध फल?

• आप कहते हैं कि उसने अपना स्वर्गारोहण ऊपर उठने के लिए किया
ऊंचे क्षेत्र में, मशीनरी को देखने के लिए और
कार्यशालाएँ जिनके उत्पाद या कार्य पृथ्वी पर प्रदर्शित किए जाते हैं, साथ ही वे भण्डारगृह जहाँ
उन कार्यों के परिणाम रखे जाते हैं।
इसका मतलब है?

उत्तर: पहले प्रश्न का उत्तर दिया गया था
पिछले शब्द, और इसलिए हम केवल एक संक्षिप्त सूची देते हैं
मुहम्मद की पैगम्बरी और संपूर्णता को दर्शाने वाले संकेत, और क्यों वह सबसे योग्य हैं
स्वर्गारोहण.

टोरा में भारी भ्रष्टाचार के बावजूद,
हुसैन अल-जिसरी ने सुसमाचार और भजन संहिता में पाया
उन्होंने मुहम्मद के पैगंबर होने के 110 संकेत बताए हैं। इन्हें उनके रिसाला अल-हमीदिया में प्रस्तुत किया गया है।

इतिहास में कई इस्लाम-पूर्व विद्वानों के शब्द भी दर्ज हैं
भविष्यवक्ता, जैसे शिक और सतीह, जो सटीक रूप से बताते हैं
उनके पैगम्बर होने की भविष्यवाणी की और बताया कि वह अंतिम पैगम्बर हैं
पैगंबर.

उनके जन्म से पहले कई असाधारण घटनाएं घटीं (इरहासात)
नबी होने की भविष्यवाणी एक नबी के आने की भविष्यवाणी करती है।
उदाहरण के लिए, जिस रात उनका जन्म हुआ, काबा की मूर्तियाँ
प्रसिद्ध महल की चोटियाँ ढह गईं
फारसी शासक चोस्रोस का शासन टूट गया। मुहम्मद
लगभग 1,000 चमत्कारों से विख्यात,
जिसका उल्लेख इतिहासकारों और जीवनीकारों ने किया है। केवल कुछ
उदाहरणों का हवाला देते हुए, उन्होंने एक संतुष्ट
अपनी अंगुलियों से बहते पानी से सेना की प्यास बुझाना और
चाँद को विभाजित करें (54:1)। सूखी लकड़ी का खंभा
जिसे वह मस्जिद में उपदेश देते समय झुकाते थे
कई लोगों के सामने ऊँट की तरह कराहना जब
वह उससे अलग हो गया था।

मित्र और शत्रु दोनों इस बात पर सहमत हैं कि सभी अच्छे गुण एक दूसरे में समाहित हैं।
उसमें सर्वोच्च स्तर पर पाया गया, और वह, जैसा कि
उनके आचरण से यह स्पष्ट था कि उनमें सर्वोच्च उत्कृष्टता के सभी गुण और
चरित्र विद्यमान थे।
जिस तरह से उन्होंने अपना मिशन पूरा किया।
इस्लाम के नैतिक सिद्धांत, प्रशंसनीय गुण
सर्वोच्च आदेश उस कानून में पाए जाते हैं जो उसने लाया था।

बुद्धि की आवश्यकता है कि दिव्यता को उसकी पूर्णता के कारण प्रदर्शित किया जाए। पैगम्बर मुहम्मद ने अपने द्वारा लाए गए धर्म में निहित पूजा के सबसे उत्तम और व्यापक तरीके के माध्यम से ईश्वर की दिव्यता को उच्चतम स्तर पर और सबसे शानदार तरीके से प्रकट किया। ब्रह्मांड के निर्माण में बुद्धि के कारण, दुनिया का निर्माता सबसे उपयुक्त साधनों के माध्यम से अपनी सबसे उत्तम सुंदरता और कृपा को प्रदर्शित करना चाहता है। स्पष्ट रूप से, पैगम्बर मुहम्मद ने अपनी सुंदरता और कृपा को सबसे उत्तम तरीके से दिखाया और वर्णित किया।

दुनिया का निर्माता प्रदर्शन और चित्र बनाना चाहता है

अनंत सौंदर्य की उनकी उत्तम कला की ओर ध्यानपूर्वक दृष्टिपात करते हुए; मुहम्मद ने उस कला की घोषणा सबसे स्पष्ट आवाज में की। मुहम्मद ने, संसार के प्रभु की बहुलता के क्षेत्र में अपनी एकता की घोषणा करने की इच्छा के जवाब में, अपने सभी पहलुओं के साथ एकता की सबसे उत्तम घोषणा की।

अपनी बुद्धि के परिणामस्वरूप, स्वामी

दुनिया उनकी अनंत सारभूत सुंदरता और कृपा को, उनकी सभी अभिव्यक्तियों के साथ, सभी प्राणियों के दर्पणों में देखना और दिखाना चाहती है; मुहम्मद ने उन्हें सबसे शानदार तरीके से प्रतिबिंबित किया और दूसरों को उनसे प्रेम करना सिखाया। मुहम्मद, दुनिया के महल के निर्माता की इच्छा के जवाब में वर्णन करने के लिए

अपने अदृश्य खज़ानों को प्रदर्शित करके अपनी पूर्णताएँ
अमूल्य रत्नों का, सबसे उत्तम ढंग से प्रदर्शित और
उनका वर्णन किया.

ब्रह्मांड के निर्माता ने सजाया है

ब्रह्माण्ड को सबसे सुन्दर और उत्तम अलंकरणों से सुसज्जित किया है, तथा उसमें अपनी चेतना को भी सम्मिलित किया है।
प्राणियों को आनंद प्राप्त करने और चिंतन करने के लिए यात्रा करने के लिए प्रेरित करता है। अपनी बुद्धि के कारण, वह चाहता है कि
द्वारा व्यक्त अर्थ और मूल्य का संचार करें
उनकी कलाकृतियाँ उन लोगों के लिए हैं जो उनका अवलोकन करते हैं और उन पर विचार करते हैं।
मुहम्मद ने मानवता, जिन्न और फ़रिश्तों का मार्गदर्शन किया
इस संबंध में सबसे व्यापक तरीका,
कुरान.

ब्रह्माण्ड का सर्वज्ञ शासक उपयोग करना चाहता है

परिवर्तनों के उद्देश्य को प्रकट करने के लिए एक दूत और
अस्तित्व में परिवर्तन, साथ ही उत्तर
सभी चेतन प्राणियों के लिए तीन उलझन भरे प्रश्न:
हम कहाँ से आये हैं? हम कहाँ जा रहे हैं?
क्या हम हैं? कुरान की सच्चाइयों के माध्यम से मुहम्मद ने इस उद्देश्य और उत्तरों को प्रकट किया
सबसे स्पष्ट और सबसे सही तरीका.

इस संसार का निर्माता स्वयं को बनाना चाहता है

चेतन प्राणियों को उनकी उत्कृष्ट शक्ति के माध्यम से ज्ञात
काम करता है और अनमोल के माध्यम से उनके द्वारा प्यार किया जाना
वह उन पर कृपा बरसाता है। इस प्रकार वह चाहता है कि

एक दूत के माध्यम से उन्हें बताएं कि क्या
वह चाहता है कि वे क्या करें और वे उसका अनुग्रह कैसे प्राप्त कर सकते हैं
उन इनामों के बदले में स्वीकृति।
कुरान में मुहम्मद ने जो बातें बताईं,
जो परमेश्वर को सबसे उत्तम और उत्तम रीति से प्रसन्न करते हैं।

संसार के स्वामी ने मानवता को प्रदान किया है,
सृष्टि के वृक्ष का फल, एक व्यापक स्वभाव के साथ जो ब्रह्मांड को शामिल कर सकता है,
और इसी के अनुरूप योग्यता और आवश्यकता भी है-
सार्वभौमिक पूजा करने के लिए। लेकिन मानवता,
अपनी भावनाओं की ओर, दुनिया और उसके आकर्षण की ओर झुकता है।
इसलिए ईश्वर चाहता है कि एक मार्गदर्शक के माध्यम से,
मानवता का ध्यान सांसारिक बहुलता से हटकर
दिव्य एकता, क्षणभंगुरता से अनंत काल तक। प्रत्युत्तर में
इस इच्छा के लिए और कुरान के माध्यम से, मुहम्मद ने मानवता को इस लक्ष्य तक सबसे वांछनीय तरीके से निर्देशित किया और सबसे सही तरीके से संदेशवाहक का कर्तव्य निभाया।

इस प्रकार सृष्टि के सबसे श्रेष्ठ सदस्य हैं
जीवित प्राणी, सबसे श्रेष्ठ जीवित प्राणी चेतन प्राणी हैं, सबसे श्रेष्ठ चेतन प्राणी हैं

सच्चे इंसान हैं, और सच्चा इंसान
जिन्होंने उल्लिखित सभी कर्तव्यों का पालन किया
सबसे सही और व्यापक तरीका स्वाभाविक रूप से होगा
एक सर्वव्यापी आरोहण के माध्यम से निकट तक उठो-

दो धनुष की लंबाई की दूरी , ईश्वर के सबसे निकट का स्थान,
अनंत खुशी के द्वार पर दस्तक दो, दया का द्वार खोलो
खजाना, और विश्वास की अदृश्य सच्चाई का प्रत्यक्ष गवाह।

इसके अलावा, प्रत्येक वस्तु सुंदरता के सबसे मनभावन उदाहरण और अलंकरण की सर्वोच्च डिग्री प्रदर्शित करती है, जिससे यह प्रदर्शित होता है कि उनका निर्माता चाहता है
चीज़ों को सुंदर बनाना और उन्हें सजाना।
इससे पता चलता है कि निर्माता का झुकाव बहुत मजबूत है
और अपनी कला के प्रति पवित्र प्रेम। इसलिए वह व्यक्ति जिसके पास इस कला के चमत्कारों को अपने अंदर प्रदर्शित करने की सबसे व्यापक प्रवृत्ति है; जो जानता है
उन्हें ज्ञात करता है, और इस प्रकार स्वयं को
प्यारा; और जो सुंदरता की गहराई से सराहना करता है
अन्य प्राणियों में पूर्ण प्रशंसा के साथ प्रकट हुआ
उनका निर्माता से आना, सबसे प्रिय होगा
निर्माता की दृष्टि में, क्योंकि वह अपनी कला से बहुत प्रेम करता है।

यही सत्ता समस्त प्राणियों को सुशोभित करने वाले उत्तम गुणों तथा उन्हें प्रकाशित करने वाली सिद्धियों के प्रति पूर्ण जागरूक होकर आकाश में यह वाणी प्रतिध्वनित करती है:
"परमेश्वर की महिमा हो! परमेश्वर ने क्या ही अद्भुत काम किए हैं"
और "ये सब भगवान की ओर से हैं! भगवान सबसे महान हैं!"
यही वह सत्ता है जो ब्रह्माण्ड को प्रतिध्वनित करती है
कुरान की ध्वनियों के साथ, और भूमि को मंत्रमुग्ध कर देता है
और समुद्र अपने सराहनीय प्रतिबिंबों और महिमा के साथ-

उन्होंने ईश्वरीय एकता की घोषणा और प्रदर्शन के साथ-साथ ईश्वरीय एकता की भी प्रशंसा की।

ऐसा प्राणी, "परमात्मा" के सिद्धांत के अनुसार,
कारण कर्ता के समान है," उसे समतुल्य पुरस्कार मिलता है
अपने समुदाय के अच्छे कामों के लिए। उनकी आध्यात्मिक सिद्धियाँ आशीर्वाद से शक्ति प्राप्त करती हैं
अपने समुदाय द्वारा उसे, तथा उसके द्वारा निभाए गए कर्तव्यों को
उसके संदेशवाहक के दौरान उसे एक प्राप्त करने का कारण बनता है
अभौतिक प्रतिफल और अनंत उत्सर्जन
ईश्वरीय दया और प्रेम। इसे देखते हुए, शुद्ध का परिणाम
सत्य और परम ज्ञान यही है कि इस प्राणी को
स्वर्गारोहण के माध्यम से स्वर्गारोहण तक आगे बढ़ें,
सिदरत अल-मुन्तहा - लोटे का पेड़, आकस्मिकता की सबसे दूर की सीमा - ईश्वरीय सिंहासन, और निकटता
दो धनुष की लंबाई का.

दूसरे प्रश्न का उत्तर: इसके पीछे का सच
दूसरा प्रश्न इतना ऊंचा और गहरा है
कि मानव मस्तिष्क इसे समझ नहीं सकता।
विश्वास के प्रकाश से ही पहचाना जा सकता है।
हम तुलना के माध्यम से इसे समझने योग्य बनाने का प्रयास करेंगे।

इस ब्रह्माण्ड पर जब विचार किया जाता है,
अपने उद्देश्यों में बुद्धि का अर्थ एक शक्तिशाली वृक्ष के समान प्रतीत होता है। एक वृक्ष की तरह ही, यह संसार भी एक वृक्ष है।
शाखाएँ (तत्व), पत्तियाँ (पौधे), फूल (जानवर),

और फल (मानवता)। उसका नाम सर्वज्ञ की मांग है
कि राजसी निर्माता का कोई भी कानून प्रचलित है
पेड़ों में बुद्धि इस महानतम वृक्ष में व्याप्त हो।
इस सृष्टि वृक्ष का निर्माण आवश्यक है
एक बीज जो इस भौतिक संसार के अलावा,
अन्य के मॉडल और नींव को समाहित करता है
दुनिया। ऐसा होना ही चाहिए, क्योंकि मूल और आवश्यक
ब्रह्मांड का बीज, जिसमें हजारों शामिल हैं
अलग-अलग दुनियाएँ, एक सूखा, निर्जीव टुकड़ा नहीं हो सकता
पदार्थ का.

चूँकि इस वृक्ष से पहले कोई दूसरा वृक्ष नहीं था
सृष्टि के निर्माण में, सर्वज्ञ को दिव्य नाम की आवश्यकता है
कि उसके बीज या मूल का अर्थ या प्रकाश फल के भीतर समाहित हो। बीज फल के भीतर नहीं रह सकता
हमेशा के लिए नंगा। सृष्टि के आरंभ में, यह था
पैगम्बर मुहम्मद, एक फल के भीतर कपड़े पहने हुए नहीं हैं।
जैसा कि पहले बताया गया है, यह सबसे प्रसिद्ध और शानदार है
उस पेड़ का फल। उसने मानवता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है और आधे लोगों का ध्यान अपनी ओर केंद्रित किया है
वह पृथ्वी के एक-पांचवें भाग और मानवता के एक-पांचवें भाग को अपने ऊपर ले लेता है।
अपनी आध्यात्मिक सुन्दरता और व्यक्तिगत गुणों के माध्यम से,
उसने दुनिया को अपने प्रति प्रेम और विस्मय से विचार करने के लिए प्रेरित किया। इन सबका अर्थ यह हो सकता है कि ब्रह्मांड के बीज का निर्माण करने वाला प्रकाश उसके शरीर में समाहित होगा
और अंतिम फल के रूप में प्रकट होते हैं।

ऐसा क्यों माना जाना चाहिए कि यह संभव नहीं है?

अद्भुत, शक्तिशाली ब्रह्मांड एक आदमी से बनाया गया था

विशेष प्रकृति? सर्वशक्तिमान को क्यों चाहिए

महिमा की, जो एक विशाल, विश्व-सदृश सृष्टि करता है

एक दाने के आकार के बीज से चीड़ का पेड़ न तो बनाया जा सकता है और न ही

सृष्टि की रचना करने में असमर्थ - मुहम्मद के अनुसार ब्रह्माण्ड की रचना

प्रकाश? ब्रह्मांड का वृक्ष (ट्यूबा की तरह)

स्वर्ग का पेड़) उल्टा, इसकी जड़ें और तना

ऊपर की ओर फैलते हुए और नीचे की ओर शाखाएँ लगाते हुए, इसमें प्रकाश की एक कड़ी और बीच में अर्थ की एक कड़ी शामिल है

फल की स्थिति नीचे और आवश्यक बीज की स्थिति ऊपर। आरोहण उस कड़ी का रूप है, और

पैगम्बर ने उस रास्ते को खोला

संतत्व, संदेशवाहक के साथ लौटना, और एक तरह के स्वर्गारोहण के लिए द्वार खुला छोड़ना। संत हृदय और आत्मा से प्रकाश के उस राजमार्ग पर यात्रा करते हैं

भविष्यवाणी के स्वर्गारोहण की छाया, और ऊपर उठना

स्टेशनों को उनकी क्षमता के अनुसार एलिवेटेड किया जाएगा।

पहले प्रश्न का उत्तर देते समय हमने देखा कि

ब्रह्माण्ड के निर्माता ने इसे एक के रूप में बनाया

विभिन्न प्रयोजनों के लिए महल। चूंकि पैगंबर

उन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वह साधन जुटाएगा

ब्रह्मांड के पक्ष की आँखों के नीचे होना चाहिए

सृष्टिकर्ता को जानना और ब्रह्माण्ड के निर्माण से पहले ही उसका प्रकटीकरण प्राप्त करना,

क्योंकि किसी भी चीज का परिणाम या फल उसके द्वारा ही प्राप्त होता है।

सबसे पहले माना जाता है। इस प्रकार अस्तित्व में नवीनतम अर्थ में सबसे पहले है। चूँकि पैगंबर मुहम्मद सबसे उत्तम फल हैं, अन्य सभी फलों को महत्व देने का साधन और सभी उद्देश्यों (ब्रह्मांड के निर्माण के लिए) को साकार करने का कारण हैं, इसलिए उनके प्रकाश को दिव्य सृजन का पहला प्रकटीकरण प्राप्त होना चाहिए।

जहाँ तक तीसरे प्रश्न का प्रश्न है, हम जैसे लोग इसे समझ नहीं सकते। हम इसे केवल दूर से ही देख सकते हैं।

भौतिक दुनिया और उसके नियमन करने वाले "अभौतिक कारखाने" आकाशीय दुनिया में निर्धारित होते हैं। पृथ्वी के असंख्य निवासियों द्वारा किए गए कार्यों के परिणाम, और मानवता और जिन्न द्वारा किए गए कार्यों के परिणाम भी उन दुनियाओं में आकार लेते हैं। कई संकेतों और पैगंबरी परंपराओं की गवाही के साथ, कुरान सुझाव देता है, और ब्रह्मांड में ज्ञान और ईश्वरीय नाम जो सर्वज्ञ है, की आवश्यकता है कि मानवता और जिन्न द्वारा किए गए अच्छे कर्म स्वर्ग के फलों के रूप में होते हैं, जबकि उनके बुरे कर्म नरक के पेड़ के कड़वे, जहरीले फलों के रूप में होते हैं।

पृथ्वी पर जीव इतनी अधिक मात्रा में पाए जाते हैं, और सृष्टि इतनी शाखाओं में विभाजित है कि जीवों के समूह और प्रजातियाँ तथा जीवों के विभाग यहाँ ब्रह्मांड में कहीं और की तुलना में कहीं अधिक संख्या में पाए जाते हैं। ये जीव और प्रजातियाँ

जीवों को लगातार नए जीवों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है, क्योंकि दुनिया लगातार उनसे भरी और खाली होती रहती है। इन सभी विशेष, अनेक प्राणियों और जीवों का स्रोत और मूल सार्वभौमिक में है

दिव्य नामों के नियम और अभिव्यक्तियाँ, जो हैं
सर्वप्रथम आकाश में परावर्तित हुआ और आकाश द्वारा ग्रहण किया गया।

कुछ हद तक सरल और शुद्ध, प्रत्येक स्वर्ग है
एक अलग दुनिया की छत की तरह, एक केंद्र का प्रतिनिधित्व करता है
उस दुनिया का प्रशासन और विनियमन
उसके मामले। उन दुनियाओं में से एक है निवास का बगीचा,
लोटे के पेड़ के बगल में स्वर्ग का एक अपार्टमेंट
सबसे दूर की सीमा। सत्यनिष्ठ रिपोर्टर का कहना है कि पृथ्वी पर की गई ईश्वर की स्तुति और महिमा
उस बाग़ के फलों का रूप धारण करो।
शब्द, परिणाम या फलों से युक्त भंडार
यहाँ किये गये कार्यों का फल उन स्वर्गों में स्थित है-
यहाँ से प्राप्त फसल वहाँ भेजी जाती है (
(पूर्व निर्धारित दिन पर “काटना”)

इसलिए ऐसा मत कहिए कि कोई कथन, जैसे कि “सब
भगवान की स्तुति हो," जो हवा में खो जाता है, बन जाता है
स्वर्ग के फल में सन्निहित? कभी-कभी आप कहते हैं
जागते समय एक सुखद शब्द बोलें और उसे इस रूप में खाएं
रात में आपके सपने में एक स्वादिष्ट सेब दिखाई देना। दिन में कही गई अप्रिय बात
रात में वापस आ जाती है
एक कड़वी बात निगलने के लिए। अगर आप किसी की चुगली करते हैं-

एक, वे तुम्हें इसे सड़ते हुए मांस के रूप में खाने को देंगे। तो
इस संसार-निद्रा में तुम जो भी अच्छे या बुरे शब्द बोलोगे, उन्हें तुम स्वर्ग में फलों के रूप में खाओगे।
परलोक, जागृति का संसार।

चौथा सिद्धांत:

स्वर्गारोहण के फल और लाभ क्या हैं?

उत्तर: स्वर्गारोहण के असंख्य फलों में से जो एक विस्तृत स्वर्ग वृक्ष के समान है

अर्थ की दृष्टि से हम केवल पाँच का उदाहरण के रूप में उल्लेख करेंगे।

पहला फल: उन सत्यों का दर्शन जिससे
विश्वास के स्तंभ उत्पन्न होते हैं, साथ ही स्वर्गदूतों को देखते हैं,
स्वर्ग, परलोक और यहां तक कि राजसी सत्ता
(गुणवत्ता और मात्रा की सभी विशेषताओं से परे), जिसके परिणामस्वरूप एक
विशाल खजाना, एक शाश्वत प्रकाश और एक उपहार मिला
ब्रह्मांड और मानवता। इसके माध्यम से, ब्रह्मांड हो सकता है
अब इसे चीजों के अव्यवस्थित ढेर के रूप में नहीं देखा जाएगा
विनाश के लिए अभिशप्त, क्योंकि इसकी वास्तविकता उजागर हो गई थी:
यह शाश्वत रूप से सभी के चाहने वाले के पवित्र लेखन और सुंदर दर्पणों का
सामंजस्यपूर्ण संग्रह है जहां एकमात्र की कृपा और सुंदरता है

प्रतिबिंबित। इसने ब्रह्मांड को प्रसन्न किया है और इसका कारण बना है
सभी चेतन प्राणियों को आनन्दित होने दो।

इसने हमें हमारी भ्रमित और गलत दिशा-निर्देशित स्थिति से भी मुक्त कर दिया, जिसमें हम स्वयं को अभागा समझते थे।

असहाय और बेसहारा प्राणी अनंत में उलझे हुए हैं
आवश्यकता और शत्रुता से रहित तथा अनंत विनाश के लिए अभिशप्त। इसने हमें सबसे सुंदर प्राणी के रूप में हमारी वास्तविकता दिखाई
रचना और सृजन का सबसे अच्छा पैटर्न, चमत्कार
सभी की शाश्वत रूप से प्रार्थनीय शक्ति, उनके लेखन की एक व्यापक प्रतिलिपि, और संबोधित प्राणी
अनंत काल के प्रभु द्वारा। इसने यह भी प्रकट किया कि हम
उनके निजी सेवक उनकी पूर्णता की सराहना करते हैं, उनके मित्र उनकी सुंदरता को विस्मय से देखते हैं, और उनके प्रिय और सम्मानित अतिथि स्वर्ग के लिए नामित होते हैं। इसने उन लोगों में असीम आनंद और उत्साह पैदा किया जो वास्तव में मानव हैं।

दूसरा फल: स्वर्गारोहण से इस्लाम का उदय हुआ।
मानवता के लिए आवश्यक वस्तुएँ और जिन्न उपहार के रूप में। इसमें शामिल हैं,
मुख्य रूप से, निर्धारित पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ, जो
इसमें वह सब कुछ है जो अनंत काल के शासक को प्रसन्न करता है,
प्राणियों के निर्माता, ब्रह्मांड के मालिक, और
संसार के स्वामी। लोग यह जानने के लिए बहुत उत्सुक रहते हैं कि उन्हें क्या प्रसन्न करता है, और ऐसी धारणा उन्हें बहुत परेशान करती है।
एक ऐसी खुशी जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। हर कोई चाहता है
किसी प्रसिद्ध परोपकारी या परोपकारी व्यक्ति की इच्छाओं को जानना
प्रिय राजा, और इसलिए चाहते हैं कि वे बात कर सकें
उसे सीधे यह जानने के लिए कि वह उनसे क्या पूछता है और क्या
उसे प्रसन्न करता है.

ईश्वर सभी प्राणियों पर अधिकार रखता है, और उनकी कृपा, सुन्दरता और परिपूर्णताएँ उसकी सुन्दरता, कृपा और परिपूर्णता की तुलना में धुंधली छाया मात्र हैं।

किस हद तक मानवता, जिसे उसकी अनंत आवश्यकता है
हर पल उसकी असीम कृपा का आदर करता है और उसे प्राप्त करता है
पल, के बारे में उत्सुक होना चाहिए और जानना चाहिए
उसकी इच्छा और जो उसे प्रसन्न करता है।
फल की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि 70,000 पर्दों से गुजरने के बाद,
पैगम्बर मुहम्मद ने राजा को प्रसन्न करने वाली बात सुनी
उन्होंने पूर्ण निश्चयता के साथ सीधे उनसे अनंत काल की जानकारी प्राप्त की, और
फिर इस जानकारी को एक उपहार के रूप में हमें प्रेषित किया।

मानवता चाँद और अन्य ग्रहों के बारे में बहुत उत्सुक है। हमें उम्मीद है कि कोई वहाँ जाएगा और
हमें बताएं कि वे क्या देखते हैं, और महान बनाने के लिए तैयार हैं
इस उद्देश्य के लिए बलिदान। लेकिन चंद्रमा यात्रा करता है
उस मास्टर का डोमेन जो इसे पृथ्वी के चारों ओर उड़ाता है
एक मक्खी की तरह। पृथ्वी एक पतंगे की तरह सूर्य के चारों ओर उड़ती है, और
सूर्य हजारों दीपों में से केवल एक है और राजसी भगवान के अतिथिगृह में मोमबत्ती की तरह कार्य करता है।
मास्टर का राज्य। पैगंबर मुहम्मद ने कृत्यों को देखा
ऐसे राजसी प्राणी की, उसकी कला के चमत्कारों की, और उसके
अनन्त दुनिया में दया के खजाने के दौरान
आरोहण और हमें उनके बारे में बताने के लिए वापस आ गया। कैसे
यह तर्क और बुद्धि के विपरीत होगा यदि मानव-

उसने उसकी बात पूरी जिज्ञासा से नहीं सुनी और
पूर्ण विस्मय और प्रेम में.

तीसरा फल: पैगम्बर ने स्वर्गारोहण और स्वर्गारोहण के दौरान अनन्त खुशी के छिपे हुए खजाने को देखा।
इसकी चाबियाँ मानवता और जिन्न को उपहार के रूप में दी गईं।
स्वर्ग देखा, अनन्त प्रकटीकरणों का अवलोकन किया
उसने परम दयालु भगवान की दया का अनुभव किया और शाश्वत सुख की प्राप्ति का निश्चय किया।
फिर मानवता और जिन्न को बताया कि शाश्वत खुशी
(अनन्त संसार में) विद्यमान है।

नश्वर में उमड़ती महान खुशी,
अभागे मनुष्य और जिन्न, जो सब पहले
इस घटना ने खुद को निंदनीय माना था

अनन्त विनाश तक, वर्णन नहीं किया जा सकता। वे
इस बात का पता उस समय चला जब सभी प्राणी इस विचार से हृदय विदारक चीखें निकाल रहे थे कि वे
मृत्यु और क्षय के आवेगों के बीच एक प्रवाह
एक अस्थिर दुनिया, गैर-अस्तित्व के सागर में प्रवेश कर रही है
और समय के प्रवाह और परमाणुओं के माध्यम से शाश्वत पृथक्करण'
सोचिए ऐसे लोग कितने खुश होते हैं
जब उन्हें फांसी दिए जाने से ठीक पहले पता चलता है,
राजा ने उनमें से प्रत्येक को अपने महल के पास एक महल दिया है
अपना खुद का महल। आनंद और खुशी को एक साथ जोड़ें
सभी मनुष्यों और जिन्नों के लिए, और तब तुम इस शुभ समाचार के मूल्य को समझोगे।

चौथा फल: पैगम्बर मुहम्मद को मिला

परमेश्वर के सुंदर “चेहरे” के दर्शन का फल,

और इसे मानवता और जिन्न के लिए एक उपहार के रूप में लाया ताकि

हर विश्वासी को उसी दर्शन से सम्मानित किया जा सके।

आप निम्नलिखित तुलना से समझ सकते हैं कि वह फल कितना स्वादिष्ट, बढ़िया और सुंदर है: कोई भी

एक हृदय से एक सुंदर, परिपूर्ण और परोपकारी व्यक्ति से प्रेम करता है। यह प्रेम उस सीमा के अनुपात में बढ़ता है

सुंदरता, पूर्णता और परोपकार का; विस्तार होता है

आराधना और आत्म-बलिदान; और इस हद तक बढ़ जाता है

कि कोई अपनी सम्पत्ति और जीवन का बलिदान कर सकता है

प्रियतम का एक ही दर्शन।

जब उसकी तुलना की जाती है, तो सारी सुंदरता, पूर्णता और

सृष्टि में परोपकार कुछ भी नहीं दिखता

सूर्य की चमक की तुलना सूर्य से की जा सकती है।

इससे समझिए कि परमधाम में लोगों को कैसा सुखद, सुन्दर, आनन्ददायक और आनंददायी फल मिलता है।

अनन्त खुशी का दर्शन: एक राजसी का दर्शन

पूर्णता, जो अनंत प्रेम के योग्य है, दृष्टि

जिसकी प्रेरणा असीम उत्सुकता को प्रेरित करने के योग्य है।

पांचवा फल: एक और फल यह है कि इस घटना ने

मानवता समझती है कि प्रत्येक व्यक्ति मूल्यवान है

ब्रह्माण्ड का फल और सबका प्रिय

ब्रह्मांड का निर्माता। यद्यपि बाह्य रूप से वह एक तुच्छ प्राणी, एक कमजोर जानवर और एक नपुंसक शंख है।

प्रत्येक व्यक्ति एक सचेतन प्राणी के रूप में एक ऐसे पद पर पहुंच चुका है, अन्य सभी प्राणियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ होने के कारण यह गर्व का कारण है हमारे लिए। इससे हमें जो खुशी और आनंद मिलता है अवर्णनीय है। यदि आप किसी साधारण निजी व्यक्ति से कहें कि उन्हें फील्ड मार्शल के पद पर पदोन्नत किया गया है, उसे असीम आनंद का अनुभव होगा। एक नश्वर, असहाय, तर्कशील और मुखर प्राणी होने के बावजूद, वह केवल यही जानता है हमें बताया गया कि क्षय और अलगाव की मार अप्रत्याशित रूप से स्वर्गारोहण के माध्यम से:

> जैसे कि आप अपने हृदय की सभी इच्छाओं को एक चिरस्थायी स्वर्ग में साकार कर सकते हैं, जो एक सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय और सर्व-महान व्यक्ति की दया से घिरा हुआ है,
> और मनोरंजन में, कल्पना की गति के साथ यात्रा करने में और आत्मा और आत्मा के व्यापक क्षेत्र में
> मन, आप भी शाश्वत खुशी में उसका सबसे सुंदर "चेहरा" देख सकते हैं।

उस महान आनंद और खुशी की कल्पना करें जो यह सुनकर मनुष्य के हृदय में सचमुच एक भावना उत्पन्न होगी। हे अविश्वासियों, नास्तिकता का कुर्ता फाड़ डालो और मोमिन के कान और मुसलमान की आंखें लगाओ। निम्नलिखित दो तुलनाओं पर विचार करें।

पहली तुलना: मान लीजिए हम एक शत्रुतापूर्ण भूमि में प्रवेश करते हैं जहाँ हर चीज़ और हर कोई शत्रुतापूर्ण है और हमारे लिए और एक दूसरे के लिए अजीब है। भयानक लाशें हर जगह हैं। हम केवल अनाथों की चीखें सुनते हैं और

उत्पीड़ितों का विलाप। वहाँ रहते हुए, हममें से एक
राजा से अच्छी खबर मिलती है, जो किसी तरह
दुश्मनी को दोस्ती में बदल देता है; दुश्मनों को दोस्त में बदल देता है;
भयानक लाशों में डूबे श्रद्धालु
प्रशंसा और महिमा, श्रद्धा और विनम्रता में; चीखें और विलाप अनुमोदन या जयघोष में बदल जाते हैं
जयजयकार; और मृत्यु, हत्या और डकैती जीवन के कर्तव्यों से विमुखता में बदल जाती है। अगर हम किसी तरह से साझा करते हैं
दूसरों की खुशी और आनंद का अनुभव करते हुए,
अपने आनंद और खुशी को देखकर आप समझ सकते हैं कि वह समाचार कितना आनंददायक है।

ईमान की रौशनी से पहले, मुहम्मद का एक फल
स्वर्गारोहण के समय सभी प्राणी विचित्र, हानिकारक, कष्टकारी और भयावह प्रतीत होने लगे। पर्वत जैसे शरीर भयानक शवों जैसे प्रतीत होने लगे, मृत्यु कट गई
सबके सिर से काटकर उसे अस्तित्वहीनता के कुएं में फेंक दिया गया, और सभी आवाजें विलाप की चीखें थीं
मृत्यु और अलगाव से। [इस्लाम ऐसे समय में आया जब
गुमराही ने सब कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया।]
हालाँकि, विश्वास के स्तंभों में निहित सत्य,
स्वर्गारोहण का एक फल, प्रत्येक प्राणी को एक के रूप में दिखाएं
मित्र या भाई-बहन, कुछ ऐसा जो अपने राजसी निर्माता का उल्लेख और महिमा करता है, मृत्यु एक मुक्ति के रूप में
जीवन के कर्तव्य, तथा प्रशंसा और महिमा के रूप में आवाजें

यदि आप इस सत्य को पूरी तरह से समझना चाहते हैं, तो दूसरे और आठवें वचनों को देखें।

दूसरी तुलना: मान लीजिए हम फंस गए हैं
रात को रेगिस्तान में रेत के तूफ़ान में हम अपनी आँखें भी नहीं देख पाते
वे भूखे, प्यासे, निराश और असहाय हैं।
तभी अचानक कोई व्यक्ति कार लेकर आता है
और हमें एक स्वर्ग जैसी जगह पर ले जाता है, जहाँ एक अत्यंत दयालु भगवान हमारा स्वागत करते हैं और अपनी कृपा बढ़ाते हैं
हमें सुरक्षा मिली है। हमारा भविष्य सुरक्षित हो गया है, और
हमारे लिए भोज तैयार किया गया है। आप हमारी बड़ी खुशी की कल्पना कर सकते हैं।

रेगिस्तान दुनिया है और रेत का तूफ़ान
समय और घटनाओं की हिंसक गड़बड़ी। हम सभी
अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं। चूँकि हम इसे ध्यान से देखते हैं
गुमराही का दृश्य, हम इसे घने अंधेरे में देखते हैं। कोई भी जिसे हम जानते हैं, हमारी चीखें नहीं सुन सकता। इसके अलावा,
हम बहुत भूखे और प्यासे हैं। लेकिन शुक्र है
विश्वास के स्तंभ, पूजा के तरीके और सिद्धांत
पैगम्बर मुहम्मद द्वारा लाया गया अच्छा आचरण
स्वर्गारोहण का फल, दुनिया अतिथिगृह है
एक बहुत ही उदार व्यक्ति की और हम उसके मेहमान हैं
और अधिकारी। ऐसे गेस्ट हाउस में भविष्य दिखता है
स्वर्ग के समान सुन्दर, दया के समान मनोहर, और
अनंत खुशी की तरह शानदार। इसे देखते हुए, समझें
वह फल कितना प्यारा, सुखद और सुंदर है।

अविश्वासी टिप्पणी करता है: "परमेश्वर की स्तुति हो! मैं हूँ

मैं एक आस्तिक हूँ।"

हम पूर्व अविश्वासी को बधाई देते हैं, और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह

अल्लाह हमें अपने रसूल की सिफ़ारिश में शामिल कर।

हे ईश्वर, सृष्टि के आरम्भ से ही आशीर्वाद प्रदान करो।
न्याय के दिन के अंत तक दुनिया पर, उस पर
जिसके चिन्ह से चंद्रमा फूट पड़ा और जिसकी अंगुलियों से स्वर्ग के झरने के समान जल फूट पड़ा;
जिसने स्वर्गारोहण किया और जिसकी आँखें नहीं
डगमगाओ - हमारे स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार पर
और साथी.

तेरी महिमा हो, हमें इसके सिवा और कोई ज्ञान नहीं
तूने हमें शिक्षा दी है, तू सर्वज्ञ, सर्वविवेकशील है।

हे प्रभु, हमारी प्रार्थनाओं और सभी अन्य रूपों को स्वीकार करें
(पूजा का) निस्संदेह तू सुनने वाला, जानने वाला है।
हे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें जवाबदेह मत ठहराना।
हे प्रभु, हमारे हृदय को गलत कामों में मत उलझाओ।
आपने हमारा मार्गदर्शन किया है। हे प्रभु, हमारा प्रकाश पूर्ण करें और
हमें क्षमा कर। आप सभी चीज़ों पर शक्तिशाली हैं।
उनकी पुकार परमेश्वर की स्तुति है, परमेश्वर के प्रभु की
संसार.

उन्नीसवाँ पत्र / परिशिष्ट 4

पैगम्बर को जानने के बारे में

कोई व्यक्ति ब्रह्मांड के रचयिता को खोजने और जानने के लिए बौद्धिक यात्रा शुरू करता है। जीवों के दायरे में यात्रा करने के बाद, वह अपने आप से कहता है: "चूंकि मैं इन जीवों के बीच इस ब्रह्मांड के रचयिता और स्वामी की तलाश कर रहा हूँ, इसलिए सबसे पहले मुझे मुहम्मद के पास जाना चाहिए और उनसे अपनी खोज का उत्तर माँगना चाहिए।" अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए, वह पैगंबर के धन्य युग में प्रवेश करता है और

---

300 कुरान में ईश्वर ने कहा है: मैं तुममें से किसी के भी कर्म को व्यर्थ नहीं जाने दूंगा, चाहे वह पुरुष हो या महिला।

तुम एक दूसरे से अलग हो (3:195)। यह स्पष्ट है कि इस्लाम धार्मिक जिम्मेदारी में पुरुषों और महिलाओं के बीच भेदभाव नहीं करता है। प्रत्येक लिंग अधिकांश जिम्मेदारियों को साझा करता है, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति की कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं जो उसके लिए विशिष्ट होती हैं। कुरान आमतौर पर संबोधन के पुल्लिंग रूप का उपयोग करता है, क्योंकि यह अरबी की विशेषताओं में से एक है। लगभग हर भाषा में, पुल्लिंग रूप का उपयोग पुरुषों और महिलाओं दोनों से मिलकर बने समूह के लिए किया जाता है, जैसे अंग्रेजी शब्द मानव जाति, जिसमें पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं। इसलिए, भाईचारे में बहनापा भी शामिल है, और, चूंकि विश्वासियों में पुरुष और महिला दोनों विश्वासी शामिल हैं, इसलिए विश्वासी भाई और बहन हैं। हालांकि, मूल पाठ को बनाए रखने और दोहराव से बचने के लिए, आमतौर पर हम अनुवाद में स्त्रीलिंग रूपों का उल्लेख नहीं करते हैं। (ट्र.)

वह वास्तव में खुशी का युग था, क्योंकि उसके दुश्मनों ने भी उसे सृष्टि का सबसे धन्य, सबसे महान और सबसे कुशल कमांडर, सबसे प्रसिद्ध शासक, भाषण में सबसे श्रेष्ठ और बुद्धि में सबसे प्रतिभाशाली माना। उसने अपने गुणों और कुरान से 14 शताब्दियों को प्रबुद्ध किया है।

जांच करने के बाद, यात्री को पता चलता है कि कैसे पैगंबर ने अपने आदिम और अनपढ़ लोगों को अपने द्वारा लाए गए प्रकाश के माध्यम से दुनिया के गुरुओं और शिक्षकों में बदल दिया। उन्हें उनके चरित्र और मिशन में, निर्माता के अस्तित्व और एकता के कई निर्णायक प्रमाण मिलते हैं। यहाँ हम संक्षेप में नौ सबसे सामान्य लोगों को इंगित करते हैं, जो इस प्रकार हैं: पहला: पैगंबर के पास सभी प्रशंसनीय गुण और उत्कृष्ट विशेषताएं थीं, जैसा कि उनके दुश्मनों द्वारा भी पुष्टि की गई थी। इसके अलावा, उनके हाथों से सैकड़ों चमत्कार किए गए थे, जैसे कि उनकी उंगलियों से बहते पानी से सेना की प्यास बुझाना, एक इशारे से चाँद को चीरना (और चाँद चीर

गया [54:1]), और मुट्ठी भर मिट्टी फेंककर कई सैनिकों को भागने पर मजबूर करना (जब तुमने फेंका तो तुम नहीं थे, बल्कि भगवान ने फेंका [8:17])। उन्हें जानने या यहाँ तक कि उन्हें देखने पर, यात्री खुद से कहता है: "जो व्यक्ति ऐसे स्पष्ट चमत्कार करता है और प्रदर्शित करता है

ऐसे नैतिक गुण और परिपूर्णताएं होनी चाहिए
बोलने में सबसे सच्चा हो। वह कभी कैसे हो सकता है
झूठ और छल-कपट में खुद को गिराना, जो कि बुराइयाँ हैं
नीच का?”

दूसरा: वह ब्रह्माण्ड के आदेश का पालन करता है
मालिक (कुरान), जिसे स्वीकार कर लिया गया है और
हर शताब्दी में करोड़ों लोगों द्वारा इसकी पुष्टि की जाती है
लोगों के लिए यह सात तरीकों से चमत्कारी है और 40
पहलुओं। यात्री सोचता है: "शुद्ध सत्य के ऐसे फरमान का अनुवादक, व्याख्याता और उद्घोषक
झूठ नहीं बोल सकते थे, क्योंकि यह डिक्री का उल्लंघन होगा और
मालिक को धोखा दो।”

तीसरा: पवित्र कानून, धर्म, संहिता जैसा कुछ
पूजा का तरीका, प्रार्थना का तरीका, संदेश और विश्वास
वह जो लाया है वह पहले कभी अस्तित्व में नहीं था। न ही यह अस्तित्व में हो सकता है
(उसके बिना) द्वारा लाया गया अप्रतिम कानून
एक अशिक्षित पैगम्बर ने 14 शताब्दियों तक मानवता के पांचवें भाग पर न्यायपूर्ण और सटीक तरीके से शासन किया है।
इस्लाम, जिसकी उत्पत्ति और प्रतिनिधित्व इस्लाम द्वारा किया जाता है
पैगम्बर की बातें, उपदेश और उदाहरण भी अद्वितीय हैं।

इसने करोड़ों लोगों की सेवा की है,
समय और स्थान की परवाह किए बिना, हर मुद्दे को पूरी तरह से तय करने के लिए एक मार्गदर्शक और सक्षम प्राधिकारी या स्रोत के रूप में। इसने उनके दिमाग को प्रशिक्षित, प्रकाशित और शुद्ध किया है

उनके हृदयों को प्रशिक्षित और परिष्कृत किया, और उनकी आत्माओं को परिपूर्ण बनाया।

पैगम्बर मुहम्मद साहब इस धर्म के सबसे बड़े अनुयायी हैं। इस्लाम द्वारा निर्धारित पूजा और सबसे अधिक ईश्वर-चेतना वाला व्यक्ति। उन्होंने अत्यंत सावधानी से पूजा की
और छोटी से छोटी बात पर भी ध्यान देते थे, यहां तक कि बड़े संकट के समय में भी और निरंतर संघर्ष और गतिविधि वाले जीवन में भी। उन्होंने अपने जीवन में किसी की नकल नहीं की
पूजा, और पूरी तरह से शुरुआत और संयुक्त
आध्यात्मिक विकास का अंत.

उनकी प्रार्थनाएँ और ईश्वर का ज्ञान अद्वितीय है, क्योंकि उनके एक मात्र पवित्र ग्रंथ जौशन अल-कबीर से ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है।
हजारों प्रार्थनाओं के बाद, वह अपने बारे में बताते हैं
प्रभु में इतना ज्ञान है कि सभी संत
और अन्य लोग परमेश्वर के ज्ञान में उसके बाद से सबसे आगे हैं
समय के बावजूद कभी भी समान डिग्री हासिल नहीं की गई है
अपने पूर्ववर्तियों की उपलब्धियों पर निर्माण करना। जो लोग इस प्रार्थना के 99 खंडों में से सिर्फ़ एक पर नज़र डालते हैं, वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कभी भी ऐसा नहीं हो सकता

दूर से भी इसके जैसा कोई दूसरा नहीं हो सकता।

अपने लोगों को उपदेश देते और सत्य की ओर बुलाते हुए, पैगम्बर ने ऐसी दृढ़ता, दृढ़ता दिखाई,
और साहस कि वह कभी नहीं डगमगाया या हिचकिचाया। और यह सब आस-पास की शक्तियों और धर्मों की शत्रुता के साथ-साथ उनके अपने लोगों की शत्रुता के बावजूद था,

जनजाति, और यहां तक कि उसके चाचा। उन्होंने सफलतापूर्वक चुनौती दी
दुनिया में इस्लाम को अन्य सभी धर्मों और प्रणालियों से श्रेष्ठ माना गया है। इससे यह साबित
होता है कि कोई भी अन्य धर्म और प्रणाली इस्लाम से श्रेष्ठ नहीं है।
कोई भी व्यक्ति उसके उपदेश और आह्वान में उसकी बराबरी नहीं कर सकता
मानवता को सत्य के संदेश की ओर ले जाना।

उनका विश्वास इतना असाधारण रूप से मजबूत और निश्चित था, इतना चमत्कारिक रूप से विकसित (विकसित, विस्तारित और उनके हृदय में समाया हुआ) और इतना ऊंचा और
विश्व को यह ज्ञान देने वाला कि कोई भी प्रचलित विचार और
विश्वास, दर्शन या आध्यात्मिक शिक्षाओं ने उनके भीतर कोई संदेह पैदा नहीं किया। उनके विरोध के बावजूद
और शत्रुता, वे उसे संकोच या
उसके कारण के बारे में चिंतित हो जाओ।

इसके अलावा सभी संत (मुख्यतः उनके साथी)
उनके प्रयासों से लाभ मिला है - और आगे भी मिलता रहेगा
विश्वास, जिसे वे सर्वोच्च स्तर का मानते हैं।
इससे सिद्ध होता है कि उसका विश्वास अद्वितीय है। ईश्वर की खोज करने वाला यात्री इस प्रकार
यह निष्कर्ष निकालता है कि झूठ बोलना और धोखा देना ईश्वर की महिमा है।

---

[301] हम सबसे पहले सरल स्वीकृति के माध्यम से किसी चीज़ की सच्चाई पर विश्वास करते हैं
या अध्ययन और पुष्टि। जैसे-जैसे हम उसमें मौजूद विषय-वस्तु को सीखते हैं
जिसमें हम विश्वास व्यक्त करते हैं और विश्वास के स्वाद का अनुभव करते हैं, हमारा विश्वास
हमारे दिलों में और भी मजबूत और गहराई से समाहित हो जाता है। हम कर सकते हैं
इसे विस्तार, विकास या पुष्टि में गहराई पर विचार करें। पैगंबर इसी प्रक्रिया से गुजरे,

हर दूसरे आस्तिक की तरह, वह अपने क्षेत्र में आध्यात्मिक रूप से विकसित हुआ:
पैगम्बरत्व. (ट्र.)

इस तरह की घटना को लाने वाले व्यक्ति के लिए इस तरह की घटना के लिए कोई स्थान नहीं है।
एक अद्वितीय कानून और अतुलनीय धर्म; जिन्होंने प्रदर्शित किया
ऐसी अद्भुत आराधना, असाधारण उत्कृष्टता
प्रार्थना में, और विश्व-प्रशंसित उपदेश में; और जो
ऐसी चमत्कारी पूर्णता का विश्वास था।

चौथा: पैगम्बरों की आम सहमति बहुत मजबूत है
ईश्वर के अस्तित्व और एकता का प्रमाण और दृढ़ विश्वास
उस महान व्यक्ति की सच्चाई की गवाही और
संदेशवाहक। इतिहास भी इस बात की पुष्टि करता है कि उनमें सभी पवित्र गुण मौजूद थे,
चमत्कार और कार्य जो पैगम्बर की सच्चाई और संदेशवाहक होने का संकेत देते हैं।

भविष्यवक्ताओं ने मौखिक रूप से उनके आगमन की भविष्यवाणी की थी
टोरा, सुसमाचार, और अन्य पुस्तकों में उसके विषय में शुभ समाचार दिया गया है।
भजन, और पन्ने। उनके मिशन और चमत्कारों ने पुष्टि की और मिशन पर "अपना हस्ताक्षर" किया
इस अग्रणी और सबसे उत्तम व्यक्ति की नबीत्व.
यात्री को यह अहसास होता है कि सभी पूर्ववर्ती पैगम्बर इस व्यक्ति की सच्चाई के साक्षी हैं।
उनके कार्यों की एकमतता, जैसा कि वे गवाही देते हैं
मौखिक सर्वसम्मति के माध्यम से ईश्वर की एकता।

पांचवां: सत्य, पूर्णता, पद प्राप्त कर लेने पर
अद्भुत कार्य करने की क्षमता, चीज़ों की वास्तविकता में अंतर्दृष्टि,
और उस व्यक्ति के अनुसरण से आध्यात्मिक खोज
कर्मों और सिद्धांतों के कारण हजारों संत बुद्धिमान होते हैं।

ईश्वर की एकता और उस व्यक्ति की सच्चाई के प्रति आस्था और संदेशवाहक बनना। यात्री को एहसास होता है कि वे उस व्यक्ति की सच्चाई की गवाही दें, जो उतनी ही उज्ज्वल है सूर्य के समान; ताकि वे संतत्व के प्रकाश के माध्यम से, परमेश्वर के विषय में उनके द्वारा घोषित कुछ सत्यों को देख सकें।
अदृश्य दुनिया; और जिस पर वे विश्वास करते हैं और पुष्टि करते हैं
उन सभी सत्यों को विश्वास के प्रकाश के माध्यम से
ज्ञान द्वारा निश्चितता की डिग्री, दृष्टि द्वारा निश्चितता,
या अनुभव द्वारा निश्चितता।

छठा: हजारों शुद्ध विद्वान,
सावधानीपूर्वक सत्यनिष्ठ विद्वान, और आस्थावान ऋषिगण, सभी
जिनमें से कुछ लोग शिक्षा के सर्वोच्च स्तर पर पहुँचे
पवित्र सत्य में निहित शिक्षा के माध्यम से
उस अशिक्षित व्यक्ति द्वारा लाया गया ज्ञान; उसने जिन उत्कृष्ट विज्ञानों को जन्म दिया; और
ईश्वर को उन्होंने खोजा - सभी ईश्वर की एकता, उनके मिशन की नींव को साबित करते हैं और पुष्टि करते हैं, और गवाही देते हैं
उस महानतम शिक्षक और सर्वोच्च गुरु की सत्यनिष्ठा और उनके वचनों की सत्यता के प्रति।

सातवीं बात: पैगम्बरों के बाद, उनके परिवार और साथी मानवता के सबसे प्रसिद्ध, सम्मानित, प्रतिष्ठित, धर्मपरायण और तीक्ष्ण दृष्टि वाले सदस्य हैं।
ऐसा भेद उनकी अंतर्दृष्टि, बुद्धिमत्ता,
और आध्यात्मिक उपलब्धियाँ।
पैगम्बर के सभी विचारों की जांच और छानबीन की,

उन्होंने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला कि वह सबसे अधिक था

दुनिया का सबसे सच्चा, श्रेष्ठ और ईमानदार व्यक्ति।

यात्री समझता है कि ऐसा अडिग

इस प्रकार से उसकी पुष्टि और उस पर दृढ़ विश्वास

असाधारण लोग अपने उद्देश्य की सच्चाई साबित करते हैं,

ठीक वैसे ही जैसे दिन का प्रकाश सूर्य के अस्तित्व को सिद्ध करता है।

आठवां: यह ब्रह्मांड निर्माता, लेखक और डिज़ाइनर को इंगित करता है जिसने इसे एक महल, एक महल और एक महल बनाया है।

प्रदर्शनी, और एक तमाशा। इस प्रकार वहाँ एक होना चाहिए

सत्य का अनावरण करने वाला जो ईश्वरीय उद्देश्य को खोजता है

ब्रह्माण्ड के निर्माण के लिए, एक महान संदेशवाहक जो

इस महान पुस्तक का अर्थ बताता है, और एक विवेकशील गुरु और सच्चा शिक्षक जो दिव्य शिक्षा देता है

बुद्धि। उसे ब्रह्माण्ड के परिवर्तनों और उद्देश्यपूर्ण गतियों का अर्थ और परिणाम भी सिखाना चाहिए।

यात्री को धीरे-धीरे यह एहसास होता है कि जो व्यक्ति इन कर्तव्यों को सबसे अच्छी तरह से निभा रहा है, वह अपने उद्देश्य में सबसे सच्चा है: वह ब्रह्मांड के निर्माता के रूप में सबसे श्रेष्ठ और विश्वसनीय अधिकारी के रूप में सेवा कर रहा है।

नौवीं बात: सृष्टि के पर्दे के पीछे वह है जो

इन उद्देश्यपूर्ण और कुशल कार्यों के माध्यम से,

अपनी उत्तम कुशलता और कला को प्रदर्शित करने के लिए; स्वयं को

उन अनगिनत सुशोभित लोगों के माध्यम से जाना और प्यार किया गया

जीव; बदले में प्रशंसा और धन्यवाद प्रकट करना

उनकी असीम अमूल्य उदारता के लिए; और उनकी कृपा के लिए कृतज्ञता और प्रशंसा के साथ पूजा को प्रोत्साहित करना
जीवन के प्रति स्नेहपूर्ण और सुरक्षात्मक पोषण के माध्यम से प्रभुत्व, साथ ही सभी को संतुष्ट करने के माध्यम से
चीजों के विभिन्न स्वाद और भूख।

वह रचनात्मकता के माध्यम से अपनी दिव्यता दिखाना चाहता है
परिवर्तन के दौरान दर्शाई गई उद्देश्यपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण गतिविधि
ऋतुओं और दिन-रात के परिवर्तन के कारण
उदाहरण, ताकि मानवता विश्वास कर सके, प्रस्तुत कर सके
वह अपने ईश्वरत्व का पालन करता है और सद्गुणों और ईश्वर की रक्षा करके न्याय और सत्यनिष्ठा दिखाना चाहता है।
वह पुण्यात्मा है, दुष्टों और दुष्टों का नाश करता है, अत्याचारियों और झूठों को स्वर्गीय प्रहारों से नष्ट कर देता है।

निश्चित रूप से सबसे प्रिय जो, सेवा कर रहा है
ईश्वरीय उद्देश्य सर्वोच्च स्तर तक, सृष्टि के रहस्य को प्रकट करता है, सदैव उस सत्ता के नाम पर कार्य करता है
(अपने रचयिता) से प्रार्थना करता है, और उसी से सहायता और सफलता मांगता है (और दोनों प्राप्त करता है), तो वह उसके साथ रहेगा।
पैगंबर मुहम्मद

यात्री अपना कारण बताता है: “चूँकि ये नौ

सत्य उस व्यक्ति की सच्चाई की गवाही देते हैं, तो उसे अवश्य ही
मानवता के सम्मान और विश्व के सम्मान का स्रोत बनें
गर्व। इसलिए वह 'गर्व' कहलाने के योग्य है
'विश्व की महिमा' और 'मानवता की महिमा'।'' इसके अलावा
कुरान, दयालु अल्लाह की चमत्कारिक व्याख्या

वह अपने हाथ में जो स्थिति और डिक्री रखता है,
दुनिया के आधे हिस्से को अपने शानदार आध्यात्मिक-धार्मिक क्षेत्र में एकत्रित किया।
पैगंबर की व्यक्तिगत परिपूर्णताओं और उच्च गुणों के साथ, यह दर्शाता है कि

वह दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है, और
तदनुसार, हमारे सृष्टिकर्ता के बारे में उनके शब्द सबसे महत्वपूर्ण हैं
सबसे महत्वपूर्ण।

अब आओ और देखो! उसका एकमात्र उद्देश्य यह साबित करना था
और अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता के अस्तित्व की गवाही दें
अस्तित्व और एकता, सभी के साथ उसकी घोषणा करना
उनकी विशेषताएँ और नाम। शक्ति के आधार पर
उनके सैकड़ों चमत्कारों और हजारों उप-

चूना, उनके धर्म में निहित सत्य स्थापित, वह
क्या यह "आध्यात्मिक सूर्य" दुनिया को प्रकाशित कर रहा है, हमारा
सृष्टिकर्ता का सबसे शानदार प्रमाण, “परमेश्वर का प्रियतम।”
महान, सत्यवादी, सत्यनिष्ठ के निम्नलिखित तीन रूपों में से प्रत्येक
और अडिग आम सहमति पुष्टि करती है और पुष्टि करती है
वह जो गवाही देता है:

प्रथम: उस भ्रम की सर्वसम्मत पुष्टि-

मुहम्मद के परिवार और वंशजों के रूप में जाना जाने वाला और मनाया जाने वाला एक
तीन समुदाय, जिनमें से हैं
हजारों आध्यात्मिक ध्रुवों और सर्वोच्च संतों
ऐसी पैनी दृष्टि कि अदृश्य में भी प्रवेश कर सके, जैसे
इमाम अली ने कहा: "यदि पर्दा हटा दिया जाए तो...
अदृश्य रूप से, मेरी निश्चयता में वृद्धि नहीं होगी," और 'अब्द

अल-कादिर अल-जिलानी, जिन्होंने भगवान के शक्तिशाली सिंहासन को "देखा"।
और महादूत इसराफिल का भयानक रूप, जबकि वह अभी भी जीवित है।

दूसरा: साथियों की सर्वसम्मति से पुष्टि, इतनी दृढ़ आस्था के साथ की गई कि उन्होंने अपने जीवन और संपत्तियों, अपने माता-पिता और

जनजातियों के लिए। हालाँकि आदिम लोगों के बीच और अज्ञानता के माहौल में पले-बढ़े
सामाजिक जीवन और प्रशासन की कोई सकारात्मक धारणा,
बिना किसी शास्त्र के और पैगम्बरों के बाद असभ्य युग के अंधकार में डूबे हुए, ये
लोग पैगम्बर के पदचिन्हों पर चलने लगे और
जल्द ही वे स्वामी, मार्गदर्शक और न्यायप्रिय शासक बन गए
सबसे सभ्य और सामाजिक और राजनीतिक रूप से उन्नत लोग और राज्य।

तीसरा: सर्वसम्मति से की गई पुष्टि
ज्ञान की निश्चितता, असंख्य सटीक प्रश्नों द्वारा
और प्रखर विद्वान। प्रत्येक शताब्दी में ऐसे हजारों लोग हुए हैं जो असाधारण रूप से महान बन गए
विज्ञान और कला की प्रत्येक शाखा में उन्नत।

इस प्रकार उस व्यक्ति की ईश्वर के अस्तित्व की गवाही
और एकता इतनी सार्वभौमिक और अडिग है कि
यदि इसके प्रति शत्रुता रखने वाले सभी प्राणी एकजुट हो जाएं, तो भी वे नहीं कर पाएंगे
इसे चुनौती दें। ऐसा निष्कर्ष इस प्रकार निकला है
यात्री।

प्रकाश का विद्यालय मानसिक रूप से युग का दौरा करते हुए

खुशी की बात है, हम निष्कर्ष निकालते हैं: ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, वह अनिवार्य रूप से विद्यमान है, एक और अद्वितीय है, जिसके एकता में अस्तित्व की आवश्यकता दुनिया के गौरव और मानवता की महिमा से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है, कुरान की संप्रभुता की महिमा, इस्लाम की समग्रता की महिमा, उसकी परिपूर्णताओं की बहुलता और उसके नैतिक गुणों की उदात्तता के माध्यम से, जिसकी पुष्टि उसके दुश्मनों द्वारा भी की जाती है।

फिर, वह अपने सैकड़ों चमत्कारों की शक्ति के माध्यम से गवाही देता है और प्रमाण प्रस्तुत करता है जो उसकी सत्यता को प्रमाणित करते हैं और दृढ़ता से स्थापित होते हैं; और इस्लाम में निहित हजारों स्पष्ट और निर्णायक सत्यों की शक्ति के माध्यम से, जो उसके प्रतिष्ठित, प्रबुद्ध परिवार और वंशजों की सर्वसम्मति से पुष्टि करते हैं, जो प्रकाश का प्रसार करते हैं, और उसके साथियों की पैनी दृष्टि और विवेक के साथ सहमति है, और उसके समुदाय के सभी विद्वानों को ज्ञानवर्धक प्रमाणों और अंतर्दृष्टि के साथ सहमति है।

अनुक्रमणिका

डी

और

एफ

जी

एच

मैं

जे

क

एल

एम

एन

पी

आर